हकीकत किताबेवी प्रकाशन न० : 9

इस्पात उन नब्बुवा

नबुव्वत का सबूत

उन्नीसवाँ संस्करण

हकीकत किताबेवी

दारूश्शफेका कैड 53 पी.के : 35 34083

फोन: 90.212.523 4556 - 532 5843 फैक्स: 90.212.523 3693

http://www.hakikatkitabevi.com
e-mail: info@hakikatkitabevi.com

फातिह-इस्तानबुल/तुर्की

हुसैन हिल्मी इशिक
‘रहमतुल्लाह अलैहि’

हुसैन हिलमी इशिक ‘रहमतुल्लाह अलैहि’ हकीकत किताबेवी के प्रकाशन के प्रकाशक है, यह अय्युब सुल्तान, इस्तानबुल 1329 (A.D. 1911) में पैदा हुए थे। इन्होंने 144 किताबों को प्रकाशित किया, 60 अरबी, 25 फारसी, 14 तुर्की और बची हुई किताबों को फ्रेन्च, जर्मन इंग्लिश, रशिया और दूसरी भाषाओं में किया।

हुसैन हिलमी इशिक ‘रहमतुल्लाह अलैहि’ (सय्यद अब्दुल **हा**किम अरावासी रहमतुल्लाह अलैहि के ज़रिये सिखाए गए) इस्लाम के एक अच्छे आलिम और तस्व्वुफ के फज़ाईल के बेहतर और मुरीदो को पक्के तरीके से राह दिखाने के काबिल, गौरव की बात और अक़्लमंदी के हाकिम, ऐसे मिजाज़ के थे, इस्लाम के महान आलिम खुशियों के राह दिखाने के काबिल थे, इन्होंने 25 अक्तूबर सन 2001 की बीच रात के दौरान को वफात पाई (8 शाबान 1422) और 26 अक्तूबर 2001 (9 शाबान 1422) इन्हे अय्युब सुल्तान में दफनाया गया, जहाँ यह पैदा हुए थे।

पब्लिशर नोट:

अगर कोई इस किताब को इसकी असली शक्ल मे छपवाना चाहे या किसी और ज़बान मे तर्जुमा करके छपवाना चाहे तो उसको हमारी तरफ से इसकी इजाज़त है। जो लोग इस किताब को तर्जुमा या छपवाके आगे देंगे हम अल्लाह ताला से उनके लिये दुआ करेंगे और उनके शुकगुज़ार है। हमारी यह

इलतीजा है कि अगर कोई इस किताब को छपवाएँ तो इसके पेजों की क्वालीटी अच्छी हो, बिल्कुल सही तरीके से और बिना ग़लती के छपवाएँ जायें।

चेतावनी: ईसाई मिशनरी अपनी बातों को फैलाने की कोशिश कर रहे हैं, यहुदी लोग भी अपनी बातों को फैलाने की कोशिश में लगे हुऐ हैं।हकीकत किताबेवी जोकि इस्तानबुल में हैं इस्लाम को फैलाने की जद्दोजहद कर रहे हैं।जबकि बहुत लोग इस्लाम को नुकसान पहुँचाने में लगे हुऐ है जो इन्सान अक़्ल रखता है जानकारी रखता है और दिल से सही रास्ते की तलब करता हैं तो वह यकीनन सीधी राह को पा लेगा।जितनी भी राह उसे मिले वह उनमे से वो राह चुनेगा जो इंसानियत की निजात (उद्दार) के लिये हो।और कोई भी राह इंसानियत की निजात से बढ़कर नही हो सकती।इस्लाम किसी एक के लिये नही है बल्कि पूरी इन्सानियत के लिये है और हमारा मकसद इन्सानियत की भलाई के लिये ही हैं।

TYPEST AND PRINTED IN TURKEY BY :

IHLAS GAZETECILIK A.S.

29 Ekim Cad.No.23 YENIBOSNA-ISTANBUL/TURKEY

TEL: 90.212.454.3000

बिस्मिल्लाहि र्रहमानि-र्रहीम

प्रस्तावना

अल्लाह तआला ज़मीन के सारे बन्दों पर रहम करता है, कारगर चीज़ें ख़ल्क करता है और भेजता है। आख़िरत में भी वो अपने चुने गुनाहगार बन्दों को माफ करेगा जो जहन्नम के हकदार होंगे और उन्हे सीधा जन्नत में भेजेगा। वो अकेला है जो हर जानदार चीज़ को बनाता है, और सारी चीज़ों को वुजूद में रखता है और उन सबको ख़तरे और डर से बचाता है। अल्लाह पर भरोसा करते हुए हम इस किताब का तर्जुमा शुरू करते हैं।

हम्द हो अल्लाह की! उसके नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर दुरूद व सलाम हो! उस प्यारे नबी के प्यारे अहले बैत और सहाबाओं पर दुआ हो!

अल्लाह तआला अपने सारे इन्सानी बन्दों पर रहम करता है और चाहता है कि वो इस दुनिया में अमन और सुकून से रहें और आख़िरत में अबदी सुख पायें। इसके लिए उसने इन्सानों में से ही सबसे बेहतर को नबी बनाये और उन पर आसमानी किताबें नाज़िल की और उन्हे ख़ुशी और अमन का रास्ता दिखाया। उसने पहले ही ऐलान कर दिया है कि अबदी ख़ुशियाँ पाने के लिए पहले उसपे और उसके नबियों पर यकीन करना और उसकी पाक किताबों के हुक्मों पर अमल करना लाज़िम है। जिस शख़्स के पास यह यकीन है और वो हुक्मों को कुबूल करता है उसे **मोमिन** और **मुस्लिम** कहते हैं।

अल्लाह तआला का वाहिद होना और मौजूदगी समझाने के लिए इस्लामी आलिमों ने लगभग हर ज़बान में किताबें लिखी है। उनमें से एक किताब जो एक मुख़्तसर, साफ और समझने लायक अन्दाज़ में लिखी गई है,

शक शुबो को दूर करने के लिए अरबी ज़बान में **इस्पातु न नुबुव्वा** है जो बहुत कीमती है। महान आलिम इमामे रब्बानी अहमद अल फारूक़ी (कुद्दीसा सिरूह) ने यह किताब तब लिखी जब वो 18 साल के थे। इसमें उनके जोड़ और **शरहे मवाकिफ** किताब के आख़िरी हिस्से की वज़ाहत है। यह पहली दफ़ा अपने उर्दु तर्जुमे के साथ पाकिस्तान में छपी और शाय हुई। इमामे रब्बानी का जन्म 971 हिजरी (1564 A.D.) में हिन्दुस्तान के सरहिन्द में हुआ और वफ़ात 1034 हिजरी (1625 A.D.) में ही हुई।

हम दुआ करते है कि लोग इस किताब को पढ़े, समझे और गलत चीज़ों के असर से बचे और इस दुनिया के अमन और ख़ुशी के साथ-साथ आख़िरत में अबदी सुख पायें।

लेख में, कुरान करीम की तर्जुमा की हुई आयतें माल-ए-शरीफ से है (मुफस्सिरों के ज़रिए निकाले गए मायने), जोकि हो सकता है कि अल्लाह तआला के कहे हुए मतलब के मुताबिक़ हो भी या न भी हों। आख़िर में कुछ अंग्रेज़ी और ग़ैर अंग्रेज़ी लफ्जों के मायने भी दिए हुए है।

मिलादी	हिजरी शम्सी	हिजरी कमरी
2001	**1380**	**1422**

पहला हिस्सा:
इस्पातु-न-नुबुव्वा
(नबुव्वत का सबूत)

सारी तारीफ़ें अल्लाह के लिए, जिसने नबियों को भेजा बन्दों को बन्दगी सिखाने के लिए और चार आसमानी किताबें उनपर नाज़िल की; इन किताबों में कोई शक शुबा नहीं है।आख़िरी किताब **कुरानुल करीम** उसने आख़िरी नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर नाज़िल की, जिसमें इन्सानी बन्दों के लिए ज़रूरी चीज़ों को बताया, काफिरों को जहन्नम के अज़ाब से आगाह किया जबकि ईमान वाले जो इस्लाम को मान रहे है उनके लिए जन्नत की ख़ुशख़बरी दी।मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को भेज कर अल्लाह तआला ने अपने इन्सानी बन्दों पर दीन मुकम्मल किया।उसने ऐलान किया कि जो इस्लाम मज़हब में है वो उनसे राज़ी होगा।अपने पहले के बन्दों के लिए भी उसने नबी भेजे और मोजिज़ा दिखाये।उसने कुरान पाक में साफ ऐलान कर दिया है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बाद कोई नबी न आयेगा।उसने फरमाया कि जैसे एक अन्धा इन्सान उनपर भरोसा करता है जो उसे रास्ता दिखाता है या एक बीमार मरीज ख़ुद को डाक्टरों के भरोसे पर छोड़ देता है, ऐसे ही सभी इन्सानों को उसके भेजे हुए नबियों पर भरोसा करना है जो इन्सानों को उसके भेजे हुए नबियों पर भरोसा करना है जो इन्सानों को बरबादी से बचाने और अपने दिमाग से ज़्यादा दिलवाने आये हैं।उसने मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को सबसे आला नबी बनाया और उसकी उम्मत को सम्यिक बनाया।अल्लाह ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की उम्मत को सबसे आला दरजा दिया।उसने अपनी किताब में ऐलान किया है कि

मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) में कोई कमी पेशी नहीं है, वो सबसे आला है और सारी मख़्लूक के नबी हैं। अपने आख़िरी नबी को भेजा यह बताने के लिए कि अल्लाह एक है और वो अपने बन्दों के बीमार दिलों को ठीक करेगा। दुरूद व सलाम हो आप पर और आपकी आल पर और सहाबाओं पर दिन व रात। यह सही रास्ता दिखाने वाले तारे है और अंधेरे का उजाला है।

यह भी देखा जाये कि यह बन्दा [इमामे रब्बानी मुजदिद अलफसानी] अहमद इब्ने 'अब्दुल अहद, जो अल्लाह की रहमत का तलबगार है, और सलामती के लिए दुआ करता है, ताकि उसके गुरू, शिष्य और पूर्वज रोजे महशर में परेशानी से बचे रहें, उन्होने देखा कि आप के ज़माने के लोग नबियों के आने की ज़रूरत में कमज़ोर हो रहे है, जिन **25** नबियों का नाम कुरान करीम में दिया हुआ है और आख़िरी नबी के ज़रिए लाया गये दीन पर। यहाँ तक कि हिन्दुस्तान के कुछ ताकतवर बड़े ओहदे वाले लोगों ने मेहनत से इस्लाम पर चलने वाले नेक मुसलमानों पर ज़ुल्म कर रखा है। और ऐसा भी हो रहा है कि लोग मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का नाम जो उनके माँ-बाप ने उनका रखा है, उसका मज़ाक बना रहे है और अपने नाम को बदल कर बेतुका नाम बना रहे है। ईदुल अज़हा में गाय को कुर्बान करना जो वाजिब है उसपर भी रोक लगा दी गई है। मस्जिदे या तो गिरा दी जा रही है या उन्हे म्यूज़ियम या दुकानों में तब्दील किया जा रहा है। कब्रिस्तान को या तो खेल का मैदान या कूड़ाघर बनाया जा रहा है। काफिरों के गिरजाघरों को ऐतिहासिक इमरत कहकर दुबारा संवारा जा रहा है। उनके त्यौहार और तरीके मुसलमान भी अपना रहे है। मुख़्तसिर तौर पर इस्लाम के तरीके को घिनौना समझा जा रहा है और छोड़ा जा रहा है। उन्हे "उन्नति रोधक" कहा जा रहा है। काफिरों के तरीके गलत मज़हब, बेजान और शर्मसार चीज़ों की तारीफ़ की जा रही है। उनको फैलाने के लिए कोशिशे की जा रही है। हिन्दुस्तान काफिरो की गंदी

व घिनौनी किताबें, गाने और नॉविलें मुसलमानों की ज़बान में छापी और बेची जा रही हैं।मुसलमानों के ईमान को कमज़ोर करने के लिए, और इस्लाम के ख़ूबसूरत अरकानों को तोड़ने और ख़राब करने के लिए, काफिरों के इन कामों की तादाद बढ़ती जा रही है।यहाँ तक की मज़हब के जानकार, जो कुफ्र की बीमारी का इलाज है वो भी इसमें पड़ कर बर्बादी की तरफ जा रहे है।

मैने मुसलमान बच्चों में फैले हुए इस कुफ्र को पढ़ा और जांचा कि इसकी शुरूआत कहा से है।मैने जाना कि उनके ईमान में बस एक कमज़ोरी है।इसकी वजह यह है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के जाने के बाद, और उसी वक़्त कुछ झूठे, छोठी सोच वाले, लामज़हबी जाहिल जिन्होने ख़ुद को सांईन्टिस्ट बना लिया, उन्होने मज़हबी मुद्दो पर बात की और लोगों ने उनके अल्फाज़ों को सच समझ लिया।मैने ऐसे कई लोगों से बात की है जिन्होने ऐसे झूठे सांईन्टिस्ट की बात लिखी हुई बातों पर यकीन कर लिया और वे ख़ुद को नूरानी और मॉर्डन कहते है।मैने देखा है कि उनमें से कई ख़ुद को नबुव्वत के दर्जे के बराबर समझने लगे हैं।मैने कई लोगों को कहते सुना है कि, “नबियों ने लोगों को एक साथ जोड़ने और अच्छी आदतें सिखाने की कोशिशे की है।इससे दूसरी दुनिया की ज़िन्दगी का कोई ताल्लुक नहीं है।फिलोस्फी की किताबें भी अच्छी आदतें सिखाने और लोगों को एक साथ जोड़ने का काम करती है।इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली ने अपनी किताब **इहया उलूमुद्दी** को चार भागों में बांटा।पहले भाग में आपने ख़ूबसूरत आदतों की वज़ाहत, की जिसका नाम उन्होने **मुनजियत** (चीज़ें जो बचाती है) रखा।बाकी तीन भागों में उन्होने सलात, रोज़ा और दूसरी इबादतों के बारे में लिखा।यह किताब फिलोस्फी की किताबों से मिलती है।और इससे साबित होता है कि इबादत मुन्जी (बचाने वाली) नहीं है और बन्दगी अच्छी आदतों पर निर्भर करती है। “दूसरो ने कहा, उसने जिसने नबी की बात को, आयत को और मोजिज़ों को सुना हो पर इस पर ईमान न लाया हो, वो इस तरह है जैसे कोई शख़्स जो पहाड़ों पर या

रेगिस्तान में रहता है और उसने नबी के बारे में कभी नहीं सुना हो। इसकी तरह उसके पास भी ईमान नहीं है।"

इसके जवाब में हम कहेंगे कि अल्लाह रहमान है और सारे बन्दों पर रहम करता है और उसने चाहा कि वो बन्दों को सही करने और उनके दिलों की बीमारी को दूर करने के लिए नबी भेजे। उसका यह फर्ज़ पूरा करने के लिए नबियों का नाफरमान इन्सानों को डराना और फरमाबरदारों को आख़िरत के ईनाम के बारे में बताना लाज़िम था। इन्सान अपने फायदे की हर चीज़ लेना चाहता है। उन्हे पाने के लिए वो गुमराही, गुनाह और दूसरो को नुकसान पहुँचाता है। नबियों को भेजने की ज़रूरत यह थी ताकि इन्सान को गलत करने से बचाया जाये और उन्हे राहत की व अमन की ज़िन्दगी मिले इस दुनिया में और आख़िरत में भी। इस दुनिया की ज़िन्दगी छोटी है। दूसरी दुनिया की ज़िन्दगी अबदी है। इसी वजह से उस दुनिया की ज़िन्दगी को तरजीह दी गई है। कुछ फिलोस्फरों ने अपनी किताबों को ज़्यादा बेचने की ख़ातिर कुछ अपने ख़्याल उसमें डाले और उन्हे अच्छे अख़्लाक और किसी की ज़रूरी कामों के शक्ल में डाला, जोकि उन्होने उन लोगों की आसमानी किताबों से पढ़े जिनपर वो यकीन करते हो। हमाम मुहम्मद ग़ज़ाली (रहमतुल्लाही तआला अलैह) की किताब हुज्जतु-ल-इस्लाम इबादत की वज़ाहत करती है; फिक के आलिमों ने बताया कि इबादत कैसे की जाती है, पर उन्होने उसके खुसूसी छोटी चीज़ें नहीं बताई क्योंकि उनका मकसद था सही इबादत करने की शर्तो को और तरीकों को समझाना। उन्होने आदमी के दिल और रूह को नहीं देखा था। इमामे ग़ज़ाली काम तसव्वुफ के आलिमों का था। इमामे ग़ज़ाली ने मज़हब के इल्म को इकट्ठा किया जोकि जिस्मानी तौर पर और बाहरी कामों में तसव्वुफ के इल्म के साथ जानकारी देता था, जिससे अन्दरूनी पाकी भी मिलती है। आपने अपनी किताब में दोनों की वज़ाहत की। उन्होने दूसरी किताब का नाम **मुनजिय्यत** रखा, यानि वो इल्म जो बर्बादी से बचाता हो, पर उन्होने यह भी कहा कि इबादत भी

मुन्जी है।इबादत का तरीका जोकि एक बन्दगी है उसे फिक़ की किताबों से नहीं सीखा जा सकता।

यह उस महान इमाम की वज़ाहत पढ़ कर ही समझा जा सकता है।बन्दगी का वो इल्म जिससे दिल मुतालिक हो फिक की किताबों से नहीं सीखा जा सकता।

हम मेडिकल सांईन्टिस्ट कैलिनोस या ग़रामैरियन अमर सिबावैह को नहीं देख सकते।हम कैसे जाने फिर कि वो उन चीज़ों में उस्ताद थे? हम जानते है सांईन्स क्या है और दवाईयाँ क्या है।हमने कैलोनोस की किताबें पढ़ी और बयान सुने।हमने सीखा कि उसने बीमारों को दवा दी और ठीक किया।तब हम यह यकीन करते है कि वो एक डॉक्टर था।इसी तरह जब कोई गरामर का सांईन्सदान सिबावैह की किताब पढ़ता है या उसके कुछ लफ्ज़ सुनता है तो वो उसके गरामैरियन होने पर यकीन करता है।ठीक उसी तरह से जब कोई नबुव्वत का जानकार शख़्स कुरान करीम और हदीस शरीफ पढ़ता है तब वो पूरी तरह से जान जाता है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) नबुव्वत में सबसे ऊँचे दर्जे पर थे।जैसे उपर लिखे गये आलिमों किसी का ई मान नहीं परेशान होगा, तो बदनामी और जाहिलों की गालियाँ या भटके हुए लोग किसी का ईमान कमज़ोर नहीं कर सकते मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की तरफ से, क्योंकि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सारी सीख और आदतें इन्सान के सुधार की तरफ ले जाती है।उनके ईमान और अख़्लाक को पाक और कारगर बनाती है और उनके दिलों को नूरानी करती है जिससे उसका दिल बीमारी से ठीक हो जाता है और बुरी आदतों से मुक्त हो जाता है।

एक शख़्स जो पहाड़ों में या रेगिस्तान [या कम्यूनिस्ट देख] में रहता है और जिसने नबियों के बारे में नहीं सुना उसे **शाहिके जबल** कहते है।ऐसे लोगों

के लिए नबुव्वत और नबी के भेजे जाने पर यकीन करना नामुमकिन है। यह ऐसा है जैसे कोई नबी आया ही न हो उनके लिए। यह लोग माफी लायक है। [इनके मरने के बाद हिसाब के बाद, इनको जानवरों की तरह ही मिटा दिया जायेगा बिना जन्नत या जहन्नम में दाख़िल करे। ऐसा ही काफिर किशोर बच्चों के साथ भी किया जाएगा।] उनको नबियों पर ईमान लाने हुक्म नहीं था। उनको ध्यान में रखते हुए सूरह इसरा ऐलान करती है: **"हम तब तक अज़ाब न देंगे जबतक पहले हम नबी न भेजदे!"**

उन लोगों के शक को दूर करने की नीयत से जिन्होने अपनी मज़हबी तालीम जाहिल लोगों की किताबों से ली है और मज़हब के दुश्मनों के गलत कलम से सीखा है, मैने सोचा कि मैं वो लिखूँ जो मैं जानता हूँ। असल में मैने इसे अपना काम बना लिया है, एक कर्ज़ जो मुझे इन्सानियत को चुकाना है। मैने नबुव्वत को समझाने की कोशिश करी है यह साबित करने के लिए कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पूरी नबुव्वत के काबिज़ थे, काफिरों के दिमाग से इस शक को निकालने के लिए, और सांईन्स के कट्टर लोगों की शैतानी और नुकसान दिखाने के लिए जो इस सच को अपने ख़्यालों और राय से दबाना चाहते है। इस्लामी आलिमों की किताबों का हवाला देते हुए और अपने नेक ख़्याल डालते हुए, मैने उनके ख़्यालों को गलत साबित करा है। इस किताब में एक परिचय और दो लेख है। और परिचय दो भागों में बटा है। अल्लाह पर यकीन रखते हुए, मैं लिखना शुरू करता हूँ।

हिजरी 990 मिलादी 1582

अहमद इब्ने अब्दुल अहद
सरहिन्दी

विषय सूची

पहला हिस्सा

इस्पातु उन नुबुव्वा
(नबुव्वत का सबूत)

किरदार 3

प्रस्तावना.. 4

दिबाचा.. 6

1. नबुव्वत क्या है? 14

2. मोजिज़ा क्या है? 16

3. बीधात: नबियों को भेजना और उसकी ज़रूरत 21

4. मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नबुव्वत का सबूत... 33

दूसरा हिस्सा

दूसरे उनवान

5. एक मज़हबी जाहिल को जवाब 55

6. कम्युनिज़म और कम्यूनिस्ट की मज़हब के ख़िलाफ दुश्मनी ...89

7. सच्चा मुसलमान कैसा है? 115

8. एक यूनिवर्सिटी तालिब को जवाब **118**

तीसरा हिस्सा

सवानिह उमरी

9. सय्यद अब्दुल हाकिम अरवासी की सवानिह उमरी **130**

10. सय्यद फहीम अरवासी की सवानिह उमरी **146**

11. सय्यद ताहा उल हक्कारी की सवानिह उमरी **158**

12. हुसैन हिल्मी बिन सईद अफेंदी की सवानिह उमरी **166**

चौथा हिस्सा

शब्दकोष

13. शब्दकोश **198**

परिचय - I

1 - नबुव्वत क्या है?

शरह-ए-मवाकिफ, सय्यद शरीफ उल जुरजानी की किताब के आख़िरी हिस्से में लिखा है कि, कलाम के आलिमों के मुताबिक, एक शख़्स जिसे अल्लाह तआला कहे, "मैने तुम्हे फला-फला लोगों के लिए और फला मुल्क या पूरी इन्सानियत के लिए भेजा है," या "मेरे बन्दों पर ज़ाहिर करो।" या ऐसा ही कोई हुक्म दे, उस "नबी" या "पैग़म्बर" (पैगाम देने वाला या रसूल) कहते है। नबी होने के लिए ज़रूरी नहीं है कि रियादा या मुजाहदा जैसी शर्ते हों या नबुव्वत के मुताबिक खुसूसियत लेकर पैदा होना। अल्लाह तआला जिसे चुनता है उसपर यह तोहफ़ा नाज़िल फरमाता है। वो सब जानता है और जो वो करता है अफज़ल है। वो जो चाहता है वो करता है। वो सबसे ताकतवर है। कलाम के आलिमों के मुताबिक नबी को **मोजिज़ा** दिखाना लाज़िम नहीं है। यह कहा गया था कि उसे मोजिज़ा दिखाना पड़ता है ताकि लोग यकीन करे कि वो नबी है। पुराने ग्रीक फिलोस्फरों के मुताबिक नबी होने के लिए तीन शर्ते है: पहली **गैब** (गैर मालूम, इसरार) को ज़ाहिर करना, यानि गुज़रे हुए और आने वाले ज़माने के वाक्या बताना, ग़ैर मामूली चीज़ें करना, यानि वो काम जो दिमागी और सांईन्सी तौर पर नामुमकिन हों, तीसरा, किसी जिस्म या चीज़ में फरिश्ते को देखना और अल्लाह तआला की वही फरिश्ते से सुनना।

ना हमारे लिए और ना ही उनके (फिलोस्फरों) के लिए, एक नबी के लिए हर नामालूम को जानना ज़रूरी है। और उनमें से कुछ को जानना सिर्फ नबी के लिए ख़ास नहीं है। यह भी फिलोस्फरों के ज़रिए माना गया है कि जो **रियादा** से गुज़रते है, यानी, जो ख़ुद को एक कमरे में अलग कर लेते है, और

ज़िन्दा रहने लायक ही खाते है, कुछ लोग जिन्होने समझ खो दी है, और कुछ लोग जो सोते में राज़ खोल देते है। इस मामले में ऐसे लोग नबी से अलग नहीं है। शायद, जिसे फिलोस्फर 'गैब' कहते है वो ग़ैर मामूली चीज़ें नहीं है। एक या दो बार उन्हे जानना या बताने का यह मतलब नहीं है मामूली पार करना। यह बात दूसरो को नबियों से अलग करती है। कलाम के आलिमों ने यह भी रिवायत करी है कि अल्लाह तआला की तरफ़ से नाज़िल की हुई राज़ को नबी जानेंगे। पर उन्होने कहा कि राज़ को जानना कोई शर्त नहीं है नबी होने के लिए। और ऊपर लिखी हुई फिलोस्फी की बात ग़ैर मालूम को जानना गलत है। यह इस्लाम की बुनियादों के मुकाबिल नहीं है। और ऐसी बिना पर गैरमालूम को जानना एक अलग मौजू है। यह ग़ैरमामूली अजूबे है। इनपर ध्यान लगाने का कोई फायदा नहीं।

ग़ैर मामूली घटनाएं जैसे, किसी चीज़ पर असर डालना ख़ुद की मर्जी से, हवा पर असर डालना, ज़लज़ला या आग जब वो चाहे या जहाज़ का डूबना; आदमी का मरना या किसी तानाशाह का उसके नाश पर आना किसी की ख़्वाहिश से, यह सच इन्सान की रूह का असर है किसी माद्दे पर। असल में अल्लाह तआला अकेला है जो माद्दों पर असर डालता है। अल्लाह तआला यह असर जब चाहे, और जिसपर चाहे डाल सकता है। इसलिए यह नहीं कहा जा सकता कि ग़ैर मामूली चीज़ें या अजूबे सिर्फ नबियों के लिये ख़ास है। यह फिलोस्फरों के ज़रिए भी कुबूल कर लिया गया है। तब, यह नबी और दूसरो को अलग करने वाला कैसे हो सकता है?

हालांकि ग्रीक फिलोस्फरों ने कहा है कि ग़ैर नबी भी जादू कर सकता है, पर उन्होने उस जादू की ताकत को **इजाज़** की ताकत के बराबर नहीं माना। उन्होने कहा कि ऐसी ग़ैर मामूली चीज़ें नबियों के ज़रिए होती है इसलिए नबी औरों से अलग है।

फिलोस्फर बयान करते है कि एक फरिश्ता नबी पर ख़ुद को ज़ाहिर करता है और अल्लाह तआला की वही नाज़िल करता है नबुव्वत के लिए शर्त है, यह बयान उनकी ख़ुदकी फिलोस्फी पर इख़्तलाफ रखता है।इनकी यह बातों का मकसद ईमान वालों को गुमराह करना है, उनके मुताबिक फरिश्तें ग़ैर माद्दे और गूंगे है।वो कहते है कि आवाज़ निकालने के लिए माद्दे की ज़रूरत होती है।आवाज़ हवा की लहरों से आती है।इन शर्तो फिलोस्फरों कि यह कहना चाहते है कि फरिश्तें खुद को दिखा सकते है पर बोलने के लिए माद्दे की शक्ल लेते हैं।

परिचय – II
मोजिज़ा से क्या मुराद है?

हमारे लिए **मोजिज़ा** किसी शख़्स की सच्चाई का सबूत है जो दावा कर रहा हो कि वो एक नबी है।मोजिज़ा की शर्ते होती है:

1- अल्लाह तआला इसे मामूली चीज़ों के अभाव में बनाता है, जिससे उसका नबी साबित होता है।

2- इसे ग़ैर मामूली होना चाहिए।मामूली चीज़ें जैसे सूरज का पूर्व से निकलना हर दिन या बहार में फूलों का खिलना मोजिज़ा नही है।

3- दूसरो का उसे करने में असमर्थ हो पाना।

4- यह तभी होना चाहिए जब वो शख़्स जो अपनी नबुव्वत का ऐलान कर रहा हो, खुद चाहे।

5- उसे उसकी चाह के मुताबिक होना चाहिए। मसलन, अगर वो कहे कि मैं किसी मुर्दे को ज़िन्दा कर सकता हूँ पर उस मुर्दे की जगह कुछ दूसरा करिशमा हो जाये, मसलन अगर एक पहाड़ दो हिस्सों में टूट जाये। तो वो मोजिज़ा नहीं होगा।

6- जो मोजिज़ा उसकी मर्ज़ी से हुआ हो उसे उससे झूठ नहीं बोलना चाहिए। मसलन अगर वो अजूबे से किसी दैत्य से बात कर रहा हो और वो दैत्य बोल पड़े; "यह आदमी झूठा है," यह मोजिज़ा नहीं होगा।

7- उसके ख़ुद को नबी कहने से पहले मोजिज़ा के साथ नहीं है। मसलन जन्नत का टुकड़ों में टूट जाना, तारों का बिख़र जाना और पहाड़ों का तबहा हो जाना तब होगा जब दुनिया ख़त्म होगी, आख़िरत के दिन। यह मोजिज़ा हर नबी ने बताया है। पर जो उन्हे सुनते है उनके लिए ज़रूरी नहीं कि वो उसे मोजिज़ा जाने। तो यही बात वली की करामत की है जो नबी का मोजिज़ा बनी हो, हालांकि इसका नबी से कोई तालुक्क न हो। अब तक जो हमने बयान किया वो सय्यद शरीफुल जुरजानी की किताब **शरहे मवाकिफ** में वज़ाहत से बयान है।

कई उलेमाओं के मुताबिक, हालांकि खुली **तहद्दी** (चुनौती) जो कहता हो, "जाओ और उसी तरह करो! पर तुम नहीं कर पाते!" यह मोजिज़ा की शर्त नहीं है, मोजिज़ा का मायने में तहद्दी है। क्योंकि तहद्दी इस रिवायत में मुद्दे का सवाल नहीं है जिसमें आख़िरत के वक़्त की बातें है या वाक्या है, यह चीज़ें काफिर के लिए मोजिज़ा नहीं है। औलियाओं की करामात मौजिज़ा नहीं है क्योंकि उन्होने नबुव्वत का ऐलान नहीं किया और उसमें कोई तहद्दी नहीं थी। सच यह है कि ऐसे बिना चुनौती के अजूबे किसी शख़्स जो नबी होने का ऐलान कर रहा हो, उसकी नबुव्वत की सच्चाई को साबित नहीं करते, का यह मतलब नहीं कि मोजिज़ा साबित नहीं कर सकते। इसके बरअकस यह वो है जो

मोजिज़ा से उम्मीद रखी जाती है। नहीं होना चाहिए। अजूबे जो पहाले होते है [नबी होने के ऐलान से पहले] जैसे ईसा (अलैहिस्सलाम) [जेसस] बात करते थे पालने में, जब एक सूखे पेड़ से आपने खजूर मांगे तो हाथों में खजूर का आजाना, और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बचपन में, आपके सीने का खुल जाना और धोकर आपके दिल का साफ किया जाना, आपके सिर के ऊपर हमेशा एक बादल का रहना और पेड़ों और पत्थरों का आपको सलाम कहना मोजिज़ा नहीं थे पर करामात थी। इन्हे **इशारा** कहते है। (नबी होने की निशानी) यह नबुव्वत पर ज़ोर देते है। ऐसी करामातों का वलियों के ज़रिए होना भी मुमकिन है। अपनी नबुव्वत का ऐलान करने से पहले नबियों का रूत्बा औलियों से नीचा नहीं होता। उनसे करामात देखी गई। एक मोजिज़ा नबी की नबुव्वत का ऐलान करने के फौरन बाद हो सकता है। मसलन अगर वो कहे कि एक महीने बाद फला-फला वाक्या होगा, तो अगर एक महीने बाद वो वाक्या हो जाता है तो वो मोजिज़ा है। पर उसके होने से पहले नबुव्वत पर यकीन करना ज़रूरी नहीं।

एक मोजिज़ा जो नबी की नबुव्वत को दिखाने सिर्फ वो एक ज़रूरत नहीं एक अकलमन्द के लिए। यानि, यह उस मसले से अलग है जहाँ कोई काम अपने करने वाले को बता रहा है। अक्लमन्दों के लिए किसी चीज़ का सबूत होना मानने के उन दो चीज़ों में राब्ता चाहिये होता है। जब सबूत देख लिया जाये, जुड़ी हुई चीज़ का वजूद किसी और का वुजूद नहीं है, यकीन है। यह मामला

सवाल: मोजिज़ा उस शख़्स की सच्चाई का सबूत देते है जो यह दावा करता है कि वो एक नबी है चूकि वो अजूबे होते हैं। क्या एक मोजिज़े में नबुव्वत साबित करने की अलग कुव्वत होती है?

जवाब: यह असल मसला नहीं है। एक मोजिज़ा किसी नबी के दावे को साबित करता है इस सच्चाई को जानते हुए कि दूसरे वो नहीं कर सकते, जिसका मतलब है कि मोजिज़ा में एक अलग कुव्वत है। और यह सच्चा सबूत है।

सवाल: **शहरे मवाकिफ** में सयैद शरीफ उल जुरजानी कहते है, नक्ल खुद में एक सबूत नहीं हो सकती बल्कि जो शख़्स यह कह रहा है कि वो नबी है उसकी सच्चाई पर भी यकीन होना चाहिए, और यह एक अक्लमन्द इन्सान के कुबूल करने से होता है। मोजिज़ा देखने के बाद एक अक्लमंद इन्सान यकीन करता है कि नबी ने सच कहा है, जबकि कुछ देर पहले उसने कहा कि यह एक अक्लमंद नही कर पाता। क्या ये दोनों बातें एक दूसरे से मुख़ालिफ नहीं है?

जवाब: इससे ठीक ऊपर की बात यह कहनी है कि अक्लमंद दो मोजिज़ा पढ़ता है जो नबी की सच्चाई को साबित करता है। वह ये नहीं कहता कि अक्लमन्द को मोजिज़ा की सच्चाई साबित करने पर ख़ुद पर कोई असर पड़ता है। चाहे हमे यह मानना पड़े कि यह कहता है कि इसका कुछ असर है फिर भी यह ये नहीं कहता है कि इसे किसी अक्लमंद के ज़रिए आका जा सकता है। अब जब कोई नहीं कहता कि इस मसले का अक्लमंद पर कोई असर नही पड़ता तो यह मुख़ालिफत बेबुनियाद है। सय्यिदुल जुरजानी का बयान एक रिवायती मोजिज़े की वज़ाहत पर था, जिसके लिए ऐसा बयान माकूल था।

एक मोजिज़ा जो नबी की सच्चाई बयान करता है वो सुनने पर यकीनी भी नहीं होता। यह एक कायनाती निशानी है। यानि, जब कोई मोजिज़ा देखा जाता है, अल्लाह तआला देखने वाले को यह इल्म देता है कि नबुव्वत का ऐलान करने वाला सच बोल रहा है। यह अल्लाह का कानून है। यह

इसलिए कि, हालांकि एक झूठे के लिए मोजिज़ा दिखाना मुमकिन हो सकता है, ऐसा कभी नहीं हुआ। अगर कोई शख़्स अपनी नबुव्वत का ऐलान करता है और एक पहाड़ उठा कर कहता है, “अगर तुम मुझपर भरोसा करते हो तो यह पहाड़ अपनी जगह पर वापस चला जायेगा। अगर तुम मुझपर ईमान नहीं लाते तो यह तुम्हारे सिरों पर गिरेगा।”, अगर वो देखे कि ईमान लाने पर वो पहाड़ वापस अपनी जगह पर जा रहा है या ईमान न लाने पर उनकी तरफ आ रहा है तो इलाही के कानून से यह समझ आ जाता है कि वो सच बोल रहा है हाँ, पर एक अक्लमंद के विचार से यह मोजिज़ा एक झूठे के ज़रिए भी मुमकिन है। पर यह इलाही, अल्लाह तआला का कानून नहीं है। यानि ऐसा कभी नहीं देखा गया। [एक अक्लमंद, झूठे इन्सान के मोजिज़े को पहचान लेता है और कहता है, “अल्लाह सबसे बड़ा है, यह तो वो भी कर सकता है।” यह हल जो इलाही कानून के अनुकूल नहीं है, या इस हल के बहुत कम वाक्या है, यह हमारे इल्म को कोई नुकसान न पहुंचायेगे अल्लाह तआला के कानून से मुताल्लिक। मसलन, दज्जाल, एक झूठा जो कयामत के दिन आयेगा और लोगों को मारेगा फिर ज़िन्दा करेगा, वो सब हमारा इल्म नहीं बदलेगा उसके झूठा होने के मुताल्लिक। नमरूद की आग का इब्राहिम (अलैहिस्सलाम) को न जलाना, अल्लाह के कानून को नहीं बदलता जो आग को जलाने की कुव्वत देता है। हालांकि, वाक्यों के होने वाली मुख्तिलफ जानकारी जो एक दूसरे में इख़्तिलाफ रखती हो जिसे एक अक्लमंद ने जान्चा सबूतों के ज़रिए, इस मालूमात को नुकसान पहुंचाती है।] इसकी मिसाल इस तरह है: अगर कोई शख़्स बादशाह का पैग़म्बर होने का दावा करता है और कहता है, “अगर तुम मुझपर यकीन नहीं करते, तो यह मेरा ख़त बादशाह के पास ले जाओ।” ख़त में लिखा हो; “अगर यह सच है कि मैं आपका पैग़म्बर हूँ तो तख़्त से उतर कर ज़मीन पर बैठ जाओ।” वो ख़त को बादशाह के पास ले जाते हैं और वो पढ़ता है और वैसे ही करता है जैसे लिखा है। जिन्होने यह देखा उन्होने यकीन किया कि वो सच बोल रहा था। यह ईमान उस तरह नहीं है जैसे ग़ैर मालूम को

पसन्द करता गवाह की तरह" यानि किसी और चीज़ को देखकर अन्देखी चीज़ पर यकीन करना। एक मोजिज़ा यकीनी तौर पर सच्चाई का सबूत देता है। मुताज़िला के मुताबिक, एक झूठे के लिये मोजिज़ा दिखाना मुमकिन नहीं है।

जादू या ऐसी चीज़ें किसी वाक्या में होती है यानि करने से वो होती है या कभी-कभी यह धोखा होता है आंखों का जो किसी के ख़्यालातों को पढ़ कर किया जाता है जबकि यह असल में नहीं होते। यह अजूबे नहीं है।

3– नबियों को भेजना और उसकी ज़रूरत

इन्सान अपने खल्क किये वक़्त पर कुछ नहीं जानता था। उसके आस-पास की मख़लूक जो इतनी वसीअ है कि सिर्फ अल्लाह तआला इसकी हद जानता है। यह रिवायत सूसह मुज़स्सिर [...और कोई अल्लाह की ताकत को नहीं जानता सिवाये उसके... **(74-31)**] की **31**वीं आयत में है। एक छोटा बच्चा अपने अहसास के आजूओ से अपनी पढ़ाई शुरू कर देता है। चीज़ों की हर तालीम को **आलम** कहते है।" इन्सान में महसूस करने की कुव्वत सबसे पहले बनी; छूने की कुव्वत से इन्सान ठंडे, गर्म, सूखा, गीला, नर्म, सख़्त और ऐसी चीज़ों को पहचान लेता है। महसूस करने के आजऊ रंग और आवाज़ को नहीं पहचान सकते और इन्हे ग़ैर वजूदी समझा जाता। तब उसके देखने के आजऊ बनाये गये, और उससे रंग और आकार को पहचाना गया। इस आज़ऊ से पहचानी गई दुनिया में महसूस करने वाले आज़ऊ से पहचानी गई ज़्यादा चीज़ें थी। अगला उसका सुनने से मुतालिक आजऊ। इस आजऊ से आवाज़ और तरंगे पहचानी। फिर उसकी स्वाद की और सूंघने की कुव्वत बनाई

।तो यह पांच आजअू जो दुनिया को समझने की अनुभूति दिलाते थे पूरे हो गए।ज़िन्दगी के सांतवे साल में, उसको तमीज़ (विवेक) बनाया गया, उन चीज़ों से जो महसूसी आजअू नहीं समझ सकते थे।यह ताकत महसूस आजअू के ज़रिए पहचानी गई चीज़ों को एक दूसरे से अलग करती है।फिर उसकी अक्ल और बुद्धिमता बनाई गई।क्या अच्छा है कारगर है, बुरा है, नुकसानदेह है, अक्ल की ताकत से निर्धारित होता है बुद्धिमता, ज़रूरी, ग़ैर ज़रूरी, मुमकिन, नामुमकिन को एक दूसरे से अलग करती है।बुद्धिमता उन चीज़ों को समझाती है जिन्हे अनुभूति और अक्ल की ताकतें नहीं समझा सकती।बुद्धिमानता के अलावा अल्लाह तआला ने अपने कुछ चुनिन्दा बन्दों में एक और ताकत ने अपने कुछ चुनिन्दा बन्दों में एक और ताकत बनाई।इससे वो चीज़ें भी समझी जा सकती है जिन्हें बुद्धिमनता नहीं समझ सकती या जो आगे होने वाली होती है।इसे कहते है **नुबुव्वत** की ताकत।चूंकि बुद्धिमानता की ताकत अक्ल के दायरे को नहीं समझ सकती, यह लाज़िम सी बात है उनके लिए।और चूंकि अक्ल, नबुव्वत की करी हुई चीज़ों को समझ नहीं पाती तो वो ईमान नहीं लाती और उसे नकारती है।जिस चीज़ को नहीं समझ पाते उसे नकारने का नतीजा है नासमझना और ना जानना।वैसे ही जैसे कोई शख़्स अन्धा पैदा हुआ हो उसे रंग और आकार की कोई समझ न होगी अगर उसने इनके बारे में सुना न हो तो।वो उनके वुजूद पर यकीन नहीं करेगा।अपने बन्दों को यकीन दिलाने के लिए अल्लाह तआला ने इन्सान में ख़्वाब बनाये इसी ताकत से मिलते जुलते।ख़्वाब में इन्सान साफ देख सकता है कि आगे क्या होने वाला है या अपने आपको आमाले मिसाल में देख सकता है।एक शख़्स जो नहीं जानता कि ख़्वाब क्या होते है, उससे कहा गया कि, "जब इन्सान का दिमाग बन्द हो जाता है और सोच और समझ चली जाती है जैसे वो मर गया हो तो वो अनजानी चीज़ें देखता है जोकि दिमाग की पहुंच से बाहर होती है।" तो वो इन्कार कर देगा।यहाँ तक कि वो इस बात को नामुमकिन साबित कर देगा यह कहकर कि, "इन्सान अपने आजअू से आस-पास की चीज़ें महसूस

करता है।जब उसके यह आजअू काम नहीं करेंगे तो वो कुछ नहीं पहचानेगा।" और वो इसकी वजहे बड़े अकड़ कर बताता है।जैसे महसूस करने वाले आजअू, अक्ल मसलों को नहीं समझ सकते उसी तरह, अक्ल भी नबुव्वत उन चीज़ों को नहीं पहचान सकती जिन्हे नबुव्वत जानती है।

वो जो नुबुव्वत के वुजूद पर शक करते है, वो शक करते है इसके मुमकिन होने पर या अगर इसका मुमकिन होना कुबूल है वो उसके होने पर शक करते है।इसका होना और वुजूद होने का सबूत है कि नबी वो बातें बताते है जो अक्लमन्द की कुव्वत से बाहर हैं।यह जानकारी, जो किसी अक्लमंद से नहीं ली जा सकती, हिसाब या प्रयोग सिर्फ अल्लाह के **इहलाम** से लिए गए थे।(अल्लाह तआला या उसके फरिश्तों के ज़रिए दिल में रखी गई प्रेरणा, यानि नबुव्वत की ताकत के ज़रिए) नबुव्वत की ताकत की और भी खुसूसियात है।ख़्वाब इसकी एक ताकत से मिलते जुलते है, इन्सान में है, हमने इसे एक मिसाल के तौर पर बताया है।इसकी दूसरी ख़ासियत जौक़ (चखने, संवेदनशीलता) के ज़रिए उन लोगों पर नाज़िल होती है जो तसव्वुफ के रास्ते पर कोशिशे करते है।जो ख़ासियतें हमने बताई है वो काफी है एक शख़्स को नबुव्वत के में यकीन कराने के लिए।इमाम मुहम्मद गज़ाली, भी अपनी किताब **अल मुनकिद मिनद दलाल** में इस ख़ासियत को नबुव्वत पर यकीन के मुताबिक सबूत के तौर पर लिखते हैं।

पुराने ग्रीक फिलोस्फरों के मुताबिक, नबुव्वत में यकीन रखना फायदेमन्द है।वो कहते है, "नबुव्वत में यकीन रखना अक्ल में मदद करता है।वुजूद में ध्यान लगाना, अल्लाह की ताकत और इल्म इससे मिलता जुलता है।साथ ही अक्लमन्द की कुव्वत से बाहर की कई चीज़ें इन्सान नबी से सीखता है।इसकी मिसाल है आख़िरत, दूसरी दुनिया का इल्म, अच्छी बुरी चीज़ों का खुलासा, और जानना कि कुछ खाने और दवाईयां नुकसानदेह है या नहीं।"

वो जो नबुव्वत में यकीन नहीं रखते कहते है:

1- वो शख़्स जिसे नबी बनाकर भेजा गया है उसे पता होना चाहिए और यह कहने वाला, "मैने जिसे तुम्हारे पास भेजा है वो नबी है। मेरा पैगाम फैलाओ।" वो अल्लाह है। और उस बारी में अल्लाह को जानना मुमकिन नहीं है। यह लफ्ज़ बोलने वाला जिन भी हो सकता है। हर मज़हब के लोग जिनों में यकीन करते है।

जवाब: जो शख़्स नबी के तौर पर भेजा गया है उसके मोजिज़ात उसको साबित करते है। अल्लाह तआला वाहिद है जो मोजिज़ा बना सकता है। जिन ऐसा नहीं कर सकते। और न ही कोई और मख़्लूक।

2- "वो फरिश्ता जो नबी के पास वही लेकर आता था अगर एक माद्दा था तो जो लोग वहाँ मौजूद थे वो उन्हे भी दिखाई देना लाज़िम था। आप भी यही कहते है कि उसे देखा नहीं गया। अगर वो एक माद्दा नहीं सिर्फ रूह थी तो उसे सुनना या देखना नामुमकिन था। अगर आपका जवाब है: जो फरिश्ता नबी के पास अल्लाह की वही लाता था वो एक माद्दा था। अल्लाह ने चाहा कि वो न देखा जाये, जोकि उसकी ताकत में है, तो यह ज़रूरी नहीं कि हम हमारे सामने किसी पहाड़ को देखे या हमारे बराबर में बज रहा कोई ढोल सुने, जो कि दकयानूसी बात है।"

जवाब: जो वही लाता था वो एक फरिश्ता था। एक फरिश्ता साफ, पारदर्शी शय है। यह अल्लाह का कानून नहीं है कि वो रंगहीन और पारदर्शी चीज़ों को ज़ाहिर करे। तो वो रंगहीन और पारदर्शी था इसलिए उन्हे नहीं देखा गया। यह दक्यानूसी बात होगी अगर हम कहें कि ठोस चीज़ों को नहीं देखा जाता। किसी रूह के लिए दिखने लायक शक्ल इख़्तियार करना मुमकिन है, बोलना और सुनाई देना भी, जोकि कई बार हुआ है।

3- “नबी पर ईमान रखने के लिए यह समझना ज़रूरी है कि वो एक नबी है।और यह एक लम्बी जांच परख के बाद ही मुमकिन है।उसे उसी वक़्त मानने की ज़िम्मेदारी बेतुका भी है।”

जवाब: नबी के मोजिज़ा देखने के बाद उसके सच पर भरोसा न करना नामुमकिन हो जाता है।जिन्होने इसे देखा या सुना हो उन्हे यह सच फौरन मान लेना चाहिए।

4- “यह एक नबी का काम है कि अच्छी चीज़ों का हुक्म देना और नुकसानदेह चीज़ों से बचाना।और यह इन्सान के लिए मजबूरी और ज़बरदस्ती का सबब बनती है। ‘अल्लाह ने इंसान हरकत बनाई है; आदमी का इन हरकतों में कोई हाथ नहीं है।’ यानि इसका मतलब है इन्सान को वो करने पर मजबूर करना जो वो नहीं कर सकता।”

जवाब: बन्दे की ताकत का, अपनी हरकत की मख़्लूक पर कोई असर नहीं पड़ता, पर वो अपनी मख़्लूक की कामना कर सकता और बना सकता है।इसे **कस्ब** कहते है।इन्सान अपनी कस्ब कुव्वत को इस्तेमाल करने का हुक्म दिया हो।

5- हुक्म को मानना इन्सान को थका देता है और न मानने से वो अज़ाब में रहेगा।बन्दे के लिए दोनों चोर नुकसानदेह है।अल्लाह हाकिम है, दो नुकसानदेह चीज़ें नहीं करता।

जवाब: इसपर हमारा जवाब यह होगा कि सारे हुक्म इस दुनिया और आख़िरत दोनों के लिए फायदेमन्द है।जितनी मेहनत इन्हे करने में लगती है उससे कई गुना ज़्यादा इसके फायदे हैं।थोड़ी सी मेहनत करके कई फायदों को खो देना कमअक्ली है।

6- "अगर थकन के बदले में जो ऐसा हुक्म को पूरा करने में हुई हो कुछ फायदा न मिले तो ऐसा हुक्म देना बेतुकी बात है। अगर उसमें फायदे है और वो सारी अल्लाह के लिए ज़रूरी है, तो इसका मतलब है कि उसे अपने बन्दों की ज़रूरत है, जोकि सच के बिल्कुल उल्टे है। अगर वो इन्सान के लिए फायदेमन्द है तो यह उनका हुक्म देना और उसे न पूरा करने वालों को अज़ाब देना सही नहीं है। यानि इसका मतलब ये हुआ, या तो वो करो जो तुम्हारे लिए फायदेमन्द है या मैं तुम्हे हमेशा अज़ाब में रखूँगा।"

जवाब: अक्ल जिसे ख़ूबसूरती, बुरा या बेतुका समझती है वो हमेशा वैसा नहीं होता। और न ही यह कहना सही है कि अल्लाह की हर मख़्लूक फायदेमन्द है। हम इसे आगे साबित करेंगे। अबदी अज़ाब इसलिए नहीं दिया जायेगा क्योंकि किसी फायदेमन्द चीज़ को नहीं अपनाया बल्कि इसलिए दिया जायेगा क्योंकि बन्दे ने अपने ख़ालिक अपने मालिक का हुक्म नहीं माना। उसका न मानना कुफ्र, नापाकी और उसके प्रति अपमान है।

7- "जबकि अल्लाह तआला जानता है कि उसका बन्दा यह नहीं कर सकेगा या करना नहीं चाहेगा जो कि उसके लिए फायदेमन्द हो? ऐसा हुक्म क्या उसके बन्दे के लिए बुरा और नुकसानदेह न होगा?

जवाब: जैसा हमने ऊपर लिखा है कि अगर हम मान भी ले कि ऐसे हुक्म को मानना बन्दे के लिए नुकसानदेह हो सकता है पर बड़े ईनाम हासिल करने के लिए चाहिए होता है छोटी परेशानियों को पार किया जाये। मुताज़िला के मुताबिक, इस्लाम के **72** फिरकों में से एक, किसी काफिर का अल्लाह तआला के हुक्म और मनाहियों को मानने के लिए समझाने पर कुछ ईनाम है। उसे हिम्मत देकर सवाब कमाने के लिए कहना भी अहम है। सवाब वो रहमत है जो उस बन्दे के लिए होती है जो पूरे तजवीज़ के साथ अल्लाह के हुक्मों को पूरा करे। यह रहमत तजवीज़ से नहीं आता। मसलन, कोई बन्दा

किसी को खाने पर बुलाता है पर वो उसे दावत नहीं देगा तो अपनी नीयत ज़ाहिर नहीं कर पायेंगा। इस मसले पर मैं मुसलमान सोचने वालो के बयानों की रिवायत करना ज़रूरी समझता हूँ:

अल्लाह तआला ने इन्सान को कमज़ोर और ज़रूरतमन्द बनाया है। उसे खाना, कपड़े, रिहाइश, अपने दुश्मनों से हिफाज़त और भी कई चीज़ों की ज़रूरत होती है। एक आदमी अपनी ज़रूरतें ख़ुद पूरी नहीं कर सकता। इसके लिए उसकी ज़िन्दगी बहुत छोटी है। उसे दूसरे से साझेदारी बनानी होगी और साथ रहना होता है। एक आदमी अपनी बनाई हुई चीज़ दूसरे को देता है और दूसरा उसके बदले में उसे वो चीज़ देता है जिसकी उसे ज़रूरत होती है। यह साथ की ज़रूरत को ऐसा कहा जाता है कि "इन्सान को सभ्य बनाया गया है।" सभ्यता में रहने की एक ज़रूरत इंसाफ भी है। हर कोई वो चाहता है जिसकी उसको ज़रूरत होती है। इस चाहत को 'शहवा' कहते है। वो गुस्सा होता है अगर कोई उसका फायदा उठाता है। चीख पुकार, जुल्म और बुराई उनमें पैदा होती है। सभ्यता टूट जाती है। एक सभ्यता में तिजारत जारी रखने और इंसाफ कायम रखने के लिए कई सिधांतों का जानना ज़रूरी है, और हर एक सिधांत कानून बनता है। उन्हे एक सही तरीके से समझना ज़रूरी है। अगर इन्हे बनाने में इन्सान एक राय नहीं होते तो झगड़ा फिर शुरू हो जाता है। इसलिए इन्सानियत को सबसे आला शख़्स को इसे बनाना चाहिए। उसके फैसलों को कुबूल करवाने के लिए उसका ताक़तवर होना ज़रूरी है और यह जानना ज़रूरी है कि वो फैसलें उसकी तरफ से ही आये है। मोजिज़ा इसी तरह के सबूत है। वो जो अपनी ख़्वाहिशातों और शहवा के पीछे भागते है उन्हे इस्लाम पसन्द नहीं आता। वो इसके कानूनों का पालन नहीं करना चाहते। यह दूसरो का हक तोड़ते है और गुनाह करते है। जो इस्लाम का पालन करेगे उन्हे सवाब मिलेगा और जो नहीं करेगा उसे अज़ाब, यह ऐलान इस्लाम को और मज़बूत बनाता है। इसके लिए जिसने यह हुक्म दिया है और जो सज़ा देगा उसे

जानना ज़रूरी है। इसलिए इबादत का हुक्म दिया गया। हर दिन इबादत करके वो याद रहता है। इबादत की शुरूआत होती है मानने से और उसके वुजूद पर ईमान लाने से, उसके नबियों और बरकत और दूसरी दुनिया के अज़ाब पर ईमान लाने से।

इबादत करने और ईमान लाने से तीन चीज़ें निकलती है: बन्दा खुद की हवस से निजात पाता है; दिल और रूह पाक होती है, और बन्दे को गुस्सा नहीं आता; हवस और गुस्सा, बनाने वाले को याद करने में बाधा डालते है। दूसरे बन्दों को महसूस करने वाले आजअू के अलावा के अलग-अलग एहसास होता है माद्दो के ज़रिए। तीसरा, जैसा कि पता है कि अच्छे काम करने वाले को सवाब और बुरा करने वाले को अज़ाब मिलेगा इससे इन्सानों में इन्साफ कायम होता है। यह बयान मुसलमानों का मुताजिला के बयान से मिलता है कि, "मसलों का फायदेमन्द होना सही है।"

8- "अगर बहुत पहले ही किसी फर्ज़ का होना अल्लाह ने लिख दिया है, जैसे हिदायत नामुनासिब बेतुका और बेतर्क होगी। तो किसी फर्ज की हिदायत देना जो अटल है बेकार है। दूसरी तरफ, जो फर्ज पहले नहीं लिखे गए उनको कराना सताने वाली बात होगी। इसका मतलब हुआ, "नामुमकिन को करो!"

जवाब: अगर इन्सान वो फर्ज पूरा कर सकता है तो यह सताना या तकलीफ देना नही हुआ उस हुक्म को पूरा करना। अल्लाह तआला ने इन्सान की कुव्वत के मुताबिक ही हुक्म दिए है। इस सवाल पर हमारा जवाब, हुक्मों को मद्दे नज़र रखते हुए उसी तरह होगा जैसा कि अल्लाह तआला के बनाने पर सवाल था। यानि, यह नहीं कहा जा सकता कि अल्लाह तआला को वो बनाना पड़ेगा जो बहुत पहले लिखा जा चुका है। और न ही यह कहा जा सकता है कि अल्लाह तआला वो नहीं बना सकता जो बहुत पहले लिखा जा चुका है।

9- "हुक्म जो जिस्म के लिए मुश्किल है वो इन्सान को अल्लाह के वुजूद को जानने से रोकता है।और इससे इन्सान का बाकी काम करने के लिए वक्त नही मिलता।

जवाब: हुक्म के फायदों से इन्सान अल्लाह के वुजूद और ज़िन्दगी के तरीकों को जानता है।हमने इसका जवाब वज़ाहत से ऊपर सातवे सवाल में दिया है।[हुक्मों का मानना इस्लाम में लाज़िम है यानि, हुक्म पूरा करने की ज़रूरत को जानना और मनाहियों से बचना।अगर कोई सारे हुक्म मानता है और सिर्फ एक हुक्म नहीं मानता और उसका अपमान करता है तो उसने मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर ईमान खो दिया।वो एक काफिर हो गया।मुसलमान होने के लिए सारे हुक्मों पर ईमान लाना ज़रूरी है।अगर कोई मुसलमान, हालांकि वो हुक्मों पर ईमान रखता है पर नाफरमानी करता है मसलन, सुस्ती की वजह से नमाज़ न पढ़ना, या अपने बुरे दोस्तों के साथ देना या नफ्स का शराब पीना, लड़कियों और औरतों के मामले में बिना अपने सिर और हाथ ठके घर से बाहर जाना, तो वो अपना ईमान नहीं खोते और न काफिर बनते है।ऐसा इन्सान एक नाफरमान और गुनाहगार मुस्लिम होता है।अगर वो जानकर एक भी हुक्म को पूरा नहीं करना चाहता यानि कुबूल नहीं करता और उसे अपना फर्ज़ नहीं समझता तो वो ईमान खोकर **मुरतद** हो जाता है।ऐसे बयान जैसे, "क्या होगा अगर मैं नमाज़ नहीं पढ़ँगा और नंगे सिर बाहर जाऊंगी? लोगों के साथ रहना और उनके लिए अच्छे काम करना माफ़ से बरतर है," का मतलब है कुछ हुक्मों को मानना और कुछ को नकारना।हर मुसलमान को इस बात पर ज़रूर ग़ौर करना चाहिए, और वो जो हुक्मों का पालन नहीं करते वो अपना ईमान खोने से होशियार रहे।किसी हुक्म को नज़रअन्दाज़ करना अलग बात है उसे न करना चाहने से।इन दोनों में भरमाना नही चाहिए।]

10- "एक अक्लमन्द वो काम करता है जो उसे फायदेमन्द लगता है और उस काम से बचना है जो उसे लगता है नुकसानदेह है। जब उसे इसमें फर्क नहीं पता चलता वो चीज़ फायदेमन्द है या नुकसानदेह तो वो उसे करता है अगर उसकी ज़रूरत होती है। अक्लमन्द के इस काम को देखते हुए नबियों को भेजना ज़रूरी नहीं था।"

जवाब: ऐसी कई चीज़ें है जो या तो एक अक्लमन्द समझ नहीं सकता या गलत समझता है और उन्हे नबियों के ज़रिए सिखाना ज़रूरी है। एक नबी एक खास डॉक्टर की तरह होता है। वो दवाईयों के असर को अच्छी तरह जानता है। हो सकता है कि किसी आम आदमी ने कई सालों के तजुर्बे के बाद और अपनी अक्ल से कुछ दवाईयां बना ली हो पर उस अक्लमन्द आदमी ने हो सकता है इसे सीखने में कई नुकसान झेले हो, और इसमें काफी वक़्त और काम करना पड़ा होगा। उनके पास अपनी अक्ल से दूसरे ज़रूरी काम करने का वक़्त नहीं बचा होगा। डॉक्टर को थोड़े से पैसे देकर वो दवाईयों को फायदा ले सकता है और अपनी बीमारी ठीक कर सकता है। नबियों को ग़ैर ज़रूरी कहना, डॉक्टरों को ग़ैर ज़रूरी कहने जैसा है। चूंकि नबियों के ज़रिए सिखाये गए हुक्म अल्लाह तआला की नाज़िल की हुई वही है जोकि सब सच और फायदेमन्द है। एक डॉक्टर का इल्म जो काफी तजुर्बे और काम के बाद आता है उसे भी पूरी तरह सच्चा नहीं कहा जा सकता।

11- "मोजिज़ा का वजूद काबिले कुबूल नहीं है। चूंकि यह एक मामूली हादसों से अलग है, यह ऐसा नहीं है जिसे एक अक्लमंद कुबूल कर सके। इसी वजह से नबुव्वत का भी कोई तुक नहीं है।"

जवाब: एक मोजिज़ा से ज़्यादा बड़ी हैरत है ज़मीन और आसमान का ख़ल्क होना। अगर किसी चीज़ का कुदरती कानून से हट कर होना नामुमकिन है तो इसका मतलब यह नहीं कि चमत्कार भी इन कानूनों से हटकर नहीं हो

सकते। औलियाओं और नबियों के ज़रिए सदियों से चमत्कार होते आ रहे है। एक अक्लमन्द आदमी इसे नहीं नकार सकता। एक मोजिज़ा को दिखाने का मकसद होता है नबी की सच्चाई साबित करना। यह एक चमत्कार होना चाहिए; कुदरती कानूनों के ज़रिए हुई चीज़ों को मोजिजा नहीं कहते।

12- "एक मोजिज़ा नहीं बता सकता कि नबी सच बोल रहा है। यह पक्का नहीं है कि मोजिज़ा अल्लाह की तरफ से किया गया है या नबी की तरफ से ख़ुद। जादू भी एक चमत्कार है। आप भी जादू में यकीन करते हो।"

जवाब: अक्लमंद अलग-अलग मुमकिनात सामने रख रहा है जैसे, थ्योरी और हायपोथीसिस, तजुर्बे और आजओ के ज़रिए महसीस करे गये इल्म को झूठा नहीं कह सकते। किसी चीज़ का होना हमें उसे ग़ैरवजूदी होने पर सोचने से नहीं रोक सकता। अल्लाह तआला अकेला हर चीज़ को वजूद में लाता है जैसे ऊपर वज़ाहत की गई है। दूसरे लफ्ज़ों में एक मोजिज़ा अल्लाह बनाता है नबी नहीं। चूंकि हर कोई जादू नहीं कर सकता, वो नबी का समुंद्र को दो टुकड़ों में बांट देना, एक मुर्दे को ज़िन्दा करना, अन्धे को आंख की रौशनी वापस लाना, और एक लाइलाज बीमारी का इलाज करने को इससे नहीं मिलाते। इसलिए वो मोजिज़ा जो चमत्कार है उसमें उलझे हुए है।

13- किसी मोजिज़ा का पता लगना या तो उसे देख कर होता है या तवातुर (**तवातुर** एक ऐसी फैली हुई रिवायत होती है या ऐसे सबूत के साथ दस्तावेज़ होते है जिसे नकारा नहीं जा सकता) की रिवायतों से सुनी गई हो। एक रिवायत को सच्चा नहीं माना जा सकता चाहे वो तवातुर ही क्यूँ न हो। तो जिन लोगों ने मोजिज़ा नहीं देखा वो नहीं जानेगे कि नबी क्या है क्योंकि उनमें झूठे होते है जो झूठा तवातुर फैला देते है, जिसे सब जानते है।

जवाब: दुनियावी सभी मसले जो भी तवातुर के ज़रिए पता चले है उनपे यकीन किया गया है। जैसा कि एक सच है कि एक शहर है जिसका नाम दिल्ली है, जैसे ज़मीन, चांद से बड़ी है और सूरज से छोटी, जैसे मुहम्मद ने इस्तानबुल पर फतह हासिल की थी ग्रीक से में सब दूसरो से सुन कर यकीन किया गया है।

14- हमने मज़हब पढ़े है। हमने कुछ चीज़ें पाई जो सांईस से इस्तिलाफ रखती है। तो हम इस नतीजे पर पहुंचे है कि यह अल्लाह की तरफ से नाज़िल नहीं हुई। इसकी मिसाले है किसी जानवर को तकलीफ पहुँचाना उसे खाने के लिए इसकी इजाज़त देना, कुछ वक़्तों पर रोज़ा रखना, कुछ लज्ज़तदार चीज़ों को खाने पीने की मनाही, कुछ जगहो पर जाने का हुक्म जबरदस्ती, साये और तवाफ करना और पागल लोगो और बच्चों की तरह बिना किसी लक्ष्य के पत्थर मारना, एक बिना कीमती पत्थर को चूमना, एक आज़ाद और भद्दी लड़की की तरफ देखने से मनाही पर एक खूबसूरत जारिया को देखने की इजाज़त।

जवाब: चाहे अक्लमन्द अच्छे बुरे का फर्क कर पाता और हमें यह मानना पड़ता कि अल्लाह तआला को अपने इन्सानी बन्दों को फायदेमन्द चीज़ें करने का हुक्म देना चाहिए, यह ज़ाहिर है कि उस अक्लमन्द के पास उस काम के फायदे को पहचानने की कुव्वत नहीं जो उस सवाल में है। अक्लमन्द की यह न पहचानने की नाकामी का यह मतलब नहीं कि उस काम में फायदा नहीं। अल्लाह तआला ने यह हुक्म दिए है चूंकि वो इसके फायदे जानता है। जैसा हम पहले कह चुके है कि ऐसी कई चीज़ें है जो एक अक्लमन्द के ज़रिए नहीं समझी जा सकती पर नबुव्वत के ज़रिए समझाई जा सकती है। हम दूसरे निबन्ध में इस बात की वज़ाहत करेगें।

परिचय - II

4- मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नुबुव्वत का सबूत

नेकी और वाक्ये ऐसे कई फायदे रखते है जोकि एक अक्लमन्द की समझ से परे है, तो कई दफा वो इसके फायदों को नकार देता है। हमें इन फायदों के वुजूद को साबित करने के लिए सबूत के साथ बात करनी है। कुछ दवाईयाँ कुछ इन्सानों को मार देती है जब उन्हे कम मिकदार में दिया जाये, पर वो कुछ लोगों को कोई नुकसान नहीं पहुँचाती हत्ता कि उन्हे ज़्यादा मिकदार में दी जाये। [इसकी मिसाले **सआदते अबदिया** में दी गई है, सनक और एलर्जी के मामले में] कई लोग इस पर यकीन नहीं करते, हालांकि यह तजुर्बे से बनी है। वो हत्ता कि इसके उल्टे, साबित करने की कोशिश करते है। जैसा कि पुराने ग्रीक फिलोस्फरों और माद्दो की इबादत करने वाले ने किया, उन्होने नबियों के वुजूद से इन्कार किया और अपने कुफ्र के लिए वजहे सामने रखी। यह मानते हुए कि अल्लाहु तआला, नबी, जिन, फरिश्ते, जन्नत और जहन्नम उनकी अक्ल से समझे जा सकते है, उन्होने अपने दिमाग से बनाई हुई इन चीज़ों को भी नकार दिया। अगर, कोई शख़्स जिसने कभी ख़्वाब नहीं देखा, उससे कहा जाये कि ख़्वाब में, "इन्सान एक ऐसी स्थिति में आ जाता है जिसमें उसके आजअू, तर्क और सोच में ख़लल पैदा हो जाता है, और इस स्थिति में इन्सान वो चीज़ देखता है जो उसकी अक्ल से परे होती है," तो उसपे यकीन नहीं करेगा; वो कहेगा यह नामुमकिन है। अगर उससे कहा जाये कि इस दुनिया में एक छोटी चीज़ है, जिसे अगर किसी शहर में रख दिया जाये तो वो पूरे शहर

को तबाह कर देगी। फिर वो ख़ुद को तबाह कर देगी। वो जवाब देगा कि यह नामुमकिन है। जबकि, यह लफ़्ज़ आग के बारे में बताते है। वो जो आसमानी मज़हबों और आख़िरत की ज़िन्दगी को नकारते है वो इसके जैसे है। वो शक के अमानती साईन्सदानों पर यकीन करते है और ज़रूरी सावधानी बरतते है जब वो कहते है अनुमान और शक से हटकर, कि तबाही नज़दीक है, पर वो नबियों के ज़रिये बताई गई इस दुनिया के ख़तरे और आख़िरत पर यकीन नहीं करते, जिनकी सच्चाई को सब अच्छी तरह जानते है और जिन्होने कई मोजिज़ा दिखाये है। पर वो जहन्नम के अबदी और नाकाबिले बयान अज़ाब के लिये कोई तय्यारी नहीं करते। वो इबादत को बच्चो का खेल और पागलपन समझते है, जिसकी कीमत नबियों ने समझाई है।

सवाल: नखरी चीज़ें जिनके बारे में फिलोस्फरों ने बताया है जैसे मद्दियत और डॉक्टर पर यकीन किया गया है क्योंकि यह खोजी और आज़माई हुई है। इबादत पर यकीन नहीं किया गया क्योंकि इसके फायदों का तर्जुबी नहीं हुआ है।

जवाब: साईन्सदान के तर्जुबों (प्रयोग) को तबू माना गया जब उन्हे सुना गया। औलियों के तर्जुबा की हुई और हम तक पहुँचाई हुई रिवायते भी इसी तरह है। और इस्लाम से जुड़ी चीज़ों के फायदों को देखा और तर्जुबा भी किया गया है। [इसके अलावा, दवाईयों की तैयारियों में साईन्सदान और डॉक्टरों की कुछ चीज़ें फायदेमन्द भी लगी और तर्जुबा करने के लिए पैसा इकट्ठा करके उसपे लगाया भी गया पर बाद में पता चला कि वो नुक्सानदेह है। ऐसी दवाईयों की फहरिस्त स्वास्थ विभाग के ज़रिए जारी की जाती है और दवाईयों की दुकानों पर दी जाती है और इनपर न इस्तेमाल करने का लेबल लगाकर। ऐसी दवाईयाँ बनाने वाली फैक्ट्रीयों को हुक्मतों ने बन्द करवा दिया है। यह हर रोज़ अख़बार की ख़बर बन गई है कि जो दवा भले के लिए बनी थी नुकसान देने वाली साबित हो रही है। दुबारा रोज़ाना अख़बारों में साबित हो

रहा है कि एंटिबायटिक दवा से दिल की बीमारी और कैन्सर हो रहा है और कुछ डिटरनैन्ट सेहत के लिए ख़तरनाक साबित हो रहे है।] अगर इस्लाम के कानूनों के फायदे तर्जुबा (प्रयोग) करने से ज़ाहिर नही भी होता तब भी उन्हे मानना और उसकी ज़रूरत को पूरा करना सही होगा।मिसाल के तौर पर किसी चिकित्सक का अक्लमंद बेटा जिसे दवाईयों के बारे में कुछ नहीं पता बीमार हो जाता है।उसने अपने वालिद के बारे में कई लोगों से सुना है और अख़बार में उनकी कामयाबी के बारे में पढ़ा है और जानता है कि वो उससे बहुत प्यार करते है।और वालिद उसे दवा देकर कहता है कि यह दवा अगर लेते हो तो फौरन ठीक हो जाओगे।क्योंकि उसने उसे कई बार आज़मा रखा है।पर जब वो देखे कि दवा का इन्फेक्शन लगाया जायेगा और उसे दर्द होगा, तो क्या उसका अपने वालिद से यह कहना नहीं सही होगा कि, “मैने यह दवा कभी इस्तेमाल नहीं करी।मैं नहीं जानता कि यह मेरे लिए सही भी है या नहीं।मैं यकीन नहीं कर सकता कि आपके अल्फाज़ सही है।” दुनिया में कौन ऐसे जवाब को मानेगा?

सवाल: कैसे यकीन किया जाये कि एक नबी अपनी उम्मत को अपने बेटे की तरह चाहता है और इसके हुक्म और मानाहिया फायदेमन्द है?

जवाब: एक बाप की अपने बेटे के लिए मुहब्बत को कैसे जाना जाता है? यह मुहब्बत खुद में ज़ाहिर और हकीकी नहीं है।यह सिर्फ उसका उसके बेटे से बर्ताव, रवय्यै और बातों से पता चलता है अगर एक समझदार इन्सान रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की बातों पर ध्यान देता है और रिवायतें पढ़ता है जो आपके इन्सानों को सही राह पर लाने की मेहनत को बताती है।आपका सख़्ती लोगों के हक़ को बचाने के लिए, और आपके उदार और शफक्कत से अख़्लाक की मेहनत देखे तो वो साफ देखेगा कि आपने अपनी उम्मत से एक बाप अपने बेटे से जितनी मुहब्बत करता है उससे कई

गुना ज़्यादा की है।एक शख़्स जो आपकी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हैरान करने वाली कामयाबी का एहसास करता है।कुरआन करीम में आपकी हैरत अंगेज़ रिवायत पढ़ता है।जोकि आपकी ज़बान से ज़ाहिर हुई थी, और आपके बयान आख़िरत के ख़तरनाक मंज़र के बारे में, यह दिखाती है कि आपको किसी भी अक्लमंद की कुव्वत से ज़्यादा ऊँचा दर्जा हासिल था और बताये गए और ऐसे समझदार सच है जोकि किसी अक्लमंद की अक्ल से बाहर है।तो ये साफ है कि उनके सारे लफ्ज़ सही है।एक सही इन्सान जो सीखे और कुरआन करीम के इल्म पर ध्यान दे जो आपकी ज़िन्दगी पढ़े वो ख़ुद सच जान लेगा।इमाम मुहम्मद गज़ाली (रहमतुल्लाही तआला अलैह) ने फरमाया, "एक शख़्स जिसे शक है कि कोई नबी है या नहीं वो उनकी ज़िन्दगी के बारे में पढ़े या उनकी ज़िन्दगी से जुड़ी रिवायतों के बारे में।एक शख़्स जो दवाईयों का इल्म जानता हो या फिक का, वो दवाईयों या फिक के आलिमों की ज़िन्दगी या रिवायतों से जानकारी हासिल करता है।मसलन अगर पता लगाना है कि ईमाम शाफी (रहमतुल्लाही तआला अलैह) फिक के आलिम थे या नहीं, या केलीनोस एक भौतिज्ञ था या नहीं इसके लिए उनसे जुड़ी शाखाओं की जानकारी लेनी ज़रूरी है और फिर उन शाखाओं में उनकी किताबें पढ़नी पढ़ेगी।उसी तरह एक शख़्स जिसके पास नबुव्वत का इल्म हो और फिर वो कुरआन करीम और हदीस शरीफ पढ़े तो उसे समझ आ जायेगा कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) एक नबी है और नबुव्वत का सबसे आला दर्जा आपके पास है।और अगर के आपकी बातों के असर को सीखे जो दिल को पाक करती है और आपकी नाज़िल की हुई बातों पर अमल करे, जिससे उसका ख़ुद का दिल सच देखने लग जायेगा और उसका ईमान नबुव्वत पर पूरा यकीनी तौर पर हो जायेगा।वो लगातार सच के अहसास को पायेगा जैसा कि हदीस शरीफ में हैं कि, **"अगर कोई शख़्स अपने इल्म पर रहता है, अल्लाह तआला उसे सिखाता है जो वो नहीं जनता; "जो बुरे की मदद करता है उससे नुकसान पाता है; और जो शख़्स हर सुबह अल्लाह तआला का प्यार पाने की सोचता है।उसकी**

इस दुनिया और आख़िरत की ख़्वाहिशात अल्लाह तआला पूरी करता है।" तो उसका इल्म और ईमान मज़बूत रहता है।ईमान को ज़ौकी बनाने के लिए यानि उस दर्जा तक उठाने जहाँ वो महसूस करे जैसे वो सच देख रहा हो, उसके लिए तसव्वुत का रास्ता अपनाने की कोशिश करनी पड़ती है।

इस्लाम के आलिमों ने कई तरीकों से मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को अल्लाह का नबी साबित किया है।हम उनमें से कुछ की वज़ाहत करेंगे:

मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने ऐलान किया कि वो नबी है और मोजिज़ा दिखाये इसे साबित करने के लिए।यह सच इस वक़्त में तवातुर के ज़रिए पहुंचा है यानि एक मद से।सबसे बड़ा मोजिज़ा कुरान करीम है।

कुरान करीम **मोजिज़ा** है यानि उसकी बराबरी का कोई कुछ नहीं पैदा कर सकता है।वो चुनौती देता है: **"आगे बढ़ो और इसके पैस कहो!"** अरब के मशहूर शायरों ने कोशिश की, पर उसके जैसा नहीं कह पाये।सूरह तूर की 34वीं आयत ऐलान करती है। **"तो कहो इसके जैसा"** सूरह हूद की 13वीं आयत ऐलान करती है। **"कह दीजिए उनसे: "कुरान की दस सूरतों की तरह सूरह कह कर बताओ, तुम कहते हो मैने ख़ुद से कही है** सूरह बक़रा की 23वीं आयत ऐलान करती है: **"अगर तुम्हे कुरान में बयान की हुई बातों पर शक है जोकि हमने बन्दे मुहम्मद** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **पर नाज़िल किये तुम भी इसके जैसी एक सूरह कहने की कोशिश करो! इसे करने में उन सब की मदद लो जिनपर तुमको भरोसा है।तुम उसके जैसी एक भी सूरह नहीं कह पाओगे!"** उन दिनों अरब के लोगों को शायरी में बहुत दिलचस्पी हुआ करती थी।उनमें से कई शायर भी थे।वो शायरी के मुकाबले करते थे और विजेता पर गर्व करते थे।वो लोग एक जगह इकट्ठा हुए कुरान करीम की एक आयत के जैसी आयत तैयार करने के लिए।काफी कोशिश की अपनी नमाज़ों को मौहम्मद

(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास ले जाने से पहले उन्होने उन्हे कुरान करीम की आयतों से मिलाया।क्योंकि वो सूरा में एक सच्चाई देख सकते थे।उन्हे अपनी ख़ुद की शायरी पर शर्म आई और उसे रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास नहीं ले जा सके।आख़िरकार उनके पास कोई चारा नहीं बचा इल्म की बिना परदार मानने के अलावा।तो उन्होने तलवारे निकाली और मुसलमानों पर हमला बोल दिया।उन्होने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को कत्ल करने का फैसला किया।उन्होने पूरी साज़िश के साथ तैय्यारी की अपनी तरफ़ से पर जैसा इतिहास गवाह है।उन्हे शर्मनाक हार हासिल हुई।अगर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की खुली चुनौती के बाद और कई कोशिशों के बाद वो सूरह की कोई छोटी और फसीह आयत बना देते तो उसे पढ़ते और शोर मचा देते।इनका यह काम एक बातचीत का मुद्दा बन जाता और तारीख में शामिल हो जाता।यह इतना मशहूर हो जाता जैसे भाषण देने वाले को प्लैटफार्म पर ही मार दिया गया हो।उनकी नाकामी साफ ज़ाहिर करती है कि कुरान करीम एक मोजिज़ा है और वो इन्सान के लफ्ज़ नहीं है।

सवाल: मक्का के बाहर के शायरों ने शायद से ऐलान न सुना हो कि आयत कहती है: **"तुम भी इसके जैसा कहने की कोशिश करो"** या इसके जैसी कोई चुनौती मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के ज़रिए।या शायद उन्होने किसी फायदे के लिए ख़ुद की अलग रख दो या किसी और मकसद के लिए जो हम नहीं जानते।मसलन हो सकता हो उन्होने आपको कोई वादा किया हो मदद का।या शुरू में ही उनके ऐलान पर ग़ौर करा हो और जवाब न देने की गुज़ारिश की हो; पर बाद में जब उन्होने देखा कि उनकी ताकत बढ़ रही है और उनके मानने वालों की तादाद बढ़ रही है और उनके मानने वालो की तादाद बढ़ रही है तब उन्होने जवाब देने की हिम्मत नहीं की।या उस दर्जे के पास उस वक़्त, वक़्त नहीं था और वो अपनी रोज़ी रोटी कमाने में मशगूल

थे। और यह भी हो सकता है कि जवाब दिए गये हो पर उनके आगे के लोग उसे भूल गए और उसे अगली नसल तक नहीं पहुंचा सके किसी वजह से मसलन, ताकतवर और तादाद में ज़्यादा होने और तीन महाद्वीपों पर मुसलमानों की हुकूमत होने के बाद उन्होने इन कामयाबी के सबूतों को मिटा दिया हो। या ऐसी रिवायतें खो गई हो लम्बे वक़्त के गुज़रने के साथ।

जवाब: पिछले लेख में ऐसे कई शको के जवाब वज़ाहत से दिये गये है। मैने बयान किया है कि अगर अपने कानून के अन्दर अगर अल्लाह कुछ बनाता है यानि महसूसी के आज़अू के ज़रिए जो इल्म मिलता है और तर्जुबा लिया जाता है। वो वजहो का उल्टा होता है। वो उन्हे सिखाने से नहीं रोकते। मैने लिखा है कि आज़अू के ज़रिए सीखा गया इल्म वैसा ही है। अब हम ऊपर लिखे गये सवालों के जवाब वज़ाहत से और अलग-अलग देंगे। पहले तो यह कि जो शख़्स यह ऐलान करता है कि वो नबी है और मोजिज़ा दिखाता है और दूसरो को भी वैसा करके दिखाने की चुनौती देता है, और कोई वैसा नहीं कर पाता उससे नतीजा निकलना चाहिए। यानि उस पर भरोसा करना ज़रूरी है। बाद में उनके बाद कुछ कहना बेतुका अमान्य और बेकार है। यह भी कहना सही नहीं होगा कि हमने जवाब इसलिए नहीं दिया क्योंकि शुरू में हम उसे छोटा समझते थे और बाद में डरने लगे। क्योंकि यह एक बड़ी बात मानी जाती है कि कोई चुनौती दे और उसे पूरा करके भी दिखाये, ऐसे शख़्स को प्यार किया जाता है उसके काम के लिए और दुनिया में हर कोई उसकी तारीफ करता है। दुनिया में कौन होगा जो उसे पसन्द नहीं करेगा? अगर कोई शख़्स कोई चीज़ कर सकता है पर करता नहीं है तो इसका यह दिखायगा कि उसका दुश्मन सही और सच्चा था तीसरे शक के लिए, यह सब जानते है कि वो शख़्स जिसकी काबीलियत है उसे सिर्फ जवाब देना काफी नहीं बल्कि दिखाना भी ज़रूरी है; करके दिखाने से ही मसले का हल हासिल होगा। कुछ हालत की मौजूदगी जो किसी शख़्स को उस वक़्त के लिए महदूद

रखती है उसका मतलब यह नहीं कि वो हालत हमेशा वैसे रहेंगे। असल में खुला सबूत है कि लिखित जवाब को हमेशा छुपा कर रखना नामुम्किन है। तो सवालों में पूछा गया शक बेबुनियाद है।

इस्लामिक आथोरिटी ने कुरान करीम के **ईजाज़** होने पर मुख्तिलफ वज़ाहत दी है। उन्होने कहा कि कुरान करीम की शायरी हैरत अंगेज़ और निराली है; यह मोजिज़ा है क्योंकि इसका तरीका और अन्दाज़ अरब के शायरों से नहीं मिलता। शुरूआत सज की तरह है। [सज यानि लगातार कबूतर की कूक इस बात में इसका मतलब जुम्ले के आख़िर में तुक का मिलना] कुरान करीम में लफ़्ज़ी मायनों की जो अल्फाज़ है वो अरबी बोली से अलग है। जोकि वो कुरान करीम में नहीं दिखा सकते। जो शख़्स अरबी जानता है वो साफ देखता है कि वो ईज़ाज़ है। काज़ी बाकिल्लानी [अबू बकर बाकिल्लानी की वफ़ात 400 A.H. में हुई] ने कहा कि इसका ईज़ाज़ की शाखा इसकी बुलन्द सच्चे लफ्ज़ और हैरत अंगेज़ शायरी है। दूसरे लफ्ज़ों में इसकी शायरी थोड़ी अलग है। कुछ कहते है कि इसके ईज़ाज़ का होना इसके ग़ैब की बातों के बताने से पता लगता है। मसलन सूरह खम की तीसरी आयत **"हालांकि वो जीत गये है पर 10 सालों में हराये जायेगे"** बताती है कि फुस्तनतुनिया का बादशाह हरक्यूलिस [हरक्यलिस ने 20 A.H. में वफात पाई] दस साल बाद इरानी शाह हुसरौ परवेज़ को हरायेगा। और वैसाा ही हुआ जैसा लिखा था। कुछ उलेमाओं के मुताबिक कुरान का ईज़ाज़ इसके तज़ाद और बेजोड़पन से है हत्ता कि यह बहुत लम्बा और दोहराया हुआ है। इसी वजह से सूरह निसा की 81वीं आयत ऐलान करती है कि **"अगर कुरान करीम अल्लाह का कलाम नहीं होता तो इसमें कई गलतिया होती"** कुछ के मुताबिक कुरान करीम का ई ज़ाज़ उसके मायनों में है। हमारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पहले अरब के लोग कुरान करीम के जैसे बयानात लिख सकते थे पर अल्लाह ने उन्हे कुरान करीम जैसा लिखने से बचा रखा। कैसे उसने बचाया यह कई तरह

से वाज़िज है।अबू इशाक इब्राहिम अल-इस्फारा ईनी [इब्राहिम निशबूरी का इन्तिकाल हिजरत के 400 के बाद हुआ] अहले सुन्नत के एक उस्ताद और अबू इशाक निज़ाम अल बसरी मुताजिल के कहते है कि दुनियावी फ़ायदा को खाने के डर ने उन्हे रोके रखा।

वो जो ये नहीं मानते के कुरआन अल-करीम मुजिज़ है कहते हैं एजाज़ ज़ाहिर हो गया है।ये हक़ीक़त है के वहाँ पर एजाज़ की बहुत सारी वज़ाहते हैं जो पक्की तौर पर बताती हैं के इसका मतलब नहीं जानता।इसके जवाब में, उलेमा कहते हैं के इस लिहाज़ से ये वज़ाहतें ये नहीं ज़ाहिर करती के कुरआन अल-करीम मुजिज़ नहीं हैं।कुरआन अल-करीम की फ़साहत, उसकी नहमवार शायरी, वो जानकारी जो किसी नमालूम का ज़िक्र करे और अक़ल जो रखी हुई है ईल्म और महारत के और दूसरे बहुत से अजज़ा एजाज़ के, जो ऊपर बताए गए हैं उनकी तरह, वो पूरी तरह अयॉ/ज़ाहिर है।मुख़्तलिफ़ वज़ाहतें, जो पैदा हुई हैं आदमियों के ख़यालात और समझने में इख़्तिलाफ होने की वजह से, इससे ये पता नहीं लगता के ये मुजिज़ नही है।अगर ऊपर बताई गई ख़ासियतों में से जो हमने बताई हैं कोई एक किसी के ज़रिए नहीं मिल पाती तो वो मुजिज़ होने का सबब बनती है, इसका मतलब ये नहीं होता के सबका मतलब ये नहीं है के वो मुजिज़ हैं।बहुत से शायरों इंतहाई फ़सीह नसर और नज़म पैदा की हैं, लेकिन दूसरे दिए गए वक़्त में वो ऐसा नहीं कर पाए।वो ये, एक बार हासिल करने का मतलब ये नहीं है के कोई इसे हर वक़्त कर सकता है।एक समूह के लिए ज़रूरी नहीं है के वो हर ईकाई की अपने अंदर ख़ासियत रखे।ये जवाब इस बात की दलील है के कुरआन अल-करीम पूरे तौर पर मुजिज़ है लेकिन इसकी छोटी सूरतें हो सकता है मुजिज़ न हो।लेकिन ये सही नहीं है; जैसा के हम पहले भी समझा चुके हैं, इसकी सबसे छोटी सूरह भी मुजिज़ हो सकती है।इस तरह कहा जा सकता है के इस जवाब का मतलब है के हर लिहाज़ से पूरा कुरआन अल-करीम मुजिज़

है लेकिन इसकी सूरतें सिर्फ़ कुछ लिहाज़ से मुजिज़ हैं। बरहाल, ये ऊपर पूछे गए सवाल का जवाब नहीं हो सकता। ये सवाल इसका एजाज़ होने की वजह का साफ़ वज़ाहत माँग रहा है। इसलिए, ऐसे तर्जुमा इस जवाब का एजाज़ के सबब को खोलता नहीं है।

उनका दूसरा मज़मून के ख़िलाफ़ इर्शाद है: "वो सहाबा कुरआन अल-करीम के कुछ हिस्सों के बारे में शक़ में थे। अब्दुल्लाह इबनि मसऊद [रज़ि-अल्लाहु अनह] ने कहा के सूरह अल-फातिहा और माऊज़तीन [दोनों सूरतें "कुल-अऊज़ु" के साथ शुरू हुई।] कुरआन में से नहीं हैं। बहरहाल, ये तीनों सूरतें कुरआन की सबसे नामी सूरतें हैं। अगर उनमें जो फ़साहत है वो एजाज़ की ईकाई में है, तो वो साफ़ तौर पर कुरआन के असल से मिलता हुआ है, और कोई उसमें शक नहीं कर सकता के वो कुरआन की हैं।"

जवाब: सहाबत अल-किराम कुछ सूरतों में शक करते हैं के वो कुरआन अल-करीम की नहीं हैं उसकी फ़साहत या एजाज़ की वजह से नहीं वो इसलिए क्योंकि ये हर सूरते वो सिर्फ़ एक शख़्स के ज़रिए बताई गई हैं। उसूल अल हदीस के कानून के मुताबिक़, जानकारी एक ख़बर देने वाला जो अरसां करता है वो पक्की नहीं होती बल्कि वो शक से भरी होती है। जो चीज़ तवातुर रवाना होती वो पक्की जानकारी बन जाती है। कुरआन शरीफ़ तवातुर के ज़रिए ताईद किया गया, वो ये, हम ख़्याली/इतेफ़ाक के साथ। इस सबब की वजह से, ये पक्के तौर पर जाना गया के कुरआन अल-करीम अल्लाहु तआला के लफ्ज़ हैं। ये भी पक्के तौर पर जाना गया के वो सूरतें जो सिर्फ़ एक ख़बर देने वाले के ज़रिए रवाना की गई वो अल्लाहु तआला ने मौहम्मद (अलैहिस्सलाम) पर ज़ाहिर की और जो एजाज़ की ईकाई के अंदर फ़सीह की गई। बहरहाल, वहाँ पर ग़ैर रज़ामंदी है के क्या ऐसा है या नहीं के वो कुरआन अल-करीम में शामिल हैं, जो हमारे काम के ख़िलाफ़ कोई नुक़सान नहीं लातीं।

उनका तीसरा मज़मून के ख़िलाफ़ बयान है: "जबके कुरआन अल-करीम तालीफ़ किया जा रहा था [रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बाद गुज़रने के बाद और जबके हज़रत अबु बकर अस-सिद्दिक (रज़ि-अल्लाहु अनह) ख़लीफ़ा थे], अगर एक शख़्स जो के अच्छी तरह जानने वाला नहीं होता था एक आयत की ख़बर लाता था तो उसे या तो हलफ़/कसम खाने की ज़रूरत पड़ती थी या दो गवाही लानी पड़ती थी क्योंकि उनकी वफ़ादारी/सच्चाई पक्की नहीं होती थी; इसलिए, सिर्फ़ ये समझने के बाद के ये कुरआन अल-करीम का है तो उसे कुरआन अल-करीम में शामिल किया जाता था। अगर एक आयत की फ़साहत एजाज़ के मरतबे की होती थी, तो उसे उसकी फ़साहत से नतीजा निकाला जाता था के वो एक आयत है और उससे उस शख़्स की सच्चाई साबित होती थी जो उसकी ख़बर लाता था; एक हलफ़ या दो गवाहियों की ज़रूरत नहीं पड़ती थी।"

जवाब: ये शर्ते सब तरतीब में रखी जाती थी आयात की जगहों को कुरआन अल-करीम में तए करने के लिए और ये जानने के लिए अगर एक आयत मुक़दम हो रही है या दूसरी का पीछा कर रही हैं। उनका ये इरादा नहीं होता था के वो इशारा करें के क्या वो हैं या नहीं हैं कुरआन अल-करीम में। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) कुरआन अल-करीम की किरअत किया करते थे और जो किरअत करते थे उनकी सुनते भी थे। ये ख़ास तौर पर जाना जाता था के हर आयत जो ज़ाहिर हुई है वो कुरआन अल-करीम में से थी। एक हलफ़ या गवाहियों की ज़रूरत पड़ती थी आयात की तरतीब की तहक़ीक करने के लिए। इसके अलावा, उनकी फ़साहत एजाज़ के मरतबे में होने की वजह से ये दिखाई देता था के वो आयात थीं। अगर एक या दो आयतें एजाज़ के मापने में नहीं आती थी, तो उसकी कोई एहमियत नहीं होती थी। चूँकि सबसे छोटी सूरह में तीन आयात होती थी, सारी कुरआन अल-करीम की सूरतें मुजिज़ हैं।

उनका चौथा मज़मून के ख़िलाफ़ बयान: “हर फन की शाखा की एक सरहद, एक हद होती है। वो उससे आगे नहीं बढ़ सकती। वहाँ पर हमेशा एक मास्टर/माहिर होता था जो अपने फन में अपने साथियों से आगे बड़ जाता है। इसलिए मौहम्मद (अलैहिस्सलाम) अपने वक़्त के सब शायरों में सबसे ज़्यादा जोशे तकरीर वाले थे। आप वो चीज़ें बोल देते थे जो उस वक़्त के शायर ज़ाहिर नहीं कर पाते थे। अगर इसे मान लिया जाए के मुजिज़ था, कोई भी चीज़ जो करी जाए एक अज़मत वाले मास्टर के ज़रिए किसी भी शाखा का किसी भी वक़्त लेकिन जो उसके साथियों के ज़रिए न किया जाए, तो ज़रूरी है के उसे मुजिज़ कहा जाए, जो के, अपनी बारी में, एक वाहियात/बीना मतलब बयान है।”

जवाब: मुजिज़ का मतलब है जो के एक वक़्त में वाक़ेअ हुआ और बहुत ज़्यादा ख़ूबी रखता हो क्योंकि ये वक़्त के ज़्यादा लोग नहीं कर पाए थे और जो के बहुत ऊँचे पैमाने पर उनके ज़रिए किया गया जो इस को करने के लायक़ थे और जिन्होने एक राए से माना जो इंसानी ताक़त के ज़रिए सबकत नहीं की गई, और जिसपर सबकत हासिल की जा सकती है, अगर कभी, सिर्फ उस शख़्स के ज़रिए जो इसे माने और चलाए अल्लाहु तआला की मरज़ी के ज़रिए। कोई चीज़ बिना इन ख़ूबियों के मोअजिज़ा नहीं कहलाई जा सकती। जादू पैग़म्बर मूसा [मोसिस।] (अलैहिस्सलाम) के ज़माने में जाना जाता था; उन दिनों में, जो लोग जादूगरी का अभ्यास करते थे उन्हे मालूम था के जादू की सबसे ऊँची सन्द है किसी मसनूई चीज़ पर, जिस चीज़ का कोई वजूद न हो या वहम/धोका [दूसरों] में ख़्यालात में जादू फूँक कर ऐसा कर देना जैसे के वो मौजूद थीं। जब उन्होने देखा मूसा (अलैहिस्सलाम) की असा/छड़ी एक बहुत बड़ा नाम बन गई और उनके जादू वाले साँपों को खा गई, तो उन्होने देखा के ये जादू की हदों से बाहर था और इंसानी ताक़त से ऊपर। इस वजह से उन्होने यक़ीन किया मूसा (अलैहिस्सलाम) [की नबूवत में]। फिरओन, इस

असलियत को नहीं जान पाया, उसको ये गलत ख़्याल था के मूसा (अलैहिस्सलाम) जादूगरों का सरबराह है और उन्हें जादू सिखाता है। ऐसा ही मामला बिल्कुल ईसा (अलैहिस्सलाम) के ज़माने में हुआ दवाई के साथ, वो बिल्कुल तरक़्क़ी याफ़ता ऊँचे मियार पर था। तवीवों/डॉक्टरों ने अपनी इस कामयाबी पर बहुत गर्व महसूस किया। मशहूर माहिरे ख़ुसूसी का कहना था के उनकी तीव जानकारी इतनी ज़्यादा नहीं है के वो किसी मुर्दे में जान फूँक दें या जो लोग पैदाईशी अंधे हैं उनकी आँखें खोल दें ऐसा हम नहीं कर सकते। वो मानते थे के ऐसे लोग सिर्फ़ अल्लाहु तआला के ज़रिए ठीक किए जा सकते हैं। मौहम्मद (अलैहिस्सलाम) के ज़माने में फने शायरी और फ़साहत अपनी ऊँचे मरतबे पर थीं। शायर एक दूसरे से अपनी शायरी में फ़साहत के बारे में शेख़ी मारते थे। असल में, सातों क़सीदे/गज़लें सबसे अच्छी उरूस के साथ शायरों की तहसीन जीतते थे और काबे के दरवाज़े पर टाँग दिए जाते थे। कोई भी उनकी तरह नहीं लिख पाता था। तारिख की किताबों में ये तफ़सील से लिखा हुआ है। जब रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) कुरआन अल-करीम को लेकर आए, तो लोगों के बीच झगड़ा हो गया। कुछ ने इस असलियत से इंकार कर दिया के ये अल्लाहु तआला के अलफाज़ थे और वह लोग काफिर के तौर पर मरे। कुछ शायरों ने, कुरआन अल-करीम की फ़साहत में एजाज़ देखा, और समझ लिया के अल्लाहु तआला के अलफाज़ थे वो मुसलमान हो जाते थे। कुछ उनकी देखा देखी/उनकी मिसाल मानते थे और मुसलमान हो जाते थे बग़ैर मरज़ी के, और उन्हें **मुनाफ़िक** (धोकेबाज़) कहा जाता था। कुछ इस सच को इंकार करने की कोशिश करते थे बेकार जवाब देकर; कुछ अपना मज़ाक बनवाते थे उनकी आँखों में जिनके पास कोई सबब था। मिसाल के तौर पर, आयत का जवाब देने के लिए, "वज़ारियात-ए-ज़रान," कहते हैं, "फ़ल-हासिलात-ए हस्दन वतहीनात-ए तहनन वत्ताबीखत-ए तबख़न फल-अकीलत-ए अकलन" [उनको ख़ुद ये पसंद नहीं था, इसलिए वो मौहम्मद (अलैहिस्सलाम) की मौजूदगी में इसको नहीं पढ़ते थे।] और बाक़ी के लोगों ने

लड़ाई ले ली। बदला लेने की कोशिश में मौहम्मद (अलैहिस्सलाम) को क़त्ल करने के लिए, उन्होने अपने माल, जानें, बीवियाँ और बच्चें ख़तरों में डाल दिए। इस तरह ये समझा गया के पक्का कुरआन अल-करीम अल्लाहु तआला [जैसे के पिछले पैरा में देखा गया, के एक मोअजिज़ा अल्लाहु तआला के ज़रिए बनाया गया। हर चीज़ अल्लाहु तआला ने बनाई है। वहाँ पर अल्लाहु तआला के अलावा और कोई बनाने वाला नहीं है। सिर्फ़, उनके हुक्मों के दुनिया में और दुनयावी मामलात में हुक्म होने के लिए। उसने सब चीज़ों को बताया जो किसी वजह पर मुनहसिर हैं। एक शख़्स जो ये इच्छा करे के कोई चीज़ बन जाए उस चीज़ से वाबस्ता कोई वजह देनी होगी। ज़्यादा सबब वो चीज़ें हैं जो सोचने से, तर्जुबे से या शुमार से हैं। जब किसी चीज़ का सबब इस्तेमाल किया जाए, अल्लाहु तआला उसे बना सकता है अगर उसकी इच्छा हो तो। ये मामला मोअजिज़ा या करामा/करामत के साथ नहीं है। अल्लाहु तआला इन्हे बनाता है बिना किसी वजह के, ग़ैर मामूली तरीके से। सबब को मज़बूती से पकड़ने का मतलब है के उसके असबाबों के कानून की तक़लीद करना। जब वो कोई चीज़ बिना सबब के बनाता है, वो अपने कानून को मोकूफ़/ख़त्म कर देता है और ग़ैरमामूली तरीके से बनाता है। एक मोअजिज़ा सिर्फ़ पैग़म्बरों के ज़रिए ही हो सकता है। ये दूसरे लोगों के ज़रिए नहीं हो सकता। कहावत है, "उसने एक मोअजिज़ा किया," या "वो मोअजिज़े से बच गया," जो किसी की तारीफ़ करने के लिए कहे जाते हैं, वो उसी तरह हैं जैसे कहा जाए के जिस शख़्स का सवाल हो रहा है वो पैग़म्बर हैं। इस मामले में, इरादा नहीं बल्कि वजाहत मानी जाती है। ये कुफ़्र पैदा करता है अगर किसी को नबी से मनसूब करा जाए। वो अगर ऐसा करता है तो अपना ईमान खो देता है। ऐसा ही उस मामले के साथ किसी को अल्लाहु तआला के अलावा "बनाने वाला" कहा जाए या कहा जाए के किसी ने फ़ंला और फ़लानी चीज़ बनाई। मुसलमानों को ऐसे ख़तरनाक अलफाज़ों को कहने से बचना चाहिए।] के ज़रिए नाज़िल किया गया।

उनका पाँचवा मुतज़ाद बयान ये: "वहाँ पर मुख़ालफत/नाइतेफाकी है कुरआन अल-करीम की किरअत और माअनी के मामले में इस्लाम के आलिमों के दरमियान। दूसरी तरफ़, अल्लाहु तआला ने इशारा दिया के कुरआन अल-करीम में नाइतेफ़ाकी खुलने का कोई नुक्ता नहीं है। मिसाल के तौर पर, उसने ईक्यासवीं आयत में सूरह उन नीसा में एलान किया: **'क्या ये कुरआन ऊल-करीम अल्लाहु तआला के अलावा किसी और के लफ्ज़ है, इसमें बहुत सारी नामुवाफिक बातें हैं।'** सूरह अल-क़ारी की पाँचवीं आयत के फ़िक़रे **'कलहिनी ए-मन-फुश'** को इस तरह पढ़ा जाता है 'कसाफ़ी-ए-मनफुश' कुछ के ज़रिए। सूरह-अल- जुमा की नवीं आयत, **'फअशऊ ईल्ला ज़िकरि इल्लाह'** को फ़मदू इल्ला ज़िकरिल्लाह कहा जाता है। सूरत अल-बक़रा की चौहत्तरवीं आयत को कहा जाता **'फ़ाहिया कलहिजारती';** वहाँ पर कुछ हैं जो कहते हैं 'फ़-कानत कलहिजारती'। सूरत अल-बक़रा की इकसठवीं आयत कही जाती है, **'अलैहिमु ज़ि-ज़िल्लतो वलमस्कन्ता';** वहाँ पर वो भी हैं जो इसे ऐसे पढ़ते हैं 'अलैहिम ई-मस-कनता व ज़ि-ज़िल्लता'। कुरआन अल-करीम में मआनी पर जो नाइतेफ़ाकी हुई उसकी मिसाल इस तरह वज़ाहत देकर की गई; सूरह-सबा की उन्नीसवीं आयत में बयान है, **'रब्बना बाईद बएना असफ़ारेना।'** इसका मतलब है, ओ रब! हमारी किताबें हम से वापस ले लो। ये अल्लाह से दुआ करना हुआ। कुछ इसे इस तरह पढ़ते हैं 'रब्बोना बआदा बएना असफ़ारेना' जिसका मतलब है, हमारे रब ने हमसे हमारी किताबें ले लीं। सूरह माईदा की एक सौ बारहवीं आयत का कहना है, **'हल यसततीओ रब्बोका',** जिसका मतलब है, 'क्या तुम्हारे रब ने तुम्हारी दुआ कुबूल की?' कुछ इस आयत को इस तरह पढ़ते हैं, हल तसततीओ रब्बाका, जिसका मतलब है 'क्या तुमने अपने रब से दुआ की? "

जवाब: ऊपर हवाला दी गई इख़्तलाफ़े राए हर एक शख़्स की वजह से है। तफ़सीर और किरआ के आलिमों ने इस पढ़ने के तरीकों को मना किया

जो इख्तलाफ़े राए वालों की वजह से पैदा हुई। उन्होने पढ़ने के उस तरीके को मंज़ूर किया जहाँ पर एक राए थी। हमारे पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, **"कुरान अल-करीम सात हरफों** [हरफ/हर्फ़ का लफ्ज़ जैसे के किताब में लिखा है **रीयाज़ अन नसीहीन**, मतलब बोली, पढ़ना। कुरआन अल-करीम की कॉपी हज़रत अबू बक्र ने तालीफ़ करी उसमें सातों मुख़्तलिफ़ किस्म के पढ़ने के तरीके शामिल थे। जब हज़रत उस्मान ख़लीफ़ा बने, उन्होने सब सहाबात अल-किराम को ये बात बता दी और ये एक राए से मान लिया गया के नई कापियाँ कुरआन की लिखी जाएंगी जैसे के रसूलुल्लाह (अलैहिस्सलाम) ने अपनी ज़िन्दगी के आख़री सालों में किरअत की। ये वाजिब है कुरआन को उसी तरीके से पढ़ना। दूसरे छः तरीकों से भी इसको पढ़ने की इजाज़त है।] **ज़ाहिर किया गया, उसमें से हर काफी और मुहाफिज़ है।"** इस सबब से, मुख़ालफ़त आना पढ़ने और मआनी में कुरआन अल-करीम में उसके मूजज़ को कमज़ोर नहीं करता।

उनका छठा मुतज़ाद बयान: "कुरआन के अंदर बेकार तराने और बार-बार एक ही चीज़ को दोहराया गया। मिसाल के तौर पर **'इन्ना हज़नी ला सहीरनी'** कितना सुरीली है। दोहराने की एक मिसाल है सूरह अररहमान को पढ़ना। दोहराने का एक और मिसाल है मआनी में मूसा और ईसा (अलैहिमा'स-सलाम) के बारे में कहानियाँ।"

जवाब: [यहाँ अल-इमाम अर रब्बानी (कुदिसा सिरोह), ने **शारह-ए-मवाकीफ़** किताब का हवाला दिया, तफ़सील से लिखा, ईल्म की एक शाखा के मुताबिक़ जिसे बलाग़त (फ़साहत) कहते हैं, आयत **"हज़नी ला सहीरनी"** एजाज़ के आला पैमाने में है। हम उस हिस्से को तर्जुमा नहीं करेंगे।] दोहराने के लिए, ये सच है के उनका बार-बार होना दिमागों में मआनी को जमाना है जो के बिना झगड़े के हैं। समझाने के हुनर की क़ीमत कुछ मआनी की

मुख़्तलिफ़ आव भाव के ज़रिए वो जाने जाते हैं जो अदबी तरज़े तहरीर की जानकारी रखते हैं। फिर भी एक अकेली कहानी बहुत सारे वाक्ये महफूज़ करती है, कुछ जगहों पर इसको दोहराना मुख़्तलिफ़ हक़ीक़तों [लोग जो अंग्रेज़ी अदब ज़बान के मुतालिक़ पढ़ते हैं वो वाक़िफ़ होते हैं ज़बानी मुतवाज़न जैसे के सर्वनाम का इस्तेमाल करना था मिलते-जुलते लफ्ज़ बजाए एक लफ्ज़ को बार-बार कहने से, सर्वनाम का इस्तेमाल या ज़बान का तआल्लुक आगे बढ़ाने के लिए लफ्ज़ को एक जुमले में दो या ज़्यादा आगे पीछे जुमले बंद वग़ैरा का दोहराना, बार-बार दोहराना एक लफ्ज़ को या फ़िक़रे को या तो शुरू में या आख़िर में लगातार जुमले में, एक जुमले के आख़री लफ्ज़ का बार-बार कहना था दूसरे के शुरू वाली सतर को ग्रीस के गाने वालों के कसीदे का दूसरा हिस्सा, बार-बार एक हिस्से को दोहराना लफ्ज़ों के बाद बीच में हाईल होना, एक लफ्ज़ का बार-बार दोहराना एक मुख़्तलिफ़ मामले में या उसी जुमले में लफ्ज़ों को तोड़ना मड़ोड़ना और इसी तरह आगे।] पर ज़ोर डालती हैं।

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास बहुत मुअजिज़े थे; जैसे के चाँद को दो हिस्सों में बाँट देना जब आप अपनी मुबारक ऊँगलियों से निशान बनाते थे, पत्थर और पेड़ आपके साथ चलते और बाते करते थे, आपके बनाए हैवान बोलते थे, थोड़े से खाने में बहुत लोगों के पेट भर देना, आपकी ऊँगलियों के बीच से पानी जारी होना, आपकी बताई हुई माज़ी और मुस्तकबिल। भविष्य की बातें किसी और को पता न होना, और बहुत सारी बातें। अगरचे आपके सारे मुअजिज़े एक राए से नहीं बताए गए, लेकिन बहुत सारे आपके मुअजिज़े एक राए से बताए गए। वो आम मज़मून हैं बातचीत के जैसे के हज़रत अली की बहादुरी और हातिम ताई की सख़ावत [और ज़ुल्म और तकलीफ़ें नेरू की, जोके पाँचवा रोमन बादशाह था] हमें इतने सबूतों से राज़ी/मुतमईन हैं और आपके रसूल होने में यक़ीन रखते हैं।

दूसरा तरीका मौहम्मद (अलैहिस्सलाम) की नब्बूवत साबित करने का वो है आपके आदत-व-अतवार को जानना, ख़ूबसूरत मोहज़ब ख़ासियतें और बातें जो आपकी अकलमंदी से भरी हुई थीं आपके पैग़म्बर बनने के ऐलान होने से पहले, जब आपने अपने रसूल होने का ऐलान किया और आपकी रिसालत सब जानने लगे। मिसाल के तौर पर, आप कभी झूठ नही बोलते थे, न ही दुनयावी मामलों के लिए न ही बाद के सोचने वाले मसलों के लिए। अगर आप कभी अपनी सारी ज़िन्दगी में एक बार झूठ बोल देते, तो आपके तशदूद पसंद दुश्मन एक दूसरे से सबकत ले जाते और इसे दूर दराज़ पहुँचाते। रिसालत से पहले या उसके दौरान, आपको किसी ने नाज़िबा हरकत करते हुए नहीं देखा। हालांकि वो एक उम्मी थे [वो ये, आपने कभी किसी से कोई तालिम हासिल नहीं की], आपकी तकरीर रवाँ और मीठी थी। इस वजह से आप कहते थे, **"मुझे ईनाम दिया गया है जामे-अल-कलिम** (काबलियत होना थोड़े लफ़्ज़ों में पूरी जानकारी दे देना)।" आपको अल्लाहु तआला का मज़हब दूसरों तक पहुँचाने के लिए बहुत तकलीफ़ें उठानी पड़ी। असल में, इस वजह से आपने कहा, **"और किसी पैग़म्बर ने इतनी तकलीफें नही झेंली जितनी मुझे उठानी पड़ीं।"** आपने वो सब तकलीफ़ें झेंली। आपने कभी अपने फ़राईज़ नहीं छोड़े। आपके दुश्मनों के ज़ेर होने के बाद और सबके आपके हुक्म को कुबूल करने के बाद, आपके ख़ूबसूरत सलूक, हमदर्दी और आजज़ी में कोई फ़र्क नहीं आया। अपनी सारी ज़िन्दगी, वो सबको ख़ुशी देते रहे। आपने कभी अपने को दूसरों पर बरतर नहीं समझा। अपनी पूरी उम्मत के लिए, आप बिल्कुल एक बाप की तरह हमदर्द थे [अपने बच्चों के लिए]। आपकी ग़ैर मामूली हमदर्दी की वजह से आपको हुक्म दिया गया, **"उनके गलत कामों की वजह से ग़मज़दा मत हो!"** सूरह अल फ़ातीर की आँठवी आयत में, और **"क्या तुम अपने आपको ख़त्म कर लोगे उनके गलत कामों पर अफसुरदा होकर?"** सूरह अल कहफ़ की छठी आयत में। आपकी सखावत हदों से बाहर थी। इसको तोड़ने के लिए, सूरह अल इसरा की उन्नतीसवीं आयत आप पर नाज़िल हुई: **"इतना**

ज़्यादा भी खुले हाथ मत हो जाओ के अपना सारा माल दे दो!" आप कभी दुनिया की आरज़ी और फ़रैब देने वाली ख़ूबसूरतियों को नहीं देखते थे। जब आपने पहले अपनी रिसालत का ऐलान किया उन दिनों में, कुरैश के माने हुए लोगों ने आप से कहा, "हम तुमको इतना माल देंगे जितना तुम चाहते हो। हम तुम्हारी पसंद की लड़की से तुम्हारी शादी करवा देंगे। हम तुमको कोई भी ऊँचा ओहदा देने को तैयार हैं जो आप चाहते हैं, लेकिन इस तरह की सब चीज़ें तुम्हें छोड़नी होंगी।" आपने उनकी तरफ़ मुड़ कर देखना भी गवारा नहीं किया। आप गरीबों और मोहताज़ों की तरफ़ रहम और हलीम वाले थे और जो ज़्यादा माल और ज़मीन वाले थे उनकी तरफ़ मतीन थे और उनकी इज़्ज़त अफ़जाई करते थे। ये कभी नहीं हुआ के आप अपनी मरज़ी से वापस पलटे हों चाहे वो ओहद, एहज़ाब (खंदक खोदना) और हुनैन की मायूस जंगों के ख़तरनाक लम्हे क्यों न हो। इससे आपके मुबारक दिल की ताक़त और आपकी आला पैमाने की बहादुरी का पता चलता है। अगर आपका अल्लाहु तआला की हिफाज़त में पूरा भरोसा नहीं होता, मिसाल के तौर पर, सूरह मैदा की सत्तरवीं आयत में उसका वादा, **"अल्लाहु तआला ने तुम्हें बचाया आदमियों के नुक़सान के बरअकस!"** तो आपके लिए मुमकिन नहीं होता इतनी ग़ैर मामूली बहादुरी दिखाने के लिए। बदलते वाक्यात और हालात ने आपके ख़ूबसूरत अख़्लाक़ या बरताव में कोई तबदीली नहीं की दूसरों की तरफ़ छोटे पैमाने पर भी। वो जो सच्ची और मतलब वाली तारीख़ पढ़ते हैं जिन्हें क़ाबिल हाथों ने लिखा है वो हमारी बातें ज़्यादा अच्छे से समझेंगे। इनमें से एक सबब ये है, अकेला, रिसालत का दस्तावेज़ी सबूत नहीं है, वो ये, एक शख़्स जो दूसरों से मुख़्तलिफ़ है और उसके अंदर इनमें से एक बरतर ख़ासियत उसकी रिसालत का इशारा नहीं करती, इसके अलावा सिर्फ़ पैग़म्बर के अंदर इन सब फ़ज़ीलतों का ढेर है। मौहम्मद (अलैहिस्सलाम) के अंदर इन सब फ़ज़ीलतों का होना एक पक्का/मज़बूत सबूत है जो इस सच्चाई को बताता है के आप अल्लाहु तआला के पैग़म्बर [उनके लिए जो मौहम्मद (अलैहिस्सलाम) की ख़ूबसूरत ज़िन्दगी के

बारे में जानना चाहते हैं, हम उनको सलाह देते हैं के वो तुर्की किताबें **किस्सा-ए-अंबिया** और **मवाहिब-ए-लादुनिया** पढ़ें। इसी तरह, वहाँ पर तफ़सीली जानकारी है तुर्की के इबतदाई पहले हिस्से में और अंग्रेज़ी तर्जुमे के पहले हिस्से (बाब 56) सआदत इबादत में हिलाया-ए-सआदत की इबादत के नीचे में।] हैं।

तीसरा सबूत जो इस बात की गवाही देता है के मौहम्मद (अलैहिस्सलाम) अल्लाहु तआला के पैग़म्बर हैं वो इमाम फ़खर ऊद्दीन अर राज़ी की किताब है। मौहम्मद (अलैहिस्सलाम) ऐसी क़ौम के पैग़म्बर बनाए गए जो आसमानी किताबों के बारे में लाईल्म थी और जिसे ईल्म और सांईस/विज्ञान/ईल्मे हिक्मत के बारे में कुछ पता नहीं था। वो एक ऐसी क़ौम थी, जो सच्चाई के रास्ते से मतभेद रखती थी, जो बुत परस्त थे वो बुतों की पूजा करने लगे थे [पुतले और इंसानी शक्ल पत्थरों या धात से बनी हुई]; उनमें से कुछ को यहूदियों ने फ़रेब दिया और उनकी झूठी, वहमी कहानियों को मज़हब के तौर पर अपना लिया; मजीयान, एक छोटा सा समूह, दो देवताओं को पूजता था और अपनी ही लड़कियों और नज़दीकी रिश्तेदारों से शादी कर लेता था; और बाक़ी दूसरे, ईसाई, ये मानते थे के ईसा (अलैहिस्सलाम) “ख़ुदा के बेटे” थे और तीन देवताओं को पूजते थे। ऐसे दरहम बरहम लोगों के बीच में, मौहम्मद (अलैहिस्सलाम) एक नबी बने। एक किताब जिसका नाम **कुरआन अल-करीम** है वो अल्लाहु तआला आप पर नाज़िल फरमाई। आपने गंदगी में से ख़ूबसूरत आदते और अच्छे काम उन बुरों में से जो अंदरूनी बर्बादी की तरफ़ ले जाते थे उसमें से आपने छाँटे। आपने सही ईमान और इबादत पढ़ाई। वो जो आप में यक़ीन रखते थे ईमान और इबादत के ज़रिए रोशन हुए। आपने इंसानियत को बिगड़े हुए, मनघड़त मज़हबों से बचाया। आपको फतह नसीब हुई जैसा के अल्लाहु तआला ने वायदा फरमाया था। बहुत जल्द आपके सारे दुश्मन गायब हो गए। ख़राब, नक़ली, उकसाने वाले लफ्ज़ और काम ख़त्म हो

चुके थे। लोगों को मुतलकुल अनान, कब्ज़ा करने वालो और ज़ालिमों से बचाया जा चुका था। हर जगह जगमगा उठा थीं तोहीद के सूरज और तनज़ीह के चाँद की पाक रोशनियों से। ये था वो जो रिसालत से कायम हुआ, 'रसूल' के लिए, जिसका मतलब है सबसे आला शख़्स जो लोगों के मोहज़ब को ख़ूबसूरती बख़्शता था और दिल और रूह की बीमारियों के लिए दवाई भी देते थे। ज़्यादातर लोग अपने नफ़सों के गुलाम थे। उनकी रूहें बीमार थीं। उनके ई लाज के लिए माहरे नफ़स और उसूल अख़्लाक़ ज़रूरी है। वो मज़हब जो मौहम्मद (अलैहिस्सलाम) लेकर आए वो इन सब बीमारियों के लिए एक दवाई बन गया। इसने बुराईयों और हसद को ख़त्म किया दिलों में से। ये मामला पूरे तौर पर दिखाता है के आप अल्लाहु तआला के रसूल थे और सब पैग़म्बरों से आला थे (सल्लल्लाहु अलैहि वा अलैहिम वआला अलैहि व असहाबी कुल्लीन अजमईन)। हज़रत ईमाम फ़खर अद दीन अर राज़ी ने अपनी किताब **अल मतालिब अल अलिया** में समझाया के ये मामला आपकी रिसालत का सबसे साफ़ सबूत है।

अपनी किताब के शुरू में मैने समझाया था के रिसालत/नब्बुवत का मतलब क्या है और साबित क्या था के इस तरह किसी और के साथ नहीं हुआ जिस तरह मौहम्मद (अलैहिस्सलाम) के साथ हुआ। इस तरह से, ये समझा जाता है के आप सबसे आला हैं। ये बरतरी आपके मोअजज़ों से भी ज़ाहिर होती है। लेकिन ये पहुँच बिल्कुल उसी तरह है जिस तरह आलिमों ने अपनाई आपकी रिसालत साबित करने के लिए। उनका तरीका इस तरह भी मुख़्तसरन समझा जा सकता है के आदमियों को अल्लाहु तआला के ज़रिए भेजे गए कानूनी मजमूए की ज़रूरत है दुनिया और आख़रत में आराम और अमन हासिल करने के लिए।

यहाँ मेरी किताब के दूसरे मज़मून/तहरीर का ख़ात्मा हुआ। इस तरह इससे ये साबित हुआ के क़दीमी यूनानी फ़लोस्फ़र ग़लत रास्ते पर थे जिसमें वो अपने ज़ाती नुक़्ते लिखते थे मज़हब और रिसालत पर वो गलत मज़हबी जानकारी और अंदरूनी बरबादी की तरफ़ राग़िब हो गए थे।

हिजरी	मिलादी
989	**1581**

अहमद इबन
अबद अल-आहद
अस सरहिंदी

दूसरा हिस्सा

दूसरे मज़मून

5– एक मज़हब से अंजान शख़्स को जवाब

हमारे पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने वाज़ेह किया: **“हर बच्चा दुनिया में एक पाक रूह के साथ आता है एक मुस्लिम बनने के लिए। बाद में उसके वालदेन उसे ग़ैर मज़हबी बना देते हैं।”** ये इस बात की दलालत करता है बच्चों को इस्लाम सिखाना ज़रूरी है। उनकी पाक रूहें इस्लाम के लिए मुनासिब हैं। एक बच्चा जो इस्लाम नहीं याद करता है वो इस्लाम को गलत समझता हैं झूठ और तोहमतें लगाने वाले मज़हबी दुश्मनों के ज़रिए। वो सोचता है के ये ग़लत हालत या बुरा है। अगर एक शख़्स जो मज़हब से नावाकिफ़ हो और जिसने कभी कोई मज़हबी जानकारी हासिल न की हो या इस्लाम का क़्यास न लगाया हो वो इस्लाम के दुश्मनों के जाल में फंस जाता है, तो वो मुख़्तलिफ़ और कुल मिलाकर मुख़ालिफ़ तरीका सीखता है बजाए इस्लाम के। वो ज़हरीले टीके का शिकार हो जाता है और उसे शर्मनाक अफ़साने लिख कर दिए जाते हैं। उसे इस दुनिया में अमन नहीं मिलता। और वो न ख़त्म होने वाली आफ़तों और तक़लीफों से दोचार हो जाता है आने वाली दुनिया में।

हर मुसलमान, चाहे हर शख़्स, को जानना चाहिए के ये कितना कमतर है, कितना गलत है तोहमत लगाना जो इस्लाम के दुश्मनों ने नौजवानों को फ़रेब देने के लिए अफ़साने फैला रखे हैं। और अंदरूनी बर्बादी की तरफ

राग़िब न होने के लिए इन झूठी बातों पर ईमान नहीं लाना है, हमें इस्लाम की अज़मत को समझना चाहिए, इस सच्चाई को जानना चाहिए के ईल्म, सांईस, मोहज़ब और सेहत की मदद करता है और ये के हुक्म देता है काम करने का, आगे बढ़ने की, साथ निभाने की और आपसी प्यार की।एक अकलमंद चौकन्ना और मोहज़ब शख़्स, जो इस्लाम को सही तौर पर समझते है, वो इस्लाम के दुश्मनों के झूठ पर भरोसा नहीं करता।ये देखने पर के वो मज़हब से नावाकिफ़, जाहिल है, फ़रेबी और अभागे लोग हैं, वो उनपर रहम खाएगा।वो ये इच्छा करेगा के उसे इस तवाहकुन हालत से छुटकारा मिल जाए और सही काम की तरफ़ लग जाए।

हमें ऐसे बहुत से किताबचे मिले बहुत सारे सफहें जिसमें शर्मनाक तरीके से घसीटे हुए थे फ़रेबी और मज़हब से नावाकिफ़ लोगों के ज़रिए इस नज़रिए से के ज़हरीली बदनामी सब तरफ़ फैलाए उसको ये पढ़ाया गया के सेहतमंद रूहों को छूत की बीमारी हो गई वहम की बीमारी के साथ जो उन्हें न ख़त्म होने वाली तबाही की तरफ़ ले जाती है: वो अच्छे लोगों को ख़राब और ख़स्ता हाल बना देना चाहता है।एक लेखक के ख़िताब को पूरी क़ाबलियत के साथ घबरा देना, वो जो इसकी फ़हरिस्त देखते हैं, जो सच्चाई, अच्छाई और पाकी को बदनाम करते हैं, वो सोचते हैं के ये सब जाँच पर मुबती है जो ईल्म की है और इसकी एहमियत है।जो दुख इससे होता है उसे ख़त्म करने के लिए, ये ज़रूरी समझा गया के सच्चाई को जवाब के तौर पर लिखा जाए उस गलीज़ बदनामी के लिए जो नीचे **12** पैराग्राफ में बयान की गई।वो मासूम नौजवान, इन झूठी घड़ी गई कहानियों और इस मसले की सच्चाई को देखकर, बिल्कुल साफ़ इस्लाम के दुश्मनों की चाल बाज़ियों और साज़िशों को देख लिया और आसानी से उन बद दिमाग़, रिश्वत ख़ोर बेईमानों, जो अपने आपको बहुत तरक़्क़ी याफ़्ता बताते हैं उनको पहचान लिया:

1– “मज़हबी ग़ौर व फ़िकर और तरीके जो समाजी ज़िन्दगी में दख़ल देते हैं वो एक ज़ंज़ीर की तरह हैं जो मआशिरह की तरह हैं जो मआशिरह की तरक़्क़ी में हाईल होता है,” उसने कहा।

जवाब: रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने बयान किया: **“अपनी दुनियावी फ़ायदों के लिए इस तरह काम करना जैसे तुम कभी नहीं मरोगे!”** एक हदीस हवाला दी गई ईमाम अल-मानवी के ज़रिए जिसमें कहा गया है, **“अल हिकमतु दलालत अल-मोमिन।” (तिब का ईल्म/जानकारी ईमान वालों की खोई हुई जाएदाद है। वो उसे जहाँ मिलती है वो ले लेता है!)**। सब सांईस तिब के आदमी, दुश्मन और दोस्त एक जैसे, एक राए से फरमाते हैं के इस्लाम मज़हब समाजी तरक़्क़ी को बढ़ावा देता है और तहज़ीब की तरफ़ रोशनी डालता है। मिसाल के तौर पर, अंग्रेज़ लार्ड जॉन देवनपोर्ट ने फरमाया, “कोई लोग इतने ज़्यादा ईल्म और तम्दुन की इज़्ज़त नहीं करते जितनी गहराई से मुसलमान करते हैं,” [**हज़रत मौहम्मद और कुरआन,** हिस्सा 2, बाब 2; लंदन।) और तफ़सील से समझाते हैं मिसालों और दस्तावेज़ों के साथ के इस्लाम ने मुआशिरह को तरक़्क़ी और ख़ुशहाली की तरफ़ रहनुमाई करी।

1972 में डॉ. करीस टरेगलर, जो के तारिख़ के अमरीकी प्रोफ़ेसर थे तकनीकी युनीवर्सिटी टेक्सास में उन्होने एक बहुत बड़े समूह के सामने तकरीर करी, जिसमें उन्होने फरमाया के यूरोप की तबदीली की तहकीक और तरक़्क़ी के लिए इस्लाम उसकी असल वजह था; मुसलमान जो, स्पेन और सिसिली में आए उन्होने जदीद तकनीक और तरक़्क़ीयों की बुनयाद रखी और पढ़ाया के तिब की तरक़्क़ी सिर्फ़ मुमकिन है कैमिस्ट्ररी, दवाई, माहिरे फलकियात, पानी की जहाज़ साज़ी, भूगोल, नक्शा साज़ी और हिसाब में बेहतरी करके; और ये के ये सब ईल्म की शाखाएँ यूरोप नार्थ/शुमाली अफ्रीका और स्पेन से लाई गई मुसलमानों के ज़रिए। उन्होने इस बात पर भी ज़ोर दिया के इस्लामी ईल्म लिखे

हुए का भी बहुत योगदान है जो क़ीमती लिखा हुआ मसूदा और मिस्र का लिखने और तस्वीरें बनाने का हुनर था वो एक ख़ास कड़ी था जदीद सहाफ़त/प्रेस [हफ़तावारी रिसाला, **द मुस्लिम वर्लल्ड/एक मुस्लिम दुनिया**, पाकिस्तान, अगस्त **26, 1972**।] को बढ़ावा देने के लिए।एक ग़ैर मोहज़ब, बुरे इस्लाम के दुश्मन के झूठ, जिसका इस ईल्म/जानकारी में कोई हिस्सा नहीं है सिवाए एक ख़िताब के, ज़रूरी नही है के वो इस सच्चाई को कवर करे।सूरज को चिपचिपी मिट्टी से पलास्टर नहीं किया जा सकता।

2– "ये ज़रूरी है," उसने कहा, "के रियासत को मज़हबी पाबंदी से बचाया जाए।मग़रिबी तहज़ीब के हम ज़माना होने के लिए, एक असली ग़ैर जानिबदार कायदे को कायम करने की ज़रूरत है।"

जवाब: इस्लाम में, पूरे तौर पर अज़ाद, जमहूरी रियासतें ईल्म, मोहज़ब, सीधे तरीके और इंसाफ पर कायम की गई।ये रियासत को सियासी धोके बाज़ों के हाथों में कठपुत्तली बनने से बचाते है।सरमाएदार, मुतलकुलअनन हाकिम/तानाशाह और साम्यवाद के नौकरों ने तजवीज़ किया इस तरह की तरज़े हकुमत को जो एक ऐसी ज़ंज़ीर हो जो उनके अपने ही बे रहमी, अज़ीयत और बदअख़लाक़ी के कामों को बांध कर पाबंद कर दे।ख़ूनी, चोर और बेईमान लोग इंसाफ़ और मुजरिमों का ज़ाबता को ऐसे देखते है जैसे उनपर ज़ंज़ीरें डाल दी गई हो।जहाँ पर इसकी कोई ज़रूरत नहीं है के काफ़िरों की जहालत और बेवकूफ़ी पने को बयान किया जाए जो अपने मज़हबी ग़ैर जानिबदारी को इस्तेमाल करते हैं एक ऐसे मतलब की तरह अपनी दुश्मनी को ज़ाहिर करने के लिए मज़हब के ख़िलाफ़ और जो मज़हबी ग़ैरजानिबदारी की आड़ में छुप कर इस्लाम को ख़त्म करने की कोशिश करते हैं।ये आदमी क्या चाहता है रियासत से मज़हब की अलेहदगी नहीं, बल्कि मज़हब की तबाही।ये ज़ाहिर है के एक अनाड़ी जो ये चाहता है के कौमें या रियासतें ईल्म, हिक्मत,

मेहनत और मोहज़ब से तरक़्क़ी नहीं करतीं, लेकिन उसके बजाए इस्लाम की तबाही से, जो बयान करती है सारी नैकी को, और जो इच्छा रखती है मग़रीबी बदअख़लाकी ज़नाकारी और अंहकार की, वो महरूम रह जाएगा अक़ल व फ़हम और ईल्म लेकिन मोहज़ब होने से भी।

3– वो कहता है, "लोगों को इस्लाम की तसकीन के फलसफ़े से बेहोश करना, वो एक-एक की ये उम्मीद करते हैं के उसे रंज की हालत में कर दे और वो अपने हुकूक भी न मांग सके।इस ख़ुशनुमा वजह के साथ के वो साम्यवाद को रोक रहे हैं, वो गुलामी के ख़्याल को और लोगों के ज़रिए दूसरी दुनिया में ईमान को बचा रहे हैं।तसकीन ऐसा पेचदार लफ्ज़ है जो शोषण के लिए इस्तेमाल होता है।इस्लाम को मानने वाले इस इस्तेहसाल/शोषण को बढ़ावा दे रहे हैं।"

जवाब: वहाँ पर कुछ फ़िकरे ऐसे बेमआनी है जैसे के ये फ़िकरा "इस्लाम की तसकीन का फलसफ़ा।" हमने **सआदते अबदिया** में फलसफ़े का मतलब समझाया था और साफ़ कर दिया था के इस्लाम में कोई फलसफ़ा नहीं है।इस तरह के गलत फ़िकरे थे ज़ाहिर करते है के जिस शख़्स ने इनका इस्तेमाल किया है वो इस्लाम और फलसफ़ा के बारे में कुछ नहीं जानता, और वो ये के, कुछ फ़िकरे याद करने से बिना उनके मतलब जाने हुए, कई लफ्ज़ उसने बना लिए इस्लाम के लिए अपनी दुश्मनी ज़ाहिर करने के लिए।सदियों से इस्लाम के दुश्मन अपने आपको छुपाते आए हैं मज़हबी आदमियों के तौर पर और नकाब के पीछे से हमला करके जुर्म का इरतकाब करते हैं।लेकिन आज वो हमला करते हैं किसी पेशे के या हुनर के मास्टर के भेस में एक ओहदे का ख़िताब हासिल करने के बाद।वो झूठे जो, मुसलमानों को धोका देते हैं, अपने आपको ईल्मे हिक्मा के माहिर के भैस में ग़ैर सांईसी बयानात सच्चाई के तौर पर पेश करते हैं जिसे **"सांईस के धोकेबाज़"** कहा जाता है।न सिर्फ़ इस्लाम, लेकिन सब ईल्मे उसूल की किताबें जो हर क़ौम के पास है वो तसक़ीन की

सराहना करती हैं। इसके बरअक्स इस सांईस के धोकेबाज़ के अफ़सानों के मुताबिक़, तसक़ीन का मतलब ये नहीं है के अपने हुकूक छोड़ देना और काहिल बन जाना। तसकीन का मतलब है अपने हुकूक के साथ, जो आप कमा रहे हो उसके साथ राज़ी रहना और दूसरों के हुकूक के साथ तशद्दुद न करना। इसके आलावा, ये लोगों को काहिल नहीं बनाता, लेकिन उनको काम की तरफ़ और तरक़्क़ी की तरफ़ बढ़ावा देता है। इस्लाम, इस धोकेबाज़ झूठ बोलने वाले के बरअक्स, गुलामों को बचाता नहीं है लेकिन हुकुम देता है गुलामों की अज़ादी का। गुलामी इस्लाम में वजूद नहीं रखती, लेकिन तानाशाही और साम्वाद के निज़ामे हुकुमत में थी। आसमानी किताबें और पैग़म्बरों (अलैहिमु'स-सलाम) जिनके मोअजज़े नज़र आते थे, दूसरी दुनिया की और अक़ल की ख़बर देते थे: ईल्म और सांईस इस चीज़ को मना नहीं करता। इस रास्ते से भटके हुए जाहिल के लफ्ज़, बहरहाल, सिर्फ़ जज़बाती और वाहियात दलीलें हैं। उसने न तो कोई हवाला न ही कोई सांईसी बुनियाद की तैयारी करी। आख़रत में ईमान, हुकुम, इंसाफ़, आपसी प्यार और मुआशरे और मुल्कों में एकता कायम करने का सबब बनेगा। इसमें ईमान न रखने का मतलब है आवारगी, काहिली, ज़िम्मेदारी का एहसास ख़त्म होना, अंहकार, झगड़ा और दुश्मनी की तरफ़ रहनुमाई होना। ये बहुत अच्छा है के किसी फायदेमंद चीज़ में ईमान रखना। ये बिल्कुल सही और ज़रूरी है के ऐसी चीज़ों को नज़रअंदाज़ करना जिनसे कुछ साबित न हो, बेबुनयाद हों और बेफ़ायदा हों। इस्लाम इंसानी हकुक के इस्तेहसाल/शोषण और बेपरवाई को मना करता है। ठीक उसी तरह जैसे शोषण एक गुनाह है, इसलिए इसकी इजाज़त नहीं है के नुक़सान होने पर चश्म पोशी करना। इस्लाम में जहालत, काहिली, किसी के हकुक से बेपरवाई और धोका दिए गए हैं ये सब माफ़ करने लायक़ नहीं है; वो सब जुर्म हैं। वहाँ पर मशहूर कहावत है जो ऐसे है, **"वो जो नुक़सान पहुँचाने अपनी मर्ज़ी दे वो माफी के क़ाबिल नहीं है।"** किस तरह इस्लाम में इस्तेहसाल/शोषण हमेशा हो सकता है? किस तरह एक शख़्स ईल्म और वजह के साथ हमेशा ऐसे कह

सकता है? क्या इस जाहिल शख़्स ने जो ऐसा कह रहा है कभी आयात और बेशुमार हदीसों के बारे में नहीं सुना जो इंसानी हकुक को बचाती हैं? नहीं जानता या ऐसा नहीं सुना ये कोई जवाब नहीं है उसके लिए!

4– "मशरिक, जज़ब हो चुका है और मदहोश हो चुका है मज़हब के साथ, वो बीमार हो चुका है।ईमान रखने का मतलब है गुलामी, उसने कहा।

जवाब: कोई भी तारीख़ का पढ़ने वाला ये साफ़ तौर पर देख सकता है सबाहत अल-किराम (अलैहिमु'र-रिज़वान) की बरतरी और ये सच्चाई के इस्लाम चुस्त, पढ़ाकू, बराबरी और बहादुर क़ौमें बनाता है।हज़ारों मिसालें और लाखों किताबें जो इस सच्चाई को ज़ाहिर करती हैं वो मौजूद हैं।ये एक शर्म वाली बात है के एक अंधा शख़्स सूरज को नहीं देख पा रहा।क्या ये सूरज की गलती है के वो इसे देख नहीं पा रहा? क्या औक़ात है ऐसे जाहिल की, फरेबी शख़्स की तोहमत की जो बुलंद मज़हब पर लगा रहा है, जो ख़ुशियों और तहज़ीब का ज़रिया है, जिसे सारे अकलमंद और मोहज़ब आदमी चाहे वो दोस्त हों या दुश्मन सराहते है? कुछ कहा जाए या लिखा जाए वो उसके मालिक का अकस डालता है।बहुत से लोग, जब वो अपने दुश्मनों से नाराज़/गुस्सा होते हैं, वो अपने ही बुरे बरताव की तोहमत उनपर लगाते हैं।हर बकसे/बालटी में जो होता है वही उसमें से टपकता है।इसलिए एक बुनयादी शख़्स के अलफाज़ उसे दर्शाते हैं।इन नफ़रतों की तोहमतों को हिदायत देने का मक़सद ऐसा है जैसे एक हीरा जो गंदगी में गिर गया हो।एक बुरा शख़्स जो इस्लाम पर हमला करता है वो कोई हैरानी वाली बात नहीं है।क्या ज़्यादा हैरानी वाली बात है वो ये के कुछ लोग इस बेबुनयाद, वाहियात बदनामी को सच मान लेते हैं, उस पर यक़ीन करते हैं और आफ़तों में घिर जाते है।ये तोहमतें जवाब देने के लायक़ नहीं हैं।ये बेकार है कोशिश करना के एक अंधे को बताया जाए सूरज के मौजूद होने का या बताया जाए एक शख़्स को जो बीमार हो सफ़रे की वजह से

या जिगर ख़राब हो के मीठी चीनी कैसी होती है।मुकम्मल और बरतर चीज़ें बीमार, गंदी रूहों को नहीं बताई जाती।उनको जवाब देने का इरादा दूसरों को उनपर यकीन रखने से बाज़ रखता है।दवाई मरीज़ को मरने से बचाने के लिए होती है, न के मुरदे को ख़ुश करने के लिए।

चलो लाखों गंद्याश/पैसेज में से दो का हवाला देते हैं के किस तरह इस्लाम ने तहज़ीब का रास्ता जगमगाया।हम मशरिक से उन्हें नहीं चुनेंगे, जो वो बदनाम कर दें और नफ़रत करें, लेकिन मग़रिब से लेगें, जो वो सराहता है।मोक़ीम [जीन मोक़ीम, जर्मन का दीनयात पढ़ाने वाला और तारीखदाँ, जिसकी वफ़ात **1169 (1755)** में हुई।] ने कहा, "ये पूरी तरह सच्चाई है के हिक्मत की जानकारी, ईल्मे तिब्ब, किमयाई, ईल्मे फलकियात और हिसाब जो यूरोप में दसवीं सदी से पहले से फैला हुआ था वो इस्लामी मदरसों/स्कूलों, ख़ास तौर पर अंडालूसिया (स्पेन) के मुसलमानों से लिया गया, जो यूरोपियन के उस्ताद थे।रोमन और गोथस ने दो सौ साल तक जददोजहद की अंडालूसिया पर कब्ज़ा करने की; दूसरी तरफ़, मुसलमानों ने पैनिनसुला पर बीस साल में कब्ज़ा कर लिया।पाएरेनीस से आगे चले गए, वो आगे फ्रांस तक में चले गए।मुसलमानों की बरतरी ईल्म, अकल और मोहज़ब के लिहाज़ से अपने औज़ारों कम असरदार नहीं थीं।" लार्ड दवेनपोर्ट ने कहा, "यूरोप आज भी मुसलमानों का कर्ज़दार है।हज़रत मौहम्मद (अलैहिस्सलाम) ने कहा, **"शान-व-शौकत, इज़्ज़त और बरतरी माल से नहीं बल्कि ईल्म और अकल से नापी जाती हैं।"** इस्लामी रियास्तों का निज़ाम बहुत सदियों तक मज़बूत हाथों से चलाया गया।मुसलमान जो तीन बरे आज़मों में फैले हुए थे वो तारीख़ में सबसे ज़्यादा इज़्ज़त वाली जीत बने।"

जबके एक जाहिल नफ़सियाती ने अपने किताबवे में लिखा के मशरिक मज़हब में जज़ब होकर मदहोश हो चुका है, ये ग़ैर मुस्लिम लेकिन ग़ैर

जानिबदार लेखक, जैसे के जॉन दवेनपोर्ट, जो के अंग्रेज़ी लार्ड थे, उन्होने वजह के साथ लिखा: "जैसे के अंडालूसिया में मुसलमानों ने ईल्म और सांईस/ईल्मे हिक्मत का बीज बोया मग़रिब में, मेहमूद अल-गज़नवी ने मशरिक में ईल्म और दानिशमंदी को बढ़ाया और उसका देश सांईसदानों का मरकज़ बन गया। इस्लामी हुकमरान/राजा पैदावार को बढ़ाते थे, और जो दौलत जमा/इकट्ठी होती थी उसके ज़रिए से वो अच्छे कामों में और मुल्क की तरक़्क़ी के लिए लगाया जाता था। जैसे के ख़ुशहाली और तहज़ीब मशरिक में तरक़्क़ी कर रहे थे लूईस VII फ्रांस ने वीतरी शहर पर कबज़ा कर लिया, उसमें आग लगा दी और तेरह सौ लोगों को ज़िन्दा जला दिया। उन दिनों में, शहरी जंगें इंग्लैंड में मौत बरसा रही थीं, जहाँ ज़मीन काश्त नहीं की गई थी, और हर चीज़ ख़त्म हो चुकी थी। चौदहवीं सदी में, एंगलो फ्रेंच जंगें बहुत ख़तरनाक बहुत नुक़सान वाली तारीख़ में ऐसी कभी नहीं देखी गई। लेकिन मशरिक में मुसलमानी देशों में, फिरोज़ शाह तुग़लक़ III, जिसने **752** ऐ.ऐच **(1251)**, में पचास बैराज और नहरें, चालीस मस्जिदें, तीस स्कूल, एक सौ लोगों की रिहाईश, एक सौ अस्पताल, एक सौ हमाम, और एक सौ और पचास पुल बनवाए जब तक के वो **790** में मर नहीं गया। भारत में, ख़ुशहाली और ख़ुशियों का राज था, शाह जहाँन के मुल्क में। उसके पास अली मुराद ख़ान था, जो के एक इंजीनियर था जिसने देहली की नहर बनाई। संगे मरमर के फव्वारे पानी के फव्वारों के साथ और अवाम के लिए मारबल के हमाम शहर में हर जगह बनाए गए। हर घर में पानी पहुँचाया गया। पूरा मुल्क हिफ़ाज़त के मज़े ले रहा था।"

5– "मज़हब किस्मत और तसकीन को ज़ाहिर करता है। ये एक ख़्याल है जो दूसरी दुनिया से ताअलुक रखता है, जो ज़ुल्मी और भूखे को बेहिस कर देता है। ये पढ़ाता है के, दूसरी दुनिया की बरकत हासिल करने के लिए, ये ज़रूरी है के इस दुनिया की चीज़ों की इच्छा मत करो। ख़ुशी और ज़रूरत जीने के लिए किस्मत और तसकीन को तोड़ देता है और एक

जद्दोजहद को पैदा करता है अच्छी ज़िन्दगी हासिल करने के लिए। मज़हब उनसे डरते हैं जो ऐसे तरीकों के ख़िलाफ़ हैं जो जमे हुए और ढले हुए रिवाज़ों पर मुनहसिर करते हैं। मज़हब का नशा एक आदमी को बेक्दरा, मातेहते और बिना किसी मतलब के ज़िन्दगी गुज़ारने वाला बना देता है," उसने कहा।

जवाब: ऐसे झूठ और सख़्त नफ़रत वाली तोहमतें जवाब देने लायक़ नहीं हैं, एक अक़लमंद शख़्स जो सच जानता है वो उनपर यक़ीन नहीं करेगा। अब तक, अगरचे इस्लाम के दुश्मन अक़लमंद नहीं हैं, वो उनको मसरूफ़ कर देते हैं बेफ़ायदा और बेकार चीज़ों में, वो उनको मनशयात दे देते हैं जो उनके नफ़्ज़ को ख़ुशी/मज़ा देता है और उनकी मस्ती के लायक़ हो। इस तरह से, वो उनको मज़हबी ईल्म हासिल करने से रोक देते हैं। इन मासूम नौजवानों को बचाने के लिए, जो पहले से भरे हुए हैं और बहिस हैं, इन झूठों पर यक़ीन करने से और मुसिबतों की तरफ़ बढ़ने से, ये ज़रूरी हो गया है के मुख़्तसर सा सच लिखा जाए। एक ख़ुशकिस्मत नौजवान शख़्स जिसने हमारी किताब **सआदते अबदिया** अच्छी तरह से पढ़ी, उसने इस्लाम को सही और हूबहू याद किया, वो झूठे अफ़सानों में यक़ीन नहीं रखेगा। हमारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), के ये फरमाने से, **"वो जो ईल्म रखता है वो मुसलमान बन जाता है। वो जो जाहिल है वो मज़हब के दुश्मनों के ज़रिए धोका खाता है,"** सलाह दी है हमें के हम और अच्छी तरह जानकारी वाले बने।

ये कहना सही है के मज़हब किस्मत और तसकीन में यक़ीन रखना है। लेकिन किस्मत, इस गरीब अंजान की सोच के मुख़ालिफ़/बरखिलाफ़, ये मतलब नहीं है के काम न करना या आरज़ू न रखना। **क़दर** का मतलब है के अल्लाहु तआला पहले से ये जानता है के लोग क्या कर रहें हैं, अल्लाहु तआला आदमी को काम करने का हुक्म देता है। वो तारीफ़ करता है उनकी जो

काम करते हैं। उसने सूरह-अन नीसा की चौरानवीं आयत में बयान किया: **"वो जो जिहाद करते हैं, काम करते है और मेहनत करते हैं वो उनसे ऊँचे और ज़्यादा कीमती हैं जो बैठते हैं और इबादत करते हैं बजाए जिहाद करने के।"** रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, **"अल्लाहु तआला उनको पसंद फरमाता है जो काम करके अपना गुज़ारा करते हैं।"** जैसा के बहुत अच्छे तरीके से समझा गया तारीख़ को पढ़के और उस बाब में जिसका नाम है **कमाई और तिजारत सआदते अबदिया** के तुर्की वाले तर्जुमे में, इस्लाम काम और तरक़्क़ी का मज़हब है। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने हुक्म दिया के रोज़ाना की तरक़्क़ी और बेहतरी के लिए, ये फरमाके के, **"वो जो** [लगातार] **दो दिन तक एक ही दरजे पर रहे या कोई तरक़्क़ी न करे वो अपने आपको धोका देता है।"** आपने ये भी फरमाया, **"दूसरे दिन तक के लिए मत टालो, या फिर तुम तबाह हो जाओगे!"** और **"ग़ैर मुल्की ज़बाने सीखो। इस तरह तुम अपने आपको दुश्मनों की हसद से बचा पओगे!"**

ये बहुत नामुनासिब और बेबुनयाद है कहना के दूसरी दुनिया की रहमतों के बारे में सोचना काम करने में रूकावट है। ये हदीस, **"वो जो काम करके कमाता है वो कयामत वाले दिन पूरे चाँद तरह चमक रहा होगा"; "एक आलिम का सोना इबादत है"; "जो हलाल है वो कमाओ और फायदे वाले कामों पर लगाओ/खर्च करो"; उस शख़्स के गुनाह माफ हो जाएंगे जो इस्लाम में अपने भाई को पैसा देता है,"** और **"हर चीज़ की उसत क रसाई है। जन्नत में जाने का रास्ता ईल्म है,"** हुक्म दो हमें कमा कर गुज़ारा करने का और फरमाइए के वो जो जाईज़ तरीके से कमाते हैं और अपनी कमाई फ़ायदे वाली चीज़ों पर लगाते हैं दुनिया में वो दूसरी हासिल कर लेते हैं। "मज़हब लोगों को बग़ावत करने से रोकता है। "मज़हब लोगों को बग़ावत करने से रोकता है। इसलिए, ये है नशा/अफ़ीम," उसने कहा। ये बहूदा बात इस लेखक की बहुत अच्छी तरह उसकी कम समझदारी को ज़ाहिर करती है मज़हब और

तहज़ीब के वास्ते से। ये साफ़ है के ये अलफाज़ किसी ईल्म या छान बीन को ज़ाहिर नहीं करते। ये कुछ नहीं है बल्कि एक किस्म है शोषण/इस्तेहसाल की जो साम्यवादी/कम्युनिस्ट रहनुमाओं की चापलूसी के इरादे से की जाती है ताकि मज़हब के ख़िलाफ़ अंधी दुश्मनी करके एक ओहदा हासिल किया जाए। वो जो अपना ईमान देते हैं/परे रख देते हैं हासिल करने के लिए जिसे दुनियावी तौर पर कहा जाता है **"मज़हब के धौकेबाज़।"** वो हमेशा गलत होते हैं और आफ़तों में घिर जाते हैं। उनके बड़े, जिनके साथ वो कोशिश करते थे अपने आपको शुक्रिया हासिल करवाने के लिए, वो अपने मरतबों से गिर गए। हर फ़ानी होने होने वाली चीज़ की तरह, ये बड़े, अल्लाहु तआला की मौजूदगी उनका फ़ैसला किया जाएगा, जिसे उन्होने नकारा और वाहियात तरीके से मुख़ालफ़त की, वो कभी न ख़त्म होने वाले अज़ाबों में घूम गए। उनके ख़ुशामदी उन्हें भूल गए और, अपने ज़ाती मफ़ाद के लिए दूसरी जमाअतों की तरफ़ मुंतकील हो गई, उन्होने दूसरी फ़ानी चीज़ों को पूजना शुरू कर दिया।

6– "अरब मुल्कों में जहाँ रेगिस्तान का कानून ग़ालिब है, वो भौतिकवाद और जिन्हें अपने माल से सब कुछ लेना होता है उनके फलसफ़े पर हमला करते हैं," उसने कहा।

जबाव: पहले, मज़हब के दुश्मन कुछ क़ीमती अलफ़ाज़ जो आला तसव्वुफ़ वालों के होते थे उन्हे याद कर लिया करते थे, लिखते थे और कहते थे लापरवाई के साथ बिना उसका मतलब समझे हुए और नौजवानों को फंसाने के लिए तरीका के आदमी बन जाते थे। लेकिन अब, मग़रिबी आदमी सांईस वाले और ख़्याल के उनके अलफ़ाज़ वो याद कर लेते हैं, तलबे चाट कर और अपने मास्टरों के गिलासों में शराब भरकर, और चापलूसी करके, वो डिपलोमा हासिल करते हैं और एक ओहदे को झपट लेते हैं। एक मोहज़ब और ईल्म का जानने वाला आदमी का नाटक करते हुए वो इस्लाम के ख़िलाफ़ अपनी दुश्मनी

को बाहर निकालते हैं उन अलफाज़ के ज़रिए जो उन्होने याद कर लिए, वो नौजवानों को देते हैं और मुसलमान बच्चों को धोका देने की कोशिश करते हैं उनको मिस्तरी और मुश्तरीक की बहुत लुभावनी पेशकश देकर।

ये कमज़रफ़ लोग जो सांईसी ईल्म में पीछे हैं लेकिन ग़ैर कानूनी तरीके से डिपलोमे हासिल कर लेते है और जो इस्लाम पर एक "सांईसदां" के नक़ाब में हमला करते हैं जिन्हें **"सांईस का दग़ाबाज़"** कहते हैं।एक वक़्त में, ऐसे झूठे सांईसदां एक ज़िले के हाकिम बन जाते हैं अपनी मशकूक डीपलोमे की वजह से।ये देखने पर के लोग उसे कोई इज़्ज़त नहीं दे रहे एक नतीजे वाले शख़्स की तरह, तो वो मीटींग रखता है, गाँव के लोगों को और मज़हब के आदमियों को इकट्ठा करता है, और ऐसे नाम उगलता है जैसे के मादी फलसफ़ा, जदीद और रोशन आदमी।ये देखने पर के हर कोई मज़हबी आदमियों की इज़्ज़त कर रहा है लेकिन उस पर कोई ध्यान नहीं दे रहा, वो गुस्से में गिर जाता है।वो बे बुनयाद बातें करता है और अपने गंदे किरदार और बुरे ख़्यालों को ज़ाहिर कर देता है।जबके, मज़हब के आदमियों की तरफ़ इशारा करके, उसके कहा, "वो जो यूरोप नहीं गया वो एक एक गधा है।" मुफ़्ती एफ़ेंदी, अपना सबर खो बैठे, कहा, "क्या तुम्हारे बुलंद बाप ने कभी अपनी मौजूदगी से यूरोप को इज़्ज़त बख़्शी?" जब दूसरा झुकने लगा जवाब देने के लिए "नही" खुरदुरी आवाज़ के साथ, मुफ़्ती एफ़ेंदी ने फ़ैसला दिया, "तब, तुम्हारे इज़्ज़त मआब अहमक़ पिज़ही के होंगे," इस तरह वो हाक़िम नुमा शकल अपने ही जाल में फंस गई।वो "तरक़्क़ीयाफ़्ता" और "रोशन" लेकिन बंद दिमाग़ के और जाहिल लोग, जो इस्लामी आलिमों की बड़ाई या मश्हूर और इज़्ज़त से नवाज़े गए बरतर लोगों को नहीं जानते जो इस्लामी तहज़ीब के जिनसे सारी दुनिया के कुतुब खाने भरे पड़े हैं, उन्होने इस्लाम के स्टील के कीले पर धमाके वाली बंदूकों से हमला किया, ऐसा बोला जाता है, और उन्होने सबने अपने आपको बेइज़्ज़त कराया और शिकस्त पाई।

7– “वो जो मआशियत में ज़वाल का सबब हैं वो इन हालात का फायदा उठाते है और मशवरा देते हैं के हर किसी को किस्मत के एक निवाले और एक कोट पर राज़ी हो जाना चाहिए।इससे साबित होता है के मज़हब का असर कितना मदहोश कर देने वाला है।तहज़ीब का मतलब है और ज़्यादा मआशी ख़ुशहाली की चाह रखना और उसके लिए मशक़त करना।लेकिन मज़हब समाज के लिए इस तरक़्क़ी की तहरीक को तोड़ देता है और बेहिस कर देता है ऐसे तआसूरात को जैसे तसकीन किस्मत के साथ, दूसरी दुनिया और रूहानियत,” उसने कहा।

जवाब: यहाँ एक और ज़िन्दा तस्वीर है ख़ुशामद की, जो हम पिछले पैरा में बता चुके हैं! कितना बड़ा झूठ है के ये कहना के इस्लाम के लड़ाकू, जो तीस साल में तीन बरे आज़मों में आबाद होने आए, उन्होने परशीया और रोम उस वक़्त की दो सबसे बड़ी रियास्तें और ख़ास तौर से पूरी परशीया रियासत को ख़त्म किया) की फौज़ों को हराया, और जिन्होने हर क़ौम को प्यार से जीता अपने इंसाफ और ख़ूबसूरत मोहज़ब सलीके से, वो बेहिस थे, मदहोश लोग थे जिन्हे अफ़ीम दी जाती थी! अगर किसी को थोड़ी सी भी तारीख़ के बारे में पता है वो सिर्फ़ ताना देगा और नफ़रत करेगा ऐसे नीच, बेबुनयाद तोहमत पर।इस्लाम लोगों को काम करके तरक़्क़ी करने का हुक्म देता है और जन्नत का वादा करता है उनसे जो मालदार हो जाते हैं और गरीबों की मदद करते हैं।अगर ये लेखक इस्लामी हुनर का काम देखले, जिसपर यूरोपियों और अमेरिकनों ने तअज्जुब किया, और उनके मज़मून जिसमें उन्होने मुसलमानों के ईल्म और सांईस की काबीलियत को सराहा, वो शायद इन सतरों को घसीटने में शर्म महसूस करता।हम कहते हैं ‘शायद’ वो इसलिए क्योंकि ये एक नेकि है शर्म का एहसास लेकर चलना, और ये सोच से बाहर है के एक बदकार शख़्स से पशेमानी की उम्मीद करना।

इस्लाम मुसलमानों को काम करने और तरक़्क़ी करने का हुक्म देता है। तसकीन का मतलब सिर्फ़ ये नहीं है के "सिर्फ़ एक कोट" पर राज़ी हो जाना और बेकार बैठ जाना। मुसलमान इस तरह के बिल्कुल नहीं है। तसकीन का मतलब है के अपनी कमाई पर राज़ी होना और न के दूसरों की कमाई पर लालची आँखें रखना। ये इस्लाम था जो यूरोप में तहज़ीब लाया था, इस्लाम ने ही उनको मआशी ख़ुशहाली का रास्ता दिखाया और लोगों को हुक्म दिया के काम करो उसे हासिल करने के लिए। नीचे बताई गई हदीस, इसी तरह की दूसरी, बताती हैं के ऊपर हवाला दिए गए लफ़्ज़ बहुत बड़े झूठ हैं: **"इस तरह रहम दिल, लोगों में सबसे बड़े वो है जो दूसरों के लिए ज़्यादा फायदेमंद हैं;" "सबसे बड़ी महरबानी है ख़ैरात देना;" "तुम में से सबसे रहमदिल वो है जो लोगों को ज़्यादा खाना खिलाए,"** और **"तुम में सबसे रहमदिल वो है जो दूसरों से कोई उम्मीद न रखे बल्कि अपना काम करे और गुज़ारे का कमाए।"**

8– क्या अपाहिज की कोशिश अपने ज़माने की तहज़ीब के साथ निपत पाएगी उस तारीख़ के रूख़ पर जो के ज़रूरी ताक़त है मज़हब की। मज़हब की बहुत ज़रूरी हुक्म, जो क्रांती के रास्ते में रूकावट है, उसे मिटा देना चाहिए" उसने कहा।

जबाव: इस बेशर्म सांईसदां ने दोहारा "तहज़ीब" और कोशिश की नौजवानों के दिमाग़ों को अपने वस में करने की अपने जादूई लफ़्ज़ों के साथ। वो सोचता है ये तहज़ीब है के इतनी बड़ी, मज़बूत कारखानें लगाना और बिजली की मशीनें बनाना और न्यूक्लियर-ताक़त वाले कारखानें लगाना, जिमा को बढ़ावा देना और तफ़रीह के तौर पर औरतों का इस्तेमाल करना। वो अपने को हाकि़म भी बनाना चाहता है बेरूनी सरमाए की तस्करी करके, झूठ बोलकर धोका और फरज़ी कहानियों से, या वहशी इच्छाओं को पूरा करके काम वाली जमाअत के खरचे पर गुज़ारा करके। वो तहज़ीब जो इस्लाम के आलिमों ने

वाज़ेह करी है और मुसलमानों को हुक्म दिया है वो ये है **"तामिर-ए-बीलाद व तरफीह-ए इबाद,"** वो इसलिए के मुल्कों की तरक़्क़ी के लिए इमारतें, मशीने और कारखाने तामीर करो और इस तकनीक को इस्तेमाल करो और सारे माल पैसे को लोगों की आज़ादी, भलाई और अमन के लिए। बीसवीं सदी में, इन दो तहज़ीब की हालतों में से पहली मौजूद है। अगरचे टेकनालोजी में जो तबदीली है वो हैरान करने वाली है, मआशी और तक़नीकी खोजें लोगों को गुलाम बनाने के लिए हैं, ज़ुल्म के जुर्म को बढ़ाने और आफ़तें देने के लिए है। साम्यवादी रियास्तें और तानाशाही हकुमतें इसकी मिसालें हैं। बीसवीं सदी एक इस्तलाहात की सदी है।

ये समाजवादी/इश्तराकी लेखक अपनी इस इच्छा के बारे में बहुत संजीदा है के मज़हब को मिटा दे, क्योंकि इस्लाम ने मना बदअख़लाकी को, बेई मानी को, शोषण, बहाने बाज़ी, तानाशाही, इलज़ाम लगाने को और, मुख़्तसर ये के, हर तरह के बुरे बरताव को जो इंसानियत को काटे। एक हासिद शख़्स गंदे किरदार के साथ बेशक नहीं सोचेगा के कोई अच्छा काम हो। नीची ज़िन्दगी का हारा हुआ बेशक डरेगा इस्लाम की तामीर से। ये बेईमान यक़ीन न रखने वाला तारीख़ को बुलाता है अपनी झूठी कसम खाने के लिए ये साबित करने के लिए के इस्लाम ने तहज़ीब को अपाहीज कर दिया। अगर उसे थोड़ा बहुत तारीख़ का ईल्म होता, तो शायद वो अपने आपको थोड़ा बहुत रोकता। फिर भी ग़ैर मुस्लिम तारीख़दां भी इस सच्चाई को मानते है के इस्लाम ने तहज़ीब की ख़िदमत की और यूरोप और अमेरिका में जदीद तरक़्क़ी पर रोशनी डाली।

ये साफ़ है के ये जाहिल सांईस का धौकेबाज़ इतना अकलमंद या पढ़ा हुआ नहीं है के ये झूठ के अफ़साने अपने आप बना ले। वो कोशिश करता है इस्लाम को छोटा दिखाने की उन हमलों का हवाला देकर जो यूरोप में सही तरीके से ईसाईयत के ख़िलाफ़ थे। बहरहाल, क्योंकि वो गलत है और

क्योंकि उसका जाइज़ा और समझ साथ के साथ उसका ईल्म इतना नाकाफ़ी है, के उसने उसको अबतर कर दिया।

ये मुनासिब रहेगा यहाँ पर उनके बारे में जो ईसाईयत के ख़िलाफ़ हैं और क्यों उन्होने उस पर हमला किया और ये भी वज़ाहत दे दूँ के ये हमले इस्लाम की तरफ़ रूख़ करते।

ईसायत, जो अपनी पाक कदरों को खो चुके थे एक साथ कोनसटेनटाईन द ग्रेट, के ज़माने में, वो सिर्फ़ सियासी फ़ायदों के लिए बन गया था।पादरियों ने ग़ैर ईसाइयों के ख़िलाफ़ ख़ूनी जंग शुरू कर दी थी।वो हर किसी को ज़बरदस्ती बिना सोचे समझे ईसाई बनाना चाहते थे।लूथेर इन हमलों को करने में अपनी इंतेहा को पहुँच गया।वो बहुत तैश (गुस्से) में था हर मज़हब के खिलाफ़, किसी भी क़ौम जो के परोटेसटेनट नहीं थी।तब्लीग़ी तनज़ीमें, दूसरी तरफ़ हर एक को वरग़लाने की कोशिश कर रही थीं, हर एक को भटका रही थीं उनके ज़मीर से और फिर ईसाईयत को फ़ैला रही थीं रोज़ाना एक नया मज़मून निकाल कर।ईसाई हमला, जो न तो ईल्म और न ही सांईस के मुताबिक़ था और जो कभी धोका देकर, अठारवींह सदी में वो यूरोप में ईसाईयत के ख़िलाफ़ नफ़रत भड़काने के ज़िम्मेदार थे।ये लिखा गया था के पादरी लोगों को धोका दे रहे हैं, उनको वहमों में ईमान रखने के लिए मजबूर कर रहे थे और कोशिश कर रहे थे के हर किसी को अपने ख़्यालों का गुलाम बना लें।लेकिन ये दुश्मनी सिर्फ़ ईसाई मज़हब के ख़िलाफ़ नहीं हुई।वहाँ ऐसे भी मौजूद थे जो हर मज़हब को हमले का निशाना बना रहे थे।बनाए ये देखने के ये पादरियों के बुरे काम जन्में उनके मज़हब में गंदगी और दख़लअंदाज़ी से, उन्होने सोचा ये मज़हब से जन्में हैं।बिना मज़हबों को पढ़े, उन्होने ईसाईयत में ज़ाती बुराईयों को मज़हब से मनसूब कर दिया और मज़ाहिब पर हमले करने लगे।उनमें से एक जो अपने मज़हबों से दुश्मनी में बहुत आगे चला गया वो था वोलटेएर।लूथर की तरह, वो भी इस्लाम पर तोहमतें लगाता था और सोचता

था के हमारे मास्टर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) जैसा के लूथर ने बयान किया, वो आपके बारे में गलत बोलता था। बिना इस्लाम को पढ़े, ये भी, आम ईसाइयों की तरह, सब मज़हबों पर हमले करने लगे।

उन्नीसवीं सदी में पहली बार, वोन हरडर, एक जर्मन, ने कहा के अंधों की तरह मज़हबों के ख़िलाफ़ दुश्मनी रखना ऐसा ही गलत है जैसे के ज़बरदस्ती ईसाई बनाना। उसने ये ज़रूरत जताई के मज़हबों को पढ़ो, ख़ासतौर पर इस्लाम को। इस तरह, यूरोप में लोग मौहम्मद (अलैहिस्सलाम) की ज़िन्दगी को समझने लगे और हैरत अंगेज़ बरतर रोशनी से जगमगाते रास्ते जो इस्लाम ने दिखाए वाहिद निज़ाम के लिए, ख़ानदानों और मआशरे के लिए। कारील, एक अंग्रेज़ मूफ़क्कीर, ने मौहम्मद (अलैहिस्सलाम) की ज़िन्दगी, मोहज़ब आदतें और हैरत अंगेज़ियाँ एक इबारत में **एक हीरो जो नबी है** अपनी किताब जिसका नाम **द हिरोज़** है, जो उन्होने **1841** में लिखी थी उसमें ज़िक्र किया है। इस किताब में उन्होने लिखा, "एक बुलंद शख़्स जो हज़ारों लाखों/सेकड़ों लोगों के निज़ाम को बारह सदी तक चलाते रहे और जो सबब बने मशरिक और मग़रिब में तहज़ीबी रियास्तें कायम करने के वो कभी भी खोटे नहीं हो सकते जैसा के लूथर और वोटेएर ने लिखा। एक नीचा शख़्स कभी भी हज़रत मौहम्मद (अलैहिस्सलाम) की हैरत अंगेज़ियों को नहीं जान सकता। सिर्फ़ एक मुकम्मल शख़्स जो ईमान रखता हो और मोहज़ब हो वो दूसरों को यकीन दे सकता है। मौहम्मद (अलैहिस्सलाम) इंसानियत को बुलंद करने के लिए पैदा हुए। अगर ऐसा नहीं होता, कोई भी उन्हे नहीं मानता। मौहम्मद (अलैहिस्सलाम) के लफ्ज़ सच्चे है, एक झूठ के लिए एक घर कायम करना भी मुश्किल है, यहाँ तो पूरा एक मज़हब है।" कारिल के ज़माने में, यूरोप में कोई मोअतबिर इस्लामी किताबें नहीं थीं। बहरहाल, अपनी तेज़ बसीरत और पढ़ाई की मदद से, जिसमें कई साल लगे, उन्होने ईसाइयों के झूठ को और न ही मज़हब के दुश्मनों के झूठ को नहीं माना और वो इस क़ाबिल हो गए के तारीख़ी सच को

देख सकें। आज, बहुत सारी इस्लामी किताबें यूरोपियन ज़बानों में तर्जुमा की जा रही हैं, और जो कारिल की तारीख़ी लिखाई में गलतफहमियाँ और शकूक थे वो वाज़ह किए जा रहे हैं।

अगर लूथर के नफ़रत ज़दा मज़ामीन कुरआन अल-करीम के ख़िलाफ़ और खौफ़नाक कहानी फ़साने की तरह वोलटाएर के ज़रिए मौहम्मद (अलैहिस्सलाम) के बारे में उसे इस मज़मून **एक हीरो जो नबी है** कारिल के ज़रिए से मिलाया जाए, तो किसी को भी ये समझ आ जाएगा अच्छी तरह के कितना मुख़्तलिफ़ इस्लाम को देखा गया पुर जोश ईसाइयों या मज़हब के नावाक़िफ़ दुश्मनों के ज़रिए और ईल्म के आदमियों और जाँचने वालो के ज़रिए। कारिन के बाद, अंग्रेज़ी आलिम लार्ड दवेनपोर्ट ने बहुत तफ़सील के साथ मौहम्मद (अलैहिस्सलाम) की ख़ूबसूरत ज़िन्दगी और मोहज़ब किरदार और इस सच्चाई को के कुरआन अल-करीम एक ऐसा ईल्म का ज़रिया है जो लोगों की ख़ुशियों की तरफ़ रहनुमाई करता है उसे समझाया है। उन्होने जवाब देकर उनको ख़ामोश कर दिया जो कुरआन अल-करीम और मौहम्मद (अलैहिस्सलाम) पर तौहमतें लगाते थे।

ऐसे देखा गया है, आज, इस्लाम के दुश्मन, गलत नुमाइंदगी की आग को जलाने के लिए, ज़हर हासिल करते हैं तीन ज़रियों से: ईसाई तबलीग़ी जमाअत, वो जो मज़हब पर बंद आँख से हमला करते हैं वोलटेएर की तरह, और इश्तराकी जो लोगों को जानवरों और मशीनों की तरह इस्तेमाल करते हैं हर तरह का सच और अच्छाई को ख़त्म करके।

9– "मज़हब का मतलब है वो सब रख देना जो उसके पास है, तसकीन, मुसिबतें और नबराबरी को मान लेना। ये मुआशरे पर मौजूदा हदों को बांध/मुकर्रर कर देता है। ये एक अच्छी ज़िन्दगी हासिल करने से रोकता है जो फर्क को घटाता है दर्जो [समाजी] के बीच में और इस्तेहसाल/शोषण को रोकता

है। ये ज़ुल्म पूरा होता है दोज़ख़ के डर के साथ। जो मुसिबत झेलते हैं उन्हें जन्नत से तसल्ली दी जाती है। ये फरदों की शख़्सियतों को मार देता है," उसने कहा।

जवाब: वो मुसलमान बच्चों को ज़हरीला बना देना चाहता था उस ज़हर के साथ जो उसने ऊपर बताए गए ज़रियों में से हासिल किया, लेकिन वो इसमें कामयाब नहीं हुआ। आज, नौजवान लोग इस्लामी किताबें पढ़ते हैं और ईमान को सही से जानते हैं। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने बयान किया: **"एक शख़्स दो दिन (लगातार) एक जैसी कमाई करता है वो नुक़सान उठाता है। एक मुसलमान को हर दिन तरक्की करनी चाहिए।"** एक अकलमंद जवान जिसने इस हुक्म को सुना और ध्यान से पढ़ा इस हुक्म को **"आगे!"** हज़रत उमर, रसूलुल्लाह (अलैहिस्सलाम) के ख़लीफ़ा के ज़रिए, वो बेशक उस नावाकिफ़ शख़्स के झूठ पर ईमान नहीं रखेंगे, जो अपने आपको "तरक्कीयाफ़्ता" आदमी बताता है। इस्लाम ग़ैर मसावात को मंज़ूरी देने का हुक्म नहीं देता, बल्कि उसको ख़त्म करने का देता है और इंसाफ़ का हुक्म देता है। हदीस असशरीफ़, **"मैं एक इंसाफ पसंद राजा के ज़माने में आया,"** मुशरिकों के इंसाफ़ को सराहना बिना पाक किताबों के। हदीस असशरीफ़ लिखी गई **अल मानवी** और **अद दाइलामी** में बयान करती हैं: **"वो जो सबसे पहले जन्नत में दाख़िल होंगे वो इंसाफ वाले काज़ी और ईमानदार मुदब्बिर।"** क्या ये हदीस शरीफ़ हुक्म देती है और बढ़ावा देती है तकलीफ़ और ग़ैर मसावत को या नज़रअंदाज़ करती है? हमारे पढ़ने वालों का ज़मीर ज़रूर इसका सही जवाब देगा, और ये अच्छी तरह से समझा जाएगा के ये गुमराह नास्तिक लेखक कैसा है और किसकी ख़िदमत करने की कोशिश कर रहा है।

इस्लाम ज़कात, उधार और आपसी मदद का हुक्म देता है। ये हमें बताता है के जो इन अहकाम को मानते हैं, जिससे समाजी दर्जों में फर्क को

ख़त्म किया जाता है, वो जन्नत में जाएंगे। वो नहीं जो दर्द को झेल रहे हैं, बल्कि वो जो अपने आपको दर्द देने वाले के लिए छोड़ दें, बनाने वाला/पैदा करने वाला, वो जन्नत में जाएंगे। इस्लाम एक तरक़्क़ीयाफ़्ता, हरकत वाला मज़हब है जो सबको एक अच्छी ज़िन्दगी की तरग़ीब देता है। इस्लाम "मौजूदा हदूद को बांधना" ये नहीं करता बल्कि बोलने वाले को आज़ादी देता है अपने को हम ज़माना हालतों में रखने की तिजारत, सनत, काशतकारी और जंगी इस्तलाहात, और हर किस्म की सांईसी खोज को तरक़्क़ी करने के लिए इस्तेमाल करने की। अल्लाहु तआला ने अपने सबसे प्यारे नबी (अलैहिस्सलाम) को भी हुक्म दिया, जो सबसे आला और अकलमंद इंसान थे हर मामले में, के **"सहाबत अल-कराम से मश्वरा लिया करो! उनके साथ सलाह किया करो!"** हर इस्लाम के ख़लीफ़ा के पास मशावरती जमाअत, सलाहकार और ईल्म को जानने वाले आदमी थे। ये उनको इजाज़त नहीं थी के बग़ैर उनके मश्वरे/राए से कोई काम किया जाए। वहाँ पर 'इबादत' में कोई तबदीली या तरमीम नहीं थी, लेकिन तरक़्क़ी और बढ़ोतरी टेकनोलॉजी में और दुनियावी कामों में उसका हुक्म है। यही सबब था के इस्लामी रियास्तें मशरिक में और मग़रिब में कहीं भी कायम हो गई और हर लिहाज़ से आगे बढ़ीं। इस्लाम एक ऐसा मज़हब है जो वाहिद शख़्सियत को सहल करता है और सोचने की आज़ादी देता है। हर मुस्लिम पूरी दुनिया से ज़्यादा क़ीमती है।

10– ये मज़हब अंदरूनी और बेरूनी शोषण का नतिजा है। तसकीन और किस्मत पर छोड़ देना काहिली और शोषण का सबब बनता है। पैदावार के ज़राए कुछ ही हाथों में रह जाते हैं। बड़े हुजूम दुनियावी ख़ुशियों को हासिल करने के लायक़ नहीं समझे जाते। 'एक निवाला और सिर्फ़ एक कोट' की फिलोसफ़ी जीने की ताक़त और मेहनत के साथ चली गई। दूसरी दुनिया की उम्मीद तकलीफ़ें और परेशानियों का सबब बनती हैं," उसने कहा।

जवाब: मज़हब के बारे में बात करने के लिए कम अज़ कम थोड़ी बहुत मज़हबी जानकारी तो होनी चाहिए। इस्लाम को आज के सरमाएदार और साम्यवादी इस्तेसाहलियों से मुकाबला करना, इस्लाम पर हमला करना उसकी इस्लाम के ख़िलाफ़ दुश्मनी को दिखाता है, एक दुश्मनी जो इतनी बढ़ी हुई है के इसने आँखें बंद कर दीं और अकल को गुस्से से भर दिया। जबके मग़रिबी सरमाएदारों और ज़ालिम साम्यवादियों के ख़िलाफ़ कुछ नहीं कहा, जो पैदावार के ज़रियों को कुछ हाथों में रखते हैं और लोगों का शोषण करते हैं, उसने इस्लाम पर हमला किया, जिसने समाजी बराबरी का हुक्म दिया, वो अलग से नफ़रत करता हैं इस्लाम से और खुली चाकरी करता है रूस की। क्योंकि उसे इस्लामी ईल्म, वक़्त के बारे में कुछ नहीं पता और दोबारा उसने तसकीन और कदर/कज़ा पर हमला किया। तहज़ीब के नाम में वो सिर्फ़ मआशियत और पैसा कमाने की बात करता है। वो नहीं समझता के तसकीन ऐसा हिस्सा है जो नफ़सियाती बीमारियों को रोकता है, नामुनासिब और दुश्मनी को ख़त्म करता है, और समाज में कायदा कायम करता है। तसकीन ने इस्लाम को बहुत तेज़ी से पूरी दुनिया में फ़ैलाने और ईल्म और सांईस के स्मारक खड़े किए। क्या ये आयतें, **"जो काम करेगा वो पाएगा",** और **"सबको मिल जाएगा** [अजर के लिए] **जो उसने किया है",** और दूसरी बहुत सी हदीस, जैसे के, **"अल्लाहु तआला उनको पसंद फरमाता है जो काम करके कमाते हैं,"** और **"अल्लाहु तआला बिल्कुल उन जवान लोगों को पसंद नहीं करते जो काम नहीं करते,"** जो के **अल-मुनावी** में लिखी हुई हैं, मुसलमानों को हुक्म देते हैं काम करने और तरक्क़ी करने का या सुस्त रहने का? क्या उमय्यद, अब्बासिद, ग़ज़नवी, हिंदुस्तानी तेमरलंग, अंडालूसियन और ऑटामन/उस्मानिया तहज़ीबें, जो के मुसलमानों के ज़रिए कायम हुई, इशारा करती हैं मुतालआ करने वालों का या काहिली का? क्या एक देरवेश के बहुत ज़्यादा ये लफ़्ज़ कहने से "एक निवाला और सिर्फ़ एक कोट" तबदील कर देगा कुरआन अल-करीम और हदीसों के अहकाम को? एक दरवेश का बहुत ज़्यादा बोलना अपनी सर

मस्ती/जुनून की हालत में वो उसके लिए सही और उसकी हालत को काबू में करने के लिए है, लेकिन ये पूरे इस्लाम के लिए नहीं है। दूसरी दुनिया पे ईमान रखना तक़लीफ़ों को पैदा नहीं करता बल्कि क़ायदा और आराम पैदा करता है अलग-अलग, खानदानों और समाज के लिए। इस्लाम ख़ुद को मारने का हुक्म नहीं देता, बल्कि समान और रूहानी तकलीफ़ों को ख़त्म करने को और ज़हमत और दुखों को टालने के लिए है।

11– "इन मुल्कों का निज़ामें हुकूमत अभ भी रेगिस्तान के कानून के साथ चल रहा है," उसने कहा।

जवाब: वो हुक्म और तालिमात जो कुरआन अल-करीम में अल्लाहु तआला ने ज़ाहिर कीं और हज़ारों हदीसों ने सारी दुनिया से इल्म के आदमियों में और अकल में ख़ुशी जगा दी। इन तालिमात और अहकाम की बरतरी और ख़ूबी समझाने के सिलसिले में, इस्लाम के आलिमों ने हज़ारों किताबें लिखी, उनमें से कुछ का इस किताब में हवाला दिया गया है। ग़ैर मुस्लिम ईल्म के जानने वाले आदमी भी जल्दी से इस सच्चाई को बता देते हैं। गोएथे ने कहा, "वो जो कुरआन अल-करीम को पहली बार पढ़ता है उसे मज़ा नहीं मिलता, लेकिन उसके बाद ये पढ़ने वाले को ख़ुद अपनी तरफ़ खींचता है। बाद में, ये अपनी ख़ूबसूरती से उसे फतह कर लेता है।" गीब्बन ने कहा, "कुरआन अल-करीम न सिर्फ़ अल्लाहु तआला में और दूसरी दुनिया में ईमान को ज़ाहिर करता है बल्कि शहरी कानून और जराईम के ज़ाबते में भी। ये न तबदील होने वाले एहकाम अल्लाहु तआला के और कानून जो इंसानों के सब मामलात और रियास्तों पर हुकूमत करते हैं।" [**'रोमन सल्तनत का ज़वाल और तनज़्ज़ुल'**, एडवर्ड गीब्बन, मुरतब किया डेरो ए सोनडरस, पी पी **650-660**।]

दवेनपोर्ट ने कहा, "कुरआन अल-करीम मज़हबी फराईज़, रोज़ाना के काम, रूहानी पाकी, जिस्मानी सेहत, आदमियों के समाजी और शहरी फराईज़

और हुकुक, वो चीज़ें जो लोगों और मआशरे के लिए फ़ायदेमंद हैं, और मोहज़ब और सज़ा का ईल्म इन सबका इंतेज़ाम करता है। कुरआन अल-करीम एक सियासी निज़ाम है हर जानदार और बेजान की रियास्तें ये तरतीब देता है। मोहज़ब पर, ये बहुत साफ़ और मज़बूत है। कुरआन अल-करीम हमेशा मदद करने का हुक्म देता है। ये समाजी मसावात को मज़बूत करता है। ये तहज़ीब पर ज़ोर का सहायक असर छोड़ता है। वहाँ पर ऐसा कोई बरताव ऐसे नामुनासिब और ऐसे मज़ाक उड़ाने वाले ऐसे आमने सामने, ज़िददी पने और दुश्मनी से बाहर, ये कुरआन अल-करीम नावाकिफ़ तनकीद के साथ; ये सबसे ज़्यादा किताब है जो अल्लाहु तआला ने भेजी है इंसानियत की भलाई और ख़ुशहाली के लिए।"

ऐसा देखा गया है के हर अकलमंद और माकूल शख़्स कुरआन अल-करीम से जुड़ जाता है और उसकी इज़्ज़त करता है जितना ज़्यादा वो उसको समझता है। कोई बदअख़लाकी, बेबुनयाद या अहमक पन इतना ख़राब नहीं है जितना के ये कहना "रेगिस्तान का कानून" इस पाक किताब के बारे में।

12– "दूसरे मशरीकी मुल्क अपने आपको एक क़ौम परवर मानते हैं, मग़रिबी विचारधारा ने रेगिस्तान का कानून परे फेंका, और वो ज़मीर वाले बन गए मज़हब की अफ़ीम छोड़कर", उसने कहा।

जवाब: ग़ैर मुस्लिमों ने भी अपनी ख़ुशी ज़ाहिर की है इस्लाम के लिए, जिसे ये नवाक़िफ़, वहमी लेखक अफ़ीम कह रहा है। मोकीम ने कहा, "कोई वक़्त इतना ख़राब नहीं सोचा जा सकता जितना के वो काले दिन जब यूरोप धूँधला हो चुका था दसवीं सदी में। फिर भी लातेन क़ौमें जो उस ज़माने की सबसे ज़्यादा तरक़्क़ी वाली थीं, उनके पास कुछ नहीं था ईल्म और सांईस के नाम पर मन्तक़ के सिवा। मन्तक़ को सबसे बरतर समझा जाता था और दूसरी ईल्म की शाखाओं की बनिसबत। उस वक़्त मुस्लिम ने स्पेन और इटली में

अपने स्कूल तामिर किए। नौजवान यूरोपियन आदमी इन जगहों पर ईल्म सीखने के लिए जमा होते थे। इस्लामी आलिमों के पढ़ाने के तरीकों को सीखने के बाद, उन्होने अपने ईसाई स्कूल खोले।"

हैरान करने वाली इस्लामी तहज़ीब, जिसे लिखा गया और सराहा गया है एक राए से पूरी दुनिया की तारीख़ की किताबों में, उसे कुरआन अल-करीम के मानने वालो के ज़रिए कायम किया गया। आज, सांईस तरक़्क़ी कर रहा है और बड़ी-बड़ी सन्नतें यूरोप, अमेरिका और रशिया/रूस में कायम की गई। खला में सफ़र शुरू हुआ, लेकिन इनमें से किसी मुल्क में भी दिमागी सकून हासिल नहीं हुआ। मालिकों की फज़ूल खर्ची और बरबाद करना और मुलाज़िमों की गरीबी किसी का ख़ात्मा नहीं किया गया। इश्तराकियत में रियास्त लोगों का शोषण करती है; सेकड़ों लोग सिर्फ़ अपने खाने के लिए काम करते हैं, वो वैसे ही भूखे और नंगे हैं जैसे थे, और एक ज़ालिम, कातिल अक़लियत उनके खर्च पर चल रही है। वो महलों में मज़ेदार ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं और हर बुरा काम कर रहे हैं। क्योंकि वो कुरआन अल-करीम को नहीं मानते, इसलिए उन्हें सुकून और आराम नहीं मिल पाता। तहज़ीबयाफ़्ता होने के लिए, ये ज़रूरी है के उन्हें सांईस और टेकनॉलोजी में नकल किया जाए, काम करने के लिए और चीज़ों को पूरा करने के लिए जैसे वो करते थे, क्योंकि कुरआन अल-करीम और हदीस में हमें हुक्म हुआ है के सांईस और फन में तरक़्क़ी करो। मिसाल के तौर पर, इबन अदी और अल-मुन्नवी (रहमतुल्लाहु तआला अलैहिमा) के ज़रिए हदीसों के बयान के मुताबिक़ ये वाज़ेह हुआ: **"अल्लाहु तआला बेशक अपने उन बन्दों को पसंद फरमाता है जो तरक़्क़ी करते हैं और एक हुनर रखते हैं,"** और जो हदीस **हकीम अत तीरमज़ी** और **अल मुन्नवी** में लिखी है वो वाज़ेह करती हैं: **"अल्लाहु तआला बेशक ये देखना पसंद करते हैं के उसका बन्दा हुनर जानता है।"** अकेले ये पूरा करने के लिए, बरहाल, ये काफ़ी नहीं है तहज़ीबयाफ़्ता होने के लिए। जो बरकतें कमाई गई वो बराबरी के साथ बांटी

जाए, और काम करने वाले को उसकी मेहनत के बराबर मिले। और ये इंसाफ सिर्फ़ तब ही हासिल हो सकता है जब कुरआन अल-करीम को माना जाए। आज, यूरोप, अमेरिका और रशिया/रूस उन मैदानों में कामयाब हैं जहाँ वो इस्लाम के मेल मुताबिक काम करते हैं। बहरहाल, क्योंकि फायदे कुरआन अल- करीम के इंसाफ के उसूलों के मुताबिक नहीं बांटे जाते, इसलिए लोगों को आराम और सुकून नहीं मिल पाता, और दर्जो/मरतबे की लड़ाई को टाला नहीं जा सकता। वो जो कुरआन अल-करीम को नहीं मानते वो कभी ख़ुश नही रह सकते। वो जो इसकी फरमाबरदारी करते है बिना यकीन के या यकीन के साथ, वो ये, ख़्वाह वो मुसलमान हैं या नहीं, उसको फरमाबरदारी है उसके लिए। वो जो इसमें यकीन रखते हैं और मानते हैं उन्हें दोनों के फायदे मिलते हैं दुनिया में भी और बाद में भी; वो आराम और ख़ुशहाली से इस दुनिया में रहते हैं और बाद में कभी न ख़त्म होने वाली ख़ुशियाँ, बेहद रहमतें उनपर नाज़िल होंगी। तारीख़ और रोज़ाना के वाक्य दोनों ये साफ़ बताते हैं के ये लफ़्ज़ सच्चे हैं। उनके लिए जो नहीं चलते उस रास्ते पर जो कुरआन अल-करीम ने उन्हें दिखाया है, कोई मसअला नहीं चाहे वो मुस्लिम हैं या नहीं; जितना दूर वो उसके बताए हुए रास्ते से जाएंगे उतना ही नुक़सान उन्हें झेलना पड़ेगा और सबसे ज़्यादा तबाह उनका मुस्कबिल होगा।

साकिब सबानजी, एक मशहूर तुर्की के कारोबारी, उन्होने बताया के जब वो अमेरीका में एक ख़ास दिल के ऑपरेशन के लिए था, तो एक मग़रिबी ईसाई के चर्च का पादरी उस अस्पताल में काम करता था वो ऑपरेशन से पहले मेरे पास आया और उसने कहा, “कल तुम्हारा एक ख़ास ऑपरेशन है। तुम मेरे मज़हब से नहीं हो, तुम एक मुस्लिम हो। लेकिन हम सब लोग एक ही पैदा करने वाले को मानते हैं। हम सब उसके इंसानी गुलाम हैं। ये एक फर्ज़ है उसके सारे गुलामों का के वो उसकी पनाह में जाए क्योंकि ये बहुत नाज़ुक वक़्त है। इसलिए, आज रात मैं तुम्हारे लिए दुआ करूँगा।” सकीप सबानजी के

तासिर ये हैं: "मैं बता नहीं सकता के उस पादरी के लफ़्ज़ों ने मुझे कितना हिला दिया और मुझे कितना हौसला मिला।" मंदरजाज़ेल उनका मज़मून एक रोज़नामा में शाआ/छपा **8** मार्च **1981,** में इस उन्वान के साथ "रूहानी कदरों की तरफ़ मुड़ना"।

"ये देखा गया है के सांईस और टेकनॉलोजी में बेहतरी के लिए कोई हदूद नहीं हैं। अगरचे, दूसरी दिखाई देने वाली हक़ीक़त ये है के सांईस और टेकनॉलोजी में बेहतरी, कच्चे माल की ताक़त को बढ़ाता है, और रोज़ाना का सुधार जीने के ढंग पूरा नहीं पड़ता आदमी को ख़ुशी दिलाने के लिए।

"इन सब से ऊपर, एक खास मकाम पर आने के बाद, सांईस और टेकनॉलोजी में बेहतरी और कामयाबी बढ़ते हुए समान के सरमाए में ये सब मुकम्मल होंगे **'रूहानी और अख़लाकी कदरों को हासिल करके।'**

"अब जो तरक़्क़ी हुई है जिसे **'जापानीस मॉडल'** कहते हैं वो इसकी एक खुली मिसाल है। **जापानियों की किस्म** और **'जापानियों की तरह कारखाने'** की आरज़ू आजकल तुर्की में रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में आम तौर पर बार-बार दोहराई जा रही है।

"जापानियों ने कारे बनाना मुत्हिद रियास्तें अमेरिका में एक बहुत बड़े कायम मकाम में कारखाने में सीखा। बहुत थोड़े अरसे में, बहरहाल, वो इस क़ाबिल हो गए के अन्तर्राष्ट्रीय और अमेरिका के बाज़ारों में इन स्थापनाओं का मुकाबला कर सकें। वो अपना माल बेचने में ज़्यादा कामयाब रहे।

"मेरे यकीन में, वहाँ पर तीन सबब थे इस कामयाबी के:

"**1.** टेकनॉलोजी;

"**2.** एक निज़ाम में काम करना;

“**3.** अपने कदीमी और रूहानी कदरों पर साबित कदम रहना।

“टेकनॉलोजी को एक मुल्क से दूसरे में तबदील करना मुमकिन है बावजूद इसके पैसे या मेहनत के।

“लेकिन नज़म-व-ज़वत/अनुशासन के काम, अपनी रिवायतों और रूहानी कदरों पर साबित कदम रहना इतनी जल्दी तबदील नहीं हो सकता जितनी जल्दी उन्हे उसके पैसे मिल जाएगें।बदकिस्मती, ये सारे हिस्से ऐसी ग़फलत की हालत में गिर चुके हैं और हल्के हो गए है हमारे मुल्क में।

“जब हम बहुत ध्यान से अपने माज़ी को देखेंगे और जापान के साथ मवाज़ना करेंगे, तो हमें दिखेगा के तुर्की नायाब क़ौमों में से थे दुनिया में अपनी रिवायतों में साबित कदम रहने में, काम करते हुए नज़्म-व-ज़नत बनाए रखने में और रूहानी कदरों को मानते में।

“वहाँ पर एक मज़बूत खानदानी/कुंबे का ढाँचा मौजूद है।घर के फरद अपने खानदान के बूढ़े के पास जमा होते हैं।वहाँ पर उनके लिए बहुत इज़्ज़त है, और वो नौजवानों को महफूज़ रखने के ज़िम्मेदार होते हैं।

“तुर्की अपने मुल्क, झंडे, मज़हब और पाकदामनी को बचाने के लिए मेहनत कर रहा हैं।ये उसके लिए मुकदस लड़ाई है।

“जंग में, वो लड़ता है **‘अल्लाह के नाम में।’** झब नया काम शुरू करता है, वो उसके नाम के साथ शुरू करता है।वो अपने प्यारों को अल्लाह के भरोसे छोड़ता है।

“वहाँ पर एक तरीका है ढंग का और रिवायतों का जो तुर्कीयों के बीच में दस्तकारी और तिजारत को चलाती है।पुरानी तिजारत करने वालों की अंजुमन, इनका फिरका/बिरादरी, हर हुनर को बचाने वाले मास्टर और उन

मास्टर के नायब उनके शार्गिद सबका आपस में संबध एक मिसाल है नज़म-व-ज़बत की जो तुर्कीयों ने तिजारत और दस्तकारी में कायम की हैं।

"और कई सदियों से इस्लाम मज़हब रूहानी कदरों की बुनयाद रहा है जो सेकड़ों तुर्की दुनिया के हर कोने में फैले हुए हैं उनकी वाब्स्तगी को आसान किया हुआ है।

"जबके हमारे एक तुर्की के खाके को जांचा जाए **1981** के दूसरे मध्य में, तो वहाँ पर बहुत सारे फ़ायदे नज़र आएंगे इन **'रूहानी कदरो'** को याद रखने के जो हमारे माज़ी में थी लेकिन आज के वक़्त में हम उसे भूल चुके हैं।

"हम अपने संजीदा समाजी और सियासी नाहमवारी को मनसूब नहीं कर सकते, जो अब उससे बाहर निकलने की कोशिश कर रही हैं, अकेली मआशी वजूहात की बिना पर।

"हमारी आबादी के लिए, जो **50** मिलियन से ऊपर हो चुकी है और हर साल एक मिलियन बढ़ रही है।हम एहसानमंद है एक मुल्क को देने के लिए **'हम ज़माना तहज़ीब के मुताबिक तरक़्क़ीयाफ़्ता होना'** और **'एक ख़ासियत ज़िन्दगी की जो इंसानी इज़्ज़त से मेल खाती है।'** हालांकि हम कामयाब हो गए हैं, लेकिन ये दिखाई देता है के **50 मिलियन लोगों को हर वक़्त ख़ुश रखना बहुत मुश्किल है** सिर्फ़ माल के ज़रिए बढ़ाने से।

"ये हमारा बहुत अहम फर्ज़ है के **रूहानी कदरों को सबमें आम किया जाए** उन्हे तलाश करके आगे लाया जाए, वो कदरें जो **50** मिलियन लोगों को एक साथ करेंगी और उनके अंदर काम करने का इरादा पैदा होगा ज़्यादा अमन से वो एक साथ काम कर पाएंगे।**50** मिलियन लोगों में एकता को जताने के लिए हमें इस सीख को इस्तेमाल करना होगा।

“अल्लाह में यकीन, उससे डरना और इस्लाम मज़हब ये सब अहम हैं जो उम्मीद और काम करने का जज़्बा जगाते हैं उनमें जो माल के मसअले की वजह से मजबूर हैं।

“ये समझ आ गया के रूहानी तरक़्क़ी ज़रूरी है मआशी तरक़्क़ी को फायदेमंद बनाने के सिलसिले में।

“बराए मेहरबानी याद रखिए के जब **एक खलाबाज़ चाँद पर उतरा तो उसकी जेब में उसकी मज़हब की किताब थी।**

“यही हमारा मक़सद होना चाहिए: टेकनॉलोजी हासिल करना और चाँद पर सफ़र करने की काबीलयत होना...लेकिन, अगर हम इस टेकनॉलोजी और इससे ज़राए पर काबिज़ हो जाते है, तो हमें **अल्लाहु की ताक़त और मदद माँगते रहना है...**

“हमें अपनी तलाश को बनाए रखना है इस्लाम मज़हब की बड़ी ताक़त को इस्तेमाल करने के लिए अपनी नई पीड़ी को रूहानी कदरों को बनाए रखने के लिए होसला देना है। हम एहसानमंद हैं इस बात पर ज़ोर डालते हैं के स्कूलों में मज़हबी तालिम को रूहानी सहायता के तौर पर पढ़ाया जाए। इससे पहले के काफ़ी वक़्त ज़ाया हो जाए, हमें अपने स्कूलों में काफ़ी मज़हबी तालिम के प्रोग्राम शुरू कर देना चाहिए।

“रिवायतों में साबित कदम रहने का नतीजा ये निकलेगा बहुत बड़े पैमाने पर आपस में बरदाशत करने की ताक़त सोचों में और कामों में और फिर आपसी प्यार और इज़्ज़त बढ़ेगी, जिसकी हमें ज़्यादा ज़रूरत है। ये आपसी मुख़ालफ़त को कम और शांत कर देगा और अंदरूनी अमन को कायम करने में मदद करेगा। इसलिए, एक खरा और मज़बूत समाजी इदारा इसके नतीजे में कायम किया जाता है।

“वरना, ये बहुत मुश्किल है के किसी को ख़ुश करना और इतने बड़े आदमियों के हुजूम पर हुकूमत करना जो के रूहानी कदरों और रिवायतों से मेहरूम हैं।समाजी हुक्म इतनी आसानी से ऐसे मआशरे में कायम नहीं हो सकता। “कुरान अल-करीम में, ये बयान है: **‘ग़ाफिलमत हो जाओ; परेशान मत हो।अगर तुम्हारा ईमान मज़बूत है, तुम बेशक कामयाब होगे।’**

“आज हम ये सुनते हैं और पढ़ते हैं के दुनिया में सारे लोग एक दूसरे को करीब से जानने में लगे हुए हैं और अब एक दूसरे तरीके से उन चीज़ों को देखते हैं जो उन्होने इस्तेमाल करने से मना कर दिया।आईए में आपको एक सादा मिसाल दूँ: अमेरिकनस इस बात का दावा करते है के इस्लाम में बहुत सारे ज़ालिम कानून थे और जो चारी के हाथ सामने रखकर काट देते हैं ख़ास उनमें से होते हैं।हम हैरान हैं और अपने को हाल की योजना पर मुसकराने से नहीं रोक पा रहे जो डुगलस हफ़, एक अमेरिकी सेनेटर जो स्टेट आफ़ ईलीनोइस से थे, उन्होने दिया, जो अपने स्टेट में डाके के मामले बढ़ने पर उन्होने कहा- ये एक कानून की तरह नाफ़िज़ होना चाहिए के चोरों के हाथ का टदिए जाएं जैसे के मुस्लिम मुल्कों में किया जाता है।सेनेटर ने अपनी तजवीज़ में लिखा, ये आपको एक ज़ालिम की तरह मार सकते हैं।लेकिन मैं और किसी हल के बारे में नहीं सोच सकता।मैं सोचता हूँ ख़ुदा ने अपने गुलामों पर एक सज़ा आयद की है जो के सही है।वो जो एक जुर्म करते है उन्हे उससे डरना चाहिए।जैसे के तुम देख रहे हो, आदमी दिन पर दिन इस्लाम के कानून के करीब होता जा रहा है।इस्लाम मज़हब में हर चीज़ का सबब है; सबसे नया मज़ाहिब में से अपने पैदा करने वाले को, दुनिया का मज़हब बनाना।

“हम ये दोबारा बता रहे हैं के मज़हब एक ताक़त का खज़ाना है जो हमें नुक़सान देने वाले और बुरे कामों से बचाता है, जो हमारी उमंगों को बंद करता है, हमारे ज़मीर/रूहों को कुव्वत देता है और पाक करता है, हमें बनाता

है- हमारी अच्छी आदतों को खोलता है- नरमदिल और मददगार इंसान जो हमारे बड़ों का कहना मानते हैं, वो हमें बग़ावत और कानून की नाफरमाबरदारी से बचाते हैं, हमें उम्मीद देते हैं और हौसला देते हैं अपने मकासिद को हासिल करने में, जब हम नाकाम होते हैं तो हमें ख़ुश करते हैं, हमारी परेशानियों को कम करते हैं, हमें ताक़त से भरता है और जीने की उम्मीद लाता है, हमें खोलता है और रहनुमाई करता है अल्लाह के रास्ते पर हमें दुरूस्त और मुकम्मल आदमी बनाने के लिए, खुलासे में, हमें इस दुनिया में अमन हासिल करने के लिए और बाद में कभी न ख़त्म होने वाली ख़ुशियाँ हासिल करने के लिए। "हम अपने मज़हब को गले लगाते हैं, उसके हुक्मों और मना की हुई बातों को मानते हैं, और उसकी कीमत को समझते हैं।लेकिन हमें इसे सख़्ती से इसको आसान, दुनियावी मामलों में या फिर बुनयादी, ज़ाती फ़ायदों के लिए हमें इसका इस्तेमाल टालना होगा।ये रहमतों वाला मुल्क और ये पाक मज़हब नुक़सान उठाते हैं ऐसे फरेबियों के हाथों जो लोगों को धोका देते हैं अपने ज़ाती इच्छाओं और गंदे मकासिद के पूरा करने के लिए ये कहकर, 'मज़हब खो गया है! वो हर एक को मजबूर करते हैं बग़ावत करने के लिए।

"मज़हबी और सांईसी फरेबियों ने इस मुल्क के हमारी क़ौम की ख़ुशियों को बहुत नुक़सान पहुँचाया है।मज़हब के फरेबी, मज़हब के ज़राए को अपने ज़ाती मफ़ाद और सियासी मकासिद के लिए इस्तेमाल करने लगे, ग़ैर मज़हबी चीज़ों को आगे बढ़ाने लगे जैसे के वो मज़हब से ताअलूक रखती हों।उसी वक़्त में, सांईस के फ़रेबी, दोबारा अपने मज़हब में यकीन को बरबाद करने की कोशिश करने लगे और, इसको ख़त्म करने के लिए, अपने ग़ैर सांई सी, ग़ारत करने वाले और नामंज़ूर लफ़्ज़ नौजवानों के आगे रखने लगे के वो उन्हें सांईसी ईल्म के तौर पर कुबूल करें।मज़हब के फरेबी, मज़हबी आदमी बनाने की कोशिश करते हैं, उन लोगों का शोषण करते हैं जो अपने मज़हब में साबित कदम हैं, जबके सांईस के फरेबी, अपने आपको सांईसदां दिखाते हैं

और अपने सांईस के डीपलोमे दिखलाते हैं, लोगों के कामिल यकीन को सांईसी ईल्म में इस्तेहसाला शोषण करते हैं। हमें इन मज़हबी और सांईसी फरेबियों की चालों से पूरे तौर पर सावधान रहना चहिए।

“आज के वक़्त में, भी, वहाँ पर कुछ धोकेबाज़ हैं जो मज़हब और सांईस को सियासत के औज़ार की तरह इस्तेमाल कर रहे हैं। इस बात का ईल्म हुआ के ज़्यादातर बाग़ी लूटेरे, जो अपने बम्ब, दूरबीनी गन, एंटीटेंक रौकेट और तरसील और हासिल करने वाले रेडिओ सेट के साथ पकड़े गए थे वो बाद में यूनीवर्सिटी में सांईस के फरेबियों के तौर पर मिले। बाक़ी बचे हुए काम करने वाले, आदमी या आरतें तालिब-ए-ईल्म जो उनके ज़रिए धोका दिए गए। जैसा के हम पढ़ते हैं अख़बारों में जालसाज़ी और कतल के बारे में के आम हो रहे है या उन हज़ार में से दस सांईस के फरेबी जो अभ्यास करते हैं, हम खौफ़ और डर में उसको समझते हैं के क्या नुक़सान या ज़वाल की तरफ़ वो हमारे मुल्क को ले जा रहे हैं। हम नहीं जानते के किस तरह कमांडर का शुक्रिया अदा करें जो, क़ौम के बुलावे पर मदद करने पहुँचती है, इस ख़ौफ़नाक कोर्स को बंद कराती हैं और हमें इस नागहानी आफ़त से बचाती है। दिन और रात हम पाशा के अच्छे के लिए दुआ करते हैं के उसने हमें बचाया। हम उन रहमतों का अच्छी तरह शुक्रिया अदा नहीं कर पाते जो हमें हासिल हुई अगर हम हर लमहे के लिए ज़मीन पर ओधे मुंह लेटकर अपने रब का शुक्रिया अदा करें जिसने उन्हें हमारी सदारत करने भेजा! हम न ख़त्म होने वाला शुक्रिया अपने रब का अदा करते हैं उसकी इस इतनी बड़ी मेहरबानी के लिए।

“मज़हब और सांईस के दो बहुत ज़रूरी, बहुत फ़ायदेमंद मददगार है आदमियों के लिए। सांईसी ईल्म ज़राए और वजूहात बनाता है जो अमन, ख़ुशहाली और तहज़ीब के बहुत ज़रूरी है। मज़हब आसान करता है इन ज़राए के इस्तेमाल को अमन, ख़ुशहाली और तहज़ीब के लिए। इश्तराकियों ने बड़ी-बड़ी सनअतें कायम कीं, बड़े कारखाने, हैरान करने वाले रोकेट और सेटेलाईट

इस सांईसी ईल्म के ज़रिए उन्होने उसे जर्मनी और अमेरिका से चुराया। फिर भी, सिर्फ़ उनमें सांईस मौजूद है; वहाँ कोई मज़हबी तत्व नहीं है। यही वजह है के वो सांईसी पैदावार को अपने लोगों को तक़लीफ़ देने के लिए इस्तेमाल करते हैं, दूसरों पर हमला करने के लिए, और दुनिया के दूसरे हिस्सों में बग़ावत और क्रांती लाने के लिए। उन्होने हर जगह को एक तहख़ाना बना दिया। उनकी तरक़्क़ी सांईस में तहज़ीब का नतीजा नहीं बल्कि जंगली पने में है। अमन, ख़ुशहाली और इंसानी हुकूक को तोड़ा गया। सेकड़ों लोग मोहताज कर दिए गए अकलियतों के **मज़े के लिए**। इस वजह से, हमें कोशिश करनी चाहिए असली मज़हब को सीखने की और सच्चा मुसलमान बनने की।

"देखिए कुरआन अल-करीम सच्चे मुसलमान के बारे में क्या कहता है:

"अच्छे से जानते है! अल्लाहु तआला के दोस्तों के लिए कोई डर नहीं है। उन्हे परेशान नहीं किया जाएगा! (सूरह युनूस, **62**वीं आयत)

"आओ इस्लाम के कानून में यकीन रखें, वो ये, अल्लाहु तआला के एहकाम और मना किए हुए काम, इन कानून को मानने से, हमारे प्यारे पढ़ने वालों, हम एक दूसरे की मदद करने के क़ाबिल हो जाएगें, अपने मुल्क की मदद करेंगे अमन, ख़ुशहाली और ख़ुशियाँ लाने में ।"

6– इशतराकीयत और इशतराकियों की मज़हब से दुश्मनी

समाजी इंसाफ एक ऐसा ख़्याल है जो पुराने ज़माने से ही माना चला आ रहा है और जिसकी सभी मज़हबों, निज़ामें हुकुमतों और समाजी फिरकों ने वकालत की है। सिर्फ समाजी इंसाफ के साथ ही एक अच्छी तरह से तरतीब दिया हुआ और बाउसूल मुआशिरह कायम करना मुमकिन है उनके फ़रदों और जमाअतों के बीच बग़ैर किसी नफ़रत और गुस्से के।

समाजी इंसाफ़ का मतलब है के हर एक को उसके काम, जानकारी/ईल्म, हुनर और कामयाबी के मुताबिक उसको बराबरी का मुनासिब हिस्सा मिला और किसी का भी गलत इस्तेमाल या हक़ तलफ़ी/शोषण न हो। समाजी इंसाफ़ का मतलब है ज़िन्दा रहने के हक़ की शनाख़्त करना, उस शख़्स के लिए भी जिसने चाहे थोड़ा ही काम किया हो। समाजी इंसाफ़ की ये एक बुनियादी ज़रूरत है के हर काम करने वाला फर्द कम से कम जीने के मेयार तक पहुँच जाए।

समाजी इंसाफ़ का मतलब समाजी मसावत नहीं है। ये इंसाफ़ नही है बल्कि हर एक के लिए नाइंसाफ़ी है एक जैसी आमदनी होना, जैसे के एक क्लास में होता है सारे शार्गिदों के लिए, चाहे कामयाब हो या नहीं, अपने कोर्स /पाठय क्रम को पास करने के लिए। न तो कुदरत में न मुआशरे/समाज में, न ही कहीं ओर, मुकम्मल मसावत कहीं वजूद नही रखती।

अदलिया मसावात का मतलब है के लोगों पर एक जैसे मामले और हालात में एक जैसा बरताव करना। ये दोनों ग़ैर ज़रूरी है और नाकाबिले अमल

है के समाजी और ख़ासतौर पर मआशी मसावत को देखना या उसकी इच्छा रखना क्योंकि ये इंसाफ के ख़्याल की तसदीक नहीं करती। ग़ौर तलब बात ये नहीं है के मौजूदा सरमाए को कैसे बाँटा और तकसीम किया जाए सरबराहों के नम्बर के मुताबिक, बल्कि ये है के कैसे काम करने और कमाने के हालात को कैसे मुहैय्या कराया जाए के सबको उसकी मेहनत के बराबर मिले और मुनासिब पैसा उसको मिले।

समाजी इंसाफ़ कौमी आमदनी के बटवारे की अच्छे से हिफ़ाज़त करता है और शोषण और ज़ोर ज़बरदस्ती को ख़त्म करता है। ये कुछ लोगों के हाथों में सरमाए को इकट्ठा होने से रोकता है। ये हर किसी को ये हक़ देता है के वो अपनी ज़िन्दगी अपने मिआर के मुताबिक गुज़ारे। ये एक ऐसा मुआशरा कायम करता है बिना दुश्मनी का फिरकों और कौमों के बीच में। इस तरह के मुआशरेह में हर फर्द अपने हाल और मुसकबिल को ज़्यादा महफूज़ पाता है।

समाजी इंसाफ़ को कौमियत के नज़रिए से और एक मिली जुली मआशियत के ज़रिए भी समझा जा सकता है इसके आज़ाद ख़्याल जुज़ पर ज़ोर डालते हुए।

कौमियत एक ऐसा जोश है जो एक कौम को बेहतर करने के लिए इस्तेमाल होता है। कौमियत का मतलब है अपनी कौम से प्यार करना जहाँ का वो है, उसकी तरक्की के लिए काम करना, उसकी कौमी कदरों, इदारों, मज़हब और रिवायात को बचाना और उन्हे कायम रखना। समाजी इंसाफ़ को सबसे अच्छा और ज़्यादा फ़ायदेमंद पेश करने में जो ताकत है वो है इस्लाम मज़हब। मुसलमान ये यकीन रखते है के वो आपस में एक दूसरे के भाई है और उसी तरह एक दूसरे को प्यार करते हैं। वो ग़ैर मुसलमानों की जाएदाद, ज़िन्दगी और पाकिज़गी पर हमला नहीं करते। इस्लाम मज़हब लोगों के बीच आपसी प्यार और मदद को बढ़ावा देता है, नाइतेफ़ाकी से बाज़ रखता है,

काम करने का और हलाल तरीके से पैसा कमाने का हुक्म देता है, हर काम करने वाले को उसका मुनासिब पैसा देता है और हर किसी के माल की हिफ़ाज़त करता है। हर मुस्लिम, अपनी कमाई पर राज़ी है, सुकून और अमन से रहता है। कोई नही किसी के माल और ज़मीन को नुकसान पहुँचा सकता। वो जो ये जानते हैं के समाजी इंसाफ़ किया है और जो ये अपने सबब में ईमानदार हैं। वो इस्लाम का एहतराम और साथ देते हैं।

इशतराकीयत/समाजवाद का मतलब समाजी इंसाफ़ नहीं है। अपनी आम फ़हरिस्त के बावजूद, वो मुख़्तलिफ है और बल्कि पूरे तौर पर अलग हैं। वो ईमान और कुफ्र (कोई यकीन न होना) की तरह हैं, वो ये के, उनमें से एक वहाँ मौजूद नही होती जहाँ दूसरी होती है।

समाजवाद एक फर्द की मिलकीयत के खिलाफ़ दुश्मनी की मुख़ालफत करता है, मरकज़ी रियास्त पैदावार और तिजारत के सारे ज़रए पर काबू रखती है, तानाशाही का कयाम, मज़हब के ख़िलाफ़ दुश्मनी, सब काम करने वालों को मज़दूर बना लेती है, और मज़हब, तारीख़, कौम, मुल्क और रियास्त के ख़्यालात को मिटा देती है। थोड़े से खाने, कपड़े, घरेलू ज़िन्दगी की ज़रूरयात और एक या दो कमरों के सिवाए जिससे के एक शख़्स का मुश्किल से गुज़ारा होगा, एक फर्द की सारी आमदनी और कमाई उससे ले ली जाती है। इस तरह, लोग हर तरह के कारोबार, मुकाबले, ईजाद, यकीन और तरक्की से महरूम रह जाते हैं। उनकी सारी क़ाबिलियत और शख़्सीयत बेकार हो जाती है। गुलामों या मशीनी आदमी/रोबोट की तरह उनपर काबू रखा जाता है शदीद ज़ुल्म और अज़ीयत के साथ एक अकेले, ज़ालिम और बेरहम मरकज़ के ज़रिए, वो तब तक काम पर रखे जाते हैं जब तक के वो अपनी ताकत से थक नहीं जाते।

आज समाजवाद एक नकाब और एक औज़ार बन चुकी है लाल और पीली साम्राजयवाद की तानाशाही के लिए। अगर ऊपर कहे गए एक या ज़्यादा समाजवाद के उसूलों को बहुत नरमी से लगाया जाए या सिरे से लगाया जाए या सिरे से लगाया ही न जाए, तो उसे **कौमी समाजवाद** कहेंगे। अगर उनमें से सारे अज़ीयत और कत्ल के साथ नाफ़िज़ किए जाए, तो उसे **क्रान्तिकारी समाजवाद** या **इशतराकीयत/साम्यवाद** कहा जाएगा। समाजवाद और इशतराकीयत के मआनी हैं, बोलने के लिए, पहला और आख़री नाम फ़ितना अंगेज़ की फ़लसफ़े का। दोनों ही आदमी को माददा शे और नफ़सियाती इच्छाओं की इबादत करने वाला बनाती हैं। उसको अल्लाहु तआला से और अपने ज़मीर और अख़लाक से अनजान रहना सिखाती है, वो उसको सिर्फ़ खाने के लिए जीना सिखाते हैं, बिल्कुल वहशियों की तरह। और हुकुमत करने वाली अकलियती तानाशाही, पागल कुत्तों की तरह, हमला करती है और मार देती है लोगों को और एक दूसरे को दगाबाज़ी और बेईमानी से। इस तरह रूस और चीन में हर साल लाखों लोग मारे जाते हैं।

इशतराकीयत न सिर्फ ज़ालिम और बेरहम है बल्कि दग़ाबाज़, बातों में बहलाने वाली और छूत की बीमारी वाली भी है। मक्कार तरीके के साथ और शैतानियत पर कायम रहते हुए, बिना पसीजे हुए लगातार काम करता रहता है। ये न सिर्फ़ कई वज़अ/रूप बदल लेता है बल्कि ये भी जानता है अपने मक़सद/निशाने के कमज़ोर, ढीले पहलू पर कैसे वार किया जाए। मुसिबत और गरीबी का फ़ायदा उठाते हुए और मआशी/समाजी उसूलों को बरबाद करते हुए और अपने उकसाने वाले तरीकों के ज़रिए, ये जातियों के बीच झगड़ा पैदा करते हैं। ये अपना जासूसी का जाल बुनती है और मकड़ी के जाल की तरह इसे फ़ैलाती है। पैसा बाँटकर, ये आसानी से नीच, कमज़र्फ़ लोगों को अपने लाल जाल में फ़साने की बुनयाद रखती है। फिर, जान से मारने की धमकी देकर, वो उनसे हर बुरा काम करा लेती है। ये अपनी शैतानियत, की बहुत

अच्छी चाल खेलते हुए उनका सबसे अच्छा इस्तेमाल करती है उनको तोड़ने में और अपने मक़सद को अंदर से बिल्कुल बरबाद करने के लिए।

एक बार कोई मुल्क उसके भयंकर चंगुल में फँस जाता है, तो वहाँ कोई उम्मीद नहीं होती बचने की।इशतराकीयत एक सियासी आफ़त है जो ऐसी ख़तरनाक और इतनी मोहलिक एक मुल्क और उसके लोगों के लिए जैसे के एक फर्द के लिए कैंसर होता है।

अपने आपको इस धोखे में नहीं रखना चाहिए ये मानते हुए के इशतराकीयत एक ऐसा निज़ाम है उन सब सियासी जमाअतों में से एक का जो जमहूरियत पर कायम हुई हैं; और आज़ादी की छत के नीचे के इसके मुसत्कबिल की किस्मत पूरे तौर पर लोगों की इच्छा पर है, और ताकत में आएगी अपने वोटों से गिरेगी; और जैसा के आज़ाद दुनिया में देखा गया है, तहज़ील और इंसानियत के उसूलों की रसाई की तकलीद होती है।इसके दिलकश और लुभाने वाले अल्फाज़ों पर यकीन करते हुए, किसी की अपने आपको एक बेचारे मेंढक की तरह नहीं समझना चाहिए जिसे एक बड़े साँप ने अपने ज़हरीले दाँतों में पकड़ा हुआ है।

इशतराकी/साम्यवादी उन लोगों को जो जल्दी यकीन कर लेते हैं उन्हें अपने आपको कोशिश करते हैं “जन्नत का बाग़” दिखाने की उस फ़ासले पर जहाँ मौत का गढ़ा है जिसे नशरो इशाअत के कवर से छुपाया हुआ है, लेकिन लाखों मासूम लोगों की हडडियों से भरा हुआ है।

वो जो बहुत ज़्यादा ले लेते हैं और अपनी जानने की इच्छा की वजह से नशरो इशाअत/प्रचार की खुराकों का मज़ा चख़ते हैं और उसके आदी हो जाते हैं जो आज़ाद दुनिया की ज़मीन पर बिखरा पड़ा है बाल जादूगरों के ज़रिए; जो इशतराकीयत के प्यार में डूब जाते हैं इस दिखावे और वहमों में जो

इस नशे के असर से पैदा हुई, जब वो ठीक होते हैं तो पश्ताचाप और अफ़सोस में घिर जाते हैं।

1952 में, मसेनटो, जो इटली में एक इशतराकी लीडर था, उसे इटली की अदालत ने उसकी इंकलाबी/बरबाद हरकतों की वजह से तीन साल के लिए जेल में डाला था।किसी तरह से वो जेल से बाहर निकलने में कामयाब हुआ और भाग कर चैकोसलोवाकिया चला गया, जो पहले से "जन्नत का बाग़" हासिल कर चुका था।अपने सपने के बीच में जागने पर और कढ़वा, नंगा सच देखने पर, वो वहाँ ज़्यादा देर नहीं ठहर पाया।थोड़े अरसे के लिए, वो अपना अफ़सोस और वहम में न पड़ना छुपाने की कोशिश करता रहा, लेकिन आख़िरकार उसे एक आज़ाद मुल्क की तरफ भागना पड़ा, ऑस्ट्रिया में, जहाँ उसने अपने आपको इटली को सौंपे जाने के लिए कहा इस नज़रिए से के वो अपने तीन साल कैद के पूरे करे सही तरीके से वो जेल में भेजा गया था।उसने कहा "इटली की जेलों में ज़िन्दगी गुज़ारना बहुत आरामदह और अच्छी है बनिस्बत इसके के एक साम्यवाद मुल्क में रहा जाए, जो हमें लगता था के जन्नत है।" कुछ के नाम जो, एक जैसे अफसोस और वहम से बाहर निकले हुए थे, जो उस लाल मौत के गढ़े से बच गए थे जो आज़ाद दुनिया के ज़रिए जाने गए वो हैं: करावचेनको, सखारोव, कसीअतोवा और बहुत सारे।ये जानी मानी सच्चाई है के तकरीबन डेढ़ लाख से ऊपर मुसिबतज़दा लोग, जिनमें से ज़्यादातर गाँव वाले और काम वाले/मज़दूर थे वो मग़रिब की तरफ भाग गए और कई आज़ाद मुल्कों में उन्होने पनाह ली जब दूसरी जंग-ए-अज़ीम ने आहिनी दीवार में सुराख़ किया तो उन्हे मौका मिल गया।उसके बाद, किस तरह ये वहमी बाए दल वाले इन तबाह हाल ग़मज़दा लोगों की हालत बयान करते जो लाल दुनिया से भागने में कामयाब रहे थे, जिसे उन्होने कोशिश की थी "जन्नत" की तरह बताने की?

इन नक़ाब लगाए बड़े लाल साँपों ने मज़दूरों को कारखाने और दूसरी बड़ी सनअती काम, और दूसरी किसानों को ज़मीन का बड़ा रक़्बा, और अमन, आज़ादी और ख़ुशहाली देने का वादा किया था उन मुल्कों के लोगों से जिन्हें वो हड़पने का सोच रहे थे। आईए अब देखते हैं के इन्होने रूस के लोगों पर और काऊकेसस, तुर्कीस्तान, यूकरेन, लातविया, लिथुआनिया, एस्तोनिया और उसकी मातहत रियास्तों पर इनाएतें की। जो इन्होने मज़दूरों और किसानों से वादे किए थे कारखानें और ज़मीनें देने के उसके बजाए, उसने उन्हें न सिर्फ़ सफ़ेद वसीऊ साबेरिया दिया जो के दाईमी बर्फ़ से ढका रहता है और पचास डिग्री-ज़ीरो से नीचे तापमान से सजा रहता है, इसने उन्हें आसानी से मरने का मौक़ा भी दिया गिरते हुए पेड़ों के साथ बयाबान जंगलों में, उस ग़ैर मामूली ठंड में भूखे पेट के साथ। आज़ादी जिसका वायदा किया गया था उसके बजाए, वहाँ पर हाथों में हथकड़ीयाँ और मुंह बंद गुलामी थी; फलाह के बजाए, उसने आँसू भरी कंगाली, कमबख़्तगी और भूख दी। और उसने मुल्कों को क़ैदखानों की छावनी बना दिया जिसे चारों तरफ़ से बेइज़्ज़ती की दीवारों ने घेरा हुआ था और जो लौहे के परेद के पीछे बिल्कुल अकेली थी। **1927** से **1939** तक सतराह लाख मासूम लोगों को अकेले, रूस में मिटा दिया गया, जहाँ आज़ादी, अमन और ख़ुशहाली का वायदा किया गया था। ये कोई कहानियाँ नहीं हैं, बल्कि नंगी सच्चाईयाँ हैं।

रूस में क्रान्ति और शहरी जंग से पहले, बहुत सारी समाजवादी जमाअतें अचानक उठ खड़ी हुई। जमहुरियत पसंद मज़दूर, जमहुरियत पसंद किसान, इंकलाब पसंद, आज़ाद रूसी साम्यवादी कदामत पसंद और बाया बाज़ू दरयादिल और फौजी पार्टी उनमें शामिल थी। उनमें से हर कोई मुख़्तलिफ़ ख़्यालात और प्रचार लेकर आगे आई। वो हर इजतिमाऊ में तकरीरें करते थे चाहे वो बड़ी होती थी या छोटी। ये सरगरमियाँ गाँव, कारखानों, छोटे कारखानों, चौराहों और तंग गलियों में भी बनी रहती थी। अपने प्रोग्रामों को

वो बड़े ख़ूबसूरत तरीके से और लोगों से हर तरह के वायदों के साथ समझाते थे, ये जमाअतें/पार्टियाँ धोखा देती थी और जमा करती थी अच्छे लोगों को और बेरोज़गार लोगों को भी। ये तकलीफ़ कई महीनों तक चलती रही। न ख़त्म होने वाली तकलीफ़ें और शौर लोगों को हैरत में डालती थी, जो इतने ज़्यादा बेहिस हो चुके थे के सही और गलत के बीच में पहचान नहीं कर सकते थे। वो लोग बेहोश और मदहोश होने के करीब थे।

इन सब पार्टियों में ज़्यादा ताकत वाली वो थी जिसने सबसे ज़्यादा वायदें किए, आज़ाद रूसी साम्यवादी पार्टी। वो सिर्फ़ मज़दूरों और किसानों से खिताब करते थे। वो कहते थे के मज़दूर और किसान अपने मालिकों की जगह ले लेंगे और तिजारतों और ज़मीनों में बराबर के हिस्सेदार बन जाएगें, वो ये के अमीरों का कोई गुलाम नहीं होगा, वो उन कमरों में रहेंगे जहाँ अमीर रहते हैं, अमीर गलियों को साफ़ करेंगे और झाड़ू लगाएगे, किसानों को ज़मीन का मालिक बनाया जाएगा, और किसानों की ज़मीन काम करने वाले किसानों में बांटी जाएगी।

आज़ाद रूसी साम्यवादी पार्टी और मज़दूरों की पार्टी के प्रचार में क्या आम बात थी वो थी चाकरी और गुलामी को ख़त्म करने का वादा। उन्होने आगही दी के निजात का दिन बिल्कुल हाथ के पास में है।

ये समाजवादी और साम्यवादी पार्टियाँ बार-बार ये कहती थी के वो मज़दूरों और किसानों के हकूक़ को बचाने के लिए जदोजहद कर रही हैं ताकि उनका मिआरे ज़िन्दगी भी ऊँचा हो सके। अगर मज़दूर और किसान उनके पीछे चलेंगे, तो वो शफ़ाअत करने वालों की तरह इज़्ज़त पाएंगे।

“ओ तुम मज़दूर और किसान! अगर तुम अपने आपको दरमियाने तबके, सरमाएदारों, हाकिमों और दूसरे इस्तेहसालियों के पंजों से बचाना चाहते

हो साम्यवादी/इशतराकी पार्टी के लिए वोट करो और उसके आस-पास जमा रहो," उन्होने कहा।

ख़ासतौर पर नावाकीफ़ मज़दूर और किसान ये तमीज़ नहीं कर पाए के उनके लिए क्या अच्छा और क्या बुरा है, और वो और ज़्यादा झूठ का शिकार होते गए।आज के रूसी मज़दूरों की कमबख़्ती और तबाहकुन हालत अफसोसनाक है, उनकी ग़ैर ज़िम्मेदारी और बैवकूफ़ी का नतीजा है।

क्रान्ति के शुरू में साम्यवाद के हाकिमों ने बहुत सारे आसानी से धोखा खा जाने वाले लोगों को पागल कुत्तों की तरह चारों तरफ़ धकेला और सब कुछ तबाह करवा दिया।उन्होने मासूम लोगों को बिना पूछताछ किए काट दिया।ज़्यादातर इशतराकी सरदार यहूदी थे, जिन्होने बदला लेने के हिसाब से रूसी लोगों को एक दूसरे के खिलाफ़ बिठाने में बड़ी कोशिश करी।लेनिन (d. **1342/1924** में) और तरोटस्की (स्टालीन के ज़रिए जिलावतन किया गया मैक्सिको में जहाँ वो **1358/1940** में वफ़ात हुई), कार्ल मार्कस (**1300/1883** में वफ़ात हुई) के नक्शेकदम की रहनुमाई में, उसकी कत्ले आम की पालीसी को आगे बढ़ाया साम्यवाद के झंडे तले।जो कत्ल उन्होने किए वो इतने बदनुमा थे के जो लोग ज़मीर वाले थे वो न तो उसे कुबूल कर पाए और न ही उस पर यक़ीन कर पाए।पहले, समाजी दर्जे एक दूसरे के मुख़ालिफ़ कर दिए गए।उसके बाद पूरे रूस में दोस्तों और दुश्मनों के बीच में फर्क करना मुश्किल हो गया, इतना ज़्यादा के ये पता नहीं लग पाता था के कौन किस के साथ है।इससे शहरी जंग ने जन्म लिया, जिसने बाप को बेटे के ख़िलाफ़ और भाई को भाई के ख़िलाफ़ लड़वाया, और रूस पूरा ख़ून से ढक गया।ये शहरी जंग कई साल तक रही, और लाखों लोग इसमें मर गए।मुल्क जल रहा था और हर जगह तबाही थी।सारे लोगों के काम रूक गए, और बेरोज़गारी, मुफ़लिसी और बीमारियों ने लोगों को बरबाद कर दिया।

क्रान्ति से पहले, अगरचे, इशतराकियों, ने पूरे रूस पर कब्ज़ा करने के ख़्याल से, एक ज़ालिम निज़ाम की बुनियाद रखी और एक तानाशाही हुकुमत का कयाम किया जिसने मज़दूरों और किसानों को बहुत सारे वायदे दिए उनके अनजान सरनराह ये सोच रहे थे के वो जन्नत की ज़िन्दगी गुज़ारेंगे। मज़दूरों और किसानों को ये जानने में कुछ साल लगे के उन्हें कुछ हासिल नहीं हुआ, उन्हें उल्लू बनाया गया, फंसाया गया और सर से लेकर पैर तक गलतियों में फंस गए। तब तक बहुत देर हो चुकी थी। अब तानाशाही रियास्त उन्हे एक दूसरे से हमदर्दी करने से भी बाज़ रखती थी और वक्त-वक्त से कत्ले आम कराती रहती थी।

सोवियत रूस के सदर के वॉकोशीलोफ़ ने मंदरजाज़ेल वाक्या अमेरिका के सफ़ीर विलियम सी. बुलिट्ट को **1934** में रूस में दी गई एक दअवत में बयान किया: "**1919** में, मैने दस हज़ार ज़ार के आफ़िसरों उनके बीवी बच्चों समेत हथियार डालने पर आमादा किया, उनसे वादा किया के अगर वो हथियार डाल देते हैं तो उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुंचाया जाएगा। उन्होने मुझ पर यक़ीन किया और हथियार डाल दिए। मैने दस हज़ार आफ़िसरों को उनके लड़कों के साथ फ़ाँसी दे दी। और मैने उनकी बीवियों और लड़कियों को कोठों पर भेज दिया ताकि रूसी फौजें उनका इस्तेमाल कर सकें।" उसने ये भी बताया के ये तबाह हाल औरतें इतना भयानक बरताव बरदाश्त नहीं कर सकीं और तीन महीने के अंदर मर गई।

1917 की क्रान्ति के थोड़े अरसे बाद ही, ज़ार निकोला और उसके सारे घर वाले, जिसमें उसके बच्चें भी शामिल थे जो पालने में थे, उनको बरियास्क के जंगलों में क़त्ल कर दिया गया। इस ख़ूनी क्रान्ति के नतीजे में जिसने रूस पर **1917** से **1947** तक राज किया उसमें कत्ल हुए या भूख और तबाही से जो लोग मरे उनकी तादाद **63,800,000** थी। मंदरजाज़ेल हिंदसे और दस्तावेज़ ये साफ़ तौर पर साबित करते हैं के कितनी गैरमज़हबी हुकुमत

थी ये, जो के ख़ून और ढाँचों पर रखी गई, जिन मुल्कों पर इसने हमल किया। ये दस्तावेज़ बहुत बाअसर ज़राओं से हासिल किए गए हैं। कितने बदकिस्मत हैं वो लोग जो अब तक नहीं जागे!

रूस में मन्दिरों को बरबाद किया गया

चौदह हज़ार बड़ी और छोटी मस्जिदें तुर्कीस्तान में, **8,000** कोकेसस और क्रीमया में, और **4,000** तातारिस्तान और ख़ास क्रुदिस्तान में बरबाद कर दी गई। अकेले बुख़ारह शहर में, **360** मस्जिदें तबाह की गई। सिर्फ़ एक मदरसा (स्कूल) बच गया और जिसे अब कुफ्र वालों के अजाईब घर के तौर पर इस्तेमाल किया जाता है। और समरकंद शहर में, उलूग़ बेए मदरसा कुफ़्र करने वालों के आजाईब घर के तौर पर बच गया, और दो चर्च/गिरजा घर अंदरूनी बॉस्केटबॉल के लिए इस्तेमाल होता है।

मज़हबी आदमियों के क़त्ल

270,000 से ज़्यादा मुसलमान मज़हबी आलिमों को क़त्ल किया गया। दूसरों को साएबेरिया में खेमों में जिलावतन कर दिया गया, जहाँ ठंडा दरजाए हरारत **65^0** **C** ज़ीरो से भी नीचे का राज था। मज़हबी लोगों के लिए, अकेले तुर्कीस्तान में तीन लाख से भी ज़्यादा लोगों को उनके मज़हबी अकीदे की वजह से शहीद कर दिया गया। जब वो दिसम्बर **1979** में अफ़ग़ानिस्तान में दाख़िल हुए, रूसियों ने फौरन दिहातों पर हमले शुरू कर दिए। उन्होने हर तरह के खाने, कपड़े, घरेलू बरतन और ज़ेवरात को ज़ब्त कर लिया। जो भी मुसलमान उन्हें मिलता गया उसे मारते गए, औरतों और बच्चों को भी बराबर से। मिसाल के तौर पर, जब वो कुंडे के शहर में तौपों के साथ घुसे, उन्होने बड़ी मस्जिद को तौप से उड़ा दिया और हज़ारों मुसलमानों को शहीद कर दिया जब वो नमाज़ पढ़ रहे थे।

ऊपर दिए गए हिंदसे साम्यवादियों के खौफ़नाक कत्ले आम या साएबेरियन खेमों में उनकी जिलावतनी जो क्रान्ति और बुत परस्ती के ख़िलाफ़ थे ये तस्वीर वहशी पने के ख़तरे का ऐलान करती है वो एक सबक है पूरी इंसानियत के लिए।

मज़हबी किताबों और मकबरों की तबाही

बुख़ारह, समरकंद, काकन्त, काज़ान, खीवा, ऊफ़ा, बकू, ताशकन्त, बखचीसराए, डेरबन्त, तीमीरहन, काशघर, अलमास्ता, तीरमी वग़ैरा शहरों में जो तुर्को के ज़रिए बनाए गए मकबरों से सजे हुए थे उनके इस्लाम कुबूल करने के बाद और जो मशरिक में इस्लामी इमारात के हुनर का आला नमूना थीं, इशतराकियों ने सारे मज़हबी कामों, ख़ासतौर पर कुरआन अल- करीम की कापियाँ और हदीस अस शरीफ़ की किताबें छीन लीं, और बेशरमी से और बेरहमी से उन्हें फाड़ डाला, रौंद दिया, और सड़कों पर उनको जला दिया।इसी तरह, लोगों को हुकुम देने के बाद के मज़हबी, क़ौमी और तारीख़ी किताबों को दे दिया जाए उनको वो रियास्त में रखेंगे, उन्होने ये सब किताबें ज़ब्त करलीं और उसी तरह तबाह करदीं।उसी समय, कुछ मुसलमानों ने अपनी ज़िन्दगी ख़तरे में डाली और, अपनी किताबें इन ख़ूनियों और बदमाशों के गैंग को देने के बजाए, उन्हें बक्सों में बंद/दबा दिया।इन हादसों के तरीकाए कारवाई में, हज़ारों मज़हबी लोगों ने जिन्होने उन्हें किताबें नहीं दी थी वो शहीद कर दिए गए।

मज़हब के ख़िलाफ़ तशददुद और प्रचार नशरो/इशाअत

काफ़िर साम्यवादी/इशतराकी रियासत, लाखों मासूम लोगों की लाशों पर कायम की गई मज़हब पर करारा वार और मज़हबी लोगों का क़त्ले आम करने के बाद, ख़ासतौर पर मज़हब के ख़िलाफ़ मंदरजाज़ेल तशददुद और प्रचार किया गया:

1– स्कूल में मज़हबी तालीम पर पाबंदी लगा दी।

2– मस्जिदों में और हर तरह के मन्दिरों में इबादत बंद करा दी।

3– रियास्ती मामलों में मज़हबी आदमियों की कोई जगह न थी।

4– नौजवानों को उनके घरों में मज़हबी या क़ौमी तालीम व तरबीयत पर सख़्ती से पाबंदी लगा दी गई।

5– मज़हब के ख़िलाफ़ बाकायदा प्रचार किया गया अख़बारों, रिसालों, टी.वी और रेडियो की नशर के ज़रिए, और बदनाम करने वाले तमाशे सर अंजाम किए गए।

6– ये लगातार वाज़ेह किया गया अल्लाहु तआला -वो हमें ऐसा कहने से बचाए! मौजूद नहीं है और पाक किताबें झूठे अफ़साने हैं।

7– शहरों और गाँव में मजलिसें रखी गई ख़ुदा के बग़ैर मआशिरह की तनज़ीम और ख़ुदा के बग़ैर नौजवानों की मजलिस के ज़रिए।मज़हब, अल्लाहु तआला और पैग़म्बरों (अलैहिमु'स-सलाम) के मज़ाक उड़ाए जाते थे, और बाकायदा रात के सबक तरतीब दिए गए लोगों को कुफ्र की तरफ़ लाने के लिए।

8– तफ़रीह की जगहों पर, जैसे के तमाशा गाहों और सिनेमाओं में अल्लाहु तआला, मज़हबी आदमियों और पाक लोगों को लगातार खिल्ली उड़ाने का मकसद बना लिया; इस तरह, नौजवान दिमाग़ों को ज़हरीला कर दिया गया।

9– मुसलमानों के ख़ास मज़हबी फराईज़, जैसे के सलात/नमाज़, रोज़ा, हज और ज़कात पक्के तौर पर बंद कर दिए गए; ये एक जुर्म समझा

जाता था कलिमात अश-शहादा को कहना कहना या अल्लाहु तआला का नाम लेना। पाक लोग ऊपर बताए गए फ़राईज़ की वजह से खूफ़िया पुलिस की तरफ से सख़्त फ़ौजदारी नालिश में थे और, “झूठी नशरो इशाअत/प्रचार”, की वजह से मुर्जिम ठहराए गए “रियासत की मुख़ालफ़त करी”, और “हुकुमत और क्रान्ति की मुख़ालफ़त करी”, इसलिए मौत के खेमों में धकेले गए।

मरने वालों की तरफ़ बेईज़्ज़ती

1– जनाज़े की नमाज़ पढ़ाना और मैय्यत को नेहलाना पूरी तरह बंद कर दिया गया।

2– जो कोई मर जाता था तो उसे फ़क्त एक गढ़े में फ़ेंक दिया जाता था और पहले उसे चूने से ढका जाता और फिर मिट्टी से।

3– कब्रिस्तानों में से इंसानी हडडियाँ खोदकर शहरों में और मकबरों से मलबा लाकर शहरों में दबे हुए इलाकों पर डाला गया।

4– इंसानी हडडियाँ जो गाँव के कब्रिस्तानों से निकाली गई वो खेतों में खाद की तरह इस्तेमाल की गई।

प्यारे पढ़ने वालों! अपने सब बचाव, कत्ले आम, जिला वतनियों और सख़्तियों के बावजूद, साम्यवादी इंसानों के अंदर जो पाक प्यार मौजूद था उसे मिटा नहीं पाए; वो उस मुकददस बंधन को नहीं तोड़ पाए। मौजूदा **140** लाख मुस्लिम भाईयों में से जो साम्यवादी हुकुमत हैं, उन का नम्बर जिन्हें उन्होने अपनी तरफ़ मिला लिया था और ग़ैर मज़हबी बना दिया था वो उनकी बाकायदा कोशिशों और ज़ुल्मों के बावजूद **5** फ़ीसद से ज़्यादा नही हुए। फिर कोई माद्दी ताकत मज़हब या ईमान को नहीं मिटा सकती, जो के न मिटने वाला है। उन पर पाबंदी लगाई जा सकती है लेकिन मिटाया नही जा सकता। एक मुसलमान अपनी ज़िन्दगी दे देगा, लेकिन वो सभी अपना मज़हब और

पाकदामनी को कुरबान नही करेगा। **1986** के अफ़गान के ग़मनाक वाक्ये से रूसियों को ये बेहतर तौर पर समझ आ गया; हज़ारों की तादाद में लाल फौजियों ने रॉकेट और हवाई जहाज़ों से हमले किए और गाँव वालों को मारा, जिसमें औरतें भी शामिल थीं। मुस्लिम बच्चों को मास्को ले जाया गया ग़ैर मज़हबी बनाने के लिए। मस्जिदें, स्कूल, घर और खाने का सामान सब जला दिया गया। **1979** से लेकर **1986** तक जितने मुस्लिम मारे गए उनका नम्बर दस लाख से ऊपर था। लेकिन मुस्लिम जंगजू, अगरचे उनमें से हज़ारों शहीद हो गए, ग़ैर मज़हबियत की तरफ़ उन्होने हथियार नहीं डाले। अपना भद्दापन मुस्लिम मुल्कों से छुपाने के लिए, रूसियों ने किताबें तैयार की और मुस्लिम मुल्कों में मुफ़्त में बाँटी जिसमें ये वज़ाहत की गई थी के रूस में मज़हब, इस्लामी साईसों और रिती रिवाज़ों की आज़ादी है। रूस में जो मुसलमान थे वो इन किताबों से बेख़बर थे क्योंकि वो सिर्फ़ रूस से बाहर बाँटी गई। रूस में उनकी तकसीम पर पाबंदी थी; वरना, ये इशतराकीयत/साम्यवाद के ख़िलाफ़ धोखा हो जाता। इनमें से कुछ किताबें, **1986** में अल्जीरिया के लोगों को बाँटी गई, वो हमें भेजी गई। अच्छी किस्म का पेपर और मुलम्मा चढ़ी हुई जिल्द में बराबर कर दिया इस तरीकाए कारवाई में इस्तेमाल की गई अरबी किताबों की जिसमें "**1400** ए.एच. ताश्कन्त" लिखा हुआ है। उनमें, कुछ साम्यवादी एक मुस्लिम की तरह पगड़ी और लिबास पहने हुए हैं अपनी तसवीर में ऐसे दिखा रहे है जैसे के वो मुफ़्ती, इमाम या मज़हबी दफ़्तरों के सरबराह लग रहे हैं। ये साम्यवाद प्रचार गलत साबित करता है उस ज़ुल्म को जो रूसियों ने मुसलमानों के साथ किए अफ़ग़ानिस्तान में। ये बहुत मक्कारी से तैयार किया गया के अगर किसी को इस्लामी मज़हब के बारे में पता नहीं है और साम्यवाद के अंदरूनी शकल/हालत के बारे में पता नहीं है तो वो इन चालों और झूठ के धोखे में आ जाए आसानी से और, सोचें के इस्लाम के ज़्यादा दुश्मन एक दोस्त हैं, वो कभी न ख़त्म होने वाली परेशानियों में घिर जाते हैं।

अगर इसे कहा जाए समाजवाद, जमहुरिया, जमहुरियत या चाहे बादशाह की पौशाक में रूप लिया हुआ या अगरचे इसका प्रचार कितना मठिए और धोखा देने वाला हो, साम्यवाद/इशतराकीयत एक ऐसी हुकूमत है जिसने अपने आपको हर वक़्त की और सब तरफ की आज़ादी के ख़िलाफ़ साबित किया। ये एक तानाशाही हुकूमत है ग़ैरमज़हबियों, बेरहम और ज़ालिम अकलियतों की। इसी वजह से ये इस्लाम के बेरहम दुश्मन हैं। हक़िक़त में, रूस का नाम है “द यूनियन ऑफ सोवियत सोशिलिस्ट रिपब्लिकस”, जिसमें साम्यवाद/शतराकीयत का लफ़्ज़ ही नहीं है। साम्वादी मशरिकी जर्मनी का नाम था “द जर्मन डेमोकरेटीक रिपब्लिक”, और यूगोसलाविया का है “द फैडरल रिपब्लिक” इसी तरह, लाल चीन, बुलगारिया, हंगरी, पॉलेंड और दूसरी सभी साम्वादी मुल्कों ने अपने नामों में कुछ न कुछ जमहुरिया लगाया हुआ है। साम्यवाद ने दुनिया इंसानियत पर इसके ख़तरनाक मआती का जादू फूँका हुआ था और जो इसके जाल में फँस गए थे के साम्यवादी भी इस नाम को अपने आप भी इस्तेमाल नहीं करते थे और इसे ज़रूरी समझते थे के अपनी रियास्तों के ख़िताब का रंग बदलवादें आज़ाद रियास्तों का ख़िताब उन्हें देकर।

जो चाहे साम्यवाद अपने आप पर खाल पहन ले, लाल और ज़ालिम हुकूमत जैसे ही उसका थोड़ा सा भी भेद खुलेगा वो सबके सामने ज़ाहिर हो जाएगा; सबसे पहले साम्यवाद को देखते ही क्या निशान नज़र आता है? इसके बहुत सारे ख़िताबों के बावजूद, जैसे के जमहुरियत, जमहुरिया, लोगों की या बादशाहत, ये कैसा है के साम्यवाद पहली नज़र में पहचाना जाए? चलिए इस पर ध्यान देते हैं। साम्यवाद की वाहिद वाज़ेह ख़सूसियत है इसकी मरकज़ी रियास्त की पॉलिसी का कब्ज़ा और मज़हब की तरफ दुश्मनी। एक मुल्क जहाँ पर हर चीज़ रियास्त के ज़रिए काबू में रखी जाए, जहाँ मुसलमानों को पीछे हटने वाला और पुर जोश कहा जाए, और जहाँ ग़ैर साम्यवादियों को ‘फ़सिस्टवादी’ के तौर पर निशान दही की जाती है वो एक साम्यवादी मुल्क है

चाहे इसका नाम कुछ भी हो। इसके अलावा जितनी ज़्यादा रियास्ती काबू की पॉलिसी से परे होगी उतनी ज़्यादा जो मुल्क अल्लाहु तआला और पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की इज़्ज़त से भरे होगें, मज़ीद ये के उतने ही ये साम्यवाद से परे होगें। रियास्ती काबू मज़हब की तरफ़ दुश्मनी के साथ वही असली नाम है साम्ववाद का।

उनका मक़सद जो रियास्ती काबू की बढ़ी हुई पॉलिसी को सहारा देते हैं और जो स्कूलों से मज़हबी सबक को हटाने की कोशिश करते हैं वो साम्यवाद को कायम करते हैं। साम्यवाद की फनी वज़ाहत ये है के "हर चीज़ रियास्त के काबू में लाना, सामूहिक और मज़हब की तरफ़ दुश्मनी के तरीके से।" एक बार हर चीज़ रियास्त के काबू में आ जाए, तो खुदा के बग़ैर मुआशिरह घंटों के अंदर कायम हो जाता है।

उन वफ़ादार दोस्तों को जिन्हें साम्यवाद ने पहले से ख़रीदा हुआ था, दुनिया की साम्यवाद की तनज़ीम ने साम्यवाद को आज़ाद मुल्कों में आग़ाज़ और आबाद करने के मक़सद से उन्हें **18** हिदायतें दीं। जिनमें से दस मंदरजाज़ेल हैं:

1. "हौसला देकर कोशिश करना अपने मुल्कों में साम्यवादी या समाजवादी पार्टियों/जमाअतों का कयाम करने की। अगर वो पहले से मौजूद हों, तो उनके साथ तआवुन करना।"

2. "अपनी क़ौम को जितना मुमकिन हो सके उतनी जमाअतों और फ़िरकों में बाँट दो।"

3. "हमेशा कोशिश करना मालिक और नौकर के बीच मुख़ालफ़त कायम करने की।"

4. "लड़ना और कोशिश करना जब तक के साम्यवादी हुकूमत कायम न हो जाए। सब को ये यक़ीन दिलाना के तुम्हारे मुल्क में कोई ख़तरा नहीं है जब वक़्त तक साम्यवादी हुकूमत गहरी जड़ों तक न पहुँच जाए। जो तुम्हारे इरादे और मकासिद जान जाएं और वो जो इस हकीक़त को ज़ाहिर करने की कोशिश करे के तुम झूठे और गुस्सा दिलाने वाले हो/जोश दिलाने वाले हो उनपर इलज़ाम लगा दो।"

5. "मसलक और तरीका के झगड़े की तरग़ीब देना। खुले तौर पर और राज़दारी से बार-बार मज़हब की तरफ़ दुश्मनी का अभ्यास करना।"

6. "अपने आप उन बहादुरों के झंडे बनाओ जिन्हें लोग बहुत ज़्यादा प्यार करते हैं। उनको दिखाओ के वो तुम्हारी तरफ़ हैं।"

7. "नाविलों, नज़मों, मज़ामीन और कारटूनों के ज़रिए बाकायदा बढ़ा चढ़ाके लिखो के मज़दूर और दिहाती गरीबी/गुरबत में हैं।"

8. "आज़ाद मुल्कों की तरफ मुख़ालिफ अंदाज़ बना के रखो और मग़रिब के ख़िलाफ़ दुश्मनी मशहूर कर दो।"

9. "मज़दूर संघ, जवानों की तनज़ीम, और हुनर के कयामों पर अपना काबू रखो।"

10. "तलाश करो बेआरामी की वजूहात को और उन्हें ढूँढो; उन्हें मशहूर करने की कोशिश करो।"

साम्यवाद की नागहानी आफ़त में फँसने से बचने के सिलसिले में, चाहे छोटा ही मौका क्यों न हो उसे इन साम्यवाद के बीजों को बेज़र बनाने के लिए इस्तेमाल किया गया।

ये ज़रूरी है के तआवुन करें, तरतीब देकर कायम करें और भड़काने वाले साम्यवादी के ख़िलाफ़ होशियार रहें। साम्यवादियों को सलाम करना, उन पर मुसकुराना खरीदना, दुकानों की खिड़कियों में ज़ाहिर करना या बेचना उनकी किताबों, अख़बारों और रिसालों को या उनके रिसालों और अख़बारों को इश्तेहारों के ज़रिए सहारा दिया जाए, इससे साम्यवाद की छुरी को तेज़ करना हुआ।

ज़ार दग़ाबाज़ रूसी साम्यवादियों को अपने महल में बुलाया करता था, उनको ताज़ीम देते थे, उनको दावत में बुलाता था, और उनके ख़्यालात सुनता था। लेकिन जब क्रान्ति ने जगह बनाई, ये वही दोस्त थे जिन्होने ज़ार, ज़ारिना, उनके बच्चों और पौतें-पौतियों, जिसमें छोटे बच्चें भी शामिल थे सबको क़त्ल कर दिया।

साम्यवाद में कोई समझ, यक़ीन, इंसानी कदरें, रहम, भरोसा या सबब नहीं होता।

1980 में रूसियों ने अफ़ग़ानी गाँव में हवाई हमले किए वो साम्यवादी के ज़ालिमाना और वहशीपन के एक नए ख़ौफनाक सबूत थे।

जो अल्लाहु तआला, ज़मीर और मोहज़ब होने में यकीन रखते थे साम्यवादी उनके मुख़ालिफ था। वो इन इंसानी जज़बात को एक बीमारी, दीवांगी और दग़ाबाज़ी सोचता था अपनी हुकूमत और उसूलों के ख़िलाफ़। उसका पौशिदा फ़िकरा था “बाँटो और हुकूमत करो!”

वहाँ पर सिर्फ़ एक कायदा है अपने आपको साम्यवाद की बुराइयों से बचाने का:

उस पर बदले में हमला करो उसका ही तरीका इस्तेमाल करते हुए, वो ये, ताकत के ज़रिए, उसके मुंह पर थूक कर, उस पर सख़्ती से अपना काबू बनाए रखना, उसको ईमानदार लोगों से परे रखना, और उसको उसके लाल धब्बों वाले मुंह के साथ अकेले छोड़ देना।

रूसी क्रान्ति ने **52** लाख लोगों को क़त्ल किया, जिनमें से **40** लाख खेती बाड़ी और सनअती मज़दूर थे। ये इस वायदे के साथ सामने आए थे के ये "किसानों को ज़मीन देंगे और कारिगरों/मज़दूरों को कारोबार में हिस्सेदार बनाएंगे," बल्कि इन्होने जो गरीब किसानों के पास कुछ एकड़ ज़मीन थी और बेज़र कारिगरों के पास जो घर थे इसने उनको भी हथिया लिया और जिनको भरोसा था और ईमान रखते थे या जो अल्लाह कहते थे उनको इसने मार दिया।

ये लाल क्रान्ति एक लालची शैतान थी जिसने मज़दूरों/कारीगरों को मज़दूरों की ताकत की शक्ल में खा लिया! इसने इतना क़त्ले आम और लूट पाट पैदा की के जो इस क़त्ले आम और लूट पाट को कर रहे थे वो भी इस क़त्ले आम और लूट पाट से नहीं बच पाए।

साम्यवाद के ख़िलाफ़, जो बुगूज़/नफ़रत शुरू में रखी गई ज़िन्दगी, माल, पाकिज़गी, मज़हब और यक़ीन के ख़िलाफ, वो लोगों को तकलीफ़ देकर मज़े में तबदील हो गई और बरदाश्त की जाने लगी इंसानियत के ख़िलाफ़ और मुट्ठी भर ज़ालिम सरबराहों के नक्शे के मुताबिक़ काम करना शुरू किया गया। इस मकाम पर आकर ये एहसास हुआ के कितना बड़ा झूठ था ये, तब तक बहुत देर हो चुकी थी।

मंदरजाज़ेल ख़ुफ़िया साम्यवादी पार्टी के आईन का चौथा पैरा है:

“साम्यवादी पार्टी सख़्त दुश्मन है साम्राज्यवाद में रहने वाले नौकरों की, ज़मीनों के मालिकों की, कारखाने और इमारतें दरमियाने दरजे के दस्तकारों और ताजिरों की, सब पाक लोगों की और उनके पुजारियों और आलिमों की, सब काम करने वाले और सुबुकदोश फौजी अफसरों की, पुलिस के आदमियों और शहरी नौकरों की, और, मुख़्तसर में, उनकी जो क्रान्ति की रेखा से बाहर हैं।”

लेनिन का क्रान्ति के लिए ख़ुफ़िया फ़िकरा था: “सब चुस्त मुलाज़िमों/स्टाफ़ को जल्दी से ख़त्म कर दो और इतनी बड़ी तादाद में जितना मुमकिन हो सके ताकि हमारे लिए थोड़ा ही काम बचे करने के लिए।”

जैसा के नतीजा निकला, उनको छोड़कर जो क़त्ल किए गए, सिर्फ़ लाल सरदार अपने आप एक सौ फ़ीसद हिफ़ाज़त से बचे रह गए।

लेनिन के मुताबिक़, “लाल की सरदारी की पाएदारी लाल क्रान्ति को जारी रखने पर मुनहसिर करती है।” यही वजह है इस हुकूमत के ज़रिए कारिगरों/मज़दूरों के न ख़त्म होने वाले क़त्ले आम की।लाल चीन में, साम्यवादी तानाशाह माओ के हुकुम के साथ, **300,000** मज़दूरों को हर कारोबार बंद तहरीक के दौरान गोली मार दी गई।ये क़त्ल किए गए एक अकलियत के ज़रिए जो मज़हब और ईमान की मुख़ालिफ थी दूसरी दुनिया में।

आज रूस किस दरजे पर पहुँच गया है? किस हद तक लोग ख़ुश हैं? इन चीज़ों को साफ किए बग़ैर, ये तंग दिमाग़ी है इस सवाल को टाल मटोल करके सिर्फ़ ये कहना, “वो ख़ला में सफ़र कर रहे हैं,” या एक ज़ालिम अकलित के ऐशो इशरत, शानदार, मज़ेदार और खुशगवार ज़िन्दगी को सराहना।मिस्र में मिनारें, भी, अपने वक़्त का हुनर का आला नमूना थीं।क्या हम कारखानों और राकेटों में समाजी फलाह की अलामत पर ऊँगली उठाएँ,

जो के लाखों लोगों के ख़ून और लाशों पर बनी थी और उस पैसे के साथ जो छीना गया भूखे, बदनसीब कारिगरों और मज़दूरों से इस नज़रिए के साथ के ज़ालिम ख़ुद मुख़्तियार अकलियत की इच्छाओं को मुतमईन किया जाए? वसीलों को ज़िन्दगी के मक़सद के तौर पर ज़ाहिर करना ये अपने आप ज़िन्दगी के लिए धोखेबाज़ी है।

हम हैरान हैं अगर कुछ सहाफ़ी/लेखक या दूसरे एक फ़ीसद भी वो कहदें जो उन्होने लिखा या अब कहा, क्या वो साम्यवादी मुल्क में थे?

ओ जवानों! टुम्हारे पाक दिल और नातर्जुबेकार रूहें पूरी तरह असर पज़ीर हो चूके है ऐसे झूठे वायदों की जादूगरी में।लेकिन तुम बाद में इसके लिए तौबा करोगे।

एक वाहिद इलाज इंसानियत को इस साम्यवाद की आफ़त के ख़िलाफ़ बचाने का वो है के इसके मीठे ज़हर और रौग़नह हुई गंदगी में न गिरा जाए।और इसके लिए, बदले में, ज़रूरत है लोगों के पक्के ईमान और अल्लाहु तआला में न ख़त्म होने वाले भरोसे की, एक अमन पसंद दिल की, और इंसाफ़ और आज़ादी में रहने की।लेकिन ये तब पास आएगा जब सिर्फ़ एक पाक, सख़्त और न बदलने वाली किताब को माना जाए, और अपने अख़लाक और इरादों को साफ़ किया जाए।ये पाकी इस्लाम के ज़रिए दी जा सकती है, जो हर तरह के तश्ददूद और गलतफ़हमी से आज़ाद है।इस्लाम मुकम्मल समाजी इंसाफ़ मुहैय्या कराता है, एक मज़बूत कवच जो लोगों को साम्यवाद के अज़दहे के पंजों के खिलाफ़ बचाता है।साम्यवाद की तबाही इस्लाम की ख़िदमत करके हासिल की जा सकती है।इस्लाम और साम्यवाद कभी भी एक साथ नहीं रह सकते।ये एक जानी हुई हक़िकत है के कुछ तानाशाह, जिन्होने मुस्लिम क़ौमों की ताकत पर कब्ज़ा कर लिया और उन पर सदारत की, उन्होने अपनी रियास्तों को ऐसे नाम दिए जैसे "समाजवादी इस्लामी जमहुरिया।" ये

“समाजवाद” का लफ़्ज़, इस्तेमाल किया जाता था जैसे, एक नाम हो मुसलमानों के लिए नहीं, बल्कि साम्यवादियों के लिए। उनका इस लफ़्ज़ को और इस्लाम को एक साथ रखने का मतलब है उन जालों में से एक की तदबीर करना जिससे मुसलमानों को धोखा दिया जा सके, क्योंकि इस्लाम और समाजवाद एक साथ नहीं रह सकते। एक मुसलमान एक समाजवादी नहीं हो सकता। इसी वजह से साम्यवादी वहशी, जिन मुस्लिम मुल्कों पर उन्होने कब्ज़ा किया वहाँ के लोगों को साम्यवादी बनाने के सिलसिले में वो, पहले इस्लाम पर हमला करते, इसी पर ज़्यादा ज़ोर डालते। वैसी ही वजह साम्यवादियों की मज़हब की दुश्मनी की तरफ़ भी है।

हर क़ौम में, वहाँ पर नावाकिफ़, ग़ैर मज़हबी, ग़ैर मोहज़्ज़ब, और बुनियादी लोग जो बहकाने में, फ़रेब में और फुसलाने में आकर साम्यवादी बन जाते हैं। लाल और पीली मरकज़ों की तैयारी की हुई चालों के ज़रिए, वो एक साम्यवादी क्रान्ति की गुप्त योजना बनाते हैं। क़ौम की हिफाज़त करना एक ऐसी विस्फ़ोटक और फैली हुई काली और ख़ूनी क्रान्ति के ख़िलाफ़ नौजवानों को मज़हबी जानकारी और इस्लामी अख़लाकी उसूल की पूरी तालीम देकर। हर बाप को अपने बच्चों को तालीम देनी चाहिए के कुरआन अल-करीम किस तरह पढ़ें; उन्हे मज़हबी पाठय क्रम में भेजना; उन्हें बताना के वुज़ू गुस्ल और सलात किस तरह अदा करना चाहिए; रोज़ा कैसे रखें; हलाल क्या है और हराम क्या है और उनका अभ्यास करें। साम्यवादी एक ऐसे शख़्स को गुमराह नहीं कर सकते जो इस तरह के मुस्लिम की तरह परवरिश किए गए हैं। ज़ाहिरी मिसालें इसकी ये हैं के लाखों मुसलमान रूस और चीनियों के जंगली पने और परेशान करने की वजह से आहो ज़ारी कर रहे हैं। वो हर तरह के ज़ुल्म, अज़्जियत बरदाश्त कर रहे हैं यहाँ तक के मौत भी, लेकिन साम्यवादी नहीं बने। वो या तो मर गए या भाग गए।

ये देखने पर के वो कभी मुसलमानों को धोखा देने में कामयाब नहीं होगें या मुस्लिम मुल्कों में क्रान्ति नहीं ला पाएगें, तो ज़ालिम साम्यवादी भारी सनअतों और जंग के वसीलों को सुधारने की कोशिश में लग गए ताकि इस्लामी मुल्कों पर चढ़ाई के लिए उनका इस्तेमाल हो सके। उन्होनें तैयारी करी हमला करने की औज़ारों, राकेटों, फयूज़न बमों, नए लड़ाकू जहाज़ और, कैमिकल के साथ ज़मीन पर सारे मुसलमानों को तबाह करने के लिए। इसलिए, सारी दुनिया के मुसलमानों को आपस में तआवुन, फ़िरकों के फ़र्क से अलग होना होगा, और अहले अस-सुन्नत के तले मुत्तहिद होना, यही एक रास्ता है निजात का। उनको अपनी पूरी ताकत/तवानाई इस्तेमाल करनी होगी नए औज़ारों को बनाने में ताकि साम्यवादियों पर सबक़त ली जा सके।

जब ईमान में यगानगत/मेल, अख़लाक में मेल, और इंसाफ़ में मेल कायम हो जाएगा और मुश्किल हथियार बनाए जाएंगे, तो साम्यवादी का छापा/हमला फिर कोई ख़तरा नहीं रह जाएगा।

1982 में जो दरवाज़ा खोला गया **रोजर गरूडी** के ज़रिए, जो यूरोप में हरूफे तहेज़ी के आदमी मश्हूर थे, **कोस्टीओ** [जकीस-यवेस कोस्टीओ [**1911-1997**] फ्रेन्च पानी के नीचे खोज लगाने वाले।] समुंद्रों के कैप्टन, उन्होने अपने जहाज़ का रास्ता इस्लाम की तरफ मौड़ दिया, **बेर्जाट**, जो बैले की दुनिया की जानी मानी हस्तियों में से एक थे, मुस्लिम फ़िरके/क़ौम में कदम रखा। बड़े आलिम और लेखक **रोजर गरूडी** ने **8** अप्रेल, **1983** में बेनगाज़ी में गैरिऊनेस यूनिवर्सिटी के एक सम्मेलन हाल में कहा:

"ये सही है के मेने इस्लाम कुबूल किया। आपने पूछा मैने इस्लाम क्यों चूना; इस्लाम को चुनने के ज़रिए, मैने जदएद दौर को चूना।"

ये वही **रोजर गरूडी** थे, **70** साल के, जो पूर जोश तरीके से कई सदियों तक फ्रांस के साम्यवादी निज़ाम को बचाते रहे। यूनिवर्सिटियों और सियासी मंचों पर, उन्होने बार-बार फ्रांस के लोगों और मग़रिब को कार्ल मार्कस का नज़रिया समझाया, ये सोचते हुए के आदमी की निजात इसी बेमिसाल निज़ाम में रखी हुई है। वो जदीद फ्रेंच साम्यवाद में **'रूहानी मेअमार'** की तरह जाने जाते थे। जहाँ भी कहीं कोई मजलिस, सम्मेलन या सेमिनार होता साम्यवादियों के ज़रिए, तो वहाँ **गरूडी** होते थे। उन्होने ईसाई पन और ईसाई यत के ख़िलाफ़ एक संजीदा जदोजहद किया अपने ख़्यालात, कलम और असरदार तकरीरों के साथ।

एक दिन मग़रिबी दुनिया के हुनर, हर्फ़े तहिज्जी और सियासत के बीच में एक बम फटा: **"रोजर गरूडी ने इस्लाम अपना लिया!"** इस ख़बर के पूरी दुनिया में ख़बर रसां एजेंसियों के टैलैकसों के ज़रिए फैलते ही, क्रेमलिन शदीद तौर पर सदमें में आ गया, क्योंकि क्रेमलिन ने फ्रेंच साम्यवादियों के सब से बड़े उस्ताद को खो दिया; **गरूडी** एक जाने माने आलिम थे, जिसके कलम से पिछले सालों में कार्ल मार्कस के नज़रिए को बहुत शुहरत मिली थी।

ये बड़ा/आला आदमी अब सच्चाई बता रहा था: **"इस्लाम एक ऐसा मज़हब है जो अपने पीछे ज़मानों को लेके चलता है। दूसरे मज़हब, हालांकि ज़मानों के पीछे चलते हैं। इसलिए, सब मज़हब सिवाए इस्लाम के वक़्त और तहरीक के मुताबिक़ बदल जाते हैं, और उनकी पाक किताबों की शक्ल बिगड़ चुकी है वक़्त की हालतों को साबित करने के लिए। हालांकि, कुरआन अल-करीम ज़मानों पर सरदारी करता है जब से ये नाज़िल हुआ। कुरआन अल-करीम नहीं, बल्कि वक़्त उसका पीछा करता है। जैसे वक़्त बूढ़ा होता जाता है, ये जवान हो जाता है। ये एक वाक्या है जो ज़माने से परे रूनुमा हुआ। ये एक वाक्या है जो सब ख़ौफ़नाक समाजी, सियासी और मआशी तबाहियों में सबसे**

बड़ा है जिसने बहुत सारी जंगों का पीछा किया तारीख़ में। इस्लाम को फ़ौकियत मिली न सिर्फ भौतिकवाद/मादूदियत या मुसबत पर, बल्कि नज़रिए वजूद पर भी। बहरहाल, इनमें से किसी को भी इस्लाम पर फौकियत नहीं मिली।

"इस्लाम के आला पैग़म्बर (अलैहिस्सलाम) ने हर चीज़ को वाज़ेह किया ये कहकर, दूसरी दुनिया के लिए काम करो ऐसे जैसे तुम कल मरने वाले हो, और इस दुनिया के लिए काम करो जैसे के तुम कभी नही मरोगे! इस्लाम न सिर्फ माददी बल्कि रूहानी पर भी ग़ालिब है। इसलिए, ये दोनों आपस में कभी अलग नहीं होते। ये किस तरह अलग हो सकती हैं जबके इस्लाम ने फरमाया: ईल्म हासिल करो चाहे तुम्हें चीन जाना पड़े, और सांईसी ईल्म एक ईमान वाले की खोई हुई जाएदाद है; जहाँ कहीं से भी वो इसे मिले वो हासिल कर लेता है! ईल्म और काम की कोई हद नहीं है इस्लाम में। कोई हद हासिल न कर पाना इन दो हक़िकतों के मुतालिक़, जिसने दुनिया को परेशान किया, इस्लाम ने दुनिया को हैरान किया।

"आदमी की ऐसे तारीफ़ करके 'अशरफ़ुल मख़लूक़ात और इज़्ज़त वाला, इस्लाम का मतलब है के उसका शोषण नहीं होगा। ये एक ऐसा निज़ाम है जो कुछ चीज़ जो के मुख़्तलिफ़ या साफ़ चीज़ों पर मुबनी हो जो फ़ज़ूल खर्ची, शैखी बाज़ी और ऐशो इशरत को ना मंज़ूर करता है, आमदनी की ये तारीफ़ करता है ऐसे जो कमाई गई हो किसी के माथे से टपके पसीने की तरह, बढ़ते हुए सरमाए को गरीबों में मुन्तकिल करना अच्छे मतवाज़िन और अख़लाकी उसूलों के वसीले से, सूद को मना करना, जो एक काहिली की वजह है, और और इससे ग़ैर कानूनी दौलत को तबाह करो। इस्लाम ने यह लाज़िमी कर दिया है के ख़लीफ़ा और गुलाम एक जैसे हुकूक बाटेंगे। वहाँ पर 'ऊँट' का एक किस्सा था जो एक असलियत है बादशाह की तलवार से भी

ज़्यादा तेज़: हज़रत उमर और उनका गुलाम बारी-बारी एक ऊँट की सवारी कर रहे थे जब वो एक शहर से दूसरे शहर जा रहे थे, ऊँट की लगाम बारी-बारी कभी ख़लीफ़ा पकड़ते और कभी गुलाम... ये है इंसाफ और कानून के मैदान में इस्लाम की क्रान्ति।

कार्ल मार्कस का नज़रिया और सरमाएदारी ऐसे निज़ाम हैं जो आदमी का शौषण करते हैं।इनके बरअकस, इस्लाम एक आसमानी मज़हब है जो इंसानी वकार इसांनियत को वापस कर देता है।"

7– एक सच्चा मुस्लिम कैसा हो?

पहली चीज़ जो ईमान की सही करनी है उनकी रज़ामंदी से जो अहल अस-सुन्नत के आलिमों ने अपनी किताबों में एक दूसरे को पहुँचाई।ये अकेला मस्लक़ है जो दोज़ख़ से बचेगा।अल्लाह तआला उन आला लोगों को बहुत सारे ईनामों से नवाज़े जिन्होने इतनी कोशिश करीं।चार मस्लकों के आलिम, जिन को इजतिहाद का मरतबा मिला और उनके ज़रिए जो आला आलिमों को तालिमात दी गई वो **अहले अस-सुन्नत** के आलिम कहलाए।यकीन (ईमान) को सही करने के बाद, ये ज़रूरी है के उस ईल्म के मुताबिक़ इबादत अदा की जाए जैसे के **फिकह** में बताई गई है, यानी शरीअत के एहकाम को करना और जो मना किया गया है उससे अपने को बाज़ रखना रखना।हर एक को पाँच वक़्त की हर रोज़ नमाज़ पढ़नी चाहिए बग़ैर बरगश्ता या ग़ाफ़िल हुए, और उसकी हालात और तादील-ए-अरकान के बारे में बहुत होशियार रहें।वो जिसके पास इतनी पैसा या जाएदाद निसाब की तरह तो उसे ज़कात देनी चाहिए।इमाम-ए-आज़म अबू हनीफ़ा ने कहा, "इसी तरह, ये ज़रूरी है के जो सोना और चाँदी जो औरतें इस्तेमाल करती हैं जैवर की तरह उसकी ज़कात देनी चाहिए।"

किसी को अपनी कीमती ज़िन्दगी मामूली चीज़ों पर बेकार नहीं करनी चाहिए चाहे अगर उसकी इजाज़त (मुबाह) भी हो। ये बेशक ज़रूरी है के अपना वक़्त हराम पर बेकार नहीं करना चाहिए। हमें अपने आपको तग़ाननी, गाना गाने में, संगीत के साज़ों में या गानों में मसरूफ़ नहीं करना चाहिए। ये हमारे नफ़्स को जो मज़ा देता है उससे हमें धोखा नहीं खाना चाहिए। ये ज़हर हैं जो शहद से मिले हुए हैं और चीनी से ढके हुए हैं।

किसी को **ग़ीबत** नहीं करना चाहिए। ग़ीबत हराम है [ग़ीबत का मतलब है एक मुसलमान या एक जीममी के पौशिदा गल्तियों को उसके पीठ पीछे बताना। ये ज़रूरी है के एक मुसलमान को हरबीस की गलतियों के बारे में बताया जाए, उनके गुनाहों के बारे में जिन्होने ये गुनाह अवाम में किए, उनकी बुराइयों के बारे में जिन्होने मुसलमानों को अज़्ज़ियतें दीं और जिन्होने खरीदने और बेचने में मुसलमानों को धोखा दिया। इसलिए, मुसलमानों को उनके हराम को जानना चाहिए। उनकी तोहमतों को ज़ाहिर करना जो इस्लाम के बारे में गलत बोलते और लिखते हैं ग़ीबत नहीं है। (राज़-उल-मोहतर: **5 263**)]

किसी को मुसलमानों के बीच फ़ुज़ूल बातें (अफवाह) नहीं फ़ैलानी चाहिए। ये वाज़ेह किया गया है के मुख़्तलिफ़ किस्म के अज़ाब उन लोगों पर नाज़िल होगें जो इन दो किस्म के गुनाहों में शामिल होगें। इसी तरह, झूठ बोलना और तोहमत लगाना भी हराम है; उनको इससे बचना चाहिए। ये दो बुराइयाँ हर मज़हब में हराम थीं। उनकी सज़ाएँ बहुत भारी हैं। ये बहुत रहमत की बात है के मुसलमान की बुराई छुपा लेना, उनके पौशिदा गुनाहों को न फ़ैलाना और उनकी गलतियों के लिए उन्हें माफ़ कर देना। किसी को अपने से नीचे वाले पर रहम करना चाहिए, जो उसकी रहकाम में है [जैसे के बीवियाँ, बच्चे, शार्गिद, सिपाही] और गरिबों पर। किसी को उसकी गलतियों पर मलामत नहीं करनी चाहिए। जो कमज़ोर हैं उनको मामूली वजूहात की बिना पर

नुकसान पहुँचाना या मारना या कसम खाना ठीक नहीं है। किसी को दूसरे की जाएदाद, ज़िन्दगी, इज़्ज़त, या पाकिज़गी पर हमला नहीं करना चाहिए। कर्ज़ किसी का भी हो या हुकूमत का अदा होना चाहिए। रिश्वत, लेना या देना, हराम है। हालांकि, ये रिश्वत नहीं है देना जब कोई दूसरा रास्ता न बचा हो, मिसाल के तौर पर ज़ालिम की सख़्ती की वजह से। हालांकि, ऐसे हालात में रिश्वत लेना भी हराम है। हर किसी को अपनी खामियाँ देखनी चाहिए, और हर घंटा उन गलतियों के बारे में सोचना चाहिए जो उन्होने अल्लाहु तआला की तरफ़ की हैं। उनको हमेशा अपने दिमाग़ में ये बात रखनी चाहिए के अल्लाहु तआला उन्हे सज़ा देने में जल्दी नहीं करेगा, न ही वो उनकी खुराक कम करेगा। किसी के वालदेन से, या हुकूमत से हुकूक, जो शरीअत के मुताबिक हो वो माने जाए, लेकिन जो शरीअत के मुताबिक़ नहीं हैं उनसे इस तरह टक्कर नहीं लेनी चाहिए के वो फितने को उकसाए। [देखिए **123**वां ख़त दूसरी जिल्द में किताब **मकतूबात-ए-मा थूमिया में**।]

ईमान को सही करने के बाद और फ़िकह के एहकाम को करना हर किसी को अपना सारा वक़्त अल्लाहु तआला को याद करने में गुज़ार देना चाहिए। हर किसी को अल्लाहु तआला को याद करते रहना चाहिए और जारी रखना चाहिए उसके ज़िकर को ऐसे जिस तरह आला मज़हबी आदमियों ने बताया है। एक को उन सब चीज़ों की तरफ़ दुश्मनी रखनी चाहिए जो उसके दिल को अल्लाहु तआला को याद करने से रोके। जितना तुम ज़्यादा शरीअत के करीब होगे उतना ही मज़ा तुम्हें उसको याद करने में आएगा। जैसे ही काहिली और सुस्ती शरीअत की फरमाबरदारी करने में बढ़ती है, वो जाएका आहिस्ता-आहिस्ता कम हो जाता है, आख़िर में ख़त्म हो जाता है। मैं पहले ही जितना लिख चुका हूँ उससे ज़्यादा और मैं क्या लिखूँ? ये एक माकूल आदमी के लिए काफ़ी है। हमें इस्लाम के दुश्मनों के जाल में नहीं फँसना है उनके झूठ और तोहमतों के ज़रिए।

8– एक युनिवर्सिटी के तालिबे इल्म को जवाब

मंदरजाज़ेल आसान तर्जुमा है एक ख़त का जो के लिखा गया जवाब के तौर पर एक युनिवर्सिटी के तालिबे ईल्म को अब्दुलहकीम-ए-अरवासी (कुददीसा सीरोह) **के ज़रिए जब वो बुर्जुग प्रोफ़ैसर थे तसव्वुफ़ के मदरसात अल-मुताहसीसिन, के शोबा दीनयात में, जो के सुलतान सलीम मस्जिद में कायम था इस्तानबुल में आँटामन सल्तनत के ज़वाल के सालों के दौरान।**

अपनी पूरी ताकत के साथ अल्लाहु तआला की कुदरत से बाहर हो जाओ, अगर तुम कर सकते हो! फिर भी तुम नहीं कर सकते।इस काएनात के बाहर अदम मौजूदगी की जगह है।और ये जगह अदम मौजूदगी की भी उसकी क़ादिरे मुतलक़ है।

एक मौके पर, किसी ने पूछा [आला वली] **इब्राहिम इबन अधम** (कुददिसा सीरोह) **से मश्वरे के लिए पूछा।उन्होने कहा:**

अगर तुम छः चीज़ें कुबूल करलो, कुछ नहीं तुम करो तुम्हें नुकसान होगा।ये छः चीज़ें हैं:

1) जब तुम कोई गुनाह करने का इरादा करो, खाना मत खाओ जो उसने तुम्हें दिया! क्या तुम इस लायक़ हो के उसका खाना खाओ और उसकी नाफ़रमानी करो?

2) जब तुम उसके ख़िलाफ़ बाग़ी होना चाहो, तो उसकी हुकूमत से बाहर हो जाओ! क्या तुम इस लायक हो के उसकी हुकूमत हो और उसके ख़िलाफ़ बग़ावत करो?

3) जब तुम उसके ख़िलाफ़ नाफ़रमानी करना चाहो, वहाँ गुनाह मत करना जहाँ वो तुम्हें देख ले! घुनाह वहाँ करना जहाँ वो तुम्हें देख न सके! ये फ़कत उसकी हुकूमत में किसी का न होना उसका खाना खाना और उसके बाद वहाँ गुनाह करना जहाँ के तुम्हें देख ले करता हुआ।

4) जब मौत के फरिश्तें तुम्हारी जान लेने आएँ, पूछो उनसे इनसे इंतेज़ार करने के लिए जब तक तुम तौबा न करलो! टुम उस फरिश्ते को वापस नहीं भेज सकते! उसके आने से पहले तौबा करलो, जबके इस घड़ी तुम्हारा मौका हो सकता है, मौत के फरिश्ते के यकायक आने के लिए!

5) जब क़ब्र में दो फरिश्तें मुनकर और नकीर तुम से सवाल करने आएंगे, उन्हें वापस भेज देना! उनको अपना इम्तेहान मत लेने देना!

"ये नामुमकिन है," उस शख़्स ने कहा जिसने उनसे मश्वरा माँगा था।

शैख़ इब्राहिम ने कहा, "फिर अपने जवाबों को तैयार कर लो अभी!"

6) क़यामत वाले दिन, जब अल्लाहु तआला ने ऐलान किया: "गुनहागार, दोज़ख़ में जाओ!" कहो के तुम नहीं जाओगे!

उस शख़्स ने कहा, "कोई मेरी नहीं सुनेगा," और तब तौबा कर ली; उसने मरते दम तक अपनी तौबा से इंकार नहीं किया।यहाँ पर औलिया के लफ़्ज़ों में पाक असर है।

इब्राहिम इबन अधम (कुददीसा सीरोह) **ने पूछा, "अल्लाहु तआला ने वाज़ेह किया:** 'ओ मेरे बंदों! मुझसे पूछो! मैं कुबूल करूँगा, मैं दूँगा!' **ताहम, हम पूछते हैं लेकिन वो नहीं देता?" हज़रत इब्राहिम ने कहा: "तुम अल्लाहु तआला की मिन्न करते हो, लेकिन उसका हुकूम नहीं मानते। तुम उसके पैग़म्बर** (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) **को जानते हो, लेकिन तुम उनकी तक़लीद नहीं करते। तुम कुरआन अल-करीम पढ़ते हो, लेकिन उसकी हिदायतों की तक़लीद नहीं करते। तुम अल्लाह तआला की रहमतों का फ़ायदा उठाते हो,लेकिन तुम उसका शुक्रिया अदा नहीं करते। तुम जानते हो के जन्नत उनके लिए बनी है जो इबादत करते हैं, लेकिन तुम उसके लिए कोई तैयारी नहीं करते। तुम जानते हो के उसने नाफ़रमानों के लिए दोज़ख़ बनाई है, लेकिन तुम उससे नहीं डरते। तुमने देखा के तुम्हारे बाप और दादा के साथ क्या हुआ, लेकिन तुमने चेतावनी नहीं ली। तुम अपनी खुद की ख़ामियाँ नहीं देखते, और तुम दूसरों में ख़ामियाँ ढूँढते हो। ऐसे लोगों को शुक्रगुज़ार होना चाहिए, चूँकि उन पर पत्थरों की बारिश नहीं हुई, चूँकि वो ज़मीन में ग़रक नहीं किए गए, और चूँकि आसमान से आग नहीं बरसाई गई! इसके अलावा इनको और क्या चाहिए?" क्या ये काफ़ी नहीं है अजर के तौर पर उनकी इबादतों के लिए?"**

[अल्लाहु तआला ने सूरह मोमिन की साठवीं आयत में वाज़ेह किया, **"मुझ से दुआ करो, मैं कुबूल करूँगा** (मुझ से पूछो मैं दूँगा),। यहाँ पर पाँच हालतें हैं दुआ की कुबूलियत के लिए। एक जो दुआ करता है, वो मुसलमान है; अहल अस-सुन्ना पर ईमान रखना; हराम नहीं करना, खास तौर पर अपने आपको ऐसे खाने और पीने से बचाना जो हराम चीज़ें हैं; फर्ज़ पर कायम हो; पाँच वक़्त की नमाज़ पढ़ो, रमज़ान के महीने में रोज़े रखो; ज़कात दो; रमज़ान के महीने में रोज़े रखो; ज़कात दो; ये जाने और अपने को कायम रखना उन वजूहात पर के वो अल्लाहु तआला से क्या चाहता है। अल्लाहु तआला ने एक खास वसीले से ये सब चीज़ें पैदा कीं। जब किसी खास चीज़ के लिए पूछा

जाए, वो उस चीज़ का सबब भेजता है और उस चीज़ को असरदार बनाता है। आदमी अपने आपको इस सबब से जोड़ता है और उस चीज़ को हासिल करता है। अपने औलिया की वजह से, अपने हसबे मामूल वसीले से हट कर, जब वो दुआ करते हैं या जब औलिया की वजह से दुआ करते हैं, जो चीज़ें इच्छा की गई वो सीधे तौर पर उनको ऐसे **(करामात)** दे दी जाती हैं बग़ैर किसी वजह के जुड़े हुए।] जैसे के तुम अदम मौजूदगी से इस मौजूदा दुनिया में खुद नहीं आए हो, इसलिए तुम वहाँ खुद नहीं जा सकते। आँखे जिनके साथ तुम देखते हो, कान जिनके साथ तुम देखते हो, वो अज़ा जिनके साथ तुम महसूस करते हो, वो अक़ल जिसके साथ तुम सोचते हो, हाथ और पैर जो तुम इस्तेमाल करते हो, वो सड़के जिन पर तुम चलते हो, सारी जगह जहाँ तुम जाते हो, मुख़्तसर ये, के सारे रूकन और निज़ाम जो तुम्हारे जिस्म के साथ जुड़े हुए हैं, वो सभी, अल्लाहु तआला के कब्ज़े में और बनाए हुए हैं। तुम कोई चीज़ उससे अपने कब्ज़े में नहीं ले सकते! है-य और क़य्यूम है वो, यानी, वो देखता है, जानता है और सुनता है, और वो हर लम्हे मौजूदगी रखता है हर चीज़ में जो मौजूद है। एक लम्हे के लिए भी, वो सबकी हालतों से ग़ाफ़िल नहीं होता और सब पर काबू रखता है। वो किसी को अपनी जाएदाद चुराने नहीं देता। वो कभी भी नाक़ाबिल नहीं होता उनको सज़ा देने में जो उसके एहकाम की नाफ़रमानी करते हैं। इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता, अगर, मिसाल के लिए, उसने इस कुर्रा पर कोई इंसानी वजूद पैदा न किया होता, जैसे के उसने चाँद पर नहीं, मरीख पर या दूसरे सय्यारों पर नहीं किया; उसकी बड़ाई इस वजह से कम नहीं हो जाती।

एक हदीस कुदसी ने बयान की: **“अगर** (सारे) **तुम्हारे बाप दादा और औलाद, जवान और बूढ़े, ज़िन्दा और मुरदा, इंसानी वजूद और जिन, मेरे सबसे ज़्यादा कुर्बान होने वाले, सबसे ज़्यादा फरमाबरदार इंनासी बंदे** (अलैहिस्सलाम) **की तरह थे, मेरी बढ़ाई नहीं बढ़ जाएगी। बातचीत करने में,**

अगर तुम सब मेरे दुश्मन की तरह थे, जो मेरी मुख़ाफ़त करता था और जो मेरे पैग़म्बर से नफ़रत करता, इससे मेरी बढ़ाई कभी नहीं घटेगी। अल्लाहु तआला आज़ाद है तुम्हारी चाहतो से, उसे तुम में से किसी की ज़रूरत नहीं। जैसे के तुम्हारे लिए; तुम्हारे वजूद में रहने के सिलसिले में और वजूद में कायम रहने के लिए और हर चीज़ में जो तुम करो, तुम्हे हमेशा उसकी ज़रूरत रहेगी।"

वो सूरज के वसीले से रोशनी और गरमी को भेजता है। वो चाँद के अकस से रोशनी की तरगें बनाता है। काली मिट्टी से, वो बहुत शोख रंग मीठी भीनी ख़ुशबू वाले फूल और ख़ूबसूरत शकले बनाता है। एक ठंडी हवा के झोंके से, वो ऐसी सांस निकालता है जो दिलों को आराम पहुँचाती है। सितारों से जो बेशुमार सालों से भी दूर हैं, वो उनसे ज़मीन पर बारिश के हाने बनाता है, जिन में से तुम आए हो और आख़िर में जिसके तले तुमने दफ़न होना है। कई थरथराहटों, से वो ज़र्रो में असर पैदा करता है। [एक तरफ़, वो धूल को तबदी करता है जो तुम नापसंद करते हो और जिसके साथ नफ़रत करते हो, मिट्टी में, अपने छोटे से वसीले ना चीज़ शे (छोटे-छोटे कीढ़ों) से, वो इस मिट्टी को, जिस पर तुम चलते हो, एक सफ़ेद-अंडे की तरह जोहर, प्रोटीन में तबदील करता है, जो तुम्हारे शरीर का माद्दा शे बनाता है, पौधों के कारखाने से। दूसरी तरफ़, ज़मीन में पानी के साथ एक दम घुटने वाली गैस हवा में मिलाता है, दोबारा पौधों के कारखाने में और उनमें तवानाई जमा कर देता है जो वो आसमान से भेजता है, उसने कलफ़ और शुगर वाली जोहर और तेल, सारे तवानाई के जराए जो तुम्हारे शरीर की मशीन को चलाते हैं वो सब पैदा किए।] इस तरह, पौधों में, जो उसने खेतों और रेगिस्तानों, पहाड़ों पर और छोटी नदियों में और जानवरों में जो उसने ज़मीन पर और समुंद्रों में रहने के काबिल बनाए। वो खाना तैयार करता जो तुम्हारे पेटों में जाता है और तुम्हें कुव्वत पहुँचाता है। तुम्हारे फ़ेफ़ड़ों में किमयाई तर्जुबेगाह रखने के बाद, उसने ज़हर को तुम्हारे ख़ून से अलग किया और उसकी जगह फ़ायदेमंद ऑकसीजन रखी। तुम्हारे

दिमागों में तबीआत मादयात की तर्जुबेगाह गाढ़ने के बाद, जानकारी आती है तुम्हारे महसूस करने वाले आज़ा से तुम्हारे असाब के ज़रिए वहाँ ले जाए जाते हैं और, जैसे के वो लौहे के पत्थर में मकनातीसी ताक़त रख देता है, इस तरह शऊर के असर के साथ, जोके वो तुम्हारे दिमागों में डाल देता है दूसरी ग़ैर माद्दी ताकतों के साथ, वो तुम्हारे दिल में मुख़्तलीफ़ मनसूबे, एहकाम और हरकते डाल देता है जो एक ही वक़्त में तैयार होते हैं। तुम्हारे दिल को पेचीदा पुर्ज़े के ज़रिए काम करवा के, जो तुम बहुत ग़ैर-मामूली समझते हो, वो तुम्हारे ख़ून की नालियों में ख़ून को दरिया की तरह बहाता है। वो तुम्हारी नसों के ज़रि एएक हैरत अंगेज़ सड़कों का जाल बुनता है। वो तुम्हारी माँसपेशियों में ज़खीरा छुपाता है। और इसी तरह की बहुत सारी दूसरी चीज़ों के साथ, वो तुम्हारे शरीर को तैयार करता है और पूरा करता है। वो कायम करता है और इन सबको तरतीब से और मुनासबत के साथ लगाता है जिसे तुम नाम देते हो ऐसे इल्मे माद्दियात का कानून, किमयाई असर या ज़िंदा अजसाम के वाक्यात। उसने तुम्हारे अंदर ताक़त के मराकज़ रख दिए। वो तुम्हारे अख़्लाक और तुम्हारे नफ़स में पहले से ज़रूरी आगाही रूह के मंसूबे डाल देता है। वो, इस तरह, एक खज़ाने का तौहफ़ा भी देता है जिसे अक़्ल कहते है, एक माप देता है जिसका नाम वजह है, एक वसीला जिसे सोच कहते हैं, और एक चाबी जिसे तुम इच्छा कहते हो। इस सिलसिले में के तुम इन में से हर एक का सही इस्तेमाल कर सको, वो तुम्हें मीठी और कढ़वी चेतावनी, इशारा, भूकाओ और उमंगे देता है। और सब से बड़ी रहमत के तौर पर, वो खुले तौर पर अपने वफ़ादार और ताबेदार पैग़म्बरों (अलैहिमु ‘स-सलाम) के ज़रिए हिदाएते भेजता है। इसके नतीजे में, तुम्हारे शरीर की मशीन को चलाने के लिए और उसके तर्जु बों की हिदायत के साथ, वो इसे तुम्हें सौंप देता है ताकि तुम इसे बेरूनी मामलात में इस्तेमाल कर सको और फ़ायदा उठा सको। वो ये सब इसलिए नहीं करता क्योंकि उसे तुम्हारी इच्छा या मदद की ज़रूरत है, बल्कि तुम्हें ख़ुश रखने के लिए अपने बंदों के बीच में तुम्हें एक आला मकाम और इख़्तियार दिलाने के

लिए। अगर, तुम्हारे हाथों, तुम्हारे पैरों और तुम्हारे सारे अज़ा जो तुम जिस तरह चाहो इस्तेमाल कर सको, इस पर छोड़ने के बजाए, वो इन्हें इस्तेमाल करे बिना तुम्हारे जाने, तुम्हारे दिल की धड़कन की तरह, तुम्हारे फेफड़ों के फैलने की तरह और तुम्हारे ख़ून के बहाओ की तरह, अगर वो तुम्हें ताक़त के ज़रिए पूरा घूमा दे, अकस की हरक़त के साथ, मफ़लूज़ हाथों और पैरों के साथ, अगर तुम्हारी हर हरक़त एक थरथरी थी और हर चाल तुम्हारी एक झटका थी, क्या तुम अपने आप पर और अपनी चीज़ों पर काबिज़ हो सकते थे जो उसने तुम्हें दीं? अगर वो तुम्हें बेरूनी और अंदरूनी ताक़तों के असर तले चलाता, जानवरों की बेजान, या ग़ैर अकली और बेख़बर ताक़तों की तरह, और अगर वो तुम्हारे मुँह में डाल देता, जानवरों के अंबार/जमाअत की तरह, एक लुक्मा रहमतों का- जो तुम बड़ी तादात में अपने घरों को ले जाते अब क्या तुम वो ले जाओगे और खा लोगे वो लुक्मा?

क्या तुमने अपनी पहले की हालत और जब तुम पैदा हुए कभी उसके बारे में सोचा है? तुम कहाँ थे, तुम क्या थे, इस ज़मीन के बनने के दौरान तुम कहाँ रहते थे, खाते थे और पीते थे, जाते थे, ख़ुश होते और अपने को मोड़ते थे, उन वसीलों को दरयाफ़्त करो जो तुम्हारी बीमारियों के लिए इलाज है, और उन वसीलों को जो तुम्हें जंगली और ज़हरीले जानवरों और दुश्मनों के हमलों से बचाएँ? तुम कहाँ थे जबके इस ज़मीन के पत्थरों और मिट्टी को आग पर भूना जा रहा था तख़्लीक के तंदूर में और जबके उसके पानी और हवा की आबकारी की जा रही थी उस कादिरे मुतलक़ की किमयाई तर्जुबेगाह में? क्या तुमने कभी सोचा है? तुम कहाँ थे जब ज़मीने, जिसे आज तुम कहते हो तुम्हारी हैं, समुंद्रों से अलग हुई आहिस्ता-आहिस्ता, जबके पहाड़ों, दरियाओं, सतह मुर्तफ़अ/प्लैटों और पहाड़ियाँ बनाई जा रही थीं? कहाँ और कैसे थे तुम जबके, अल्लाहु तआला के कादिरे मुतलक़ के वसीले, नमकीन पानी समुंद्रों का भाप बनकर आसमान में बादल बना रहे थे, और जबके बारिशें, उन बादलों में से

गिर रही थीं, जोहर ले रहे थे [ग़िज़ा के लिए बनाई जा रही थीं बिजली और लहरों की ताक़त और तवानाई से आसमानों में] सूखी और जली हुई मिट्टी के ज़र्रो में, और जबके ये जोहर, हिलाए जा रहे थे [रोशनी और गरमी की किरनों के असर के ज़रिए], थरथराए जा रहे थे और ज़िंदगी के खलियों को ग़िज़ा देता है?

आज, वो कहते हैं के तुम बंदरों की नसल से हो, और तुम यकीन कर लेते हो।जब वो कहते हैं के अल्लाहु तआला ने तुम्हें बनाया, तुम्हारे मरने का सबब बनाया और ये के वो अकेला है इन सब चीज़ों को बनाने वाला, तो तुम यकीन नहीं करना चाहते।

ओ आदमी! तुम क्या हो? टुम अपने बाप की रगों में क्या थे? एक वक़्त में, अपने बाप की रगों में, जिसकी तुम बेईज़्ज़ती करते हो ऐसे नामों के साथ जैसे बेवकूफ़, पूराने ज़माने के और दक़ियानूसी, तुम उन्हें बेआरामी का एहसास कराते थे।तब तुम्हे किसने हरक़त करना बताया, और तुम उन्हें क्यों सता रहे हो? अगर वो चाहते, तो तुम्हें कूढ़े के ढेर में फ़ैक सकते थे, लेकिन उन्होने ऐसा नहीं किया।उसने तुम्हे एक अमानत की तरह छुपाया।जबके वो बहुत रहम वाला था के तुम्हें एक पारसा औरत के सुपुर्द किया, जहाँ तुम्हें कुशादा तौर पर पाला गया और एक लम्बे अरसे तक तुम्हें बचाने की जद्दोजहद की गई, तुम अपने बाप की बेईज़्ज़ती क्यों करते हो उसे अपनी सब तकलीफ़ों का ज़िम्मेदार ठहराते हुए, बजाए इसके के उस से अपना शुक्रिया ज़ाहिर करो और अपने पैदा करने वाले का सारी रहमतों का जो तुम्हें बख़्शी गई? इसके अलावा, तुम क्यों अपनी अमानत कूढ़े के ढेर में फ़ैक रहे हो हर किसी के ज़रिए गंदा होने के लिए?

जब तुम्हारे आस-पास के लोग तुम्हारी ख़्वाहिश और तमन्नाओं की तक़लीद करें, तुम ये यकीन करते हो के तुम सब कुछ कर रहे हो उनको अपनी

अकल, इल्म, सांईस, ताक़त, मज़बूती और सारी काबीलियत खोज करके उनकी तख़्लीक के ज़रिए। तुम उस काम को भूल जाते हो जो अल्लाहु तआला ने तुम्हें सौंपा है करने के लिए, तुम उस आला सरकारी फ़राईज़ से इस्तिफ़ा दे देते हो और अमानत की मिलकियत हासिल करने की कोशिश करते हो। तुम अपने आपको इज़्ज़त और ज़ाहिर करना चाहते हो एक मालिक और हुकुमरान की तरह।

दूसरी तरफ़, जब तुम्हारे आस-पास के लोग तुम्हारी इच्छाओं की तक़लीद नहीं करते, जब बेरूनी ताक़तें तुम्हारे ऊपर हावी होने लगती हैं, तुम अपने अंदर तब कुछ नहीं देख पाते, सिवाए अफ़सोस और नाकामी, नाचारी और नाउम्मीदी के। तब तुम दावा करते हो के तुम्हारी कोई ख़्वाहिश या पसंद नहीं है, वो ये के तुम सबकी गुलामी तले हो, के तुम एक मशीन की तरह हो, जो खुदबखुद हरक़त करने वाली है लेकिन टूटे हुए स्प्रिंग के साथ। तुम कदर को इस तरह नहीं समझते जैसे **अल-इल्म अल मुतक़दिदम** (लाज़वाल इल्म) लेकिन ऐसे **अल-जबर अल मुतहाकिम** (ज़ालिम की ज़बरदस्ती)। जबके ये कहने से, तुम इस हक़ीकत से नावाक़िफ़ नहीं होते के तुम्हारा मुँह एक रिकार्ड प्लेअर की तरह नहीं है।

जब तुम्हारा पसन्दीदा खाना तुम्हारी मेज़ पर नहीं पहुँचता, तुम अपना हाथ और ज़बान रोक लेते हो और सूखी रोटी खा लेते हो जो तुम्हारी पहुँच में है, अगरचे तुम आज़ाद हो खाने के लिए या नहीं खाने के लिए और भूख से मर जाने के लिए; सूखे निवाले तुम्हारें मुँह में ताक़त के ज़रिए नहीं ठूँसे गए! तुम खाओ, लेकिन ये भी सोचो के तुम्हें महरूम रखा गया तुम्हारी मरज़ी से अदाकारी करने से, और तब भी जो तुमने क्या वो इस तरतीब से नहीं है ये बेइरादा हरकतों की वजह से नहीं है। बहरहाल, अगरचे तुम ऐसे वक़्त में भी अपने ऊपर काबू हासिल कर लेते हो ऐसे जब तुम चाहो तो, तुम अपने

आपको तजवीज़ करके मजबूर कर सकते हो, गुलाम बना सकते हो; मुख़्तसर ये, एक सिर्फ़ कुछ नहीं बेरूनी ताक़तों के खिलाफ़।

ओ आदमी! इनमें से तुम कौन हो? तुम दावा कर सकते हो 'सभी' जब तुम ख़ुशहाल हो और जब कामयाबी और जीत तुम्हारे साथ हों, और 'कुछ नहीं' किस्मत की ताक़तों के तले हो जब मामलात ख़राब हो जाएँ या तुम्हारी ख़्वाहिशों के बरअकस हों। क्या तुम 'सब' या 'कुछ नहीं'?

ओ इंसानियत! ओ आदमी जो तैर रहा है किसी कमी और वहम पर! तुम न तो 'सब' हो न ही 'कुछ नहीं'! किसी भी कीमत पर, तुम ऐसी चीज़ हो इन दोनों के बीच में। हाँ, तुम दूर हो खोज लिए जाने से, सरदारी करने से और सब चीज़ों को जीत लेने से। लेकिन, तुम्हारे पास कभी झूठ साबित न होने वाली आज़ादी है और इख़्तियार है और एक ख़्वाहिश है और मरज़ी जो तुम्हारी एहकामियत की अदाईगी करती है। तुम में से हर एक-एक हाकिम/अधिकारी है, जो अकेले और मजमूई तौर पर कुछ फ़राईज़ निभाता है अल्लाहु तआला के हुक्म के मुताबिक़, जो है ग़ैर मसावी हाकिम, मुतलक और बिना किसी शर्त के मालिक बग़ैर किसी साथी के! तुम अपने फ़राईज़ उसके कानून और उसूलों के नीचे अदा करते हो जो उसने कायम किए हैं, तुम्हारे दरजों के हदूद के अंदर जो उसने तुम्हें सौंपी हैं, उन ज़िम्मेदारियों और वसीलों के अंदर जो उसने तख़्लीक़ और सुपुर्द की हैं तुम्हें अमानतों के तौर पर। वो अकेला वाहिद सेनापति है, बेमिसाल हाकिम और अकेला मालिक। वहाँ पर कोई और हुक्म देने वाला नहीं हैं उसके बराबर, ना ही कोई हाकिम उससे मिलता हुआ है, ना ही मालिक-साझेदार है उसके साथ। वरना मकासिद और मुरादें जो तुमने दावा की हैं और जिनकी तरफ़ तुम सरगरमी से भाग रहे हो, वो जद्दोजहद जो तुमने तेए की हैं, वो शोहरत जिसमें तुम फ़ख्र महसूस करते हो और तुम्हारी कामयाबियाँ इसके लिए हैं, वो सब झूठी हैं, बेकार हैं। तब, तुम अपने दिल के

अंदर झूठ को क्यों कुबूल करते हो और बुत परस्ती में तबदील हो जाते हो? तुम क्यों नहीं अल्लाहु तआला के एहकामों की फरमाबरदारी करते, जो ग़ैर मसावी हुकुमरान है और जानते हो वो तख़्लीक़ करने वाला है? इसके बजाए तुम हज़ारों ख़्याली बुतों के पीछे भागते हो और मुसिबतों में डूब जाते हो? तुम जिस तरफ़ भी भाग रहे हो, क्या वो एक ख़्याल, पसंद या एक यकीन नहीं है जो तुम्हें घसीट रहा है? तुम उस ख़्याल को किसी और में क्यों देख रहे हो अल्लाहु तआला के अलावा? तुम क्यों नहीं बराहे रास्त उस यकीन को अल्लाहु तआला में रखते और अपने सारे बातों में से कोई एक बात इस यकीन पर क्यों नहीं बिताते और उन कामों में जो इस यकीन का नतीजा हैं?

जब तुम जानते हो अल्लाहु तआला एक मुतलक हुकुमरान है और काम करता बग़ैर अपने उसूलों और कानूनों को तोड़े हुए, तुम कैसे अच्छी तरह एक दूसरे से प्यार कर सकते हो और बंधे हुए भाई हो सकते हो! क्या नहीं इस भाईचारे से अल्लाहु तआला का रहम तख़्लीक़ होगा? हर मेहरबानी जो तुम हासिल करते हो वो इस भाईचारे का नतीजा है जो पैदा हुआ अल्लाहु तआला में, उसके रहम में और करम में यकीन के ज़रिए। हर मसला या मुसिबत जो तुम तर्जुबा करते हो वो नतीजा है तुम्हारे जोश, गुस्से और दुश्मनी का जो तुम भर देते हो अपने बदले की वजह से सख़्त सज़ा के साथ अल्लाहु तआला की तरफ़ ध्यान न देने की वजह से, बेरहमी और नाइंसाफ़ी के लिए। और ये इसका भी नतीजा है के अपने आप कानून बनाने की कोशिश करना और दूसरों की तक़लीद करना जो अल्लाहु तआला के साथ मुकाबला करना चाहते हैं, मुख़्तसर ये, सिर्फ़ अल्लाहु तआला में यकीन न रखना उसके असली ईमान के साथ उसकी वहदत में।

मुख़्तसर में, सबसे बड़ी वजह इंसानियत के बीच में मुश्किलों की वो है अल्लाहु तआला के ख़िलाफ़ बुत परस्ती का जुर्म करना। बेईमानी का अंधेरा

जो इंसानियत के अफ़क को घेरे हुए है, इल्म और सांईस में सुधार के बावजूद, ये नतीजा है बुत परस्ती का, ईमान न रखने का, अल्लाहु तआला की वहदत में यकीन न रखने का और आपसी प्यार में कमी होने का। अगरचे सख़्त इंसानी मख़्लूक ने कोशिश की, वो भी तकलीफ़ों और तबाहियों से बच नहीं पाए अगर उन्होने एक दूसरे से प्यार नहीं किया। और, अगर नहीं उन्होने अल्लाहु तआला को जाना, अगर नहीं उसे प्यार किया, अगर नहीं उसे इज़्ज़त दी एक मुतलक हाकिम की तरह और उसकी इबादत की, बंदे एक दूसरे को प्यार नहीं कर सके। जो चाहे सोच रही हो अल्लाहु तआला के अलावा और अल्लाहु तआला के तरीके में, उनमें से सब वो रास्ते हैं जो बेमेल और कमबख्ती की तरफ़ जाते हैं। क्या तुम नहीं देखते के जो मस्जिद जाते हैं वो एक दूसरे से प्यार करते हैं और वो जो आना जाना लगाए रखते हैं शराब खाने में लड़ते हैं?

जिसे चाहे तुम अपने दिल को दो, या चाहे किसी की भी तुम इबादत करो अल्लाहु तआला के अलावा उनमें से हर एक एक दूसरे के ख़िलाफ़ है और एक चीज़ दूसरी के बराबर मानी जाती है। और वो सब कादिरे मुतलक और अल्लाहु तआला की मरज़ी के अंदर है। वो अकेला हाकिम है जिसका कोई साझेदार, मिलता जुलता, एक जैसा, मुखालिफ़ या बराबर नहीं है, और वो अकेला वाहिद है जिसका बराबर नाजाईज़ और गलत है, एक अदम मौजूदगी के बराबर, जिसकी मौजूदगी नामुमकिन है।

जिसे चाहे तुम तक़लीद करो, इबादत, प्यार करो या इज़्ज़त दो मुतलक हाकिम की तरह अल्लाहु तआला के अलावा, ये जान लो के वो तुम्हारे साथ जलाया जाएगा।

मरकज़-ए-दाएरा-ए इफ़लास वा बी नवाई
सर शार-ए साहबा-ए खुदग़ामी वा ना अशिनाई
अस-सय्यद अबदुलहकीम-ए-अरवासी

तीसरा हिस्सा
सवानेह उम्रियाँ

9– सय्यद [सय्यद पैग़म्बर की नसल में से]
अबदुलहकीम-ए-अरवासी की सवानेह उम्री
(सय्यद फ़हीम-ए-अरवासी के एक शार्गिद)

वो आख़िरी ख़लिफ़ात उल मुसलिमिन सुल्तान मौहम्मद वहीद उद दीन खान की हुकूमत में सबसे आला आलिम [**आलिम:** मुस्लिम फ़ाज़िल] थे।वो बास्कल'आ शहर में वेन के नज़दीक **1281 (1865)** में पैदा हुए और अंकारा में **1362 (1943)** में वफ़ात फरमाई।उस वक़्त के दौरान जब साम्यवादियों फ्रीमेसन, वहाबियों, मुशरिकों, रफ़ीदियों, यहुदियों और ईसाइयों ने इस्लाम पर हमले किए अपनी सारी इशाअतों नशरे इशाअत, शाही ताक़तों और दौलत के ज़रिए मुस्लिम बच्चों को उनके ईमान से महरूम रखने के सिसिले में, इस वक़्त उन्होनें अहल-अस-सुन्नत [**अहल अस सुन्नत:** सच्चे मानने वाले (साथियों के) पैग़म्बर के।जेरिदे-ए इल्मियए मेक्मू असी, न०. **48**, प. **1484**।] को अपनी तकरीरों, उपदेशों और किताबों के साथ बचाया बरबादी के खिलाफ़ और,

अपना करने वाली माहिर बातों से, उन्होने उस ज़हरिले झूठों को साफ़ किया जो नौजवानों के ऊपर असर डाली हुई थीं। उन्हें खौफ़नाक मुश्किलों और ज़ुल्मों को झेलना पड़ा इस रास्ते के लिए (रहीमा-हुल्लाहु तआला)। अबदुलहकीम एफ़ेंदी के वालिद ख़लिफ़ा मुस्तफ़ा एफ़ेंदी, येकसेकॉवा के गाँव सकीतन से थे, एक कस्बा हक्कारी का (एक मशरिकी अंतोलियन शहर)।

सय्यद अबदुर्रहमान, अबदुलहकीम एफ़ेंदी के परदादा, वो सय्यद अबदुल्लाह के बेटे थे। सय्यद अबदुल्लाह अरवास में सय्यद फ़हीम के सिरहाने (दफ़न) है। जब सय्यद अबदुल्लाह की वफ़ात हुई, तो अरवासी खानदान को आगे बढ़ाने के लिए, सय्यद अबदुर्रहमान की माँ ने उन्हें आमादा किया शादी करने के लिए। उनके पाँच बेटे थे जिनके नाम हैं ताहिर, अबदुर्रहीम, लुत्फ़ी, अबदुलहमीद और मौहम्मद। सय्यद ताहिर बसरा के गर्वनर थे। सय्यद अबदुर्र हीम ने **1200 [1786]** में वफ़ात पाई। वो, उनके बेटे हकी इब्राहिम और उनके पौते अबदुल अज़ीज़ (दफ़न है) अहमद हनी मकबरे डोज़ू बाएज़ीद में। अबदुल अज़ीज़ के तीन बेटे मौहम्मद अमीन और उमर इफ़दीस और सय्यद ख़दीजाह थे। उन में से हर के बच्चें और पौतें एक ख़ज़ाना थे जो मज़हबी और दुनियावी तालिम से भरे हुए थे। मौहम्मद अमीन एफ़ेंदी के चार बेटे थे। उनके नाम थे अबदुल अज़ीज़, अबदुलक़दीर, अबदुलहकीम और मेहमूद एफ़ेंदीस। अहमद एफ़ेंदी, अबदुलहकीम एफ़ेंदी के बेटे, ने **1988 [1409]** के आख़िरी दिन इस्तानबुल में वफ़ात पाई जब वो तुर्कीए रोज़ाना अख़बार के एक अख़बार नवीस थे।

सय्यद अबदुर्रहमान अपने वक़्त के मुरशीद-ए अकमल (मुकम्मल मुरशीद) थे। हज़ारों अल्लाहु तआला के चाहने वाले उनकी सोहबा (तालीमात) में हाज़िर होते थे और फ़ैज़ हासिल करते थे। वो दूर मुल्कों में मशवरों के खतूत

भेजते थे। उनके फ़ारसी ज़बान में ख़त जो उन्होने अमीर शराफ़ददीन अब्बासी को भेजे; जो के इरीसन अमीरों में से एक थे, वो बहुत कीमती थे। उन ख़तों में से एक में उन्होने अपने सलाम भेजे और दुआएँ (आशीर्वाद) दी मौहम्मद करीम खान, मुस्तफ़ा और फ़ैज़उल्लाह बैगस के लिए। शराफ़ददीन बैग ने उनके दूसरे ख़त में मंदरजाज़ेल लाइने जोड़ दीं: (मौलाना ने ये ख़त इस फ़कीर को भेजा [उनका मतलब है अपने आपसे] **1192 [1778]** में। उन्होंने फरमाया सबर ज़रूरी है हर मुश्किलों के ख़िलाफ़ और सबर की कीमत वाज़ेह करी। कुछ महीनों बाद, मेरे वालिद अबदुल्लाह हन बैग गुज़र गए। मौलाना की करामात इससे अच्छी तरह समझ में आ गई।) सय्यद अबदुर्रहमान होशाब में दफ़न हैं।

सय्यद लुत्फ़ी एफ़ेंदी के ग्यारह बेटे थे।

सय्यद लुत्फ़ी एफ़ेंदी के पहले बेटे थे अबदुलग़नी, जिनके बेटे मीर हक़ थे, उनके बेटे थे अबदुर्रहमान, और उनके बेटे थे मौहम्मद सैद एफ़ेंदी। लुत्फुल्लाह एफ़ेंदी के दूसरे बेटे थे अबदुलग़फ़ार एफ़ेंदी, जिनके बेटे थे शरीफ़, उनके बेटे थे मौहम्मद शफ़ीक एफ़ेंदी। तीसरे बेटे लुत्फुल्लाह एफ़ेंदी के मौहम्मद थे, जो के हज़रत सय्यद फ़हीम के सौतेले बाप थे, उनके बेटे थे ताहिर, जिनके बेटे थे रसूल, जिनके बेटे थे अब्दुल्लाह एफ़ेंदी।

लुत्फुल्लाह एफ़ेंदी के चौथे बेटे थे रसूल एफ़ेंदी, उनके पाँचवे बेटे थे सय्यद सिबग़तुल्लाह एफ़ेंदी जो सय्यद ताहा-ए हक्कारी के शार्गिद थे। उनके बेटे थे जलाल-अद-दीन, जिनके बेटे थे अली, जिनके बेटे थे सलाहअददीन एफ़ेंदी। उनके दो बेटे कमुरन ईनान और जैनुल आबिदीन ईनान बीटलीस की एवाने वाला और संसद के रूकन बने।

उनके छठे बेटे थे जमालउददीन, जिनके बेटे थे अबदुलमाजीद, जिनके बेटे थे सादउल्लाह, जिनके बेटे थे मुहीइददीन, जिनके बेटे थे अबदुर्र हमान, जिनके बेटे थे लुत्फुल्लाह, जिनके बेटे थे नुरूल्लाह एफ़ेंदी।

अबदुलहमीद एफ़ेंदी के दो बेटे थे, जिनमें से एक थे मौला सफ़ी, जिनके पौते थे अबदुलहमीद एफ़ेंदी। उनके दूसरे बेटे थे हज़रत सय्यद फ़हीम-ए-अरवासी, "कुददीसा सीरोह"।

सय्यद मौहम्मद के सात बेटे और एक बेटी जिसका नाम हमीदा हानिम था। हमीदा हानिम हुररेम बैग की बीवी थीं जो तैमूर [तैमरलेन या तैम्बरलेन।] की नसल में से थे। उनके तीन बेटे थे जिनके नाम थे सालिह, ममदूह और सैद। सैद बैग की दो औलादों में से एक तौफ़ीक बैग और अमीना हानिम थीं। अमीना हानिम मक्की एफ़ेंदी की पहली बीवी थीं। उनकी दूसरी बीवी अफ़ीफ़ा हानिम थीं। सय्यद मौहम्मद के पहले बेटे महमूद एफ़ेंदी थे। उनकी तीन बेटियाँ थीं ज़ुबेदा, मरयम और असमा नाम की। असमा हानिम अबदुलहकीम एफ़ेंदी की पहली बीवी थीं और वो बहुत पारसा और ख़ुदा परस्त थीं। उनकी दूसरी बीवी आएशा हानिम थीं जो के सय्यद फ़हीम अरवासी "कुददीसा सीरोह" की पौती थीं। वो अहमद मक्की और मुनीर इफ़ंदीस की माँ थीं। उनकी तीसरी बीवी आएशा हानिम थीं जिनको नीने (दादी माँ) हानिम बुलाते थे और चौथी बीवी बदरिया हानिम थीं। उनकी पाँचवी बीवी मैदा हानिम माई **1396 [1976]** में इस्तानबुल में चल बसीं।

सय्यद मौहम्मद के दूसरे बेटे मुहीउददीन एफ़ेंदी थे। उनके दो बेटे और दो बेटियाँ थीं। उनकी बेटियों में से, बयाज़ हानिम फ़ारूक बैग की माँ थी और ज़लीहा हानिम अबदुररहीम ज़पसू की माँ थीं। हसन और मुस्तफ़ा एफ़ेंदी उनके बेटे थे। हसन एफ़ेंदी के सात बेटे और सात बेटियाँ थीं, उनमें से चार बेटे मर गए जब वो बच्चे ही थे। पाँचवे बेटे मज़हर एफ़ेंदी नसीब हानिम का शौहर था। छठे बेटे मुहीउददीन एफ़ेंदी ने अंकारा में वफ़ात पाई। सातवें बेटे नजमददीन एफ़ेंदी कोर्ट ऑफ अपील के एक रूकन थे। वो नाईमा हानिम के शौहर और अहमद एफ़ेंदी के दामाद थे। उनकी बेटियाँ, नीने (दादी माँ) आइशा हानिम अबदुलहकीम एफ़ेंदी की बीवी थीं; दिलबर हानिम ताहा एफ़ेंदी की बीवी

थीं; फ़ातिमा हानिम सय्यद इब्राहिम एफ़ेंदी की और सबीहा हानिम अबदुल्लाह बैग की बीवियाँ थीं।

मुस्तफ़ा एफ़ेंदी की दो बेटियाँ और नौ बेटे थे। पहले बेटे सय्यद अबदुलहकीम एफ़ेंदी थे। दूसरे इब्राहिम एफ़ेंदी, तीसरे ताहा एफ़ेंदी, चौथे अबदुलक़दीर एफ़ेंदी, पाँचवे शमशुद्दीन एफ़ेंदी, छठे ज़ियाअददीन एफ़ेंदी, सातवें युसूफ़ एफ़ेंदी, आठवें मेहमूद एफ़ेंदी, नवें क़ासिम एफ़ेंदी। अबदुलहकीम एफ़ेंदी सबसे बड़े थे और सबसे आख़िर में रहलत फरमाई। अबदुलक़दीर एफ़ेंदी के तीन पौते, ज़ेनुलआबिदीन, बदरददीन और फ़हरददीन अभी ज़िन्दा हैं। शमशुद्दीन एफ़ेंदी के एक बेटा और दो बेटियाँ थीं। उनमें से एक, अफ़ीफ़ा हानिम, मक्की एफ़ेंदी की बीवी थीं। नज़ीफ़ा हानिम, मार्च **1986** में वफ़ात पा गई। उनके बेटे, सालिह जमाल एफ़ेंदी, इमाम और खतीब (वाईज़) थे क़िर्ज़ाली मस्जिद इस्तानबुल में और बहुत गहरी और ग़ैर मसावी तर्जुबा थी जलालउददीन-ए-रूमी की **मसनवी** पर। वो **1396 [1976]** में इस्तानबुल में मर गए। युसूफ़ एफ़ेंदी के बेटे, सय्यद फ़ारूक इस्हीक़, हिसाब किताब की अदालत के सरबराह और वेन सूबे के एक सेनेटर थे। **1972** अंकारा में उनकी वफ़ात हो गई। फ़ारूक बैग के दो बेटे, सय्यद नौज़ाद और सय्यद रूजान ज़िन्दा हैं और उनके बेटे हैं। सय्यद रूजान मज़द/मज़दूर विज़ारत में काउंसिलरशीप पर तऐयुन किए गए **1391 (1971)** में। मेहमूद एफ़ेंदी की माँ मरयम हानिम थीं। बाकी सब उनके दूसरे भाई और बहन हनो हानिम के बच्चे थे।

मेहमूद एफ़ेंदी की बेटी रूकय्या हानिम हैं। मुस्तफ़ा एफ़ेंदी की पहली बेटी मोतबर हानिम, सैद बैग की बीवी थीं जो के तैमूर नसल से थे और वो अहमद मक्की एफ़ेंदी की दोनों थीं बाप की तरफ़ से बुआ और सास भी थीं। **1341** में उनकी वफ़ात हुई और वो इदीरनेकपी कब्रिस्तान में मदफ़न हैं। उनकी दूसरी बेटी राबिया हानिम थीं।

सय्यद मौहम्मद के तीसरे बेटे नुरूददीन एफ़ेंदी थे।उनके दो बेटे थे जिनके नाम माजिद एफ़ेंदी और अली एफ़ेंदी थे।माजिद एफ़ेंदी के बेटे इज़्ज़त बैग नाफ़िया हानिम के शौहर थे और वो **1981** वेन में वफ़ात पा गए थे।उनके चार बच्चे थे।

सय्यद मौहम्मद के चौथे बेटे अहमद एफ़ेंदी थे।उनके तीन बेटे थे जिनके नाम उबैद, शौकत और शीहाबउददीन थे।

सय्यद मौहम्मद के पाँचवे बेटे हमीद पाशा थे।उनके चार बेटे थे, अहमद, अबदुल्लाह, फ़ैहमी और इब्राहिम, और तीन बेटियाँ, नाफ़िया, नसीबा और आइशा थीं।उन में से सय्यद इब्राहिम अरवासी अबदुलहकीम एफ़ेंदी के दामाद थे और कई सालों तक वेन के वज़ीर रहे।उनकी वफ़ात अंकारा में **1965** में हुई।उनके बेटे सय्यद सिद्दिक और बेटियाँ गुलसूम और हमीयत थीं।सय्यद अहमद मौहम्मद सिद्दिक एफ़ेंदी के दामाद और नाईमा हानिम के बाप थे।मौहम्मद सिद्दिक एफ़ेंदी हज़रत सय्यद ताहा के पौते थे, वो इस तरह, के सय्यद उबेदउल्लाह के बेटे और एक भाई अबदुलक़दीर एफ़ेंदी शहीद के।नाफ़िया हानिम इज़्ज़त बैग की बीवी थीं, नसीवा हानिम मज़हर एफ़ेंदी की, आइशा हानिम मौहम्मद मासूम एफ़ेंदी की।

सय्यद मौहम्मद के छठे बेटे हुसैन एफ़ेंदी थे।उनके चार बेटे, जलाल, अलाऊददीन, सय्यद ग़ाज़ी और बहाऊददीन थे।सैफ़ऊददीन बैग, जलाल एफ़ेंदी के बेटे, रूकय्या हानिम के शौहर थे और एदीन और जलाल एफ़ेंदी और लैला हानिम के बाप थे।एदीन बैग वेन के वज़ीर चूने गए अनावतन पार्टी से **1983** में।उनके बेटे जूनेद, मलीह रूजान, फतेह और मुराद एफ़ेंदी लायक जानशीनों के तौर पर बढ़ाए गए।

सय्यद मौहम्मद के सातवें बेटे युसूफ़ एफ़ेंदी हैं। सय्यद अबदुलहकीम एफ़ेंदी के तीन बेटे और दो बेटियाँ थीं। उन में से उनवर और शाफ़िया असमा हानिम के थे। शाफ़िया हानिम सालिह बैग की बीवी थीं जो मुसूल में हिजरत के दौरान मर गई थीं। इसी तरह, अनवर इस्कीशेहीर में **1336 [1918]** में जबके हिजरत कर रही थीं वफ़ात पा गई। उनके दूसरे नेक बेटे अहमद मक्की ऊचीशीक (उज़ीक) एफ़ेंदी अरबी और फारसी की किताबों और अपने वालिद से मज़हबी इल्म के गहरे माहिर की वफ़ात **1387 [1967]** में इस्तानबुल में हुई। वो बगलूम कब्रिस्तान में दफ़न किए गए। अपने काबिल फ़तवों के साथ, वो एक नवाज़े गए इंसान थे जिनका मुकाबिल पूरी दुनिया में मिलना मुश्किल है। उन्होने बहुत सारे पुख्ता और कीमती मज़हबी आदमियों को तालीम दी। वो सांईस की खोज लगाने वालों और रूहानी दाएरे में काम करने वालों की बीमारियों के लिए दवाइयाँ मुहैय्या कराते थे। अल्लाहु तआला इस्तानबुल के शहर और पूरी इस्लामी दुनिया को इज़्ज़त बख्शे और नवाज़े उनकी पाक मौजूदगी से। सय्यद अहमद मक्की एफ़ेंदी के चार बेटे थे, बाहिक, वाहा, मदनी और हिकमत और एक बेटी ज़ाहिदा। हर एक अपने अख़्लाक़ और पाक जोहर में बेमिसाल थे। उनके पौते, ताहा उचीशीक (ऊज़ीक), फ़हीम और मौहम्मद एफ़ेंदी और उनकी बेटी शाफ़िया हानिम सब को नायाब जोहर की तरह पाला गया। अबदुलहकीम एफ़ेंदी "कुददीसा सीरोह", के तीसरे बेटे सय्यद मुनीर एफ़ेंदी ने कई सालों तक नगरपालिका के बिकरी महकमे में काम किया और अपनी ईमानदारी, पढ़ने के शौक और ख़ूबसूरत आदात की वजह से अपने साथ काम करने वालों से इज़्ज़त और प्यार हासिल किया। **1399 [1979]** वो चल बसे। उन्हें बगलूम कब्रिस्तान में मदफ़ून किया गया।

1332 [1914] में रजब के महीने में सय्यद अबदुलहकीम एफ़ेंदी बाशकला से हिजरत करके आए। वो **1337** में इस्तानबुल आए। पहले वो अय्यूब सुल्तान के यज़ीला मदरसा में मकीम हुए और बाद में गुमससुयू पहाड़ी

पर मुरतदा एफ़ेंदी तकेसी में। जबके वो मुख़्तलीफ़ मस्जिदों में वाअज़ करते थे और वेफ़ा हाई स्कूल और सुल्तान सलीम मस्जिद में सुलेमानिया मदरसे में पढ़ाते थे, उन्होने इस्लाम की नशरो इशाअत और इस्लाम के दुश्मनों को खामोश और ज़ेर करना शुरू कर दिया। **1337** [**5** अगस्त, **1919**] ज़ूल-कदा की **8**वीं तारीख़ को एक फरमान (सुल्तान का हुक्म) में, उनको मुदर्रिस (सिनियर प्रोफ़ेसर) मुकर्रर किया गया सबसे ऊँचे मदरसे में, जो युनिवर्सिटी के दरजे का मदरसा था सुलेमानिया में। फरमान में कहा गया:

"तक़र्रुरी की गई दारूल-ख़िलाफ़त अल-आलिया सुलेमानिया मदरसा में मंदरजाज़ेल खाली औहदों के लिए डबराली विलदान फ़ाइक एफ़ेंदी को अल हदीस अस शरीफ की मुदर्रिस-शीप के लिए; अबदुलहकीम एफ़ेंदी, हक्कारी के एक अल्लामा, तसव्वुफ़ की मुदर्रिस-शीप के लिए;... और हक्कारी के साबिक नुमाइन्दे सय्यद ताहा एफ़ेंदी को अल-फ़िकह अश-शाफ़ि-ए की मुदर्रिस-शीप के लिए। इस अल-इरादत अस-सानिया (शाही तहरीर) की बजा आवरी के लिए, मशीककात अल-इस्लामिया (मज़हबी मामलात का दफ़तर) इसे मौहम्मद वहीद अद-दीन को सौंपता है।"

ये फरमान जरीदा-ए इल्मिया, के **48**वें शुमारे के **1484** सफ़ेह पर लिखा हुआ है।

मुरतदा एफ़ेंदी, जिन्होने मक्का अल-मुकर्रमा में अहमद यकदस्त से फ़ैज़ हासिल किया था, वो जहाज़गाह के हिसाब किताब के महकमें से रोज़नामचा के सरबराह के तौर पर सुबुकदोश हुए थे। उन्होने **1158** में गुमुसुयू में इदरीस काओस्क के नज़दीक एक मस्जिद तामिर कराई थी समुंद्र की तरफ़। **1160** में उनकी वफ़ात हो गई और समुंद्र के तरफ़ वाली दीवार में उनको दफ़नाया गया। उनके बेटे भी वहीं मदफ़ून हैं। इस मस्जिद के पहले इमाम अब्दुल्लाह-ए-कासग़हरी के बाद, उनके बेटे उबेदउल्लाह एफ़ेंदी दस साल तक इमाम रहे। ई

सा एफ़ेंदी, अगले इमाम की वफ़ात **1206** में हुई। सलीम ख़ान ने उनके लिए एक मक़बरा बनवाया। बाद में अब्दुल्लाह एफ़ेंदी के दामाद, जलाबी उबेदउल्लाह, ने **1208** में वफ़ात पाई। आख़िकार, सय्यद अबदुलहकीम एफ़ेंदी, जो के ज़ाहिरी और पौशीदा उलूम का खज़ाना थे, उन्हें इमाम और खतीब (वाइज़) के तौर पर तकर्रूर किया गया। **1326 [1943]** में अपनी वफ़ात तक वो यहाँ और दूसरी मस्जिदों और स्कूलों में इस्लाम की नशरो इशाअत करते रहे।

हुसैन हिल्मी एफ़ेंदी [बराए मेहरबानी बारवाँह बाब देखिए।] ने कहा, "**1347 [1929]** से शुरू करता हूँ, लगातार सात साल तक उनकी सोहबत में रहने के बाद और अगले सात सालों के लिए बाद में अकसर उनकी ज़ियारत करने जाता था जबके मैं अंकारा में ही था, मैं इंतेज़ाम करता था अंबार को उठाने का उस दरवाज़े से (अबदुलहकीम एफ़ेंदी के) जो हासिल कर सकता था इस दुनिया और आने वाली के लिए। हालांकि मैं इस्लामी इल्म को पढ़ने में काबिल नहीं था और इस्लामी जोहरों और अफ़ज़लियत से नावाकिफ़ था, मुझे इज़्ज़त हासिल हुई कुछ चीज़ समझने की इल्म (जानकारी) और इख़्लास (वफ़ादारी में सदाकत) की अज़ीम वली की मदद, रहमदिली और हमदर्दी के साथ। मैने बहुत से लोग देखे जो मेहनती और जानने की इच्छा रखने वाले थे वो मुल्क के हर हिस्से और बाहर से आए थे और बहुत सारी चीज़ें पूछते थे इल्म और सांईस के तअल्लुक से और जवाबों के तअल्लुक से मुतमईन होकर जाते थे। हालांकि, वहाँ पर ऐसे बुनियादी लोग भी होते थे जो दुनियावी फ़ायदों के लिए या दुश्मनी जैसा जुर्म करने आते थे। अपनी तेज़ बसीरत की वजह से वो फ़ौरन उनके इरादों को भाँप लेते थे, लेकिन, क्योंकि वो नेक हलीम, रहमदिल और दूरअंदेश थे, वो दुश्मन और दोस्त के बीच फ़र्क नहीं रखते थे, हर एक से इन्किसारी और मदारा (अपने एहसास को छुपाते हुए) का बरताव करते थे। वो जो अपने पाक दिलों के साथ मिलने आते थे और फ़ैज़ **[फ़ैज़:**

मारीफा।] हासिल करते थे इस्लाम के आलिमों से अल्लाह की वजह से और उनके नकशे कदमों पर चलते हुए इस्लाम के दस्तूरों पर जिए।वो जो कहते हैं के उनके दरवाज़ों से फ़ैज़ हासिल किए लेकिन इबादत करनी छोड़ दी और अपने आपको हरामों [**हराम:** काम, चीज़, इस्लाम में मना हैं।] और बुराइयों में मसरूफ़ कर लिया, बहरहाल, उनको धोखेबाज़ और इस्तेहसाल करने वाला माना जाता है।"

ऊपर कहा गया इदरीस कओस्क इदरस हकीम बीन हुसामउददीन के ज़रिए बनाया गया।एक गहरे माहिर आलिम बएज़ीद और यवुज़ के ज़माने में, इस शख़्स ने पच्चीस कबीलों को जो ईरान की सरहद के साथ रहते थे उनको उसमानिया सल्तनत में शामिल करने की वजह बने थे।इस तरह उन्होने चलडीरन फ़तेह में बहुत ज़्यादा मदद की।वो उस फ़व्वारे के किनारे पर दफ़न किए गए जो उन्होने बुलबुल नदी के पास बनाया था।उनकी वफ़ात [**932**] में हुई।उनकी बीवी ज़ेनब हातून ने एक मस्जिद इदरिस कओएक के नज़दीक बनवाई जो उनके नाम के साथ जानी गई।वहाँ पर करयागदी टेक्के (दरवेश के बसेरे की जगह) है जो उसी जगह पर कायम है मस्जिद की तरह।उसके पीछे गुमशसुयु फव्वारा है।करयागदी टेक्के को (चोलक हुसैन टेक्के) भी कहते हैं।इसको मुस्तफ़ा III ने बनवाया था।डोलंची दरवेश मौहम्मद ने एक मौलाविहाने इस टेक्के के पीछे बनवाया था **1230** में।

सय्यद अबदुलहकीम एफ़ेंदी मज़हबी इल्म और मअरीफ़ [**मअरीफ़ा:** अल्लाह के बारे में इल्म, औलिया के दिलों को खिंचना: जमा **मअरीफ़**।] में तसव्वुफ़ के बहुत गहरे थे।युनिवर्सिटी के रूकन, साईसंदा और मुदब्बिर उन मुश्किल सवालों को पूछने आते थे।जो वो सोचते थे के उनके कोई जवाब नहीं हैं लेकिन तसल्ली के साथ जाते थे क्योंकि उनको उनके जवाब मिल गए होते थे- उनके पूछने से पहले ही- एक घंटे के अंदर उनकी सोहबा (जमाअत,

तालिमात) में।वो जो उनकी तवज्जुह (ध्यान, मदद) जीत लेते थे और उनका प्यार वो बेशुमार करामात [**करामात:** मोजिज़े जो अल्लाह औलिया के ज़रिए करवाता है।] देखते थे।वो बहुत ज़्यादा सीधे और इंकसारी वाले थे।वो कभी ये कहते हुए नहीं सुने गए, "मैं ज़ाती तौर पर..." वो कहते थे, "हमें इसको शामिल नहीं करना चाहिए... हमें समझ नहीं आता क्या वो बरतर लिखते हैं।हम उन्हे पढ़ते हैं सिर्फ़ उनकी दुआओं में साथ होने के लिए।" हालांकि, वो, भी, इस इल्म के माहिर थे।हुसैन हिल्मी एफ़ेंदी के ससुर, युसूफ़ ज़िया अकसिक, उनके क़रीबियों में से एक और करामुरसेल कपड़े के कारखाने के डायरेक्टर ने, कहा, "मैने सपने में अबदुलहकीम एफ़ेंदी की हथेली को चूमा और दूसरे ही दिन अयब सुल्तान में उनके घर पहुँच गया उन्हें अपने सपने के बारे में बताने के लिए, मैं झूका उनके हाथ को बोसा देने के लिए जैसे हम हमेशा करते थे जब हम मिलते थे।उन्होने अपना मुबारक हाथ आगे बढ़ाया, हथेली ऊपर की तरफ़ और कहा, 'उसी तरीके से चूमो जैसे के तुमने पिछली रात किया था', और, मेहरबानी करते हुए, उन्होने बहुत सारी हक़ीक़ते समझाई।"

हुसैन हिल्मी एफ़ेंदी, उनमें से एक जो अबदुलहकीम एफ़ेंदी को प्यार करते थे बहुत ज़्यादा, बयान किया, "मैं और रीफ़की एफ़ेंदी, एक तुर्की उस्ताद दारूससफाक़ा हाई स्कूल के, अबदुलहकीम एफ़ेंदी के घर गए।रात की इबादत के बाद, वो ख़ामोशी से बैठ गए, बहुत गहरी सोच में।वो परेशान लग रहे थे।थोड़े वक़्त के बाद उन्होने बेरबत बोला, 'खड़े हो जाओ और यहाँ से जाओ!' ये बहुत ग़ैर मामूली था और हम इजाज़त लेने के बाद ही जाया करते थे।हम उनके हाथ को बोसा देना चाहते थे जैसे के रिवाज था जाते वक़्त का, लकिन उन्होने कहा, 'जल्दी करो! फौरन चले जाओ!' रीफ़की एफ़ेंदी बाग़ में भाग गए और उसके बाद गली में।मैं बाग़ में अपने जूते के तस्में बाँधने के लिए रूक गया था।कोई मेरे क़रीब आया और बोला, 'तुम अभी तक यहाँ

क्यों हो! फौरन चले जाओ!' मैने ऊपर देखा और देखा वो अबदुलहकीम एफ़ेंदी थे! मैने कहा मैं ये गली में भी कर सकता हूँ। मैं बाहर की तरफ़ भागा और उन्हें गली में आकर बाँधा। दूसरी सुबह हमने सुना के, हमारे सामने के फ़ारक से चले जाने के कुछ ही मिनटों बाद, बाग़ के पिछले फ़ारक से पोलिस अंदर घुसी और पूरे घर की तलाशी ली और अबदुलहकीम एफ़ेंदी को पोलिस स्टेशन ले गए।"

1349 [1931] में अबदुलहकीम एफ़ेंदी को उनके घर से कोर्ट मशिल के लिए मेनेमेन ले जाया गया। रोज़ाना के अख़बार, जो इस्लाम के ख़िलाफ़ दुश्मनी के लिए मशहूर थे, उन्होने ऐसे ख़बर पहुँचाई "शैख अबदुलहकीम, अखीसर शाखा के रीएकशन गैंग के सरगर्म सरबराह, पकड़े गए!" जैसे एक पहाड़ी गौरिला सरदार एक लम्बी लड़ाई के बाद पकड़ा गया हो। इन अख़बारों ने पूरे मुल्क के लोगों में दहशत भर दी और वो मुसलमानों पर आग उगलने लगे। जुर्म का ख़्याल ग़ैर यकीनी हो गया: कुरआन के पढ़ाने वालों के घरों की तलाशी ली जा रही थीं; कुरआन की किताबें और मज़हबी किताबें जमा करके जलाई जाने लगीं। मुसलमान उनको बालाखानों और कुओं में छुपाने लगे। पीने वाली पार्टियों में इस्लाम के दुश्मन चीखते थे, "मैं उस ऊँट वाले चरवाहे अरबी मौहम्मद को उसकी कब्र से निकालूँगा और उसकी टाँगे काट दूँगा!" उनको जोश के साथ सराहा जाता ख़ुशामदियों और चापलूसों के ज़रिए। जब वो हज़ार-लीरा नोटों को इस्तेमाल करते थे अपनी जेबों में रखते थे नाचती हुई रूसी लड़कियों की छाती पर चिपका कर, उन्होने बैंक के बिलों को चिपकाना शुरू कर दिया। आर्मेनियों के साथ बिचोलियों की तरह वो रोमानिया से ख़ूबसूरत लड़के लाने लगे और उनको बंद पूलों में तेरते हुए देखते थे। इस सिलसिले में, बहुत ज़्यादा कोशिशें की गई और ज़्यादा अबतरी इसका सबब बनी। क्योंकि अज़ान **[अज़ान:** नमाज़ के लिए बुलाना।**]** उनके मज़े में खलल डालती थी, जो संगीत के साथ होता था, वो कहते थे मिनारों को गिरा

दो। अल्लाहु तआला के एहकाम पैरों तले रोदें जा रहे थे। मिसाल के तौर पर, वो लोगों को ज़बरदस्ती इस्लाम से बाहर करते थे ऐसे लफ़्ज़ों के साथ जैसे "मेरी बेटी! अपने बाल खोल दो! जिन की तरह मत बैठो!" शराबी एक दूसरे से एक उम्मीद रख रहे थे। एक तहरीरी शहादत की ख़बर मिली जिसने ये ज़ाहिर किया के दहशत ने किस तरह अकल को नुकसान पहुँचाया और ज़मीर को सख़्त किया, नौजवानों को तालिम देने के मक़सद से, रोज़ाना के अख़बार **हकीकत** में (2 रमज़ान, 1390; नवंबर. 2, 1970, न० 195), इस सुर्खी के नीचे "हमारे मुसिबतों भरे दिन।"

उन दिनों में से एक दिन, जब इस्लाम के दुश्मन मुसलमानों को तंग करने में बहुत आगे बढ़ गए थे, रोज़ाना के अख़बारों ने मंदरजाज़ेल ख़बर लिखी उनके बारे में जो फाँसी पर लटकाए जाने वाले थे पहले दिन: "अबदुलहकीम और उनके साथियों के बारे में अदालत कल फ़ैसला सुनाएगी।" हुसैन हिल्मी एफ़ेंदी ने उस दिन के बारे में इस तरह लिखा:

"उस रात मैने बहुत ज़िक्र और इबादत करी। डर और परेशानी में मै सो गया... मैने ख़्वाब देखा के अबदुलहकीम एफ़ेंदी और मैं अय्यूब मुस्जिद के बीच के फ़ाटक के उल्टी तरफ़ कटहरे में आमने सामने बैठे हुए हैं। वो मुसकरा रहे थे। उन्होने एक सफ़ेद गठरी अपनी सीधी तरफ़ की ओवरकोट की अंदर की जेब से निकाली, उसे खोला और मुझे एक मिस्री खाने को दी। मैने उसे खाया और जाग गया। मैं अभी तक उस ख़्वाब और मिस्री का ज़ाएका महसूस कर रहा हूँ। मैं ख़ुशी के साथ सुबह के आने का इंतेज़ार कर रहा हूँ। मैने जल्दी एक अख़बार खरीदा और बड़े नुकते के हुरफ़ों में सुर्खी देखी: "ऑटोरनी जनरल ने फ़ाँसी का मुतालबा किया।" कोर्ट ने बेगुनाह साबित कोर्ट मारशल के फरवरी 12, 1931 की तारीख़ में अबदुलहकीम एफ़ेंदी को और पाँच लोग जो उनके साथ थे उनको इलज़ामों से बरी किया गया ये बहुत बड़ी ख़बर

थी। मैने अल्लाहु तआला का शुक्र अदा किया। अच्छी ख़बर की जो मेरे ख़्वाब में मिस्री की शक्ल में आई थी वो सच साबित हो गई।"

अपनी ज़ियारतों में से एक में हुसैन हिल्मी एफ़ेंदी अबदुलहकीम एफ़ेंदी के पास गए, उन्होने बाग़ में उन्हें एक आदमी के साथ बातें करते पाया। वो थोड़ी दूरी पर खड़े हो गए जब तक के वो आदमी चला नहीं गया और अबदुलहकीम ने उन्हें बुलाया। हिल्मी एफ़ेंदी ने वाज़ेह किया के बाद में क्या हुआ:

"मैं उनके पास गया और ताज़ीम के साथ बैठ गया। मैं हमेशा अपने आपको देखता रहता था। मैं उनके चेहरे में कभी नहीं देखता था, और कभी अपनी आँखें नहीं घुमाता था। उन्होने कहा, 'क्या तुम इस आदमी को जानते हो? वो मज़हर तोबर है। वो हमें पसंद करता हैं, और हम उसे पसंद करते हैं। लेकिन वो हमारी नहीं सुनता। वो अंकारा के हाई स्कूल में कैमिस्टरी पढ़ाता है। मैने उसे मशवरा दिया और उसे ऐसा और उसे ऐसा और ऐसा करने के लिए कहा। लेकिन वो वैसे नहीं करता जो हम उसे कहते हैं करने के लिए। वो अपनी राए के मुताबिक काम करता है। इसलिए, वो अपने आपको बहुत थका लेता है सबक को पहले तैयार करने और इमतेहानों के पेपरों को पढ़ने में। उसके शार्गिद, उनके वालदेन और स्कूल की इंतेज़ामिया उसे पसंद नहीं करते। अगर वो हमारी सुने, वो आसानी में आ जाएंगे और हर एक के ज़रिए पसंद किए जाएंगे। अपना मशवरा समझाने के बाद, उन्होने मेरे चेहरे को देखा और कहा, 'मेरे इस मशवरे को भूलना मत। जब तुम एक उस्ताद बन जाओ, हमें याद रखना। मैने क्या कहा वही करना! ये तुम्हारे लिए बहुत फ़ायदेमंद है। लेकिन मैने, इस रहमदिल और पिदरली/बाप जैसी मशवरे का क्या बदला दिया, एक बड़ी बेइज़्ज़ती से भरी गलती कर दी, ये कहकर, 'सर, मैं एक दवाई वाला ऑफ़िसर हूँ और मैं अस्पतालों में काम करता हूँ। तालिम देने वाले

आफ़िसर मुझ से अलग है। वो पढ़ाते हैं। हम पढ़ाते नहीं।’ इस ग़ैर ज़रूरी और नाशाईस्ता जवाब के साथ, ऐसे लगा मैं उनका मशवरा नहीं मान रहा। मैं अभी तक अपने उन नुक़सानदेह लफ़्ज़ों को बरदाश्त कर रहा हूँ। जब मैं याद करता हूँ, मेरी आँखें आँसूओं से बर जाती हैं और मेरा दिल रोने लगता है। ओह अगर सिर्फ़... मैं एक लम्हे के लिए शराफ़त से पेश आ जाता, अगर सिर्फ़ मैं ये कह देता: ‘बड़ी ख़ुशी से, सर!’ मैं चाहता हूँ मैं वो नेक दिल न तो तोड़ू, जो के, कोई शक नहीं, अल्लाहु तआला के ज़रिए बहुत चाहा जाता है, एक हक़ीकत है वो हर लम्हे को आशकारा कर देता है, और जो एक खज़ाना थे फ़ैज़ और मारीफ़ा के जो रसूलुल्लाह [**रसूलुल्लाह:** हज़रत मौहमद, अल्लाह के पैग़म्बर।] के दिल से जारिए हुए और औलिया के दिलों तक पहुँचे! मुझे अभी भी शर्म महसूस हो रही है और अपनी बेबुनयादी दिखाई दे रही है।

“ख़ुश किस्मती से, वो अज़ीम मशहूर, जो रहम, सबर, माफ़ी और करम से भरा हुआ था अल्लाहु तआला की तरफ़ से, दर्दमंदी से दोहराते रहे, ‘जब तुम एक मुअल्लिम बन जाओ, मेरे इन लफ़्ज़ों को मत भूलना। तुम्हें इनसे फ़ायदा पहुँचेगा!’ अल्लाहु तआला का शुक्रिया, मैने कहा, ‘ख़ुशी से, सर!’ अल्लाहु तआला ने मुझे दूसरा नाफ़रमानी का काम करने से बचाया।

मैं **1366 [1947]** में बरसा फ़ौजी हाई स्कूल में कीमिया पढ़ाने के लिए तकर्रुर किया गया। बाद में, मैं मुअल्लिम स्टाफ का डायरेक्टर मुकर्रर किया गया। स्कूल के सामने, मुझे अबदुलहकीम एफ़ेंदी का मशवरा लफ़्ज़ ब लफ़्ज़ याद था। अपने आप से कहते हुए, ‘उन्होने पेशीनगोई की थी के मैं एक मुअल्लिम बनूँगा। उन्होने मुझे ये भी बताया था के इस मक़सद को हासिल करने के सिलसिले में मुझे किस तरह काम करना होगा,’ मेरी आँखें नम हो गई। मैने उनकी मुबारक रूह के लिए क़ुरआन पढ़ा और स्कूल की इमरत में दाख़िल हो गया। मैं उनके बताए हुए मशवरे के मुताबिक़ काम करता रहा जब तक के मैं

सुबुकदोश नहीं हो गया **1379 [1960]** में। और मैं अभी भी उनके मशवरे पर चलता हूँ। मैं सब के ज़रिए पसंद किया जाता हूँ। मैं हमेशा जीतता हूँ। मैं सुख और आराम की ज़िन्दगी गुज़ार रहा हूँ।

"अबदुलहकीम एफ़ेंदी अपनी वफ़ात से पहले थोड़े दिनों के लिए कुछ नहीं बोले। वफ़ात से एक दिन पहले, उनकी आँखें टिकटिकी लगा के खाली देख रही थीं और वो लगातार मुसकराए जा रहे थे। उन्होने अचानक मुझे देखा और कहा, 'मैने अर्श अल-इलाही (पाक जगह) देखा! कैसा ख़ूबसूरत, कैसा खूबसूरत! मैने अपना दिमाग अपना होश नहीं खोया। मैं अपने पूरे हवास में ये समझा रहा हूँ।"

केसएरी के अबदुलक़ादीर बए, जो सूत की तिजारत में थे और कई सालों तक अबदुलहकीम एफ़ेंदी की ख़िदमत करते रहे थे, उन्होने हिल्मी एफ़ेंदी को बताया:

"गरमी के एक दिन, अबदुलहकीम एफ़ेंदी और में दोपहर की सलात **[सलात:** नमाज़, मज़हबी इबादत।] मुबारक अय्युब मस्जिद में एक साथ अदा कर रहे थे। तब हम हज़रत ख़ालिद के [एक मशहूर सहाबी] **[सहाबी:** पैग़म्बर के एक साथी।] रौज़ा मुबारक में दाख़िल हो गए। वहाँ पर कोई नहीं था। हम उनकी कब्र की पांएती के पास घुठनों के बल बैठ गए। उन्होने मुझ से कहा उनके करीब बैठूँ और अपनी आँखें बंद कर लूँ। जब मैने अपनी आँखें बंद की, तो मैने देखा हज़रत ख़ालिद हमारे सामने खड़े हैं। वो हमारे पास आए। वो लम्बे थे, अच्छे जिस्म और ढीली दाढ़ी वाले थे। अबदुलहकीम एफ़ेंदी ने मुझ से कहा मैं उनके हाथ को बोसा दूँ। मैने वही किया जो मुझे करने को कहा गया था। वो ख़ामोशी से एक दूसरे से बाते कर रहे थे। मुझे वो सुनाई नहीं दे रहे थे। मैं अदब के साथ उनको देख रहा था। अबदुलहकीम एफ़ेंदी ने मुझ से अपनी आँखें खोलने को कहा। जब मैने उन्हे खोला, मैने देखा हम दोनों कब्र के

किनारे बैठे हुए थे। हम बाहर आ गए। दोपहर ढहलने के बाद की आज़ान होने ही वाली थी। उन्होने मुझ से पूछा के मैने क्या देखा। मेरे बताने के बाद, उन्होने कहा मैं इसके बारे में किसी को न बताऊँ जब तक के मेरी वफ़ात न हो जाए। अब उनकी वफ़ात को चौबीस साल गुज़र चुके हैं। मैं ये तुम्हें खुल कर बता रहा हूँ क्योंकि तुम पूछ रहे थे।!"

10– सय्यद फ़हीम-ए-अरवासी की सवानेह उम्री

(सय्यद ताहा अल-हक्कारी के एक शार्गिद)

सय्यद मौहम्मद फ़हीम बिन अबदुलहमीद एफ़ेंदी की विलादत **1241** में और वफ़ात **1393 [1895]** में हुई थी। उनकी माँ अमीना हानिम थीं। वो वेन के एक सुबे मुक्स के गाँव अरवास से थे। वो लम्बे और पतले थे। उनकी दाढ़ी ना ही छोटी थी ना ही लम्बी। उनकी नाक बीच से ज़्यादा ऊँची थी। उनका माथा चौढ़ा था। उनका रंग गौरा था। उनके दाँत नामुकम्मल नहीं थे। उनका अमामा लम्बा था। वो सफ़ेद लिबास जो कपड़े के तीन टुकड़ों से बनता था, एक हरी या नीली क़बा, ऊनी मोज़े और चमड़े की जूतियाँ पहनते थे। आख़िरी सालों में वो आँखों का चश्मा लगाने लगे थे। उनकी काली आँखें थीं। ज़्यादातर हिस्से में उनके सफ़ेद बाल थे। उनकी भवें बी से जुड़ी हुई थीं। जब वो सफ़र पर निकलते थे, वो सिर्फ़ घोड़े की पीठ पर ही करते थे अपने मरते दम तक। अपने आख़िर के दिनों में इतने कमज़ोर हो गए थे के अपना अमामा भी मुश्किल से संभाल पाते थे। जब वो सलात पढ़ते थे तो अपने अमामे पर अबानी **[अबानी:** सफ़ेद सूती कपड़ा चारों तरफ़ पीले धागे से छोटे चोकोर कढ़े होते थे।] लपटते थे। वो चौदह शव्वाल को रहनत फरमा गए थे। क्योंकि वो लम्बे थे, उनकी कब्र

के पास एक लम्बा कब्र का पत्थर गाढ़ा गया, जो के बाद में आर्मेनियनों ने तबाह कर दिया। उनकी शख़्सियत बहुत दबदबे वाली थी। लोग उनकी परछाई से भी डरते थे। वो जो उनकी परछाई देख लेते थे वो जान जाते थे के वो अल्लाहु तआला के एक प्यारे बन्दे थे। अपने ज़माने में वेन में उनके मुकाबले का कोई नहीं था। वो इल्म की हर शाखा में गहरे थे, चाहे वो ज़राअत, फन और सियासी सांईस ही क्यों न हो। उनका इल्म अल्लाहु तआला की तरफ़ से बख़्शा हुआ था। वेन का गवर्नर भी उनसे पूछकर अपने मसले हल करता था। उन्होने अपनी पूरी ज़िन्दगी में कोई जमाअत की नमाज़ और कोई तहज्जुद (बीच रात की नफ़ली नमाज़ें) नहीं छोड़ी।

जबके वो मज़हबी और सांईसी इल्म हासिल कर रहे थे एक मदरसे में, उन्हे अल-मुर्शिद अल-कामील [**अल-मुर्शिद अल-कामील**: मुकम्मल रहनुमा।] हज़रत सय्यद ताहा अल-हक्कारी की तवज्जुह पाने का शरफ़ हासिल हुआ, जो कुतब [**कुतब:** एक मुल्क या कई मुल्कों में सबसे ऊँचे वली, जिनके साथ दूसरे वली अपने मसअलों के बारे में मशवरा करते थे।] थे मशरिक़ी एनाटोलिया के।

जबके वो शमदीनान छोड़ कर जा रहे थे, जहाँ उनके मुर्शिद रहते थे, मस, बुलानिक के गाँव अनीरी में **मुतव्वल** पढ़ने के लिए, उनके मुर्शिद ने उनसे कहा, "जब तुम्हें किताब में कोई सिरा समझने में मुश्किल आए, मुझे याद (राब्ता) कर लेना! दिमाग़ में सोच लेना!" बाद में जबके वो अपने उस्ताद मौला रसूल अल-सीबकी से **मुतव्वल** याद कर रहे थे, उनको एक फ़िकरा समझ नहीं आ रहा था। उनके उस्ताद ने उसे दोबारा समझाया। उन्होने अपने उस्ताद से उसे मज़ीद समझाने के लिए कहा। मौला रसूल ने फ़िकरे को बहुत बार समझाया और कहा," आज मैं थक गया हूँ, मैं कल इसे समझाऊँगा। दूसरे दिन उन्होने उसको फिर नहीं समझाया। जबके उनके उस्ताद उसे बार-बार पढ़ रहे थे,

हज़रत सय्यद फ़हीम ने अपनी आँखें बंद कर लीं और अपने दिमाग़ में अपने मुशिर्द की छवी लाने की कोशिश की। सय्यद ताहा अपने हाथों में एक किताब लेकर नमूदार हुए। उन्होने सय्यद फ़हीम के सामने किताब खोली। वो वही सफ़हा था **मुतव्वल** का जिस पर वो ग़ैर वाज़ेह फ़िकरा था। सय्यद ताहा ने खोल कर वो फ़िकरा पढ़ा और सय्यद फ़हीम उन्हें ध्यान से सुनते रहे और देखा के उन्होने एक ज़ाइद वाव-ए अतीफ़ा (वा) पढ़ा। जब सय्यद ताहा ग़ायब हो गए, उन्होने अपनी आँखें खोली और देखा के मौला रसूल लगातार उस फ़िकरे को पढ़ और सोच रहे हैं। उन्होने तब इजाज़त माँगी और अपने आप उसको पढ़ा उसमें 'वा' लगातार जैसे के उन्होने अपने मुर्शिद से सुना था। उनके उस्ताद ने कहा, "अब इसका मतलब साफ़ हुआ है।" वो दोनों उसे बहुत अच्छी तरह समझ गए। मौला रसूल ने कहा, "मैं बीस साल से इन लाईनों को पढ़ रहा हूँ और वाजेह कर रहा हूँ, बग़ैर इन्हें समझे हुए। अब मैं इन्हें अच्छी तरह समझ गया हूँ। अब मुझे बताओ... इसको सही पढ़ना तुम्हारी अपनी काबलियत के वाहर नहीं था। मैं सालों से इसको समझ नहीं पाया। कैसे तुमने ये कर लिया? टुमने एक 'वा' लगाया और उसका मतलब साफ़ हो गया?" हज़रत सय्यद फ़हीम ने अपने उस्ताद को बताया, जो अब अला अद-दीन पाशा मस्जिद के दरवाज़े के पास, मस में आराम कर रहे हैं, किस तरह राब्ता के ज़रिए उन्होने इसे याद किया।

हज़रत सय्यद फ़हीम मस को छोड़कर साल में एक बार वेन में एक या दो महीने के लिए रहने जाते थे। वो जो उनसे प्यार करते थे उनके आस पास जमा होते थे और फ़ैज़ हासिल करते थे। वो आम तौर से अहमद बए के मेहमान रहते थे, जो उनको बहुत प्यार करते थे और वो अदालत के फर्सट सैक्रेटरी थे। जिस साल अहमद बए हज [**हज:** मक्का जाना ज़ियारत के लिए।] पर गए, वो दोबारा उनके घर पर ठहरे। एक दिन देर आधी रात में, उन्होने अपने एक वाकिफ़ को बुलाया और कहा, "अपने दोस्तों को जगाओ! हमें यहाँ

से फ़ौरन जाना है और उसके घर जाना है...” उनको जवाब मिला, “जनाब, क्या आधी रात में यहाँ से जाना नामुनासिब नहीं है? क्या हम कल नहीं जा सकते?” उन्होने कहा, “नहीं, हम अभी जाएँगे। अहमद बए के बेटों को बता दो।” अहमद बए के बेटे आए और मिन्नत करने लगे, “जनाब हमें माफ़ कर दिजिए अगर हम से कोई गलती हो गई है। हमें छोड़ कर मत जाइए। वालिद को अफ़सोस होगा अगर वो ये सुनेंगे। हम किस तरह उन्हें जवाब देंगें? भराए मेहरबानी हमें माफ़ कर दिजिए।” वो बहुत ज़्यादा आहो ज़ारी करने लगे। हज़रत सय्यद फ़हीम ने कहा, “नहीं, मैं तुम से बहुत ख़ुश हूँ। तुमने अपनी ज़िम्मेदारियाँ जितनी ज़रूरत थी उससे ज़्यादा निभाई हैं। अहमद बए के बेटों ने कहा, “जैसे आपका हुकूम, जनाब।” आधी रात में वो उनमें से एक के घर में आए जो उन्हें चाहते थे। दूसरे दिन, उनके बेटे मौहम्मद अमीन एफ़ेंदी ने उन्हे बताया के अहमद बए के बेटे बहुत उदास हैं। “बाबा,” उन्होने पूछा, “क्या था अगर हम सुबह तक उनके घर में रूक जाते?” हज़रत सय्यद फ़हीम ने कहा, “मेरे बेटे! अभी तुम किसी को ये नहीं बताना। अहमद बए मक्कात अल-मुर्करमा में पिछली रात चल बसे। वो घर यतीमों का घर बन गया है। वो माल उनका हो चुका है। हम हर चीज़ को इस्तेमाल करते थे, खाते थे और पीते थे हर चीज़, क्योंकि मुझे मालूम था अहमद बए अपनी मरज़ी से उन सबको हलाल [**हलाल:** जिसकी इजाज़त है, बग़ैर सवाल के।] कर देता था हमारे लिए। लेकिन उसके बाद, इस बात की इजाज़त नहीं है उन चीज़ों को इस्तेमाल करने की जो जानशीनों की हो चुकी हैं जिनके साथ हम वाकिफ़ नहीं हैं। मैं अचानक इसलिए निकला क्योंकि ये ज़रूरी था के अपने आपको दूसरों के हुकुक को मारने से बचा सकूँ।” एक महीने बाद हाजी वापस आ गए। सब वापस आ गए, लेकिन अहमद बए नहीं आए। “वो आधी रात में मक्का में मर गए थे,” उन्होने कहा। हिसाब लगाया गया और उसकी मुनाबकत निकली उसी आधी रात के साथ।

एक बार जब हज़रत सय्यद फ़हीम वेन झील के किनारे अपने शार्गिदों के साथ चल रहे थे, एक पादरी आर्मेनियन गिरजा घर से निकला एहतमार जज़ीरे पर और पानी की सतह पर चलना शुरू कर दिया। उसके कुछ शार्गिदों ने सोचा, "जबके एक पादरी, जिसे हम अल्लाह का दुश्मन कहते हैं, पानी पर चल रहा है, कैसे हज़रत सय्यद, जिनको हम एक अज़ीम वली और एक प्यारे अल्लाहु तआला के ज़रिए चुने हुए, इस तरह से नहीं कर सकते बल्कि पूरे साहिल के तरफ़ चल रहे हैं?" हज़रत सय्यद किसी तरह से इस सोच से वाकिफ़ हो गए और अपनी चप्पलों को उन्होने अपने मुबारक पैरों से उतारा और अपने हाथों में उन दोनों को एक दूसरे से टकराया। हर बारी जब वो उन्हें टकराते, पादरी पानी के अंदर चला जाता। जब पादरी का बदन पानी में उसकी गरदन तक चला गया, उन्होने एक बार फिर उन्हे टकराया और पादरी डूब गया। तब हज़रत सय्यद उनकी तरफ़ मुड़े जिनकी सोच मुख़ालिफ़ थी और कहा, "वो पानी पर चल रहा था जादू का इस्तेमाल कर के। इस तरह, वो तुम्हारा ईमान **[ईमान:** यकीन एतेक़ाद।**]** तबाह करना चाहता था। जब मैने अपनी चप्पलों को टकराया, उसका जादू तबाह हो गया और वो डूब गया। मुसलमान जादू का इस्तेमाल नहीं करते और अल्लाहु तआला से करामात के लिए पूछना शर्मनाक माना जाता है।" उसने अपनी करामात से उस पादरी का जादू तोड़ दिया।

अबदुलवहाब एफ़ेंदी, जिन्होने **1963** में वफ़ात पाई और जो रफ़अत बए, एक साबुन के बनाने वाले के वालिद थे, ने कहा, "जब मैने इरज़ूरम में अपना मदरसा पूरा किया, मैं मज़ीद आगे पढ़ना चाहता था। ये कहा जाता था के जो अज़ीम आलिम मैं ढूँढ रहा हूँ वो अबदुलजलील एफ़ेंदी थे, जो बीतलीस में रहते थे। मैं बीतलीस चला गया जहाँ मुझे बताया गया के वो जा चुके थे और मुझे उनके वेन से वापस आने तक इंतेज़ार करना होगा। मैं सबर नहीं कर सका और वेन चला गया जहाँ मुझे पता चला के मैं उनको शाबानिय्या मस्जिद

में ढूँढ सकता हूँ जहाँ वो मुक्स के शैख, हज़रत सय्यद फ़हीम के साथ हैं, जो अभी हाल ही में वेन आए हैं। मैं मस्जिद चला गया जहाँ अज़ीम आलिम अबदुलजलील एफ़ेंदी, जैसा के मैं रास्ते में सोचता हुआ आ रहा था, मंच पर बोल रहे होंगे जबके सब उनकी तकरीर से फ़ायदा उठा रहे होंगे, मैं मस्जिद में दाख़िल हुआ और देखा सब इज़्ज़त के साथ बैठे हुए हैं, उनके सिर झुके हुए थे। वहाँ दरवाज़े से आड़े होकर ऊँचे से एक नूरानी और ख़ुश अखलाक शख़्स बैठे हुए थे। सब उनकी तरफ़ चेहरा कर के अदब से बैठे हुए थे। ये दबदबे और असरदार शख़्स ज़रूर अबदुलजलील एफ़ेंदी हैं, मैने सोचा। लेकिन वहाँ कोई नहीं था आस पास जिससे मैं उनके बारे में पूछता, सब सिर झुकाए हुए और अपने सामने की तरफ़ देख रहे थे। अचानक, एक नौजवान मेरी तरफ़ आया और पूछा मैं किसको देख रहा हूँ। जब मैने कहा हज़रत अबदुलजलील, उसने किसी की तरफ़ इशारा किया जो पीछे की सफ़ में सिर झुकाए बैठे थे, उसने कहा, 'वहाँ है वो... तुम बैठो अगर अगर पसंद करो।' मैने पूछा वो बोलने वाले कौन थे। हज़रत सय्यद फ़हीम, जवान आदमी ने कहा जो, कई सालों बाद, मुझे पता चला, सय्यद अबदुलहकीम एफ़ेंदी थे। थोड़ी देर बाद आज़ान हो गई। सुन्नत [**सुन्नतः** वो चीज़ें जो करी गई और पसंद की गई पैग़म्बर के ज़रिए] और सलात अदा की गई। हज़रत सय्यद फ़हीम इमाम [**इमामः** एक मुसलमान जो नमाज़ की इमामत करे।] बने। हमने सफें सीधी करी; तब जबके शुरू की तक्बीर [**तक्बीरः** ये फ़िकरा "अल्लाहु अकबर" (अल्लाह सबसे बड़ा है)।] इमाम के साथ कह रहे थे, हम, पूरी जमाअत (इजतमा), हिल गई जैसे के बिजली के ज़रिए झटका लगा हो। तब से आठ साल बति चुके हैं। जब में इमाम की कही हुई तकबीर याद करता हूँ; मैं हिल जाता हूँ और मेरे दिल के अंदर एक ऊँचा उठने का एहसास तारी होता है जैसे के उस दिन हुआ था।"

हज़रत सय्यद फ़हीम की करामात और अल्लाहु तआला की नज़र में उनका ऊँचा रूतबा उनकी हेसियत का वो मापा या वाज़ेह नहीं किया जा सकता। उनकी बड़ी और सबसे ज़ाहिरी करामात थी उनकी एक आरिफ़ [**आरिफ़:** एक अज़ीम वली जिसका दिल अल्लाहु तआला के शख्श और खासियों में इल्म हासिल करता है। आरिफों में से एक ऊँचा कहलाता है "कालिम", के दिन में उंडेल दे वो कहलाता है एक "मुकम्मल"।] कामिल वली मुकम्मल जैसे के हज़रत अबदुलहकीम एफ़ेंदी को तालिम देना। "नतीजे में बाकाएदगी सबब में कामल बतलाती है।"

हज़रत सय्यद फ़हीम अल-अखासी इस्लाम के अज़ीम आलिमों में से एक थे और सुफ़ियाए अल-आलिया [**सुफियाए अल-आलिया।**] में से एक। वो तैंतीसवें नम्बर पर थे सिलसिलात अल आलिया [**सिलसिला अल-आलिया:** वलियों की एक कड़ी उनमें से हर एक-एक मुकम्मल और जो मारिफ़ा, नूर और फ़ैज़ के लिए बीच के तौर पर काम करे जो रसूलुल्लाह के मुबारक दिल से आए एक वली के पास। (हर वली, मुर्शिद, का एक सिलसिला है।) में। उन्होने कामल हासिल किया हज़रत सय्यद ताहा अल-हक्कारी की सोहबत में। सय्यद ताहा के **1269 [1853]** में गुज़र जाने के बाद, वो बराबर उनके भाई हज़रत सय्यद मौहम्मद सालिह के पास जाते रहते थे, जो **1281 [1864]** में गुज़र गए थे। मज़ीद जानकारी के लिए, बराए मेहरबानी अबदुलहकीम एफ़ेंदी और ताहा अल-हक्कारी की सवानेह उम्री पढ़िए। उनके बाप मौला अबदुलहमीद एफ़ेंदी थे। उनके दादा सय्यद अबर्दुरहमान जो सय्यद अबदुलहमीद एफ़ेंदी, पोते मौला सफ़ीउददीन के जो सय्यद फ़हीम एफ़ेंदी के भाई थे, वो **1967** (ए.डी) में रहलत फरमा गए थे।

सय्यद फ़हीम एफ़ेंदी के नौ बेटे और चार बेटियाँ थी:

1. राशिद एफ़ेंदी के एक बेटा जिसका नाम मौहम्मद बाकिर और एक बेटी जिसका नाम आइशा हानिम था। आइशा हानिम अबदुलहकीम एफ़ेंदी की दूसरी बीवी थीं।

2. मौहम्मद अमीन एफ़ेंदी अपने सब भाइयों में बरतर थे। वो एक आलिम, सालिह और एक अदीब थे। हिजाज़ से वापस आने के बाद, तूर-ए-सिना पर उनका इंतेकाल हो गया। उनकी फ़ातिमा नाम की एक बेटी थी।

3. मौहम्मद मासूम एफ़ेंदी एक अक़लमंद और मज़हबी तौर पर मुकम्मल आदमी थे। वो अबदुलहकीम एफ़ेंदी से पहले अरवास में गुज़र चुके थे। अबदुलहकीम एफ़ेंदी, उनके आठ बेटों में से एक थे जो **1957** (ए.डी.) में संसद के एक रूकन बने। वो संसद में शामिल होने से रहलत फरमा गए इस्तानबुल में और इदीरनेकपी कब्रिस्तान में मदफ़ून हैं। ताहा एफ़ेंदी, उनके दूसरे बेटे जो चटक में रहते थे, वो मक्का की ज़ियारत के दौरान **1400** हिजरी में गुज़र गए थे। उनके बेटे थे अरजुमंद, अताउल्लाह, उबेदउल्लाह और अंज़र एफ़ेंदी। उनकी तीन बेटियाँ भी थीं। उनके तीसरे बेटे, मौहम्मद अमीन गरबी एफ़ेंदी, इब्राहिम अरवास बैग के दामाद थे। उनके बेटे मुराद और हमीद एफ़ेंदी इस्तानबुल में हैं। उनके चौथे बेटे नाकीर एफ़ेंदी **1399** (ए.एच.) में कोनया में गुज़र गए। उनके चार बच्चे थे। उनके पाँचवे बेटे सलीम एफ़ेंदी **1392** (ए.एच.) अरवास में इंतेकाल कर गए थे। उनके बेटे जैनुलआबिददीन एफ़ेंदी इस्तानबुल में एक मुअल्लिम थे। सलाहउददीन एफ़ेंदी, उनके छठे बेटे, **1939** (ए.डी.) मरास में रहलत फरमा गए। उनके बेटे याहिया और बेटियाँ सहावत और मुज़य्यन हैं। उनके सातवें बेटे इब्राहिम एफ़ेंदी हैं। हबीब, मूहीब और इरफ़ान एफ़ेंदी उनके आठवें बेटे बदरूददीन एफ़ेंदी के बेटे हैं।

4. मौहम्मद सिद्दिक एफ़ेंदी जबके वेन के मुफ़ती थे उनको आर्मेनियनों ने शहीद कर दिया था। वो असागी कएमज़, गुरपनार, वेन में मदफ़ून हैं। उनके बेटे फ़ेहमी एफ़ेंदी और मासूक एफ़ेंदी गुरपनार के कज़बे में इमाम थे।

5. सय्यद हसन एफ़ेंदी **1388 [1968** ए.डी.**]** में मदीना में चल बसे थे। उनके तीन बेटों में से, नईमउददीन एफ़ेंदी **1959** में चल बसे थे, मौहम्मद राशीद इफ़ेंदी **1945** में और सिद्दिक एफ़ेंदी **1982** में। पहले वाले के तीन बेटे थे, दूसरे वाले के एक बेटा जिसे सैद एफ़ेंदी बुलाते थे और तीसरे के चार बेटे, मौहम्मद राशीद एफ़ेंदी हिजरत हानिम के शौहर थे।

6. मौला हुसैन एफ़ेंदी सालिह कासिम एफ़ेंदी के बाप थे, जो वेन के साबिक मुफ़ती थे, और शमसउददीन और एहसान एफ़ेंदी के बाप थे।

7. मज़हर एफ़ेंदी। उनके बेटे मज़हर, जिनके बेटे अबदुलआहद, और उनके बेटे मौहम्मद नूरी, बहजत, सरवत, फ़तेह और नजदत एफ़ेंदी।

8. मौहम्मद सालिह एफ़ेंदी। उनके बेटे मज़हर एफ़ेंदी।

9. नीज़मउददीन एफ़ेंदी। उनकी बीवियों में से एक से उनके दो बच्चे थे, जिनके नाम सदरददीन एफ़ेंदी और हिजरत हानिम था। सदरददीन एफ़ेंदी **1393** में दीयारबाकीर हिचरी में गुज़र गए थे। वो वेन में मदफ़ून हैं। उनके चार बच्चे थे, सारे दूसरी बीवी से थे। उनमें से एक, वाहबी एफ़ेंदी, एक काश्तकारी के माहिर थे सेमबरलिटास इस्तानबुल में। नसीबी हानिम सनद याफ़्ता जनता के मुंशी हयाती चीफतलीक बैग की बीवी थीं। आसिया हानिम के शौहर अबर्दु रहमान इकिंची इस्लाम की नशरो इशाअत करते थे। सारिया हानिम वेन में हैं। सैद एफ़ेंदी हिजरत हानिम के बेटे और नेक कासिम एफ़ेंदी हिजरत हानिम के चार में से एक दामाद हैं। दूसरे एज़ीन बैग, जो रूकय्ये हानिम के बेटे और

हज़रत अबदुलहकीम एफ़ेंदी के भतीजे थे।तीसरे दामाद उनके दवाई बनाने वाले फतेह यलमिज़ बैग थे, जो फतेह में कुमुरलू फारमेसी के मालिक थे।

चौथे दामाद हबीब एफ़ेदी हैं।हुसैन और अमीन पाशा सय्यद एफ़ेंदी के दो दामाद थे।उनकी तीसरी बेटी असमा हानिम के तीन बेटे हैं, जिनके नाम, शोकी, फ़ारूक और नबी थे।

सय्यद फ़हीम एफ़ेंदी "कुददीस सरोह", इंसान-ए-कामिल (मुकम्मल इंसान) थे।उनके सबसे बड़े शार्गिद अबदुलहकीम एफ़ेंदी, एक वली-ए-कामिल (मुकम्मल वली) थे।सय्यद फ़हीम एफ़ेंदी ने अपने **17** जमाज़ील अहीर **1300** अप्रेल **(1883)** के ख़त में लिखा:

"मेरे प्यारे, काबिले इज़्ज़त सय्यद इब्राहिम और सय्यद ताहा! अल्लाहु तआला आप दोनों को महफ़ूज़ रखे! मैने तुम दोनों के लिए बहुत दुआँए कीं।जैसे के तुम्हें मालूम है, तुम्हारे भाई सय्यद मौला अबदुलहकीम पिछली खिज़ां में यहाँ थे और पढ़ाई शुरू कर दी थी।इस फ़कीर ने उनके सबक बहुत ध्यान से पढ़ाए और मैने क्या कहा उसको जाँचता रहा।वो, भी, उतने ही ध्यान देने वाले और तनकीदी थे जितना के मैं, उनकी निजी पढ़ाई में और सबकों के दौरान दोनों में ही मैं इतना वक़्त नहीं छोड़ता था उनके लिए के वो अपने को किसी और चीज़ में मसरूफ़ कर सकें इल्म के अलावा।अब, उन्होने सारी किताबें पूरी कर लीं है जो उन्हें हम ज़माने के तरीके के मुताबिक कर लेनी चाहिए थीं।इस फ़कीर ने उन्हें सिन्द याफ़्ता कर दिया है असलूबी सांईस फ़िक्ह और हदीस का इल्म पढ़ाने के लिए उसी तरीके से जिस तरह मैं अपने उस्तादों से सिन्द याफ़्ता हुआ था।अब से, उनको अपने भाई के तौर पर खातिर मत करना।इल्म की इज़्ज़त के लिए इस सिलसिले में ज़्यादा अदब करने के लिए, उनकी तरफ़ आजज़ी दिखानी होगी।मैं ये तुम्हारे अच्छे और सरफ़राज़ी के लिए लिख रहा हूँ।मज़ीद ये के, इल्म के लिए आजज़ी का

मतलब है अल्लाहु तआला के लिए आजज़ी।मेरे इस छोटे से ख़त से ज़्यादा समझना! सय्यद फ़हीम "रहीमाहुल्लाहु तआला।"

उन्होने अपने दूसरे ख़त में बयान किया: मेरे प्यारे बेटे, मेरी आँखों के तारे सय्यद मौला अबदुलहकीम मेरी बेशुमार दुआओं के बाद, मैं ये मानता हूँ के मेरा दिल ज़्यादा तकलीफ़ में है क्योंकि मुझे तुम्हारी तरफ़ से कोई ख़बर नही मिली।अल्लाहु तआला हर राज़ को जानता है।मैं कह सकता हूँ मेरा दिल हमेशा हर वक़्त तुम्हारे साथ है।बेशक वो जानता है।इस सिलसिले में तुम्हे मेरे गमों से अज़ाद करने के लिए, तुमको अकसर अपने मुकदर और साफ़ हालात लिखने होंगे।इस तरह प्यार का बंधन चलता रहेगा।अगर वो, मेरी आँख का तारा, यहाँ फ़कीरों के बारे में पूछे, अल्लाहु तआला की हमद के लायक बनी और उसका शुक्रिया अदा करो।हमारे बदन का सुख और भरोसा और हमारा मुहासरा दिन पर दिन बढ़ता जा रहा है।अल्लाहु तआला इस लायक करे के हमारे दिलों को भरोसा बख्शे, फ़कीरों के, और हमारे सारे भाइयों के दिलों को! आमीन।बराए मेहरबानी इस फ़कीर की दुआ अबदुलहमीद, हसन और सय्यद इब्राहिम को भी देना! मैं ताहा एफ़ेंदी और मज़हर एफ़ेंदी के लिए दुआ करता हूँ।तुम मेरे मूनीब हो इस फ़कीर की दुआ को जिसे तुम समझते हो मुनासिब है पहुँचाने में।इसके अलावा, नेहरी में जो हैं उनके हालात के बारे में लिखो, क्या वो अच्छे हैं या खराब।हमने नस्तूरियों (नेस्तोरियनों) के ज़ालिमाना हरकतों के बारे में सुना है और उनके चार सौ मुसलमानों के कतल के बारे में।मैं चाहता हूँ तुम मुझे बताओ इसके बारे में के उन्होने क्या किया और ऐसा क्यों किया।वससलाम।**3** जनवरी **1301**।तुम्हारे लिए दुआ, गुनहागार सय्यद फ़हीम।एक ख़त सय्यद अबदुलहकीम एफ़ेंदी ने अपने भाई सय्यद ताहा एफ़ेंदी को लिखा जो मंदरजाज़ेल है:

मुबारक बाग़ के जवान पौधे। ताहा एफ़ेंदी तुम्हारा ख़ूबसूरती से लिखा हुआ ख़त मिला। हमें ये बहुत पसंद आया क्योंकि इसने हमें बताया के मेरा प्यारा बेटा और उसके साथी महफ़ूज़ हैं और इसने हमारे अंदर असली मतलूब (प्यारे) के लिए इच्छा और शौक़ का एहसास करा दिया। एक लाईन:

ये मेरे लिए नहीं है के छोड़ जाऊँ इस ज़िन्दगी की बहार को।

अल्लाहु तआला तुम्हारी इस प्यास को और बढ़ाए! तुमने पूछा है, "क्या ये ज़रूरी है के रहनुमा की तस्वीर बिल्कुल वैसी हो जैसा के वो ख़ुद है।"

मेरे प्यारे बेटे, ये ज़रूरी नहीं है एक जैसा होना। राबता का मक़सद है अपना ध्यान साए की तरफ़ मोड़ लो। साए के बारे में यह सोचना, और जो ख़्याल है उससे मदद की उम्मीद रखना। ये ज़रूरी नहीं है के खास साए को जानो और पहचानो। यह ऐसे दिख सकता है जैसे के ख़्याल किया या सोचा। ज़्यादातर वक़्त में, रूह जिस्म की शक्ल में नज़र आती है और दूसरी शक्लों में भी क्योंकि यह जिस्म की आदी होती है जिससे ये बंधी होती है। जिस तरह की भी शक्ल और हालत में ये नज़र आती है, अगर साया ख़ूबसूरत, मीठा और ख़ुशी भरे आदत में है और अगर ये प्यार और अमन बढ़ाए (दिमाग़ का) ये समझ लेना चाहिए ये रहमानी है (अल्लाहु तआला की)। जितना ज़्यादा मुमकिन हो सख़्ती से कोशिश करो अपनी इच्छा और प्यार को बढ़ाने की उस साए की तरफ़! अपने आपको उसमें गुल कर दो। अगर ख़्याल/साया गंदा, ख़ौकनाक और डरावना है वो एक शैतानी साया है। उस को मत देखो! उसको जाने दो। तुम पूछो तुम क्या कर सकते हो इन दूसरी चीज़ों से पीछा छुड़ाने के सिलसिले में जो दिमाग़ में आ रही हैं जबके ज़िक्र किया जा रहा है। मेरे अज़ीज़, ये सोचें बेशक चली जाएंगी और मर जाएंगी, अल्लाहु तआला की इजाज़त के ज़रिए, दो तरीके से। एक तरीका राबता के दौरान जो ख़्याल नज़र

आया पूरे तौर पर उसकी तरफ़ मुड़ जाओ, दूसरा तरीका है ज़्यादा ज़िक्र करो, राबता उतावले पने से बनाने के लिए और अपनी सारी ताक़त और एहसास अपने दिल पर लगा दो। **18** अक्तूबर **1308**।

11– सय्यद ताहा अल हक्कारी की सवानेह जीवनी

(मौलाना ख़ालिद अल बग़दादी के एक शार्गिद)

सय्यद ताहा बिन अहमद बिन इब्राहिम (कुददिसा सिररोह), बड़े औलिया-अल-किराम में से एक, वो अब्दुल-कादिर-ए- जिलानी नसल में से थे। वो सबसे मुकम्मल नायब जानशीन थे (अल-ख़लीफ़ा अल अकमाल) मौलाना ज़ीया-ऊद-दीन ख़ालिद अल-बग़दादी के और खज़ाना थे रब्बानी (पाक) इल्म के।

उनका नशेब आगे जारी रहा उनके दो बेटों यानी उबैदउल्लाह और अलाऊदीन के ज़रिए, अलाऊदीन एफ़ेंदी (दफ़न) है हीज़नि में जो के शमज़ीनान का गाँव है। उनके पोते मौहम्मद सिद्दिक एफ़ेंदी ने मरियम हानिम से शादी कर ली थी उनके शौहर मुस्तफ़ा एफ़ेंदी के मरने के बाद। ताहा एफ़ेंदी मरियम हानिम से पैदा हुए। मौहम्मद सिद्दिक एफ़ेंदी जो सय्यद ताहा ऐफ़ेंदी के बेटों में से एक थे, उनका इन्तिकाल बग़दाद में हुआ जबके वो ईराकी सरकार में नायब मौसूल थे। उनके दूसरे दोनों बेटे मौहम्मद सालिह दारू और मज़ह एफ़ेंदीस जोके उसमानिया सलतन्त हुकूमत के बटवारे के वक़्त अपने माल के साथ ईराक में थे वो हिजरह कर के **1400 (1980)** में तुर्की में आ गए।

हज़रत मौलाना ख़ालिद, जो के तेरहवीं सदी के इस्लाम के कुतुब थे, वो इंडिया (हिन्दुस्तान) में थे जहाँ उन्हें गुलाम-ए- अली अबदुल्लाह-अद-देहलवी की मौजूदगी में हाज़िर होने की इज़्ज़त मिली। उनके हुनर (फज़ल) और मुकम्मल (कमालाता) हासिल करने के बाद सही तरह से उनके लायक होने के बाद, वो बग़दाद अपने घर लौट गए, अल्लाहु तआला के इंसानी गुलामों को हिदायत (इर्शाद) देने के लिए। चुंकि पूरी दुनिया मौलाना के दिल से जो चमक निकल रही थी उसके अनवार (रूहानी रोशनी) से जगमगा रही थी, सय्यद अबदुल्लाह, जोके उनके दोस्त बन गए थे जब वो दोनों पढ़ रहे थे, वो उनके पास सुलेमानिया में मिलने आए और उनकी सुहबत में कमालात हासिल किए और उनके एक ख़लीफ़ा-अल-अकमाल बन गए। उन्होने हज़रत मौलाना को अपने भतीजे सय्यद ताहा की ग़ैर मामूली ऊँची खुबियों के बारे में बताया। मौलाना ने उनको हुक्म दिया के जब अगली बार आओ तो अपने भतीजे को साथ लाना। सय्यद अबदुल्लाह सय्यद ताहा को बग़दाद ले गए, हज़रत मौलाना ने जैसे ही सय्यद ताहा को देखा तो उन्हें हुक्म दिया अचानक हज़रत अबदुल-कादिर अल-जीलानी के मज़ार पर जाओ और इस्तेख़ारा (ख़्वाब के ज़रिए पाकी) अदा करो। हज़रत अबदुल कादिर अल जिलानी ने उनको इतलाह दी, अगरचे उनका अपना रास्ता (तरीका) बहुत ऊँचा था, लेकिन उनके वक़्त में कोई माहिर नहीं रह गए थे, और वो ये के मौलाना अपने वक़्त के सबसे मुकम्मल रहनुमा थे, उन्होने उनको हुक्म दिया के इसी वक़्त उनके पास चले जाओ। इस रूहानी हुक्म पर, सय्यद ताहा ने दो सुलुक के लिए पढ़ाई करी, यानी अस्सी दिन के लिए मौलाना के ज़ैर-ए-निगरानी और उसके बाद बरदा सुर के शहर चले गए। जब सय्यद अहमद का इन्तिकाल हो गया तो, वो नेहरी के शहर में हिजरत कर गए और वहाँ उन्होने तालिमात देनी शुरू कर दीं। वहाँ पर वो बयालिस साल तक अपने शार्गिदों को फैज़ पहुँचाते रहे। चाहने वाले हर तरफ़ से इस रोशनी के ज़रिए पर परवाने की तरह मंडलाते रहे।

वो अपने वालिद की तरफ़ से मिले छोटे से मकान में अपनी इबादत अदा करते थे। दूसरी तरफ़ वो अक़ली (विज्ञान की) और नकली इल्म की तालीम (पहुँचाते थे) देते थे। वो आग़ाओं (एक सरकारी ख़िताब) बैगो और सियासत दोनों से जुड़े हुए नहीं थे, उनकी मौजूदगी में दुनियावी और सियासी बातें नहीं होती थीं। वो रोज़ाना (मकतूबात) पढ़ते थे। उनकी सलाह इतनी दिल नशीन होती थी (सबके साथ नरम रहे, सबर से काम लेते थे, बुरा बरताओ करने वालो के साथ और बदला नहीं लेते थे इसके अलावा अपने से बड़े और (सरकार) के साथ नरमाई से इज़्ज़त से उत्तर देते थे और मदद करते थे) के दिल में उतर जाती थी। उनके सारे उस्ताद **1200** साल तक इस्लाम के अच्छे मुहज़ब पढ़ाते रहे, वो सब रियास्तों और कानूनों की इज़्ज़त करने वाले थे। उनमें से किसी के भी बारे में कभी ये नहीं सुना गया के उन्होने हुकूमत के ख़िलाफ़ बग़ावत की हो, न ही ऐसा कोई गंदे हादसे का सबूत है एतिहास की किताबों में कुछ मुख़ालिफ़ और हासिद लोगों ने इन मुबारक लोगों को बदनाम किया और हुकूमत के ख़िलाफ़ बग़ावत की कोशिशे की ज़मिनदारों ने जिनके पास दुनिया भर का माल और नाम सब था जिन्हे इन तालीम के ज़राए और ख़ूबसूरत मुहज़ब क़दरो से कोई फायदे नहीं पहुँचा क्योंकि वो इन सबसे बहुत दूर थे, और दूसरे जाहिल, बहुत ज़्यादा एहमक बरताओ किया उनके मरने के बाद भी, इसलिए उनमें से कुछ नेक लोगों को कारागार में भेज दिया गया था। हालांकि, कानून और अदालत ने उन्हे मासूम करार दिया और उन्हें ई मानदारी और मुख़लिस माफ़ी के साथ उन्हे इनाम से नवाज़ा और आज़ाद कर दिया ताकि उन मुबारक दिलों को मुतासिर कर सकें और उनकी तवज्जुह दोबारा हासिल कर सकें। इस तरह के तौहमत के तीर, जो एतिहास और कहानी की किताबों में अकसर दिखाई दिए, वो हज़रत सय्यद ताहा पर भी बरसाए गए, और वो बेचारे बदकिस्मत इस इल्म और मुहज़ब के सूरज को दाग़दार करने में लगे रहे अपनी मनघढ़त और गंदे इलज़ामों से। लेकिन, क्योंकि सच कभी नहीं छुपता, इसलिए वो खुशकिस्मत और बेदार लोग जिन्होने इस

हिदायत (सही रास्ता) के बेटे को समझा और जाना वो ऐसे बदनाम करने वालों से बेवकूफ़ नहीं बने, और उनके चाहने वाले और सराहने वाले बन गए और उन्होने सुख चैन, अमन और बैशुमार खुशियाँ हासिल करीं रोशनी से जो नूर (रोशनी) से चमक रही थी उनके मुबारक दिल से।

हज़रत सय्यद अबदुलकरीम-ए-अरवासी के परसस सय्यद मौहम्मद, जो वेन से आए थे और जिन्होने इस ज़रिए से फ़ैज़ हासिल किया। सय्यद ताहा ने जब वेन को इज़्ज़त बख्शी तो वो सय्यद मौहम्मद के घर पर रूके, सिबग़ातुल्लाह एफ़ेंदी, जो के सय्यद मौहम्मद के भाई लुत्फ़ी के बेटे थे, वो हिज़ान से वेन आए और अपने आपको सय्यद ताहा से जोड़ लिया (इनतिसाब) कर लिया। बाद में वो हिज़ान लौट गए, जहाँ उनके वालिद रहते थे, और वहाँ वो बहुत ज़्यादा मशहूर हो गए। अपने सैंकड़ो शार्गिदों के साथ वो हर साल नेहरी जाते थे। अपने उन दौरो में से एक में, वो अपने साथ अपने चाचा मौला अबदुल्लाह एफ़ेंदी के बेटे, सय्यद फ़हीम को अपने साथ ले गए, जो उस वक़्त बहुत जवान थे। हज़रत सय्यद फ़हीम ने घर के मालिक से पूछा वो रास्ते में जाते हुए एक रात कहाँ रूकेगें हक्कारी का गर्वनर कैसा आदमी था। मेज़बान ने कहा वो रात सोचते रहे के क्या ऐसे मुल्क में रहना ठीक है जहाँ का गर्वनर शराबी था। दूसरे दिन वो रसूलन के गाँव पहुँच गए; जहाँ सिबग़ातुल्लाह एफ़ेंदी ने वहाँ रहने वालों से पूछा के गर्वनर किस तरह का आदमी था। उन्होने कहा वो अच्छा आदमी था। सय्यद फ़हीम ने उसी वक़्त बोला, “मेरे अमज़ाद! वो एक शराबी है। क्यों उसे एक अच्छा शख़्स कहा जा रहा है?”

जब वो बासखल छोड़कर नेहरी के लिए निकल रहे थे, तो सय्यद मौहम्मद एफ़ेंदी ने सय्यद फ़हीम से कहा, बग़ल में, “मेरे प्यारे फ़हीम! सय्यद ताहा, जिनकी मौजूदगी हाज़िरी को तुम जा रहे हो वो एक बहुत बड़ी शख़्सियत हैं जो विलायत [विलायत: एक रूतबा, वली होने का रूतबा] के

ऊँचे मकाम पर हैं। फ़ैज़ हासिल्व करने से पहले, और मुकम्मल तालीम हासिल करने से उनको छोड़कर मत जाना!" जब वो नेहरी से रवाना हो रहे थे, तो सब हज़रत सय्यद ताहा के हाथ को बोसा दे रहे थे, जो एक मस्जिद के पास खड़े थे। सय्यद फ़हीम को पीछे खड़ा देखकर, सिबग़ातुल्लाह एफ़ेंदी वापस आए और हज़रत सय्यद ताहा से पूछा के सय्यद फ़हीम को वापस जाने की इजाज़त है। उन्होने इसकी इजाज़त नहीं दी, लेकिन उन्हें वहीं रहने का हुक्म दिया। जैसे ही मुसाफ़िर चले गए और जबके वो दोनों अपने पैरों पर थे, उन्होने सय्यद फ़हीम को एक काम दिया और उन्हें पढ़ाना शुरू किया। एक गरम दिन, उन्होने कहा जो मैं तुम्हें पढ़ा रहा हूँ वो सब दोहराते जाओ। सय्यद फ़हीम को जो पढ़ाया गया वो सब दोहराते जाओ। सय्यद फ़हीम को जो पढ़ाया गया वो सब दोहराते रहे, सिवाए हत्त-ए-तुलानी के उसकी जगह वो हत्त- ए-तुली बोलते रहे। सय्यद ताहा ने उन्हें वहीं सही कर दिया। उन दिनों सय्यद फ़हीम बहुत कमसिन थे और उन्होने अपनी मदरसे की पढ़ाई पूरी नहीं की थी। एक दिन सय्यद ताहा एक मस्जिद की दीवार के मुक़ाबिल बैठे हुए थे तभी सय्यद फ़हीम उनके नज़दीक आए। उन्होने अपने मुबारक हाथ से उन्हें अपने पास आने का इशारा किया, और सय्यद फ़हीम आ गए। उन्होने कहा, "तुम एक अक़लमंद तालीबे इल्म हो। तुम्हें **मुतव्वल'** पढ़नी चाहिए। सय्यद फ़हीम ने कहा, "जनाब, मेरे पास वो किताब नहीं है। इसके अलावा, ये उन किताबों में से नहीं है जो मेरे मुल्क में पढ़ाई जाती हैं।" सय्यद ताहा ने उन्हें अपनी किताब दे दी। हज़रत सय्यद फ़हीम, अपनी तालीम पूरी करने के लिए, अबीरी के गाँव गए। बुलानिक, मुस, जहाँ उन्होने मौला रसूल की मौजूदगी में पूरी **मुतव्वल** पढ़ी। और, इस हुक्म के मुताबिक़ के वलायत के ऊँचे दर्जे हासिल करो, वो नेहरी गए, यानी शमदीनन, साल में दो बार। हर फ़ेरे के दौरान, सय्यद ताहा के ज़रिए उनपर मुख़्तलिफ़ महरबान अमल करके इज़्ज़त अफ़ज़ाई की जाती थी। मिसाल के तौर पर, एक दिन सय्यद ताहा एक मस्जिद के कमरे में घनी भीड़ के सामने **मक्तूबात** पढ़ रहे थे। थोड़ी दूर पर खड़े हुए, सय्यद फ़हीम सुन

रहे थे। हज़रत सय्यद ताहा ने किताब पर से अपना सिर उठाया और उनसे पूछा, “मौला फ़हीम! क्या आज यहाँ इस ज़मीन पर एक मुर्शिद है?” सय्यद फ़हीम ने जवाब दिया, “मौजूदा मुर्शिद की तरह कोई नहीं आया!” इस जवाब पर, सय्यद ताहा ने फौरन किताब बंद कर दी और अपने कमरे में चले गए।

सय्यद फ़हीम ने मुकम्मल (कमाल) हासिल करने के बाद और हुनर (तकमील) पूरा करने के बाद और दूसरो को ख़िलाफ़त-अल-मुतलका (पूरी तरह नायब की सनद) के साथ हिदायत देने की इजाज़त मिलने के बाद, उन्होने कहा मैं इस ज़िम्मेदारी को उठाने के लायक नहीं हूँ। सय्यद ताहा ने इसरार किया और उनको इसको मंज़ूर करने के लिए आमादा किया और तब उन्हें हुक्म दिया के अरवास को इज़्ज़त बख़्शो, जहाँ सय्यद फ़हीम पैदा हुए थे। सय्यद फ़हीम चले गए, लेकिन, जबके वो नेहरी की पहाड़ियाँ चढ़ रहे थे, सय्यद ताहा ने उन्हें वापस बुला लिया अपनी हाज़िरी में और, सय्यद ताहा ने उन्हें वापस बुला लिया अपनी हाज़िरी में और, सय्यद फ़हीम के पुराने ख़त किताबों में दिखाए, उनसे कहा, “क्या ये तुम्हारा इख़्लास और प्यार नहीं है? तुम क्यों इस ज़िम्मेदारी से भाग रहे हो? शय्यद फ़हीम, जिस तरह पहले करते आए थे, ख़िलाफ़त-अल-मुतलका के साथ इज़्ज़त पाने के बाद भी वो हर साल नेहरी जाया करते थे।

हज़रत सय्यद ताहा ने **1269 (1853)** में रहलत फरमाई। एक दोपहर, जब वो पेड़ों के दरमियान बैठे हुए थे उनको दो ख़त दिए गए। उनके दामाद उनके पास थे अबदुलआहद एफ़ेंदी उन्होने ख़तों को पढ़ा। उन्होने कहा, “हमारा इस दुनिया से जाने का वक़्त आ गया है।” उनके दामाद ने कहा, “ओह जनाब, हम इन ख़तों का क्या करें जो दमिश्क से आए हैं?” उस दिन खत्म-ए-खाजा [**खत्म-ए-खाजा:** कुछ खास चीज़ें जो एक मुर्शिद और उनके शार्गिदों के ज़रिए ख़ामुशी से पढ़ी जाती हैं, जिसके बाद औलियाओं के नाम

जो मुर्शिदों के सिलसिले में आते हैं उनका ज़िकर किया जाता है, और जो कुछ पढ़ा जाता है उसका सवाब उनकी रूहों को बख़्शा जाता है, उसके बाद उनका फ़ैज़ और मारिफ़ात मांगा जाता है।] पढ़ने के बाद, सय्यद ताहा अपने कमरे में चले गए, जहाँ वो बारह दिन तक बीमार रहे। उनकी मुबारक रूह ऊपर चली गई रफ़ीक अल-अला **[रफ़ीक अल-अला:** जन्नत में सबसे ऊँचा मुकाम, जिसकी नबी ने आख़री इच्छा के तौर पर दरख़्वासत की थी।] बाद दोपहर की सलात के वक़्त के दौरान। हाज़ारों चाहने वालों ने जिन्होने चीखें सुनी सदमें में आ गए। जब वो बीमार थे, वो चाहते थे उनके भाई शेख़ सालिह, जो बरदा सुर के शहर में थे, नेहरी आ जांए। उन्होने अपने मुकम्मल भाई (बिरादर-ए-अकमल), सय्यद सालिह को हुक्म दिया, के ख़त्म-ए-खाजा और तवज्जुह अदा करें। "मेरे भाई सालिह एक मुकम्मल शख़्स हैं। सबके सिर उसके बाज़ू के नीचे हैं," उन्होने कहा। हज़रत सय्यद फ़हीम ने शेख़ सालिह को शेख़-ए-सोहबा **[शेख़-ए-सोहबा:** एक वली का दूसरा मुर्शिद (रेहनुमा, शेख़) जिनको वो जानते थे उनसे ऊँचा है और जिसकी सोहबत (साथ में, तकरीर) में हाज़िर रहा अपने मुर्शिद के इन्तेकाल के बाद (इस सोहबत को में दोनों वलियों को एक दूसरे से फायदा हुआ।) कुबूल कर लिया। शेख़ सालिह ने जब तक रहलत फरमाई **1281 (1864)** में, वो साल में दो बार नेहरी जाते थे और उनके जाने के बाद भी, उन्होने इस रसम को नहीं छोड़ा और साल में दो बार नेहरी को इज़्ज़त बख़्शते थे जब तक के उन्होने **1313 (1895)** में रहलत न फरमाली।

सय्यद मौहम्मद सालिह के अलावा, सबसे ज़्यादा असरदार शार्गिद सय्यद ताहा-ए-हक्कारी के सय्यद सिबग़ातुल्लाह थे अरवासी थे। उनके बाद कुफ़रावी मौहम्मद थे। सय्यद सिबग़ातुल्लाह को ऐसे नामों से भी जाना जाता था जैसे के "ग़ोस-उल- आज़म" और "ग़ोस-ए-हिज़नी" उनके शार्गिदों के दरमियान। उन्होने **1287** में रहलत फरमाई। उनके शार्गिदों में से, अबदुररहमान ताही नूरशीनी को "उस्ताद-ए-आज़म" और "सरदा" के नाम से जाना जाता

था। उनके सब शार्गिदों में से, उन्नीस ये हैं: फतेह-उल्लाह वरकसानिसी, अबदुल्लाह नूरशीनी, मौला रास्एिद नूरशीनी, अबदुलकहार जो के अल्लामा मौला हलील सीरिदीन के पोते थे, अबदुलक़ादिर हिज़नी, इब्राहीम नीनकी, ताहिर अबरारी, अबदुलहादी, अबदुल्लाह हुरूसी, इब्राहीम कुकरूशी, हलील कुकरूशी, अहमद ताशकासनी, मौहम्मद समी ईरज़ीनकनी, मुस्तफ़ा, सुलेमान और युसूफ़ बीतलीसी। अबदुररहमान ताही की वफ़ात **1304** में हुई। इब्राहिम कुकरूशी ने उनके इर्शादात **"इशारात"** (निशानात) के नाम से जमा किए। ये एक बहुत भरोसे वाली किताब है। फतेहउल्लाह वरकसानिसी की वफ़ात **1317** में हुई। उनके शार्गिदों में से, मौहम्मद ज़ीयाउददीन नूरशीनी, जो के अबदुररहमान-ए-ताही के बेटे थे, उनकी वफ़ात **1342 (1924)** में बितलीस में हुई। उनकी किताब "मकतूबात" में चौदह सौ ख़त हैं। तेरह में से सबसे पहला शार्गिद मौहम्मद अलाऊदीन-ए-उहीनी थे जिन्होने अपने उस्ताद के ख़त जमा किए। दूसरे अहमद हज़नवी, मौहम्मद मासूम, सय्यद मौहम्मद शरीफ़ अराबकंडी और अबदुलहकीम एफ़ेंदी अदीयमन के सब उनके शार्गिदों में से थे। आख़री वालों में से एक की वफ़ात **1399 (1978)** में हुई। मौहम्मद राशिद एफ़ेंदी उनके बेटे थे।

12– हुसैन हिल्मी बिन सैद एफ़ेंदी की सवानेह उमरी

(सय्यद अबदुलहकीम-ए-अरवासी के एक शार्गिद)

वो सीफ़ा योकुसा, वज़ीरतेकके सोकागी सर्वी महालेसी, अय्युब सुलतान, इस्तानबुल, के मकान नम्बर।में बहार की ख़ूबसूरत सुबह में **8** मार्च, **1911** (**1329** हिजरा) में पैदा हुए।उनके वालिद सैद एफ़ेंदी और दादा इब्राहिम एफ़ेंदी तेपोवा गाँव से थे जो लोफ़जा (लोवेक), बुलगारिया में है, और उनकी माँ एईसे हम्म और उनके वालिद हुसैन आग़ा लोफ़जा से थे। "तेरान्नवे" की जंग के दौरान जो रूस के ख़िलाफ़ हुई थी (**1295** हिजरी, मिलादी **1878**) में।सैद एफ़ेंदी इस्तानबुल हिजरत करके आए और वेज़ीरतेकके में मुकीम हो गए, जहाँ उन्होने शादी कर ली।जंग की वजह से परेशानियों और हिजरत करने की वजह से, वो स्कूल नहीं जा पाए, और उन्होन नगरपालिका में वज़न पर काबू रखने वाले सरकारी नौकर की मुलाज़मत कर ली, जहाँ उन्होने चालीस साल से ज़्यादा काम किया।वो वफ़ादारी के साथ इस्तानबुल की बड़ी मस्जिदों में मश्हूर आलिमों की तकरीरे सुनते थे और मज़हब के बारे में गहरा इल्म हासिल कर लिया।अपनी तरज़े ज़िन्दगी में तर्जुबे की वजह से वो इतने माहिर हो गए थे के अपनी याददाश्त की बदौलत वो चार हिसाबी अमल हल कर देते थे और हैरत अंगेज़ कर देते थे।हुसैन हिल्मी एफ़ेंदी जब पाँच साल के थे तो वो मिहर-ए-शाह सुल्तान स्कूल, जो के अय्युब मस्जिद और बॉस्तन वारफ़ के बीच में था वहाँ गए थे।यहाँ उन्होने दो साल में कुरआन-अल-करीम पूरा किया।सात साल की उमर में, उन्होने अपनी इबतिदाई तालीम रीसादिय्ये नुमुने मकतबी, जो के सुल्तान रीसाद हन के करीब था वहाँ से शुरू की।छुटियों के

दौरान, उनके वालिद उन्हें मज़हबी स्कूलों जिनके नाम हकीम कुतुबऊददीन, कलेनदरहने और अबुसुऊद थे वहाँ भेजते थे और ज़्यादा ज़ोर उनकी अच्छी परवरीश पर डालते थे। जब हुसैन हिल्मी एफ़ेंदी ने **1924** में इबतिदाई स्कूल ऊँचे मुकाम के साथ पूरा किया, तो उन्हे हर मज़मून के लिए गोल्डगील्ट इनामों से नवाज़ा गया जिससे एक बहुत बड़ी एलबम मर गई। उनको हलीसीओगलू मिलिटैरी हाई स्कूल में दाख़िल कराया गया, जोके उसी साल कोनया से इस्तानबुल आया था, आग़ाज़ी इम्तेहान में अफ़ज़ल दर्जे के साथ। उसी साल उन्होने सैकंडैरी किलास दूसरी डीवीज़न से सबसे अच्छे छात्र के तौर पर पास की। हर साल एज़ाज़ पाने वाले मिलिटैरी हाई स्कूल से अपनी कक्षा के कैप्टन के तौर पर सिंद याफ़ता हुए और **1929** में मिलिटैरी मेडिकल स्कूल के लिए चुन लिए गए।

हाई स्कूल में, ज्योमेटरी के उस्ताद हुसैन हिल्मी से हर सेशन के आख़िर में सबक पर नज़रे सानी करवाले थे। उनके दोस्त कहा करते थे के तुम्हारे नज़रे सानी से हमें ज़्यादा अच्छा समझ आता है। ये उन्हीं बैठको में से एक की बात है जब वो हाई स्कूल की दूसरी जमात में थे वो एक थीओरम समझाते हुए रूक गए जिसमें इर्शाद था, "सीधा कोना के सीधा कोना होने के लिए उसके खाके के लिए ये ज़रूरी और काफ़ी है के उसके किनारों में एक उसके हमवार सतह के बराबर हो [जिस पर के कोना कायम किया जाए] उस्ताद कैप्टन फऊद बेए ने उनकी मदद की, लेकिन उन्होने कहा, "जनाब, ये मुझे समझ नहीं आया। मुझे समझ आया के क्या तुम्हारा मतलब है, लेकिन दोनों वज़ाहतों ने एक दूसरे को अच्छे से समझाया।" फऊद बेए ने तब दूसरे अच्छे शार्गिद की राए जानने के लिए पूछा, जो, अपने मुकाबिल की इस हालत से बहुत ख़ुश थे, उन्होने कहा, "नहीं जनाब, हिल्मी एफ़ेंदी गलत हैं। जो इल्म की किताबें है उसमें भी वही लिखा है जो आपने बताया है।" जब हिल्मी एफ़ेंदी ने जताया के उन्हे समझ नहीं आया। फऊद बेए ने कहा "बराए मेहरबानी तुम बैठ

जाओ," और कहा, "हिल्मी एफ़ेंदी, हम सब इंसान हैं... शायद तुमने आज बहुत काम कर लिया है इसलिए तुम थकावट महसूस कर रहे हो। या फिर तुम्हे और कोई परेशानी है। तुम ये बात किसी और वक़्त में समझ जाओगे फ़िकर मत करो।" रात में जब सब इकामतगाह के लोग सो गए, तो चौकिदार ने हिल्मी एफ़ेंदी को जगाया और कहा के ज्योमेटरी वाले उस्ताद उस्तादों वाले कमरे में तुम्हारा इंतज़ार कर रहे हैं। वो उठ गए और अपने कपड़े पहनकर परेशानी की हालत में चलते हुए कमरे तक पहुँचे। फऊद बेए ने कहा, "मेरे बच्चे! मैने घर जाकर सब चीज़ों के ऊपर सोचा। मैने अपने आप से कहा, हिल्मी एफ़ेंदी हर नए सबक को बहुत रवानी के साथ दोहराता है और बड़ी हिसाबी परेशानी को हल कर सकता है। वहाँ पर कोई न कोई वजह ज़रूर है जो उन्हे ये कहने पर मजबूर कर रही है के इस मसले में कुछ उसके मुख़ालिफ़ है। मैने इसके ऊपर बहुत ग़ौर किया। मुझे दिखाई दिया के तुम सही हो। हदम्मार, किताब का फ्रेंच का लेखक, जिसने इसे गलत लिखा, और अहमद नाज़मी बेए, जो के ज्योमेटरी के उस्ताद हैं इज़मीर हाई स्कूल में उन्होने भी इसका ख़्याल नहीं किया, और सालों से में भी गलत पढ़ाता आया हूँ। तुम सही हो, मेरे बच्चे। मैं तुम्हें मुबारकवाद देता हूँ। मुझे फख़्र है के तुम मेरे शार्गिद हो। मैं सुबह तक इंतज़ार नहीं कर सका ये देखने के लिए के तुम आराम से सो जाओ और ख़ुशी महसूस करो।" उन्होने हिल्मी एफ़ेंदी के माथे को चूमा और चले गए।

हिल्मी एफ़ेंदी हर रमज़ान में रोज़े रखते थे और पूरी मिलिटैरी हाई स्कूल की तालीम में हर सलात की रसम अदा की। सब बड़ों में, वो अकेले थे जिन्होने सब सलात की रसमों को अदा करना कायम रखा। कुछ उस्ताद, जो फ़रेब देते थे या शायद इस्लाम के दुश्मनों के ज़रिए खरीदे गए थे, वो उनके हमजमाअतों के दिलों में इस्लाम के लिए ग़ैरमज़हबी और दुश्मनी डालते थे झूठ, तोहमत और गलत साईअन्सी वज़ाहते देकर। भूविज्ञान के उस्ताद, अदेंम

नेज़िही, इल्मे तिब के उस्ताद, सबरी, फलासफ़ी के उस्ताद केमिल सेना, और तारिख़ के उस्ताद मेजर ग़ालिब बग़दाद के, वो सब अपनी शरीर तालीमात में इंतेहा को पहुँच गए। लेकिन वो इन सब उस्तादों पर ईमान नहीं रखते थे। वो उनके मज़मून बहुत अच्छे से और ज़्यादा पढ़ लिया करते थे और इम्तेहानों में पूरे नम्बर लाकर, उनकी शाबाशी जीतते थे।

जब वो मिलिटैरी हाई स्कूल में सिनियर थे, उनके वालिद सेद एफ़ेंदी चल बसे। स्कूल के आफ़िसरों, उस्तादों और तालिबे इल्मों ने तकफ़ीन में शिरकत की। अय्युब के लोग इतने बड़े समूह को देखकर जो तकफ़ीन के लिए आया था चकित रह गए।

हिल्मी एफ़ेंदी जब नाज़ुक सजी हुई ज़ेनब वलीद सुल्तान हाल बएज़ीद स्कवैर के साईन्स के महकमे में पढ़ते थे तो बहुत बेचैन रहते थे; जब भी वो बेएज़ीद मस्जिद में जुमे की नमाज़ पढ़ने जाते थे, तो वहाँ इमाम के पीछे सिर्फ़ एक लाईन होती थी मुसलमानों की, और वो सब बूढ़े होते थे। वो परेशान होते थे के थोड़े सालों बाद तो वहाँ पर एक भी मुस्लिम नहीं होगा और इस गिरावट का सबब जानने में लगे रहे। (और इस गिरावट की वजह ढूँढने की कोशिश करते रहे) किसी भी तरह वो इसका पता नहीं लगा पाए। वो नाउम्मीदे से भर गए, लेकिन स्कूल में उनका कोई दोस्त नहीं था जिसके साथ वो संजीदगी से बातचीत कर सकते या उससे मदद ले सकते।

एक दिन वो कैम्पस छोड़कर दोपहर की सलात के लिए बेरज़ीद मस्जिद में दाख़िल हुए। सलात अदा करने के बाद, उन्होने देखा मस्जिद के बाँए तरफ़ कोई तबलीग़ पढ़ा रहा है। वो बैठ गए। तबलीग़ करने वाला ईमान की छः बुनयादी बातें एक पतली सी, छोटी सी किताब हाथ में पकड़े हुए बता रहा था। हिल्मी एफ़ेंदी वो सब जानते थे जो वो समझा रहे थे, लेकिन उन्होने अपनी जगह नहीं छोड़ी इस डर से के कहीं तबलीग़ करने वाला का दिल न टूट जाए

के उसकी तबलीग़ी बातें उन्हें खुश नहीं कर रहीं। असल में, वहाँ पर सिर्फ़ कुछ ही बड़े लोग थे जो सुन रहे थे। उन्होने अपनी तबलीग़ छोटा किया और, उनके हाथ में जो छोटी किताब थी उसे दिखाया, कहा, "हर किसी को इन किताबों की ज़रूरत है। मैं इनको बेच रहा हूँ।" उनकी ज़ाहरी शकल व सूरत से लग रहा था के वो बहुत गरीब हैं। एक भी किसी ने नहीं खरीदी। हिल्मी एफ़ेंदी को वाइज़ पर रहम आया और, उन्होने सोचा किसी जवान को दे दूँगा, उसके पैसे पूछे। लेकिन, जब वाइज़ ने कहा पच्चीस कुरूशेस, तो उन्होने अपना इरादा छोड़ दिया, क्योंकि न तो उनके पास इतना पैसा था और न ही उस किताब की इतनी कीमत थी। उस ज़माने के सिक्के बहुत कीमती थे; एक इमाम और एक लैफटैनण्ट को अलग-अलग सिर्फ़ **17** और **61** लीरा [**1** लीरा **100** कुरूशेस है] मिलते थे। उस किताब की कीमत ज़्यादा से ज़्यादा पाँच कुरूशेस होनी चाहिए, और उनको लगा वाइज़ के लिए इतनी ऊँची कीमत मांगना गलत है। "ये अल्लाह के लिए बग़ैर पैसे के दे देनी चाहिए। ख़ैर, अगर वो इसी पर जी रहा है, तो ज़्यादा से ज़्यादा पाँच कुरूशेस के लिए पूछ सकता है, "उन्होने नाराज़गी से सोचा वो मस्जिद के दूसरी तरफ़ चले गए। इस तरफ़ अंदर और बाहर के कटहरों में बहुत लोग भरे हुए थे। एक बूढ़ा शख़्स जो अंदर बैठे हुए थे वो बातें कर रहे थे। बहुत मुश्किल के साथ उन्होने अपना रास्ता बनाया और उनके पीछे बैठ गए। बूढ़े शख़्स एक किताब पढ़ रहे थे और समझा जा रहे थे के किस तरह मुसलमानों को औलियाओं के मज़ारों पर जाना चाहिए। एक मसला जो हिल्मी एफ़ेंदी नहीं जानते थे लेकिन याद करने के बहुत इच्छुक थे। जब के सुन रहे थे, बहरहाल, वो अपने आपको दूसरे वाइज़ के बारे में सोचने से नहीं रोक पाए और अपने आप से बोले, "एक शख़्स जो अल्लाह से प्यार करता है उसे मज़हबी किताबें मुफ़्त में देनी चाहिए," बार-बार उन्होने सोचा। उसी वक़्त, दोपहर के बाद की सलात मस्जिद में शुरू हो गई थी, और बुज़ुर्ग वाइज़ जो किताब पढ़ रहे थे उसे बंद की और हिल्मी एफ़ेंदी को दे दी और कहा, "ये मेरा तौहफ़ा है नोउमर एफ़ेंदी को अल्लाह की वजह से," और अपनी सलात

शुरू कर दी। हालांकि इस वाइज़ ने हिल्मी एफ़ेंदी को नहीं देखा था, वो जानते थे के वो उनके पीछे बैठे थे। हिल्मी एफ़ेंदी ने किताब ले ली और सलात में शामिल हो गए। सलात के बाद, उन्होने उसका मज़मून देखा **"रबीता-ए-शरीफ़ा"** और उसके नीचे लेखक का नाम लिखा था किताब के कवर पर **"अबदुलहकीम"** और किसी से ये जाना के जिन्होने उनको ये किताब दी थी वो अबदुलहकीम एफ़ेंदी थे और वो जुमे में अय्युब मस्जिद में नमाज़ें अदा करते हैं। वो वापस उस इमरत में चले गए और जिसका नाम "बकीर अगा बोलुगु" था जो बएज़ीद टॉवर के पास था जहाँ वो ठहरे हुए थे। जुमे में, जो उन दिनों हफ़्ते का आख़री दिन होता था, वो बड़ी मस्जिद चले गए। उन्होने वहाँ वाइज़ को ढूँढा लेकिन वो नहीं मिले। तब उन्हें पता चला के वो एक दूसरी मस्जिद में इमाम हैं और सलात के बाद आएंगे। वो अंदर नहीं ठहरे और बाहर चले गए। उन्होने वाइज़ को एक किताब बेचने वाले की दुकान के पास खड़े हुए देखा। वो पीछे से उनकी तरफ़ बढ़े और लगातार उन्हें प्यार से देखते रहे। उन्होने सुना के कुतुब फरोश उनसे कह रहा था, "जनाब, खड़े मत रहिए, इस कुर्सी पर बैठ जाइए," जोके बर्फ़ से ठकी हुई थी। जब वो बैठने ही वाले थे, हिल्मी एफ़ेंदी उछलकर करीब गए और कहा, "बराए मेरहबानी, एक लम्हा रूकिए," और अपने रूमाल से बर्फ़ साफ़ कर दी। उन्होने अपना लम्बा कोट उतारा, उसे मोड़ा और कुर्सी पर रख दिया और कहा, "बराए मेहरबानी अब बैठ जाइए।" उन्होने उनको देखा। उनका मुबारक, दबदबे और अपनी तरफ़ खींचने वाला चेहरा, काली भंवे और आँखे और गोल दाढ़ी बहुत ख़ूबसूरत और प्यारी थी। अबदुलहकीम एफ़ेंदी ने कहा, "अपना लम्बा कोट ले लो!" और कुर्सी की खाली लकड़ी पर बैठ गए। हिल्मी एफ़ेंदी को बहुत दुख हुआ लेकिन वो बहुत ख़ुश हुए जब उनसे कहा गया, "मेरी कमर पर रख दो।" जब कुछ लोग मस्जिद से बाहर आ गए, तो वो अंदर चले गए और अपनी ऊँची मसंद पर वो मस्जिद के सीधी तरफ़ ज़मीन पर बैठ गए और अपना सबक समझाना शुरू किया उस किताब में से जो के एक नीचे डेस्क (रहल) पर उनके

सामने रखी हुई थी। हिल्मी एफ़ेंदी पहली कतार में उनके सामने बैठ गए और ध्यान से सुनने लगे। वो ख़ुशी से सुन रहे थे; मज़हबी और दुनयावी जानकारी, जो उन्होने कभी नहीं सुनी थीं, सब बहुत दिलचस्प थीं। वो बिल्कुल एक गरीब शख़्स की तरह थे जिसने कोई ख़ज़ाना ढूँढ लिया हो, या एक प्यासे शख़्स की तरह जिसने ठंडा पानी खोज लिया हो। उन्होने अपनी नज़रें सय्यद अबदुलहकीम एफ़ेंदी पर से नहीं हटाई। वो उनके प्यारे, चमकदार चहरे को देखने में और उनके कीमती जगमगाते हुए लफ़्ज़ों में जो वो बोल रहे थे खो गए। वो उनके बराबर बन गए और अपने स्कूल, अपनी दुनयावी कारोबार और सबकुछ भूल गए। कई मीठी चीज़ उनके दिल के नज़दीक बढ़ रही थी; ये ऐसा था जैसे वो पाक हो गए हों, धो दिए गए हों किसी मीठी चीज़ के साथ। ये सबसे पहली सुहबत के दौरान हुआ के शुरू के कुछ लफ़्ज़ ही काफ़ी थे उनके अंदर घुसने के लिए जैसे उनके अंदर शक्ल दी जा रही हो मुबारक फना की, जिसको हुसूल के लिए कई साल कठिनाईयाँ झेलनी पड़ती हैं। बदकिस्मती से, ये सुहबत सिर्फ़ एक घंटे में ख़त्म हो गई। हिल्मी एफ़ेंदी के लिए, ये एक घंटा एक लम्हे की तरह गुज़रा। जैसे वो एक मीठे सपने से जागे हों, उन्होने अपनी नोटबुक अपनी जेब में रखी बाहर जाने वाली कतार में खड़े हो गए। जबके वो अपने जूते के तस्में बाँध रहे थे, कोई उनके ऊपर झूका और सरगोशी की, "जवान एफ़ेंदी, मैं तुम्हे बहुत चाहता हूँ। हमारा घर कब्रिस्तान में है। आओ हमसे मिलने। हम बात करेंगे।" सय्यद अबदुलहकीम वो शख़्स थे जो ये मीठे, दिल को मोह लेने वाले लफ़्ज़ बोल रहे थे। उसी रात हिल्मी एफ़ेंदी ने एक साफ़, चमकदार, नीले आसमान, को एक मस्जिद के गुमबद की तरह पटरी बनाए हुए ख़्वाब देखा। कोई बहुत चमकदार चेहरे के साथ उसमें चल रहा है। जब उन्होने ऊपर देखा, उन्होने देखा वो तो सय्यद अबदुलहकीम एफ़ेंदी थे, और वो ख़ुशी से जाग गए। कुछ दिनों बाद उन्होने ख़्वाब देखा के कोई है जिनका चेहरा चाँद की तरह चमक रहा है, और जो एक पत्थर की कब्र के सिर पर बैठे हुए हैं हज़रत ख़ालिद अय्युद-अल अंसारी

के मज़ार पर और जिनके लिए लोग एक कतार में लगे हुए हैं उनका हाथ चूमने के लिए।हिल्मी एफ़ेंदी भी उस कतार में शामिल हो गए और उनका हाथ चूमने ही वाले थे के वो जाग गए।

उन दिनों हिल्मी एफ़ेंदी फतीह में रहते थे और हर जुमे को सय्यद अबदुलहकीम एफ़ेंदी के घर जाते थे।कभी-कभी वो सुबह की सलात से पहले जाते और न चाहते हुए भी रात की सलात के बाद वापस आ जाते।वो सबकुछ भूल गए ऐसे लगता जैसे सब चीज़ें नई हैं।वो हमेशा अबदुलहकीम एफ़ेंदी के करीब रहते, चाहे वो खाना खाते में, इबादत करते में, आराम फरमाते हुए और कहीं पर जाते हुए।वो हमेशा उनकी आदतों को ध्यान से देखते और उनको सुनते थे।वो पूरी कोशिश करते के लम्हा भी ज़ाया न हो।वो उनके पास हर छुट्टी में, और जबभी उनके खुत्बे कभी नहीं छोड़ते थे।सबसे पहले तुर्की किताबों और कुछ महीने बाद अरबी सर्फ़ [**सरफ़:** अरबी भाषा सम्बन्धी या पेड़-पौधे और जानवरों की तालीम] और नहुव [**नहुव:** अरबी कायदा] पढ़ाया जाने लगा।अमसिला, अवामिल, सिमा-ए-मसदर, **कसीदा-ए-अमानी**, मोलाना ख़ालिद **दीवान** और मनतकी किताब **इसागुजी** याद कराई जाने लगी।एक दोहा, एक लाईन या एक अरबी या फ़ारसी का जुमला हर मुलाकात में लिखा और समझाया जाने लगा।जो कुछ लिखा जाता था वो सब याद किया जाता था।

सबसे पहला काम सय्यद अबदुलहकीम एफ़ेंदी ने जो काम हुसैन हिल्मी एफ़ेंदी को दिया वो था अरबी से तुर्की में तर्जुमा एक छोटे से इक्तिबास का जो अल-इमाम अल बग़वी से लिया गया था क़ज़ा और क़सर पर।उन्होने उसका तर्जुमा [हुसैन हिल्मी इशिक का ये पहला तर्जुमा **सआदते अदबिया** के चौथे बाब के आख़िर में हवाला दिया गया है।] रात में ही घर में कर लिया था

और दूसरी सुबह अपने उस्ताद के पास ले गए। उनके उस्ताद ने कहा, "बहुत अच्छा! तुमने बिल्कुल सही तर्जुमा किया है। मुझे ये पसंद आया।"

हुसैन हिल्मी एफ़ेंदी ने तिब्बी स्कूल की दूसरी जमाअत सबसे अच्छे शार्गिद के तौर पर पास की। अय्युब में अपने उस्ताद से एक मुलाकात के दौरान जबके वो एक बाग़ में बैठे हुए थे, वो वक़्त उनके हडडियों के इल्म का कोर्स पूरा करने का भी था और वो मुर्दे पर काम करने वाले थे। उनके उस्ताद ने उनसे पूछा के वो दारूलउलूम में क्या पढ़ रहे हैं। उनके जवाब पर, सय्यद अबदुलहकीम एफ़ेंदी ने कहा, "तुम एक तबीब नहीं बन सकते। तुम्हारे लिए अच्छा है के तुम अपना तबादला दवासाज़ी के स्कूल में करालों।" हिल्मी एफ़ेंदी ने कहा, "जमाअत में मेरे सब से ज़्यादा नंबर हैं। वो मुझे फारमेसी स्कूल में नहीं जाने देगें।" "तुम अपनी अरज़ी डालो। इन्शाहअल्लाह, अल्लाहु तआला इसकी मंज़ूरी दे देगें," उनके उस्ताद ने कहा। बहुत सारी अरज़ियों के बाद हिल्मी एफ़ेंदी को दूसरी जमाअत के तालिब-ए-इल्म के तौर पर दवासाज़ी के स्कूल में पहले निस्फ़ तालीमी साल के आख़िर में दाख़िला मिल गया। अगरचे निसाब आधा हो चुका था और उनको पहले साल के जो मज़मून दिए गए थे उसके ज़्यादा इम्तेहान देने थे, उन्होने वो सब इम्तेहान दूसरे निस्फ़ तालीमी साल में पास कर लिए। वो दवासाज़ी के स्कूल से सनदयाफ़्ता हुए और एक साल का परोबेशन गुलहाने अस्पताल से बहुत ऊँचे एज़ाज़ के साथ पूरी की। वो पहले फौजी तिब्बी स्कूल में लैफटैनण्ट सहायक मास्टर चुने गए। उनको **ली मतीन** परचा दिया गया जो के पेरिस से छपता था, अबदुलहकीम एफ़ेंदी के हुक्म पर जबके वो एक तालिब-ए-इल्म थे फारमेसी के स्कूल में ताके उनकी फ्रेंच के बारे में जानकारी बढ़े। उन्होने दोबारा अबदुलहकीम एफ़ेंदी के हुक्म पर केमिकल इंजीनिअरींग स्कूल में पढ़ाई शुरू कर दी जबके वो एक सहायक-मास्टर थे। उन्होने हिसाब वॉन माइसिस से, मशीनों का काम प्रोफेसर प्रेग से, फिज़िक्स डेमबर से और तकनीकी इल्मे किमया ग़ोस से सीखी। उन्होने आरंडर, एक

प्रोफेसर इल्मे किमया, के साथ काम किया, और उनकी तारीफ़ें हासिल की। आख़िर के छः महीने खोज बीन के उन्होने उनकी क़यादत में निकाले, उन्होने एक तरकीब बनाई और उसकी एक हद बाँध दी फारमूला बनाया इस्टर के लिए "फीनाईलसाइनिटरो-मैथन-मिथाईल।" ये कामयाब खोज बीन दुनिया में इस मैदान में पहली थी, जो **दी जरनल ऑफ दी इस्तानबुल फैकलटी आफ़ सांईस में** और जर्मनी की किमयाई अख़बार **ज़ेनटरल बलॉट** (नंबर 2519, 1937 में) हुसैन हिल्मी इशिक के नाम से छपा। जब उन्होने 1936 में (नंवम्बर 1/1) में किमयाई इंजीनियरींग में मास्टर ऑफ सांईस का डिपलोमा हासिल किया, तो हुसैन हिल्मी इशिक रोज़ाना अख़बारों में पहले और अनोखे किमयाई ऐंजिनऊर के तौर पर तुर्की में दिखाई देते थे। उनको इस कामयाबी की वजह से, उनको ममक, अंकारा में ज़हरीली गैसों के महकमे में कैमिस्ट ऑफिसर के तौर पर तकर्रूर किया गया। वहाँ उन्होने ग्यारह साल काम किया, उसमें से ज़्यादा काम उन्होने मर्ज़बेकर, जनरल डाएरेकटर ओएर कारखानों, किमयाई डॉक्टर, गोल्डरूटनि, आँखों के डॉक्टर, नयूमन के साथ किया। उन्होने उनसे जर्मनी भी सीखी। वो ज़हरीली गैसों के माहिर बन गए। वो अपनी ख़िदमात पेश करते थे। मिसाल के तौर पर, इग्लैण्ड ने एक सौ हज़ार गैसमास्क पालैण्ड को बेचे दूसरी जंगे अज़ीम के दौरान। जबके वो मास्क अभी रास्ते में ही थे के जर्म नी ने पालैण्ड पर हमला कर दिया, और ब्रिटेन ने वो मास्क तुर्की को बेचने चाहे। कैप्टन हुसैन हिल्मी इशिक ने उन मास्कों को परखा और, ये जानने के बाद के उसकी जालियाँ ज़हीरी गैस छोड़ रही हैं, उनको अपनी जाँच में बताया के वो "इस्तेमाल करने लायक नहीं है, बिल्कुल किसी काम की नहीं हैं।" कौम का हिफ़ाज़ती वज़ीर और ब्रिटेन के सफ़ीर दोनों ख़तरे को जान गए लेकिन जाँच पर यकीन नहीं किया। "ये किस तरह मुमकिन है के बरतानिया की पैदावार ख़राब हो?" ये कहा गया था। उन्होने अपनी बात को साबित किया। आख़िरकार उन्होने ये हुक्म दिया के उनको तौड़ दिया जाए टुकड़ों में

और फालतू पुरज़ों की तरह इस्तेमाल किया जाए; इसकी वजह से बरतानिया अपना पैसा लेने के लायक हुआ।

जब हुसैन हिल्मी एफ़ेंदी अंकारा में काम कर रहे थे तो हर मौके पर इस्तंबुल जाते थे।जब जाना मुश्किल होता था, वो अपने आपको इस्तानबुल ख़त लिखकर शांत करते थे।अबदुलहकीम एफ़ेंदी, अपने मुबारक -हाथों- से लिखकर जवाब देते, जो के इस्तानबुल से ममक के गाँव में जाते थे, जिसमें वो कहते थे:

"अज़ीज़ हिल्मी! – मैं अल्लाहु तआला का शुक्रगुज़ार हूँ के जैसा तुमने लिखा के तुम अच्छी सहत में हो।मुझे ये जानकर बहुत खुशी हुई के तुम (अपने भाई) सेदाद को अवामिल [**अवामिल:** एक मश्हूर नहू की किताब।] पढ़ा रहे हो।मुझे पता है के ये बग़ैर वजह के नहीं है के तुम्हें शहर से दूर रहने पर मुकर्रर किया गया है।तुम दोनों को बहुत फायदा हासिल होगा... मैं तुम्हे अपना सलाम [**सलाम:** इस्लाम में एक दूसरे पर अमन और रहमतें भेजने का तरीका।] भेजता हूँ और तुम्हारे लिए, तुम्हारी माँ और बहनों के लिए दुआ करता हूँ।मुझे जल्दी-जल्दी लिखा करो।मुझे तफ़सील से अपनी हालत के बारे में लिखो! मुआएने के बाद अपनी हालत के बारे में मुझे फौरन लिखो!"

"मेरे बहुत प्यारे हिल्मी और सेदाद! – मुझे तुम्हारा प्यारा ख़त मिला।जो मुझे [अल्लाहु तआला] का शुक्र अदा करने और उसकी तारीफ़ करने का सबब बना... उसने अवामिल का तर्जुमा बहुत ख़ूबसूरती से किया।उसके बाद, उन्हें वो बहुत अच्छी तरह समझ आया।हिल्मी को उससे बहुत फ़ायदा होगा।सेदाद को उससे बहुत फ़ायदा होगा।अवामिल में एक शरह और मुरब है।मैं उनको किसी के ज़रिए भेज रहा हूँ।दरअसल, नहव के सिलसिले में काफ़ी है।उस समय, एक किमयाई एनजिनअर के साथ-साथ तो सरफ़ और नहव के भी एनजिनअर बन गए हो।दूसरे ऐनजिनअर की कीमत

कम हो रही है क्योंकि उनका नंबर बढ़ रहा है। ये ऐनजिनअर की शाखा, बहरहाल, अपने आप में बहुत कीमती है, और ज़्यादा कीमती बन गई क्योंकि शाखा के माहिर या तो बहुत कम हैं या फिर ग़ायब हो गए। इस समय तुम्हारा वहाँ होने का सबब भी यही है, ऐसा लगता है मानो तुम्हें खुशहाली मिलेगी (दावत-ए-अज़ीमा)। हम सलाम और दुआएँ भेजते हैं।"

"हिल्मी! – मुझे बहुत सकून और ख़ुशी हासिल हुई तुम्हारा मौजूदा ख़त पढ़कर। मैं चाहता हूँ जो तुमने लिखा है उसपर यक़ीन रखो। मुझे दस्त आवर दवा से बहुत फ़ायदा हुआ। अगर ये आसान हो, तो कुछ और तैयार करो और उसे मुझे भेज दो!"

"अलेकुम सलाम! – ये सुन्नत [**सुन्नत:** एक काम जो हमारे रसूल ने किया और पसंद किया, इसके अलावा एक कम दरजे वाला फर्ज़ है एक वाजिब की निस्बत।] नहीं है के जब कोई कुरआन की किरअत कर रहा हो तो उसे अदाब (सलाम) करो। जब सलाम किया जाए तो, बहरहाल, ये वाजिब [**वाजिब:** एक काम जो हमारे रसूल कभी नहीं छोड़ते थे, ये बिल्कुल वैसे ही ज़रूरी है जैसे के एक फर्ज़।) के जवाब दिया जाए: किरअत करने वाला रूकेगा और उसी समय सलाम करेगा, उसके बाद वो अपनी किरअत दोबारा शुरू करेगा, क्योंकि किरअत करना (कुरआन की) एक सुन्नत है जबके सलाम का जवाब देना एक वाजिब है। एक वाजिब न तो छोड़ा जा सकता है न उसमें देरी की जा सकती है एक सुन्नत पर फ़ौकियत देने के लिए, लेकिन एक सुन्नत को हम एक वाजिब के लिए छोड़ भी सकते हैं और देरी भी कर सकते हैं। तुम्हारे दूसरे सवाल के लिए, तुम उसे देखो और समझो पहले! असल में, इज़्ज़त करने (हुरमत) का मतलब है 'हक़' (सीधा) इस सिलेसिले में। 'बी-हक़्क़-ए-मौहम्मद', अल्लाहु अपनी रहमत नाज़िल करे और महफ़ूज़ रखे उसे, इसका मतलब बी हुरमत-ए मोहम्मद **मौकुफ़ात** के लेखक ने ये मान लिया के

‘हक्क़ हक्क़-ए-शरीअत’ (एक कानून हक्क़) या एक हक्क़-ए-अक़ली (एक मन्तक़ी हक्क़) है। अगर ये मामला है, तो वो सही हो सकता है। ये दुआ पुराने दिनों से इसी तरह पढ़ी जा रही है। ये सही है के इसमें न न तो कानूनी न ही मन्तकी, कोई एहसान अल्लाहु तआला पर किसी भी तरह नहीं हो रहा। ’हक्क़’ के ज़रिए ये इसका मतलब नहीं है। शायद इसको तर्जुमा करने वाले ने ग़लत समझा। मेरे अज़ीज़! तुम्हारी तरह, हर कोई इस मुसिबत से परेशान है, दुख से भरा हुआ है उसी दुख से। अगर ऐसा नहीं होता तो, लोग दूसरी तरह से मुसिबत में होते। ये ‘अदात-अल्लाह (अल्लाह का कानून) है। एक अरबी जोड़े ने कहा, ‘कुल्लु मन तलकाहू यशखुह दहराहू।/या लएता शरी हाज़िनी द-दुनिया लिमान?” (जिसके साथ भी तुम्हारी मुठभेड़ होती है वो अपनी हालत अपने वक़्त की शिकायत करता है।/ओह अगर मैं ये जान पाता के ये किसकी दुनिया थी।) तो तुम अब भी अच्छे हो! [तुम्हारा दुख तारिफ़ के काबिल है, और ये एक अच्छे इंसान होने की निशानी है।]”

“हिल्मी! – मैं तुम्हारे ख़त के लिए शुक्रगुज़ार हूँ। मैं तुम्हारी अच्छी सेहत के लिए अल्लाहु तआला का शुक्र अदा करता हूँ। तुम ये जानते हो के ये एक बहुत बड़ी नएमत और बख़्शीश है चाहे एक हिस्से को ही पढ़ना **मकतूबात** के [अल-इमाम-अर-रब्बानी अहमद अल-फ़ारूकी अस-सिरहंदी के ज़रिए], इसके जैसी इस्लाम मज़हब में नहीं लिखा गया और जो तुम्हे तुम्हारे दीन (मज़हब) और दुनिया (संसार) में सबसे ज़्यादा मदद करेगी।” हाथ से लिखी हुई नक़ले इन ख़तों की जो के इस्तानबुल से मम्क गाँव में भेजीं गई वो एक फाइल जिसका नाम [यादगार ख़त] है उसमें रखी हुई हैं।

मम्क में, हुसैन हिल्मी एफ़ेंदी ने कई बार पढ़ा और बहुत कोशिश करी अल-इमाम भर अर-रब्बानी और उनके बेटे मौहम्मद मासूम की **मकतूबात** के तुर्की तर्जुमे को समझने की, उनमें से हर एक के तीन हिस्से थे, और उन्होने छः

हिस्सों को क्रम के अनुसार उसके खुलासे की फ़हरिस्त एक जगह करी।जब वो इस्तानबुल आए, तो पूरी **3846** इन्द्राज अपने खुलासे का सय्यद अबदुलहकीम एफ़ेंदी को पढ़कर सुनाया, जिन्होने उसे कई घंटो तक सुना और उसे बहुत पसंद किया।जब अबदुलहकीम एफ़ेंदी ने कहा, "ये एक किताब बनी है।इसको ख़िताब दो बेशकीमत तहरीरें," हुसैन हिल्मी एफ़ेंदी को बहुत हैरानी हुई, लेकिन उन्होने आगे फरमाया, "क्या तुम्हें ये नहीं मिला? क्या कभी इनकी कीमत लगाई जा सकती है?" वो इन्द्राज जो पहले हिस्से से ली गई थीं वो बाद में तुर्की की **मकतूबात तीरमज़ी** कें आख़िर में क्रम के मुताबिक़ फहरिस्त में शामिल की गई।

1359 (1940) में, हिल्मी इशिक ने अपने उस्ताद अबदुलहकीम एफ़ेंदी से पूछा, "जनाब, मैं शादी करने का इरादा कर रहा हूँ।आप क्या कहते हैं?" "तुम किससे शादी करोगे?" उनके उस्ताद ने पूछा। "उससे जिससे आप इजाज़त दें।"

"वाक़ई ?"

"जी, जनाब।"

"तब ज़ीया बैए की लड़की तुम्हारे लायक है।"

जब हिल्मी एफ़ेंदी ने चाहा के उनके अंकारा जाने से पहले बातचीत हो जाए, तो अबदुलहकीम एफ़ेंदी ने दूसरे दिन ज़ीया बैए को बुलाया, और एक लम्बी बातचीत के बाद, उनका वादा पूरा हुआ।एक हफ़्ते बाद, हिल्मी एफ़ेंदी दोबारा इस्तानबुल आए, और मंगनी की अँगूठी में पहना दी, जिन्होने इस्लामी निकाह [शादी का समझौता जैसा के इस्लाम ने बताया है।**सआदत-ए-इबादत** के पाँचवे हिस्से के बारहवें बाब में निकाह के बारे में तफ़सील से जानकारी है।] भी करवाया हनफ़ी और शाफ़िई मस्लक़ों के मुताबिक़

नगरपालिका में नामज़द कराने के बाद। शादी दो महीने बाद की ठहरी। दावत, अबदुलहकीम एफ़ेंदी हिल्मी एफ़ेंदी के पास बैठे थे और, रात की इबादत के बाद, अकेले भी एक नमाज़ पढ़ी। जब एक हफ़्ते बाद वो जोड़ा उसने मिलने गया तो, अबदुलहकीम एफ़ेंदी ने तवज्जुह किया दुल्हन की तरफ़ और बोले, "तुम मेरी दोनों हो मेरी बेटी और बहू भी हो।"

जब हिल्मी एफ़ेंदी हमामुनू, अंकारा में अपने घर में थे खिज़ा के मौसम में **1362 (1943** A.D.), में तो फ़ारूक बैए के बेटे बैरिस्टर नेवज़ाद इशिक आए और कहा, "जनाब, अबदुलहकीम एफ़ेंदी हमारे घर पर आपका इंतज़ार कर रहे हैं।" "क्या तुम मज़ाक कर रहे हो? वो तो इस्तानबुल में हैं! तुम क्यों कह रह हो के वो मेरा इंतज़ार कर रहे हैं?" हिल्मी एफ़ेंदी ने पूछा। नेवज़ाद बैए ने क़सम खाई और दोनों एक साथ हासी बेरम फारूक बैए के घर पहुँच गए। वहाँ उन्हें पता चला के पुलिस अबदुलहकीम एफ़ेंदी को उनके घर अय्युब, इस्तानबुल, से इज़मीर और बाद में अंकारा ले गई। बहुत सारी अरज़ियों के बाद, उन्हें उनके भतीजे फ़ारूक बैए के घर में पुलिस की निगरानी में रहने की इजाज़त मिली। वो बहुत ज़्यादा कमज़ोर और थके हुए हो गए थे इस परेशानी और सफ़र से। उन्होने हिल्मी एफ़ेंदी से कहा, "मेरे पास हर रोज़ आना!" हर शाम हिल्मी एफ़ेंदी उनके बाज़ू में बाज़ू डालकर उन्हे सोने के कमरे में जाने में मदद करते, उनके ऊपर कंम्बल डालते और सूरह अल-फ़लक और अन-नास पढ़कर उनके ऊपर फूँकते और चले जाते। जो मुलाकाती दिन में मिलने आते वो कमरे में दूसरी तरफ़ लाईन से रखी हुई कुर्सियों पर बैठते और जल्द ही चले जाते। वो हमेशा हिल्मी एफ़ेंदी को अपने बिस्तर के सिरहाने बैठाते और धीरे-धीरे उनसे बातें करते रहते। जब उनको बागलूम, जो के एक गाँव था अंकारा के पास वहाँ दफ़नाने ले गए, तो हिल्मी एफ़ेंदी कब्र में चले गए और अहमद मेक्की एफ़ेंदी, अबदुलहकीम के बेटे के हुक्म पर कुछ मज़हबी फराईज़ अदा किए। मेक्की एफ़ेंदी ने ये भी कहा, "बाबा हिल्मी को बहुत चाहते थे। वो

उनकी आवाज़ जानते हैं। हिल्मी तलकीन [**तलकीन:** अलफ़ाज़ बताए जाते हैं और मरने वाले शख़्स के दिल और रूह को इमाम की जानकारी के असर से सुनाई देते हैं।] पढ़ेंगे!" ये इज़्ज़त अफ़ज़ाई का काम, भी, हिल्मी एफ़ेंदी को बहुत महसूस हुआ। कुछ सालों बाद हिल्मी एफ़ेंदी ने एक मारबल की तख़्ती, जिस को उन्होने इस्तानबुल में लिखा था, वो उनकी कब्र के सिरहाने रख दी। उन्होने एक मारबल की तख़्ती वेन में हज़रत सय्यद फ़हीम की कब्र पर भी रखी और इस्तानबुल में अबदुलफतेह, मौहम्मद अमीन तौक़दी और सरकेस हसन बैए के मज़ारों की मरम्मत करवाई। उन्होने अबदुलहमीद हन ii की मरहूम बीवी, बैएहिस मिआन सुल्तान की जनाज़े की इबादत की रहनुमाई की क्योंकि उन्होने ये इच्छा की थी, 1389 (1969 A.D.) में, और उन्होने याहिया एफ़ेंदी कब्रिस्तान में उनकी कब्र पर एक मज़ार बनवा दिया। 1391 (1971 A.D.) की खिज़ा में, वो देहली, देऊबंद, सिरहिंद और कराची तश्रीफ़ लाए और, उन्होने देखा के हज़रत सना अल्लाह और मज़हर-ए-जान-ए-जनान की बीवी की कबरें पानीपत के शहर में पैरों के नीचे कुचला जा रहा है, तो उन्होने पाँच सौ डॉलर उनकी मरम्मत और हिफ़ाज़त के लिए ख़ैरात किए।

हुसैन हिल्मी एफ़ेंदी 1997 में बरसुआ मिलटरी स्कूल में केमिस्ट्री के अध्यापक भरती हुए बाद में वह वहाँ के प्रिंस्पल बन गए। उसके बाद वह कुलेली (इस्तानबुल) और एरज़िंकन फौजी हाई स्कूल में कमिस्ट्री के अध्यापक बने बहुत सालों के लिए। सेंकड़ों अफसरों को पढ़ाने के बाद वह 1960 डिएठेठ के, बगवत में वह सेवा नियुक्त हो गए! उसके बाद वह गणित और केमिस्ट्री पढ़ाने लगे वेफा इमाम खातिब, कगहुगत, बकरिकीए और बहुत से इस्तानबुल के हाई स्कूलों में! आपके बहुत से वफादार जवानों को चालू किया! पढ़ाई को बग़ैर ख़त्म किए उना ने मरकज़ फारमेसी यसिलकोए इस्तानबुल के शहर में है 1962 में खरीद ली और उस में वह मालिक, मेनेजर बन कर डिसपेन्सरी के वहाँ के लोगों की सेहत के लिए सेवा करी बहुत सालों तक। जब

वह कलेली मिलटरी हाई स्कूल में पढ़ाते थे तो उन्होने माकुह, मन्कुह, यस्ल और फुरू सिखी जो मिलती जुलती थी बहुत से मस्लक, तफसीर और हदीसों से जो निचोड़ था अहमद मक्की एफ़ेंदी जो मरहूम उसकुदर के मुफ्ती थे (स्कुठारी) के मुफ्ती थे और बाद में नेदिकोए इस्तानबुल में। हुसैन हिल्मी एफ़ेंदी इजाज़त-ए-मुल्लका से ग्रेजुऐट हो गए (सरठिफिकेट पूरी अथोरठी के साथ) मज़हबी मालूमात देने के लिए **1373 (1953)**।

उन्होने **सेआदते-ए-एबेदिय्यी** शाया करी [**1200** पन्नों की पुस्कत तुर्की ज़बान में जो दुनिया की मज़हबी जानकारी के लिए। कुछ इसके पठिको इंग्लिश में अनुवाध्य किया गया **1,2,3,4** और पाँच भाग में। इसका अरबिक अनुवाद किया जा रहा हैं।] (सआदते अबदिया) **1956** में। उन्होने **1967** में इसकि किताबेवी इस्तानबुल में इजाद की और **1396** में वकफ इख़्लास बनाया (**1976** A.D.) उन्होने दुनिया में तुर्की, जर्मन, फ्रेंच, इंग्लिश और अरबिक में छपवाकर जानकारी दी और हज़ारों ख़त मुबारकबाद के काबीलियत के, प्रशन्सा के उन को मिले। उन का कुछ काम जापानी, एशियन और अफरीकन भाशाओं में अनुवाध्य किया गया। वह हमेशा कहते थे कि ना ही उन में कावीलियत है ना ही हिम्मत है यह सब करने के लिए यह सब रूहानी मदद और दया है हज़रत सय्यद अबदुल हकीम एफ़ेंदी की और दुआएं हैं उनकी बहुत सारी मुहब्बत की और इज़्ज़त इस्लाम की मालूमात के लिए।

हुसैन हिल्मी एफ़ेंदी हमेशा यह कहते थे मैंने सुहबा में ज़ाएका और सय्यद अबदुलहकीम एफ़ेंदी के लफ्ज़ में पाया जो और कही नही था और सबसे ख़ुशगवार लम्हे वह थे जो मैंने सय्यद अबदुलहकीम एफ़ेंदी के साथ गुजारे थे। वह जब वह दिन याद करते हैं तो उन की नाक की दुखने लगती है और उन से अलग होने का अफसोस होता है। वह बार-बार उन लम्हो को दोहराते थे:

"ज़ी-हिज़र-ए दोस्तिान, खुन शुद दरून-ए-सिना जान-ए मन,
फीराक-ए-हम नशीनान सोखत, मगज़ ए-ईस्तखांन- एमन!"

(क्योंकि में अपने जानशीन से दूर हूँ, मेरी रूह चिल्लाती है छाती से ख़ून के आंसू निकलते हैं;

उन से बिगड़ना जिन के साथ हम बैठते थे और एक जान थे)।

जब मुस्लिम आलिमों ने हुसैन हिल्मी एफ़ेंदी की पुस्तक को पड़ा और बयान किया रोती हुई आँखों से।कहा अल इमाम- अर-रब्बानी और अबदुलहकीम अरवासी ने कहा कलाम-ए-किबर, किबर-ए-कलामस्त (घड़ो के शब्द बहुत बड़े होते हैं) वह बार-बार हवाला देते थे जो अब्दुलहकीम एफ़ेंदी कहते थे:

"तुम ताज्जुब क्यों करते हो हानि को देख कर जो आ रहा है नुकसान देने के लिए! तुम उस से अच्छाई कैसे सोच सकते है? मुझे ताज्जुब है तुम्हारे ताज्जुब पर।वह शहर-ए-मेहद (बग़ैर मिला नुकसान)! उसके शब्द ताज्जुब वाले नहीं होंगे।हाँ अगर वह कोई अच्छी चीज़ करते देखो तो ताज्जुब मेहसुस करो! अपने आप से कहते है कि यह कुछ अच्छा कैसे कर सकता है।?"

"मुस्लिम आलिम अपने आप में पूरे इन्सानी शख़्स हैं।हम उन के बारे में गलत नहीं कह सकते।अगर हम उन के बीच रह चुके हैं।हम उन जैसी शख़्सियत नहीं कहलाएगें।अगर हम खो जाते तो हम को कोई देखने वाला नहीं था!"

"अगर ठेक्केस बन्द नहीं होते (ठेक्के: वह स्कूल है जहाँ मुरशिद दूसरे की जानकारी दे) बहुत सारे मोल्वी को शिक्षा दी जाती!"

“मुझ को यह मौका नहीं मिला कि में मुसलमानों को जानकारी दे सकता।”

“अगर में बाहरी भाषा बोलता तो में इस्लाम की और खिदमत करता।”

“इस्लाम का सबसे बड़ा शत्रु बरतानिया है।उन की कोशिश थी कि इस्लाम का निशान मिटा दें अपनी सारी फौजी ताक़त से, बेतादाद सोने के सिक्के की आबादी से जमा करके मुख़्तसर यह सारी अपनी ताक़त लगा दी।तमाम कोशिशों के बावजूद नुकसानात पहुँचाकर बिट्रिश में इस्लाम दूसरे नम्बर पर; जो उन के लिए ख़ोफनाक दुश्मन इस्लाम सेम्सेदीन गुनालठे।”

“एक समझदार और सलीके वाला व्यक्ति खाना नहीं खाता जो ख़ुद उसने पैदा हुए बच्चे के खाली ठोइलठ में रखा हो।वह नफ़रत करेगा जब वह याद करेगा उस चीज़ को।उन चीज़ों को प्रयोग करना जिसपर भरोसा ना हो उस ही तरह का हाल पैदा करता है।वह व्यक्ति जिस का इमान पक्का होगा और वफादार होगा इस्लाम का इस तरह की चीज़ प्रयोग नहीं करेगा ना ही वह दूसरे के कहने में आएगा” ना ही हर कोई समझ पाएगा अल इमाम-अर रब्बानी की **मकतुबात** को; जो ना ही हाफिज़ शीराजी ना ही **खम्सा** की कवीता में।हम यह समझाने के लिए नहीं बल्कि दया करने के लिए पढ़ते हैं।

“नमाज़ पढ़ने का मतलब अल्लाह तआला की तरफ़ तवज्जो करना।ख़ुदा की रहमत है इनाम उन पर जो शरियत (इस्लाम के कानून) के हिसाब से नमाज़ पड़ते हैं इस दुनिया में।अल-इल्म अलादुन्नी (जिनको जानकारी अल्लाह की तरफ़ से होतो दिल से वह औलिया है) पर अल्लाह की रहमत है।यह इल्म (जानकारी की शाख) की जानकारी **72** डिग्री से शुरू होता है: जो निचली डिग्री पर होता है वह जानता है कि एक पेड़ पर कितने पत्ते है

और वह फर्क बता सकता है शकी (बुराई) आदमी में और अच्छे आदमी में! ऐसे लोग अपनी कब्रों में भी नमाज़ पढ़ेगें।इस तरह की नमाज़ में कयाम (खड़ा होना) या रूकु (झुकना) नहीं होता: इसका मतलब अल्लाह तआला की तरफ़ से रूजु होना”

यह वसीयत **24** रब्बी-उल-अव्वत **1910** में हुसैन हिल्मी इशिक ने प्यार की जो मिलती है **24** तशरीनी अव्वत **1989** मंगलवार के साथ:

दुनिया में आठ तरह के व्यक्ति होते हैं:

1- अकीदतमन्द जो नेक (दीन्दार: अच्छे) होते हैं।वह कहते है कि वह मुसलमान हैं।वह अहल अस सुन्ना में यकीन रखते हैं।वह व्यक्ति जो अहल अस सुन्ना में यकीन रखता है वह सुन्नी कहलाता है (सुन्नीत)।वह चारों मस्लक में से एक मस्लक को मानता है अहले सुन्ना की।वह उस में हर वह चीज़ मानता जो शरियत बताती है।वह हर चीज़ अपने मस्लक के अनुसार करता है।वह हराम को नकारता है (जो इस्लाम में मना है)।अगर वह अनजाने से कोई गलती कर देता तो वह इस के लिए तौबा करता है।अपने बच्चों को प्राइमरी स्कूलों के भेजने से पहले वह सालिह इमाम या कुरानुल करीम पढ़ाने वाले उस्ताद के पास भेजता है।वह कुरानुल करीम को याद करने के लिए सिखाने के लिए और सूरत याद करने के लिए जो नमाज़ में पढ़ सके इन सब के लिए संघर्ष करता है और इल्मी हाल याद करता है।उसके बाद फिर जब यह सब सीख जाता है तो फिर स्कूल भेजता है प्राइमरी में।फिर हाई स्कूल भेजता है उसके बाद विशविध्यालय पढ़ने के लिए।यह ज़रूरी है कि वह मज़हबी जानकारी सीखे और प्राइमरी स्कूल जाने से पहले उनको नमाज़ पढ़नी शुरू करनी चाहिए रोज़ाना।वह बाप जो अपने बच्चों को इसके अनुसार नहीं चलाता सालिह मुस्लिम नहीं हो सकता।वह और उस के बच्चे नर्क में जाएंगे।जो इबादत वह कर चुके होंगे यानि यात्रा उनकी नर्क में ले जाने से

नहीं बचा सकते। वह मुसलमान जो सालिह होगा वह कभी भी नर्क में दाख़िल होगा।

2- वह अकीदतमन्द जो **असामान्य** होगा। वह कहेगा वह मुसलमान है, और वह मुसलमान भी होगा। लेकिन वह सुन्नी नहीं होगा। वह बग़ैर मस्लक के होगा। दूसरे शब्दों में वह जो बात अहल सुन्ना उस को बटाएगें यह उन पर विशवास नहीं करेगा। इसलिए कोई भी उस की इबादत मनज़ूर नहीं होगी। वह नर्क से नहीं बच सकता। अगर वह इबादत नहीं करता और हराम करता है वह नर्क में रहेगा इन सब चीज़ों के लिए भी। क्योंकि उसकी असामान्य विशवास उसको अंधविशवासी बना देगा वह हमेशा नर्क में रहेगा। एक उदहारणा वह लोग जो शीत्ते ग्रुप जो होगें जो कहलाए जाते हैं **इमामिया।**

3- पाप अकीदतमन्द कहते हैं कि वह मुसलमान है और वह ऐसे हैं। वह सुन्नी भी हैं। वह अहल सुन्ना पर विशवास भी करते हैं। परन्तु फिर भी वह कुछ या सारी इबादत छोड़ देते हैं। वह हराम भी करते हैं। ऐसे पाप को मानने वाले नर्क की आग में जलेगें अगर वह तौबा नहीं करते या शफआत (हुज़ूर 'सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' की शफाअत किसी औलिया की या किसी सालिह मुसलमान की) या अल्लाह तआला की माफी से भी मेहरूम रहेगें। लेकिन यह लोग हमेशा नर्क में नहीं रहेगें।

4- पैदाइश से ना मानने वाला व्यक्ति जिस के माँ बाप (हो या) ना मानने वाले हों। यह अकीदतमन्द नहीं कहलाते। वह यह विशवास नहीं करते कि मुहम्मद 'सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' नबी थे। यहुदी और ईसाई नहीं मानते आसमानी किताब से। कमुयनिस्ठ और फ्रीमेसेन्स नहीं मानते बग़ैर किताब के। वह यह नहीं मानते कि मरने के बाद दोबारा उठाए जांएगे। लोग जो बुतों की या निशानों को पुजते हैं वह **मुशरिक** कहलाते हैं। ना मानने वाले हमेशा नर्क की आग में जलेगें। कोई भी उनका देवता जिसको वह पुजते थे कोई बचा नहीं

पाएगा ना ही नर्क की आग से।अगर कोई ना मानने वाला मरने से पहले मुसलमान हो जाता है उसको माफ कर दिया जाएगा और वह सालिह मुस्लिम हो जाएगा।

5- एक **मुर्तद** (बदल जाए) वह व्यक्ति जो इस्लाम को छोड़ दे और ना मानने वाला बन जाए।जो भी पूजा या अच्छे काम उसके किए होंगे जब वह मुसलमान था सब ख़त्म क रदिए जाएंगे और उसकी मौत बाद कोई कीमत नहीं होगी।अगर वह दुबारा मुसलमान हो जाता है तो उस की माफी मिल जाएगी और वह बिल्कुल सच्चा अकीदतमन्द बन जाए तो।

6- मुनाफिक कहता है कि वह मुसलमान है।लेकिन वह मुसलमान नहीं होता।और वह दूसरे मज़हब को मानता है।यह दिखाता है कि वह मुसलमान है मुसलमानों को दिखाने के लिए।मुनाफिक ना मानने वाले से (अंधविशवासी) से भी ज़्यादा ख़राब है।वह ज़्यादा नुकसान पहुँचाने वाला है मुसलमानों को।आमतौर से मुसाफिक की गिन्ती बहुत ज़्यादा है।वह दूसरे है जो आज नहीं हैं।

7- ज़िन्दीक भी हमेशा कहता है कि वह मुसलमान है।लेकिन वह किसी भी मज़हब का सदस्य नहीं होता।वह मरने के बाद उठाए जाने पर विशवास नहीं करता।वह एक अलग तरीके का ना मानने वाला होता है।वह मुसलमानों को बरगलाता है इस्लाम के बारे में और मज़हब के अंदर टुकड़े करता है, वह अपने अकीदे को इस्लाम के नाम से पैश करता है।कादियानी भईस और बेकताशीस वही ग्रुप है।

8- मुलहिद भी अपने आप को मुसलमान कहते हैं और सोचते है कि वह मुस्लिम है।वह इस्लामी इबादत करते हैं और हराम से बचते हैं।लेकिन वह भटक जाते हैं अपने अकीदे से जो सुन्नत के अनुसार हैं और कुरान अल करीम

को इस तरह बयान करते हैं इस हद तक की कुछ अकीदे रद्द हो जाते हैं जिससे ईमान रद्द हो जाता है और ना मानने वाला बन जाता है। यह ग्रुप में नुसारिस और इसमाइली, दो शीत्ते सेकठर हैं और वहाबिस हैं। यह अपने आप को ख़ुद मानने वाले और सुन्नी कहते हैं जो हालांकि वह मानने वाले लोग होते है जैसे ना मानने वाले। जबकि वह व्यक्ति जो एक मानने वाला एक ना मानने वाला कहलाता हो ख़ुद ना मानने वाला बन जाता है पर ऐसे लोग ख़राब है और ज़्यादा नुकसान देने वाले हैं मुसलमानों की बजाए ना मानने वालो के।

हर समझदार आदमी दुनिया में आराम से शान्ती से ज़िन्दगी गुज़ारना चाहता है और बेशुमार ख़ुशियाँ पाना चाहता है और तड़पना नहीं चाहता है यानि तक़लीफ़ से बचना चाहता है। इसके बाद आख़िर में इस ने **सादात-ए-इबादात** किताब लिखी। मैंने यह दिखाने की कोशिश की है कि दुनिया में वह कौन सा रास्ता है जो हर तरह के व्यक्ति को ख़ुशहाल रख सके।

पहले मैंने ख़ुद इसको सीखने का प्रयास किया। काफी सालों तक मैंने सेंकड़ों किताबे पढ़ी। मैंने बहुत बारिकी से हिस्ट्री और तसव्वुफ़ पर खोज करी। मैंने विज्ञान की जानकारी के लिए अपने आप को बड़ी गहराई से उस में डाला। मैंने जाना कि बहुत अच्छी तरह से कि दुनिया में और आख़िरत में ख़ुशहाल ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए सालिह मुस्लिम होना ज़रूरी है। और सालिह मुस्लिम होने के लिए इस्लाम को सीखना और सिखाना चाहिए, किताबों के अनुसार जो मुस्लिम आलिम ने लिखी हो और **अहल-ए-सुन्नत**। एक अनपढ़ व्यक्ति मुस्लिम नहीं हो सकता चाहे वह नेक हो। मैंने अपनी किताब **सादात-ए-इबादात** में बताया है कि एक सालिहा मुस्लिम कैसा होना चाहिए। मुख़्तसर में:

1- उसको जो अहल-ए-सुन्नत ने पढ़ाया हो उसपर विशवास करे दूसरे शब्दों में वह सुन्नी होना चाहिए।

2- शरियत की पुस्तक जो चारों मस्लक में कोई एक हो पढ़नी चाहिए, वह शरियत को अच्छी तरह से समझे सीखे, अपनी इबादत उसके अनुसार करे, और हराम से दूर रहे। अगर कोई व्यक्ति ख़ुद एक मस्लक नहीं चुन्ता चारों मस्लक में से और वह अपने हिसाब से आसानी और आराम देखता है और चारों मस्लक को मिला देता है अपने फ़ायदे के लिए ऐसे व्यक्ति को बग़ैर मज़हब के कहते हैं। बग़ैर मज़हब वाला व्यक्ति अहले सुन्नत का रास्ता त्याग देता है। और वह व्यक्ति जो सुन्नी नहीं है वह या तो अपधर्मी होता है या अंधविशवाशी ना मानने वाला होता है।

3- वह जीने के लिए काम करता है। उसको हलाल तरीके से माल कमाना चाहिए, अपनी कमाई इस तरह से करे कि जिसमें अल्लाह तआला का हुक्म शामिल हो। हम इस उमर में रह रहे है कि एक गरीब व्यक्ति अपने भरोसे को बड़ी मुश्किल से बचा सकता है और शुद्वता से ना के अपने जाति मफ़ाद से। इन चीज़ों को हिफ़ाज़त और इस्लाम की सेवा। उसको चाहिए की नई वेज्ञानिक बदलाव को और लाभों को इस्तेमाल करो और उसका फ़ायदा उठाऊ। हलाल तरह से रोज़ी कमाना एक बहुत बड़ी इबादत है। किसी भी तरीके से कमाना जो रोज़ाना की नमाज़ को ना छोड़े और जो किसी तरह से हराम ना हो वह अच्छी और नेक है।

इबादत के लिए और दुनियावी चीज़ों के लिए लाभदायक और भाग्यवान हो सकती है अगर वह अल्लाह की रज़ा के लिए किया जाए, कमाऊ सिर्फ अल्लाह के लिए और दो सिर्फ़ अल्लाह के ख़ातिर; और मुख़्तसर में यह **इख़्लास** होना चाहिए। **इख़्लास** का अर्थ सिर्फ़ अल्लाह तआला के ख़ातिर और अल्लाह तआला से मोहब्बत करने के लिए। जब कोई किसी से मोहब्बत करता है वह उसको बार-बार याद करता है। उस का दिल हमेशा उसका (ज़िक्र) करता है; वह याद करता है और उसको चर्चा करता है।

अगर कोई व्यक्ति अल्लाह तआला से मोहब्बत करता है तो वह अल्लाह को बार-बार याद करता है, यानि उस का दिल हमेशा अल्लाह का ज़िक्र करेगा। यह ही कारण है, यह कुरान अल करीम बताता है, **“ज़्यादा ज़्यादा अल्लाह तआला का ज़िक्र करो।”** **कुननुज़-उद-दक़ाक़ा** किताब में यह हदीस शरीफ़ लिखी हुई है: **“लोग वह सबसे बड़े है जो अल्लाह तआला का ज़िक्र करते है।” “अल्लाह की रज़ा के लिए मोहब्बते के लिए यह है कि अल्लाह का ख़ूब ज़िक्र किया करो।” वह जो दूसरो से मोहब्बत करते है वह बार-बार उसका ज़िक्र करते है: “वह जो अल्लाह से बहुत मोहब्बत रखते हैं वह हर बुराई से बचते हैं”: “अल्लाह तआला उस व्यक्ति से ख़ुश होता है जो उसका ज़िक्र करते रहते है।” तसव्वुफ़** के आलिमों ने जो रास्ता दिखाया वह यह है कि अल्लाह तआला का ख़ूब ज़िक्र करो। इसको पाने का सबसे अच्छा रास्ता है कि किसी **मुरशिद-ए-कामिल** को तलाश करो, उससे मोहब्बत करो उसके बताए हुए अदाब को अपनाओं और उसको दिल से फ़ेज़ उठाओ।

मुरशिद-ए-कामिल एक इस्लामिक आलिम होता है जो अपने से पहले वाले मुरशिद-ए-कामिल से फ़ेज़ ले चुका होता है और फिर वह लोगों को फ़ेज़ देने लगता है यानि इस काबिल हो जाता है। जब वह इसकी योग्यता को पा लेता है तो वह लिखित अधिकार पत्र प्राप्त कर लेता है जो उसका मुरशिद उसको तस्दीक करता है कि अब यह पूरी तालिम ले चुका है। मुरशीद से पहले वाला मुरशीद फिर उसके बाद वाला यानि एक के बाद दूसरा और दूसरे के बाद तीसरा यह कढ़ी है ज़ंज़ीर की तरह जो रसूल्लाह ‘सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम’ के ज़माने से चली आ रही है। दूसरे शब्दों में मुरशीद-ए-कामिल जो प्राप्त करता है फ़ेज़, हालस और बरक़ात जो रसूल्लाह ‘सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम’ से चला आ रहा है मुरशीद के ज़रिए जो दिलों में दोड़ती है: जो फिर दूसरो के दिलों में जाती है।

मुरशीद और **मुरीद** जो फ़ज़े प्राप्त करना चाहते हों वह सालिहा मुस्लिम होने चाहिए। वह व्यक्ति जो सुन्नी अकीदे को ना मानता हो: यानि जो गलत बयानी करता हो सहाबे किराम के लिए और चारों मस्लक में से किसी एक की भी ना मानता हो या वह जो हराम से ना बचता हो जैसे की वह अपनी बीवी या लड़की को बग़ैर अपने आप को पूरी तरह से ढक कर या छुपा कर बाहर जाने को ध्यान ना देता हो या उनको ऐसा करने से रोकता ना हो, और जो अपने बच्चों को इस्लाम की तालीम देने की कोशिश ना करता हो और कुरान अल करीम किस तरह पढ़ा जाए इन सब के बारे में ना बताए तो वह सालिह मुस्लिम नहीं हो सकता और यह नामुम्कीन है कि वह मुरशीद हो। हर बात मुरशीद बताता है और वह हर काम अहल-ए-सुन्नत के अनुसार करता है और पढ़ाता है इल्मीहाल की पुस्तक। रसूलुल्लाह 'सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' की हिजरत के एक हज़ार साल बाद (हिजरत मदीना के लिए प्रवास करना) नाम दिया गया आख़िरज़मन (नया समय में) शुरू हुआ तो दुनिया के आख़िर की भविष्यवाणी की जब दुनिया में बहुत बढ़होतरी हो जाएगी यानि प्रतीकशा की। उस नये समय में, अल्लाह तआला अपने कहर के लक्षण दिखाने लगेगा और जलाल (प्रचंडता), और बुराई, मुसीबतें बढ़ने लगेगी। मज़हबी पढ़ाई ख़त्म होती जाएगी और आलिम, अहले सुन्ना, मुरशीद कामिल घठने लगेगें।

मुँह से ज़िक्र यानि "अल्लाह अल्लाह" बहुत बड़ा सवाब है (आख़िरत में इनाम मिलेगा) और दिल जो सबसे पहले ज़िक्र करेगा। परन्तु दिल से ज़िक्र वह करते है जो सालिह मुस्लिम होंगे और सालों से ज़िक्र कर रहे होंगे। अगर कोई मुरशीद-ए-कामिल किसी व्यक्ति को ज़िक्र करना पड़ता है और उसकी तवज्जहा दिलाता है यानि पूछता है अपने मुरशीद से कि इस व्यक्ति की मदद कर दिल से ज़िक्र करने के लिए तो उसका दिल जलदी से ज़िक्र करना शुरू कर देता है। अगर किसी व्यक्ति को कोई मुरशीद-ए-कामिल नहीं मिलता उसको किसी भी मुरशीद को याद करना चाहिए (वह जिसके बारे में सुन चुका

हो या पढ़ चुका हो)। यानि वह उसकी कल्पना करे और बड़े अदब के साथ उसके चेहरे को देखे और अपने दिल से उसकी तरफ़ तव्वजह करके मांगे उससे। इसको **राब्ता** कहते हैं। ख़्वाजा बुरहान उद्दीन जो एक आदरणीय इंडियन आलिम है उन्होने अपनी किताब **बरकात** के 17वे पेज पर लिखा है कि दिल से ज़िक्र करने के लिए अपने दिल को बहुत प्रयत्न करना पड़ता है। वह ऐसे कोशिश करे ऐसे जैसे उन्होने उनकी दया प्राप्त ना की हो। वह मुरशीद कामिल की तलाश करे। हज़रत ख़्वाजा बीकी बिल्लाह जो दिल्ली में है ज़्यारात करे उन से राब्ता करे। यह बड़े मुरशीद सलाह देते थे उनकी तरफ़ राब्ता करो वह जहाँ भी हों, उनकी कल्पना करे उनके चेहरे की ओर फ़ेज़ के लिए पूछे। उनकी इस सलाह पर आश्चर्य हुआ, ख़्वाजा अपने बड़े मुरशीद के नज़दीकी दोस्त के पास गए और कहा, "यह सलाह पहली बार किसी नोसिखया की तरह आई है जो पहली बार दी जा रही है। में एक ऊंचे अस्त्र की बात बताना चाहता हूँ; उन्होने कहा कि उन के पास कोई रास्ता नहीं था सिवाए इसके कि वह उसको अपनाते क्योंकि बिल्कुल संतुष्ठ थे कि मुरशीद-ए-कामिल के अलावा कोई और काबिल आदमी हो ही नहीं सकता, वह हमेशा कल्पना करते थे कि उनके चेहरे की और ख़ुद उन से मांगना शुरू कर देते थे। वह ख़ुद को भूल गए। उन का दिल ज़िक्र करना शुरू कर देता था। वह अपने दिल की अवाज़ अंदर से सुनता है जो शारीरिक प्रकार से निकलती है। **हज़रत-उल-कुदस** करामात पर प्रवचन किया है (चमत्कार होता है उस व्यक्ति से अल्लाह तआला से मोहब्बत करता है) हज़रत इमाम-ए-रब्बानी करामात के बारे में बयान करते है: "हज़रत मौलाना अब्दुल हाकिम सियालकोठी बड़े इंडियन आलिम ने जो दुनिया को मशहूर किताबें हैं में लिखा है: कि मैं हज़रत इमाम रब्बानी को बहुत लम्बे समय से जानता हूँ। हालांकि में उन के साथ सलंगन नहीं था, एक रात मैंने सपने में देखा वह मेरी तरफ़ तव्वजह करे हुए है। मेरा दिल ज़िक्र करने लगा, बहुत लम्बे समय तक ज़िक्र जारी रहा (प्राप्त करी बहुत सारी करामद गुप्त वरदान)। उन्होने दूर से मुझ को बताया इस तरह से जैसे **उवेस**। बाद में मैंने

सोहब प्राप्त करी, "यह 68 करामात से मिलती है जो यह है" हज़रत इमाम रब्बानी के एक रिश्तेदार ख़ुद उन की संगत चाहते थे। जिस के बारे में वह बताना नहीं चाहते थे। एक रात उन्होने वे किया कि सुबह वह बताएगें। उस रात उन्होने देखा कि वह ख़ुद उनके नज़दीक खड़े हैं एक किनारे पर। और दूसरी तरफ़ हज़रत इमाम रब्बानी उसको पुकार रहे हैं; यहाँ आओ, जल्दी आओ, जल्दी यहाँ आओ। तुम देर कर रहे हो, जब यह सुना तो दिल ने ज़िक्र करना शुरू कर दिया। दूसरे दिन सुबह को वह उनके पास गया और उसने बताया कि उसके दिल में क्या हुआ, उसने कहा: "यह सही हमारा रास्ता है। इसके साथ चलो।"

सूरत आले इमरान की 31वीं आयत में अल्लाह तआला कुराने करीम में फरमाता है, "बता दो उन को: अगर तुम अल्लाह तआला से मोहब्बत करते हो तो ख़ुद में तुम को स्वीकार करूंगा। अल्लाह तआला ख़ुद उन लोगों को स्वीकार करता है जो ख़ुद को अल्लाह के हवाले कर देते है और सब भूल जाते हैं (अगर तुम ऐसा करते हो)। **अल्लाह तआला बहुत मेहरबान और माफ करने वाला है।"** सूरत निसा की 79वीं आयत में अल्लाह ने फरमा दिया है: **"वह जो नबी यानि पैग़म्बर के हुक्म को माना उसने अल्लाह का हुक्म माना।"** हमारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते है, **"मेरे बताए हुए रास्ते पर चलो और मेरे बाद मेरे चार ख़लिफाओं के रास्ते पर चलो जो वह बतांए।"** दीनी आलिम चारों ख़लिफाओं के रास्ते पर चलत हैं उनको अहले सुन्ना कहते हैं। यह देखा गया है; अल्लाह तआला से मोहब्बत पाने के लिए ईमान का पक्का होना चाहिए जैसा कि आलिमों ने किताबों में लिखा है अहले सुन्नत उसकी एक-एक बात और कार्य इस तरह करे जैसे बयान किए गए हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि जो अल्लाह तआला से मोहब्बत करना चाहता हो वह उसके बताए हुए रास्ते पर चले और उस के अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारते। अगर कोई व्यक्ति यह दोनों रास्तों के अनुसार कार्य नहीं करते तो वह सालिह मुस्लिम नहीं

हो सकता। वह दुनिया और आख़िरत में आराम से और शांती से नहीं रह सकता।

यह दोनों चीज़ें या तो किताब पढ़ने से आती हैं या फिर किसी मुरशीद कामिल के बताए हुए रास्ते से। शब्दों को देखने से या तव्वजह देने से किसी मुरशीद कामिल की तरफ़ करने से दिल साफ़ होता है। और जब किसी का दिल साफ़ हो जाता है तो वह ख़ुशी मेहसूस करने लगता है ईमान की इबादत करने लगता है: और हराम उसको कड़वा यानि नफ़रत होने लगती है, गन्दा और बुरा लगने लगता है। इस दौरान अल्लाह तआला उसकी तरफ़ ज़्यादा मेहरबान होता है जो मुरशीद कामिल की संख्या में बढ़ोहतरी होती है और उसको पहचान में आसानी हो जाती है। जब हम दुनिया ख़त्म होने के निकट होगें अल्लाह तआला के गज़ब से बच जाएंगे और मुरशीद कामिल बिल्कुल निकट होगें और बाकी वो पहचाना नहीं जाएगा। ना जानने वाले, गलतबयानी करने वाले और गलतबयानी करने वाले लोग जो ज़ाहिर करेगें मज़हबी लोग और लोगों को गुमराह करेगें अज़ाब के बारे में, और रूकावट पैदा करेगें अल्लाह से मोहब्बत करने वालों में।

इस मुश्किल समय में जो ईमान सीख लेगें और शरियत को पढ़लेगें किताबों के ज़रिए जो अहले सुन्ना के आलिमों ने लिखी होंगी वह निजात प्राप्त करेगें, और जो घिर जाएगे भड़कऊ और डांवा डोल बातों में और उन किताबों में जो नाजानने वालो या गलत लोगों ने लिखी होगी सही रास्ते से भटक जाएगें। इस जैसे समय में अपने दिल को साफ करो और अल्लाह तआला के ज़िक्र की तरफ लग जाओ जितना जल्दी मुमकिन हो, तुम पुराने मुर्शीद-ए-कामिल के प्रत्यकशा करने लगो जहाँ भी जो भी तुम कर सकते हो अलावा इसके जब तुम नमाज़ पढ़ रहे हो। और यह इच्छा करो कि जो फ़ेज़ तुम्हारे दिल में जा रहा है वह रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से आर हा हैं और तुम्हारे दिलों में जा रहा है। यह आप अपने दिमाग में रख लो कि मुर्शीद-ए-

कामिल (रूहानी) जो रसूलुल्लाह के नज़दीकी हैं, और उसके बाद अल्लाह तआला अपनी दया हमेशा के लिए उसके दिल में डाल देगे। हज़रत मुहम्मद मायुम एक बड़े मुर्शीद अपनी **50**वें ख़त में लिखते हैं, "लगातार राब्ता रखना यकीनी मुर्शीद के निकट ले जाता है। उसकी वजह से उस को लगातार फेज़ मिलता रहता है आसानी के साथ। मुर्शीद के सामने रहने से और दूसरे फायदे होते हैं। मुरीद जो राब्ता नहीं कर पाए किसी खास तरीके से तो मुर्शीद की संगत में शामिल हो। यह वह संगत हैं जिसमें अस-हब-ए-किराम शामिल हुआ करते थे बहुत लगन के साथ। विज़ अल-करानी दूर से राब्ता कायम कर लेते थे: क्योंकि वह संगत प्राप्त नहीं कर पाते थे, "वह उस स्थान तक नहीं पहुँच पाए जो अस-हब-ए-किराम ने हासिल किए थे।" यह उन्होने **78**वें ख़त में लिखा है, "फेज़ और बराकात हासिल करने के लिए यह अवश्यक है कि वह ख़ुद को मुर्शीद-ए-कामिल के साथ जोड़ ले और उसकी रस्सी को मज़बूती से पकड़ले। असहाबा-ए-कराम रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से फ़ेज़ प्राप्त करते थे "इकास" के रास्ते से (तव्वज़हा)। इस ही तरीके से अगर कोई व्यक्ति फेज़ हासिल करना चाहता है किसी मुर्शीद-ए-कामिल से तो वह बड़े अदब और इख़्लास से उनके सामने हाज़िर हो। कोई भी यह मतलब नहीं कि वह जवान हो या बुज़ुर्ग ज़िन्दा हो या मुर्दा फेज़ हासिल करेगा। यह मेहसूस करो कि तुम मुर्शीद-ए-कामिल आप के सामने बैठे है और आप बड़े अदब के साथ और इख़्लास से उन के चेहरे की तरफ देख रहे हैं यह **राब्ता** कहलाता है। यह राब्ता बहुत फायदेमंद है उसके लिए जो हराम में डूब चुके हो और उसका दिल काला हो गया हो। जब तक वह इस हालत में रहेगा वह अल्लाह तआला के फेज़ से और बरकत से मेहरूम रहेगा। इसका मतलब है कि मांगों तलब करो। यहाँ मतलब यह है कि एक काबिल आदमी हेसियत रखता है फेज़ लेने को और देने को जो उसकी इच्छा ज़ाहिर करते हैं। यह व्यक्ति मुर्शीद-ए-कामिल होते है। "यह उन्होने अपने **165**वें ख़त में लिखा है," कि अपने दिल में मुर्शीद-ए-कामिल का चेहरा रखना यह राब्ता है। राब्ता मुरीद और मुर्शीद के

बीच एक बहुत बड़ी कड़ी है। जब राब्ता साफ हो जाता है वह जहाँ चाहे अपने मुर्शीद को पा सकता है, "यह **197**वें ख़त में लिखा है," जब राब्ता बन जाता है तो फिर कोई फर्क नज़र नहीं आता चाहे वह मुर्शीद कामिल से दूर हो या पास दया हमेशा बनी रहती है। यह दोनों बराबर नहीं हो सकती। सबसे ज़्यादा ताकतवर राब्ता है, हालांकि फर्क कम है।

उन्होने **89**वें ख़त पाँचवे भाग में बताया, "एक बड़े आलिम ने कहा है," अल्लाह तआला अपनी दया नहीं करते अगर वह आर्शिवाद ना देना चाहे, हमारा इस के लिए ज़रूरी हैं संगत। संगत की बरकत से एक मुरीद को फेज़ पहुँचता है मुर्शीद के दिल बनीस्बत उसके उसकी काबीलियत और मोहब्बत के पैमाने से जो उसके लिए मुर्शीद की मोहब्बत रखता है। वह अपनी बुरी आदतें छोड़ देता है जो मुर्शीद की अच्छी आदतों से बदल जाती हैं। यह ही कारण है कि वह कहते थे सब फानी हैं (रहने वाली, ना रहने वाली) शेख के अंदर (जो मुर्शीद कामिल होगा) जो शुरूआत है। (समय है) फना फिल्लाह (तसव्वफ़)। अगर तुम संगत प्राप्त नहीं करते तो तुम सिर्फ फेज़ प्राप्त करोगे मुर्शीद की तव्वज़ह के मुकाबले में। लोगों से प्यार करना अल्लाह तआला का बड़ा आशिर्वाद है। हाँ जब तुम यह प्राप्त करोगे तुम्हारे दिल से प्यार बाहर आएगा। तुम मुर्शीद की ना मौजूदगी में तव्वज़ह के कारण आशिर्वाद खोगे नहीं। तुम को शरियत का मालूम होना चाहिए उसके अनुसार कार्य करते रहो। तुम अपनी ज़िन्दगी खेल कूद कर और मक्कारी में बर्बाद ना करो। चीज़ें जो शरियत में मान्यता नहीं रखती **दुनिया** कहलाती है। आप सोचो यह सब चीज़ें बेकार हैं और जिन की कोई कीमत नहीं है ना कब्र में ना फैसले के दिन में। ख़ुद को बिदअत से बचा कर और सुन्नत पर अमल करने में फायदा है। [ख़ुद को सुन्नहा के प्रकार में डालने का अर्थ अहले सुन्नत पर विशवास और यकीन करना है]। अपने आप पर काबू करना और जो मना है उनको छोड़ना और सुन्नत को कायम करना। जब सुन्नत के बग़ैर यह सब गलत धंग

से करेगे वह बिल्कुल भी सुन्नत नहीं होगी वह बिद्दत होगी। मिसाल के तौर पर डाढ़ी का बहुत बड़ाना सुन्नत नहीं है। यह बिद्दत है। बहुत बड़ी ढाड़ी करना यहुदी की पहचान है, एक रफीदी डाढ़ी या वहाबी डाढ़ी। आप को बिदअती और मुलहिद के साथ दोस्ती नहीं करनी चाहिए [वह लोग जो बग़ैर मस्लक के या धर्म के हो वह सुन्नी नहीं हो सकते] वह ईमान के चोर हैं। वह आपका मज़हब बर्बाद कर देगें और ईमान को भी। [यह हदीस शरीफ में आया है कि बिदअती लोग नर्क में कुत्ते में बदल दिए जाएगें]।

हज़रत इमाम रब्बानी ने अपने **187**वें ख़त में लिखा है कि "अगर मुरीद को अपने मुर्शीद-ए-कामिल की कल्पना हर जगह दिखाई दे तो यह उसके राब्ते रखने की निशानी है बहुत मज़बूत तरीके से। राब्ता एक से दूसरे को फेज़ पहुँचाता है। यह सिर्फ कुछ ख़ास ही लोगों पर बड़ी दया होती है यानि चुने हुए लोगों पर।"

अब तक जो भी बयान किया गया है वह हदीस शरीफ के हवाले से है। **"हर चीज़ का कोई हवाला होता है। तकवा का हवाला आरिफ के दिल से है;" "जब औलिया दिखाई दे तब अल्लाह का जिक्र करो। किसी आलिम के चेहरे को देखना भी इबादत है:" जो उनके साथ रहते है वह राकी नहीं होंगे," अज़ाब मेरी उम्मत पर (बर्बाद करने) मज़हब को बर्बाद करने वालों के कारण फज़र में आएगा,"** और दूसरी हदीस शरीफों में भी आया है। यह हदीस शरीफ दूसरी हदीस में भी लिखा हुआ हैं जैसे की **कुनुज-उद-दकायक**।

वह हज़रत सय्यद अब्दुलहाकिम अरवासी मुर्शीद है कामिल थे यह हकीकत है कि वह सुरज़ की तरह साफ देख सकते जो उनके मुर्शीद ने इज़्ज़ात के ख़त में लिखा है जो (तुर्की की) की किताब के **161**वें पेज पर अपनी काबीलियत और ख़ूबसूरत तरीके से अपनी करामात के बारे में बयान किया है। उसका आशिर्वाद वाला चेहरा आसानी से याद हो जाता है, जैसे एक बार

फोटो देखता है। उस को याद करने के लिए पेज उठाने के लिए उसके चेहरे पर अल्लाह तआला की दया बनी रहती है और मुसलमानों के लिए अच्छा तरीका है। लोग हमारे जैसे जिनके दिल काले हो चुके हों बहुत सारे कारणों से वह बेशक बहुत दूर हैं बहुत बड़े आशिर्वाद को प्राप्त करने से। हमारा मकसद कामयाबी का रास्ता दिखाने का है। शायद लोगों के दिलों में कुछ ही लोग होंगे जो यह सुनेगें और आशिर्वाद दे और उससे मुहब्बत करने वाला बना दे।

या रब्बी हमारी कबरों को हमारी गलती को माफ कर दे और बख्श दे। हम पर अपना कर्म कर और हमारी छोटी से छोटी गलती को माफ फरमा। आमीन!

शब्दावली

तसव्वुफ़ से जुड़े इन्द्राज को अहमद अल-फारूकी अस-सरहिंदी (रहमतुल्लाही तआला अलैह) की **मकतूबात** से अच्छी तरह सीखा जा सकता है।

आबिद ः जो ज़्यादा इबादत करता हो।

अहल-अल-बैत ः हमारे पैग़म्बर (अलैहिस्सलाम) के सबसे ज़्यादा नज़दीकी रिश्तेदार: (ज़्यादा **उलेमाओं** के ज़रिए) अली, चचेरे भाई और दामाद; फातिमा, आपकी बेटी, हसन और हुसैन, नवासे (रज़ि-अल्लाहु तआला अनहुम)।

ऐम्मत-अल-मज़ाहिब ः इमाम अल मज़हब की जमा।

आलिम ः (अल्लामा) इस्लाम का एक मुस्लिम मौलवी।

अल्लाहु तआला ः अल्लाह जो सब चीज़ों से बड़ा है।

अन्सार ः वो मदीने के लोग जिन्होने मक्का की फ़तेह से पहले इस्लाम कुबूल किया।

अक़्चा ः एक सिक्का, पैसे की इकाई।

अराफ़ात ः मक्का के शुमाली इलाके में **24** किलोमीटर में खुला मैदान।

अरश ः जहाँ सातों आसमानों और कुर्सी की हद ख़त्म हो जाती है, जो सातवें आसमान से बाहर है और अरश के अंदर है।

असर-अस-सआदत ः ख़ुशहाली का दौर, पैग़म्बर (अलैहिस्सलाम) और चारों खलिफ़ाओं का वक़्त (रज़ि-अल्लाहु तआला अनहुम)।

औलिया ः वली की जमा।

औक़ाफ ः (वक़्फ की जमा) पाकीज़ बुनादें।

आयत (करीमा) ः कुरआन-अल करीम का एक बंद।

अज़ीमा ः मुश्किल तरीके से एक मज़हबी काम या अमल करना।

बासमला ः अरबी का फ़िकरा "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" (शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, और रहम वाला है।)

बातिल ः बेकार, गलत, बेअसर।

ज़िक्र ः (फ़िकरा में) याद करना, दिमाग़ में रखना, अल्लाहु तआला को हर लम्हा।

दरहम ः तीन ग्राम की वज़न की इकाई।

एफ़ेंदी ः उस्मानिया सल्तन्त के ज़रिए मुदब्बिर और ख़ास तौर पर मज़हमी उलेमाओं को ख़िताब दिया गया, ख़िताब करने का एक तरीका, मतलब "आपकी ऊँची शख़्सियत।"

फ़कीह ः (फ़ुकाह की जमा)।

फर्ज़ ः (एक काम या चीज़) जो कुरआन अल-करीम में अल्लाहु तआला के ज़रिए हुक्म किया गया हो।

फर्ज़ किफ़ाया ः वो फर्ज़ जो कम से कम एक मुसलमान के ज़रिए ज़रूर हो।

फ़ातिहा ः कुरआन अल-करीम की **114** सूरतों में पहली, जिसमें सात आयात हैं।

फतवा ः i) इजतिहाद (किसी एक मुजतहिद का); ii) नतीजा (एक मुफ़्ती का) फ़िकह की किताबों से निकाला गया के जो चीज़ उसमें दिखाई नहीं गई है उसकी इजाज़त है के नहीं, इस्लामी आलिमों के ज़रिए मज़हबी सवालों के जवाब देना; iii) रूख़सत।

फ़िकह ः वो इल्म जो मुसलमानों को बताता है के क्या करना चाहिए और क्या नहीं: आमाल, इबादत।

फ़ितना, फ़साद ः कुछ बातों और आमालों को इतना फ़ैलाना के मुसलमानों और इस्लाम को नुकसान पहुँचे।

फ़ुकह ः (फ़िकह की जमा)।

ग़ाबन फ़हिश ः (खरीदारी के वक़्त धोखा खाना) मौजूदा कीमतों से ऊँची कीमत; बहुत ज़्यादा कीमत होना।

ग़ाज़ा ः ग़ैर मुस्लिमों के साथ जंग, उनको इस्लाम में लाने के लिए, जिहाद।

गाज़ी ः मुसलमान जो ग़ाज़ा से मंसूब हो।

हदीस (शरीफ) ः i) पैग़म्बर (अलैहिस्सलाम) ने जो फरमाया; **अल-हदीस अश-शरीफ**: सारी हदीसें एक ही में; ii) **इल्म अल-हदीस;** iii) हदीस अश-शरीफ की किताबें। iv) अल हदीस **अल कुदसी, अस सही।**

अल हसन ः हदीसों की किस्में (जिसके लिए, सआदते अदबिया, ii देखिए)।

हज़रत ः इज़्ज़त वाला ख़िताब जो इस्लामी आलिमों के नाम से पहले लगाते हैं।

हज ः मक्का के लिए फर्ज़ ज़ियारत।

हलाल ः (काम, चीज़) जो इस्लाम में जाइज़ है।

हनफी ः (एक रूकन) हनफ़ी मस्लक का।

हनबली ः (एक रूकन) हनबली मस्लक का।

हराम ः (काम, चीज़) जो इस्लाम में मना हैं।

हसन ः (हदीस देखिए)।

हिजरा ः पैग़म्बर (अलैहिस्सलाम) का मक्का से मदीना हिजरत करना; अल हिजरा।

हिजाज़ ः अरेबियन पेनिनसुला और रैड सागर के किनारे जहाँ मक्का और मदीना हैं।

हिजरी ः हिजरा में।

हुजरात अस-सआदत (अल-मुअत्तरा) ः वो कमरें जहाँ पर पैग़म्बर (अलैहिस्सलाम) और आपके बाद के दो खलिफाओं की कबरें हैं।

इबादा ः (**इबादत** की जमा) बंदगी करना, रस्म, वो काम जिसे करके मरने के बाद **सवाब** (इनाम) दिया जाए।

ईद ः इस्लाम के दो त्यौहारों में से एक।

इजतीहाद ः (मतलब या नतीजा एक मुजतहीद के ज़रिए निकाला जाए जिसके ज़रिए) कोशिश करना एक आयत या एक हदीस के छिपे हुए मतलब को समझने की।

इल्म ः वाक़्फ़ियत, सांईस; **इल्म अल-हाल**: (किताबों की) इस्लामी तालिमात (एक के मज़हब की) जो हर मुसलमान को सीखनी चाहिए; **इल्म अल-उसूल**: तर्क वाली सांईस, ख़ासतौर पर फिकाह और कलाम की।

इमाम ः i) फाज़िल आलिम; ii) जमाअत में रहनुमा; iii) ख़लीफ़ (ख़लीफ़ा)।

ईमान ः विश्वास, इस्लाम में यक़ीन; कलाम, एतिक़ाद।

एतिकाद ः ईमान।

जाहिलिया ः जहालत का दौर, वो है, अरब में इस्लाम फ़ैलने से पहले।

जमाअत ः फिरक़ा; मुसलमानों का समूह (ईमाम को छोड़कर) एक मस्जिद में; साथी; मिलाप/संघ।

जारिया ः गैर-मुस्लिम गुलाम औरत जो जंग में पकड़ी गई।

जिहाद ः ग़ैर-मुस्लिमों या (नफ़स की) के ख़िलाफ़ जंग उनको (उसे) इस्लाम में लाने के लिए।

जुमा ः (सलात/नमाज़) जुमे की।

काबात अल-मुअज़्ज़मा ः मक्का में अज़ीम मस्जिद में एक बड़ा कमरा।

कलाम ः ईमान का इल्म; इल्म अल कलाम।

कलिमात अश-शहादा ः एक फिकरा जो शुरू होगा "अशहदु..." के साथ।इस्लाम के पाँच बुनयादी रूकन में से पहला; जो एक शख़्स का इस्लाम में ईमान का ऐलान करता है।

करामा ः (जमा-करामत)।

ख़लिफा ः जमा (खुलफ़ा) खलीफ़।

खारिजी ः (का) वो बिदअती मुसलमान जो अहल अल-बैत और उसकी आईन्दा नसल के मुख़ालिफ़ हों।

ख़ुतबा ः जुमे और ईद की नमाज़ों में जो सीख वाली तकरीर ईमाम मिनबर पर बैठकर देते हैं, जो के पूरी दुनिया सिर्फ़ अरबी में पढ़ा जाता है (अगर किसी और ज़बान में दिया जाए तो गुनाह है)।

मज़हब ः (जमा मज़ाहिब) वो सब जो एक ईमाम किसी (ख़ासतौर पर) फ़िकह या एतिक़ाद का गुफ़तो शुनीद करे।

मदीनात अल-मुनव्वरा ः मदीने का रोशन शहर।

महशर ः आख़िरी फ़ैसला।

मक्कात अल-मुकर्रमा ः मक्का का इज़्ज़तबख़्श शहर।

मकरूह ः (काम, चीज़) गलत, नापसंदीदा और परहेज़ किया गया पैग़म्बर (अलैहिस्सलाम) के ज़रिए।

मकरूह तहरीमा ः बहुत ज़्यादा ज़ोर देकर मना किया गया।

मालिकी ः (एक रूकन) मालिकी मस्लक का।

मारीफ़ा ः अल्लाहु तआला की ज़ात का ईल्म (ख़ुशबू, शख़्स) और सिफ़ात (मंसूब करना), जिसने औलियाओं के दिलों को मुतासिर किया।

मरवा ः (मरवाह): मस्जिद-अल-हराम के पास दो पहाड़ियों में से एक।

मस्जिद ः (इबादत करने की जगह); **अल-मस्जिद अल-हराम:** मक्का में अज़ीम मस्जिद; **अल-मस्जिद अश-शरीफ** (अस सआदत, अन-नबी) मदीना में मस्जिद, जो पैग़म्बर (अलैहिस्सलाम) के वक़्त में बनाई गई और बाद में कई बार बड़ी की गई, जिसमें आपकी कब्र है।

मौज़ू ः (हदीस की एक किस्म) हालतों में से एक कम होना (हदीस के लिए सही होने के लिए) हदीस के आलिम के ज़रिए रखा हुआ।

मिलादी ः ईसाइयों के दौर का; ग्रेगोरियन कैलण्डर का।

मीना ः मक्का के छः किलोमीटर शुमाल में एक गाँव।

मुबाह ः (काम, चीज़) जिसको न मना किया गया हो न हुक़्म किया गया हो; इजाज़त हो।

मुफ़सिद ः काम, चीज़ जिसे रद्द किया गया हो (ख़ासतौर पर सलात)।

मुफ़्ती ः अज़ीम आलिम जिन्हें फ़तवा जारी करने का हक़ हो।

मुहाजरिन ः वो मक्का के लोग जिन्होने मक्का फ़तह होने से पहले इस्लाम को कुबूल किया।

मुजादिद ः इस्लाम को कुव्वत ताक़त देने वाले लोग।

मोअजिज़ा ः वो चमत्कार जो नबियों को मिले, अकेले, और अल्लाहु तआला के ज़रिए दिए गए।

मोक़लीद ः मुसलमान जो तक़लीद की मशक करते हैं, जो ईमाम अल मज़हब को मानने वाला हो।

मुसतहब ः (काम, चीज़) करने से सवाब मिलता है लेकिन अगर छोड़ दिया जाए तो कोई गुनाह नहीं, कोई बेईमान नहीं अगर नापसंद किया जाए।

मोताज़िला ः इस्लाम में **72** बिदअती गुपों में से एक।

मोवाजहत अस-सादा ः किब्ले की दीवार के सामने वाली जगह [जहाँ पर पैग़म्बर (अलैहिस्सलाम) का मुबारक सर मिल रहा है] आपके मज़ार से जहाँ आने वाले खड़े होते हैं मज़ार की तरफ़ मुँह करके।

मुज़लफ़ा ः मक्का और अराफात शहरों के बीच का इलाका।

नफस ः एक इंसान के अंदर की वो ताक़त जो उसे आराम से हराम करने पर मजबूर करती है।

नजस ः मज़हबी तौर पर नापाक चीज़।

ना-महरम ः (एक रिश्तेदार मुख़ालिफ़ जिसका) जो मना (हराम) किए हुए में नहीं है शादी के लिए रिश्तेदारी की ईकाई में।

निकाह ः (समझौते के काम के लिए) इस्लाम में शादी।

पाशा ः उस्मानिया सल्तनत के ज़रिए मुकर्ररों, गवर्नरों और ख़ासतौर पर ऊँची पदवी वाले आफिसरों को ये ख़िताब दिया जाता था (अब जनरल और एडमिरल को)।

क़ाज़ी ः मुस्लिम जजः काज़ी।

क़िबला ः नमाज़ पढ़ने का रूख़ (इस्लाम में, काबात-अल-मुअज़्ज़मा की तरफ़)।

क़ुरैश ः अरब क़ौम क़ुरैश की, पैग़म्बर (अलैहिस्सलाम) के बुज़ुर्ग।

कुरआन-अल-करीम ः पाक कुरआन।

रकात ः नमाज़ में तरतीबवार किरअत करना और खड़े होना, रूकू में जाना और सज्दे में जाना (और कयाम करना), जिसमें कम से कम दो और ज़्यादा से ज़्यादा (फर्ज़ सलात के लिए) चार रकाअतें होती हैं।

रमज़ान ः मुस्लिम कैलेण्डर में पाक महीना।

रसूलुल्लाह (रसूल-अल्लाह) ः मौहम्मद (अलैहिस्सलाम) अल्लाहु तआला के नबी: अल्लाह के पैग़म्बर।

रोज़ात-अल-मुताहिहरा ः पैग़म्बर (अलैहिस्सलाम) के मज़ार और मस्जिद अश शरीफ के मिम्बर के बीच जगह।

रूखसा ः इजाज़त देना; मज़हबी काम या मामला आसान तरीके से करना।

सफा ः मस्जिद अल-हराम के नज़दीक की दो पहाड़ियों में से एक।

सहाबी ः (जमा अस-सहाबत अल करीम) मुस्लिम जिन्होने पैग़म्बर (अलैहिस्सलाम) को एक बार तो ज़रूर देखा हो; साथी।

सही ः i) मज़हबी तौर पर कानूनी, जाईज़; इस्लाम से यकसानियत ii) (हदीस की) खामुशी से तबदील हो जाए, बिल्कुल पक्की हदीस के आलिमों ने जो हालते बताई उनके मुताबिक।

सलात ः i) इबादत (सलाम के साथ) सलवात; ii) रसमी इबादत कम से कम दो रकाअत की; नमाज़, फारसी में; **सलात जनाज़ा** ः मैय्यत की नमाज़।

सलवात ः (सलात की जमा) ख़ास नमाज़ें जिसमें पैग़म्बर (अलैहिस्सलाम) पर बख़्शीशें और ऊँचे मरतबे अता किए जाते हैं।

सालिह ः (जमा सुल्हा) जो पाक होते हैं और अपने को गुनाह से परे रखते हैं, (उत्तरा: फ़ासिक); वली देखिए।

शाफिई-ए ः (एक सदस्य) शाफिई-ए मस्लक का।

शैख अल-इस्लाम ः इस्लामी रियासत में मज़हबी मामलात के दफ़तर का सरबराह।

शीत्ते ः इस्लाम में **72** ग़ैर सुन्नी जमाअतों में से एक।

शिर्क ः (बातें, काम, सबब) दो तीन ख़ुदा को माने, अल्लाहु तआला के साथ किसी को शामिल करे।

सुलाहा ः (सालिह की जमा)।

सुन्नत ः (काम, चीज़) जो, अगरचे अल्लाहु तआला ने हुक्म नहीं किए थे, पैग़म्बर (अलैहिस्सलाम) के ज़रिए किए गए और पसंद करे गए इबादत की तरह (अगर किया जाए तो वहाँ पर सवाब है, लेकिन अगर छोड़ा जाए तो गुनाह नहीं, फिर भी ये गुनाह का सबब बन सकता है अगर लगातार छोड़ा जाए और अगर नापसंद करके ईमान न रखा जाए; **इस तरह से सुन्ना**; i) (फर्ज़ के साथ) मुकम्मल तौर पर सारी सुन्नतें; ii) किताब या कुरआन अल-करीम के साथ) ये हदीस अश-शरीफ है; iii) (अकेली) फिकह, इस्लाम में।

सूरह ः कुरआन अल-करीम का एक बाब।

ताबा-अत-ताबेईन ः वो आलिम जिन्होने न तो पैग़म्बर (अलैहिस्सलाम) को देखा न ही एक सहाबी को लेकिन देखा (एक को) ताबेईन में से; उनके बाद वालों ने भी।

ताअत ः वो काम जो अल्लाहु तआला ने पसंद फरमाए लेकिन शायद ये जानने की कोशिश किए बग़ैर किए गए के अल्लाहु तआला उन्हें पसंद करता है।

ताबीऊन (अल-ई-ज़म) ः बहुत सारे मुसलमानों ने पैग़म्बर (अलैहिस्सलाम) को नहीं देखा लेकिन देखा (एक को) अस सहाबत अल करीम में से; उनके बाद वालों ने भी।

तादील अल अरकान ः बदन को थोड़ी देर साकन रखना पुरसुकुन होने के बाद नमाज़ के दौरान और बीच में मुख़्तलिफ़ अरकान करते हुए (सआदते अदबिया, iii के 14-16 बाब तक देखिए)।

तफसीर ः i) किताब की ii) सांईस की (ईल्म अत-तफ़सीर) iii) कुरआन अल-करीम का तर्जुमा।

तक़लीद ः इसके साथ रहना, मानना, चार मस्लकों में से एक का सदस्य।

तक़्वा ः ख़ौफ़, अल्लाह तआला का; हराम से बचाना; अज़ीमा की मस्क करना (वरा और ज़ुहुद देखिए)।

तसव्वुफ ः (इस्लामी सूफीइस्म जैसा का इस्लाम ने बताया) ईल्म और (एक फिकह को अपनाने के बाद) पैग़म्बर (अलैहिस्सलाम) की आदतों को मानना जो ईमान को एक को मारीफ़ा दिलाता है; ईल्म-अत-तसव्वुफ़।

तवाफ ः हज के दौरान काबात अल मोअज़्ज़मा के चारों तरफ़ चक्कर लगाकर इबादत करना।

तवक्कुल ः सिर्फ अल्लाहु तआला पर भरोसा करना, हर चीज़ उसी से उम्मीद करना; अल्लाहु तआला से उम्मीद लगाना हर काम के महारत के साथ होने के लिए किसी भी काम के सबब के लिए या सबब पाने के लिए- उससे पहले तवक्कुल करने की हिदायत नहीं है।**सआदते अबदिया** iii **35** को देखिए।

तौहीद ः (ईमान रखना) एक, वाहिद अल्लाहु तआला में।

ताज़ीर ः इस्लाम में एक तरह की सज़ा; दंड/अज़ाब।

सवाब ः (सिलसिला) ईनाम का जिसका अल्लाहु तआला के ज़रिए वादा किया गया है आख़रत में मिलने का बदले के तौर पर जो किया गया है आख़रत में मिलने का बदले के तौर पर जो किया और कहा गया जो वो पसंद करे।

उलेमा ः आलिम की जमा।

उम्मा ः एक क़ौम, ईमान वालों की जमाअत, एक नबी को मानने वालो की; एक उम्मा (तअल-मौहम्मदिया): मुस्लिमों की उम्मत।

उसूल ः i) कायदे या ज़रूरी बातें एक इस्लामी सांईस के;

ii) इस्लामी सांईसों की पहले कायदें, ईल्म-अल-उसूल;

iii) ईमान, कलाम।

वाजिब ः (काम या चीज़) पैग़म्बर (अलैहिस्सलाम) के ज़रिए कभी नहीं छोड़ी गई, इसलिए ये ज़रूरी ही है फर्ज़ की तरह और छोड़नी भी नहीं चाहिए।

वली ः (जमा औलिया) वो जो अल्लाहु तआला के ज़रिए चाहा गया और हिफ़ाज़त की गई; एक सालिह जो अपने नफ़स को सुधारते हैं।

वरा ः (हराम को नज़रअंदाज़ करने के बाद) शक़ वाली चीज़ों से दूर रखना (मुसताबिहात)।

ज़ाहिद ः एक शख़्स ज़ुहुद का; बहुत सादा।

ज़कात ः (फर्ज़ की ताबेदारी करना सालाना देने की) बेराक एक कीमत ज़रूरी किस्म की जाएदाद के भरोसे के लोगों को, जिसके ज़रिए बाकी बची हुई जाएदाद को पाक और मुबारक करना और मुस्लिम जो ये देता है वो अपने आपको (कहलवाने) कंज़ूस बनाने से रोक सकता है।

सआदते अबदिया V के।बाब को देखिए।

ज़ुहद ः अपने दिल को दुनयावी चीज़ों में न लगाना; अपने आपको बचाना (फिर भी) मुबाह से भी।

क/आफ़ अलहाजी उमर वाइसू ज़ारिया,
कदून स्टेट पॉलिटैक्नीक,

पी एम बी 1061 ज़ारिया,
कोडुना स्टेट, नाइजीरिया।
जुमा 23 अक्तूबर 1992।

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर्रहीम। अस्सलामु अलेकुम वरहमतुल्लाही वबराकातूहु मेरे अज़ीज़ भाइयों और बहनों इस्लाम में, सच्चा और सिर्फ वाहिद पूरी कायनात का मज़हब अल्लाहु सुब्हाननहु वतआता का। अल्लाह का अमन, बख़्शीशें और रहम हो हमारे प्यारे पैग़म्बर मौहम्मद 'सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' पर।

मेरी सदाक़त से भरी महरबानी और शुक्रिया सबसे आला अल्लाह के लिए मुझे ये मौका देने के लिए के मैं अपनी ये ख़त तुम्हें लिख रहा हूँ और ये मुमकिन हो के ये तुम्हारे पास ऊँचे इस्लामी जज़्बे के साथ पहुँचे और तुम्हारी अच्छी सहत और तुम्हारे खानदान की और सारे मुस्लिम भाई और बहनों को पूरी दुनिया में ऊँचे मिआर के साथ पहुँचे।

सबसे पहले मैं तुम्हे बता दूँ के जब से हम एक दूसरे के संबध में आए दो साल पहले तो मुझे तुम्हारा तीसरा पार्सल मिल गया है। मैं तुम्हारा शुक्रगुज़ार हूँ और दुआ करता हूँ तुम्हारी कामयाबी की इस्लाम को पूरी दुनिया में फ़ैलाने की। अल्लाह की बख़्शीशें तुम पर इसी तरह बनी रहीं तुम्हारे नैक काम के लिए, तुम्हे अल्लाह उस ईनाम से नवाज़े जो सब ईनामों से अच्छा हो आमीन।

जैसा के तुमने इलतिजा की है उन सब किताबों के नाम बताने की मुझे अभी तक ये मिली हैं- इस्लाम के दुश्मन को जवाब, मज़हबी इस्लाह करने वाले इस्लाम में, ईमान और इस्लाम, सुन्नी रास्ता और सआदते अदबिया (पहला और तीसरा हिस्सा) कुल छः हैं शुमार में। उनमें से चार में पढ़ चुका हूँ अब तक, उनमें से दो-दो बार पढ़ चुका हूँ और अभी इस्लाम के दुश्मन को जवाब पढ़नी शुरू की है जो उनमें से है जो किताबें मैने अभी हाल ही में तुम से मिली हैं। इसका मतलब है मुझे अभी मंदरजाज़ेल किताबें तुम से हासिल करनी हैं: सआदते अदबिया (दूसरा, चौथा, पाँचवा और छठा हिस्सा) नबूवत का सबूत, मुसलमानों के लिए नसीहत, इस्लाम और ईसाइयत और जवाब नहीं दिया।

मैं ऊपर बताई हुई किताबों को हासिल करने के लिए मुनतज़ीर हूँ, और मैने वक़्फ़े इख़्लास अपने दो दोस्तों को दी हैं, उनमें से एक ने अभी-अभी इस्लाम कुबूल किया है, बहुत जल्दी वो तुम्हें लिखेंगे और किताबों के बारे में मालूमात लेंगे, इस दौरान उन्होने दो किताबें मुझ से ली हैं।

मेरहबानी करके मेरी नैक तमन्नाएं और इज़्ज़त कुबूल किजिए।अल्लाह हमें सही रास्ते पर चलाए आमीन।तुम्हारी तरफ़ से कुछ सुनने का मुनतज़ीर।मा अस्सलाम।

इस्लाम में तुम्हारा भाई
अलियू उमर वाईसू ज़ारिया

अलियू उमर वाईसू, क/आफ़ अलहाजी उमर
वाईसू, कडुना स्टेट पॉलिटेकनीक,
पी-एम बी **1061** ज़ारिया, कडुना स्टेट,
नाईजीरिया मग़्रीबी अफ्रीका